jharkhandlab.com

प्रश्न बैंक-सह-उत्तर पुस्तक

Question Bank–Cum–Answer Book

2023

Class-12

हिन्दी-ऐच्छिक

(HINDI-ELECTIVE)

- ✓ अंतरा
- ✓ अंतराल
- ✓ कार्यालयी हिंदी एवं रचनात्मक लेखन

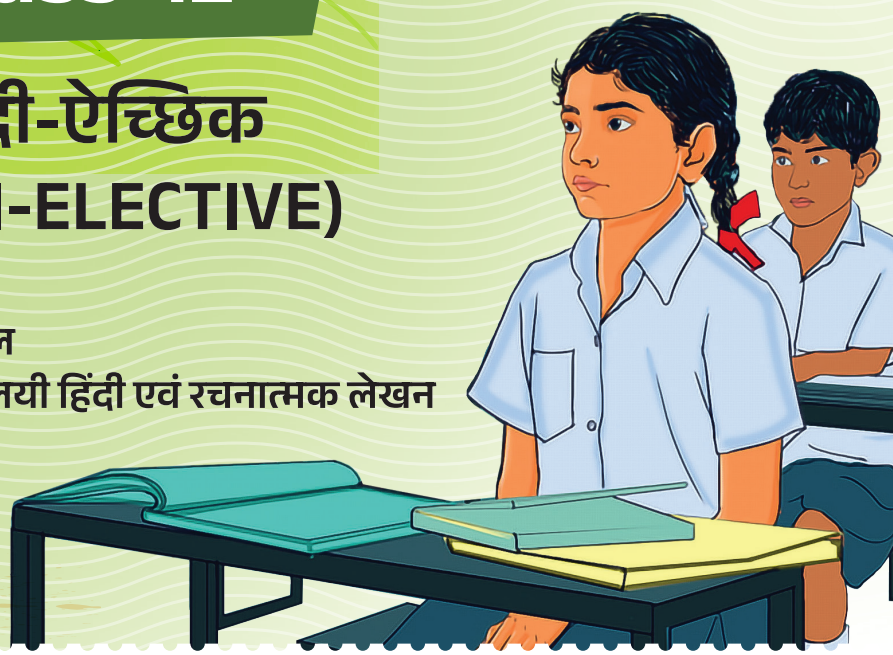

झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची
Jharkhand Council of Educational Research and Training, Ranchi

प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक
Question Bank-Cum-Answer Book

Jharkhandlab.com

Class - 12

हिन्दी (ऐच्छिक)

2023

झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची
Jharkhand Council of Educational Research and Training, Ranchi

प्रथम संस्करण : माह अगस्त 2023, श्रावण विक्रम संवत् 2080

© झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची, झारखंड

Jharkhandlab.com

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, छायाप्रतिलिपि अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण या जिल्द के साथ अथवा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।

- **क्रय–विक्रय दण्डनीय अपराध**

झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची, झारखंड द्वारा प्रकाशित

प्राक्कथन

बच्चों के लिए निर्धारित अधिगम प्रतिफल प्राप्त करने का मार्ग सरल एवं सुगम होना आवश्यक है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची, झारखंड के द्वारा कक्षा 12 के सभी विषयों के लिए प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक का निर्माण बच्चों के अधिगम कौशल को सुगमतापूर्वक विकसित करने एवं झारखंड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा के लिए उन्हें तैयार करने के उद्देश्य से किया गया है। इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक में सरल भाषा एवं रुचिकर ढंग से विषय–वस्तु को स्पष्ट करते हुए प्रश्नोत्तर दिए गए हैं। इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक के माध्यम से बच्चों में न केवल ज्ञानजन्य प्रतिभा का विकास होगा बल्कि आज के इस प्रतियोगिता के दौर में भी वे अनुकूल सफलता पाएंगे। हमारे प्रयत्न की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि विद्यालय के शिक्षकवृन्द बच्चों की कल्पनाओं के साथ कितना जुड़ पाते हैं और विभिन्न प्रकार के प्रश्नोत्तरों को सीखने–सिखाने के दौरान अपने अनुभवों के साथ–साथ बच्चों के विचारों के साथ कैसे सामंजस्य बनाते हैं।

इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक में झारखंड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों के विविध प्रकारों यथा– बहुवैकल्पिक, अतिलघु उत्तरीय, लघु उत्तरीय एवं दीर्घ उत्तरीय प्रश्न आदि के अंतर्गत पर्याप्त मात्रा में प्रश्नोत्तर समाहित किए गए हैं ताकि इसके अध्ययन से छात्रों में ना केवल विषय–वस्तु की समझ विकसित हो बल्कि उन्हें सीखने के प्रतिफल की भी प्राप्ति हो, साथ ही वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा के लिए उनकी अच्छी तैयारी हो सके और वे परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन करते हुए सफलता प्राप्त कर सकें।

अंत में मैं इन पुस्तकों के लेखकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ।

के० रवि कुमार भा.प्र.से.
सचिव
स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड

Jharkhandlab.com

भूमिका

प्रिय शिक्षक एवं विद्यार्थी,

जोहार !

हमें कक्षा 12 के विभिन्न विषयों के प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक से आपका परिचय कराने में प्रसन्नता हो रही है। इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक में झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों के विषयवार एवं अध्यायवार अधिगम बिन्दुओं को समायोजित करते हुए झारखण्ड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा में पूछे जानेवाले प्रश्नों के विविध प्रकारों के अंतर्गत पर्याप्त मात्रा में प्रश्नों का समावेश किया गया है। इस विषय आधारित प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक के निर्माण का उद्देश्य शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को और अधिक रुचिकर, सरल एवं प्रभावशाली बनाना तथा विद्यार्थियों को वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा की तैयारियों में सहयोग प्रदान करना है, जिससे सकारात्मक रूप से छात्रों को सीखने के प्रतिफल प्राप्त हों और वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा में वे बेहतर प्रदर्शन कर सकें। राज्य के विभिन्न जिलों से चयनित अनुभवी शिक्षकों के द्वारा इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक का निर्माण किया गया है।

इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक की प्रमुख विशेषताएँ यह है कि इनमें प्रश्नों के उत्तर को सरल भाषा में प्रस्तुत करते हुए वैचारिक समझ (Conceptual Understanding) विकसित करने पर जोर दिया गया है। साथ ही इन पुस्तकों में झारखण्ड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा – 2023 के प्रश्नोत्तर को भी समाहित किया गया है। इन पुस्तकों के माध्यम से न केवल विद्यार्थियों की प्रतिभा में निखार आएगा बल्कि वर्तमान समय के प्रतियोगिताओं के इस दौर में वे अनुकूल एवं अपेक्षित सफलता प्राप्त करने में भी सक्षम हो सकेंगे। आशा है कि यह प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक आपको पसंद आएगी एवं आपके लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं के साथ।

किरण कुमारी पासी भा.प्र.से.
निदेशक
झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
राँची, झारखण्ड

Jharkhandlab.com

पाठकों से अनुरोध

इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक के निर्माण में काफी सावधानियाँ बरती गई है। इसके बावजूद यदि किसी प्रकार की अशुद्धियाँ मिले या कोई सुझाव हो तो इस email ID :- jcertquestionbank@gmail.com पर सूचित करें, ताकि अगले मुद्रण में इसे शुद्ध रूप से प्रस्तुत किया जा सके।

jharkhandlab.com

प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक निर्माण समिति

मुख्य संरक्षक

श्री के० रवि कुमार (भा.प्र.से.)
सचिव
स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड

संरक्षक

श्रीमती किरण कुमारी पासी (भा.प्र.से.)
निदेशक
झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची

अवधारणा एवं मार्गदर्शन

श्री मुकुंद दास उपनिदेशक (प्र.) झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची	**श्री बाँके बिहारी सिंह** सहायक निदेशक (अ.) झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची	**श्री मसुदी टुडू** सहायक निदेशक (अ.) झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची

समन्वय एवं निर्देशन

डॉ0 नीलम रानी
संकाय सदस्य, जे.सी.ई.आर.टी., राँची
(टी.जी.टी., सामाजिक विज्ञान, राजकीयकृत उत्क्रमित उच्च विद्यालय पैतानो, जलडेगा, सिमडेगा)

सहयोग

श्री मणिलाल साव
संकाय सदस्य, जे.सी.ई.आर.टी., राँची
(पी.जी.टी. जीव विज्ञान, के. एन. +2 उच्च विद्यालय हरनाद, कसमार, बोकारो)

Jharkhandlab.com

प्रश्न बैंक निर्माण कार्य समिति

सुनीता सिंह
पीजीटी (हिन्दी)
मारवाड़ी +2 उच्च विद्यालय, पुस्तक पथ, अपर बाज़ार, राँची

डॉ. बिमला कुमारी
पीजीटी (हिन्दी)
एस.एस. डोरण्डा बालिका +2 उच्च विद्यालय, राँची

सुल्क्षणा निशा लकड़ा
पीजीटी (हिन्दी)
भवानी शंकर +2 उच्च विद्यालय, गिंजो ठाकुरगांव, बुढ़मू, राँची

यशोदा कुमारी
पीजीटी (हिन्दी)
राजकीयकृत +2 उच्च विद्यालय राहे, राँची

प्रदीप कुमार बैठा
पीजीटी (हिन्दी)
राजकीयकृत उत्क्रमित उच्च विद्यालय, उचरी, मांडर, राँची

JharkhandLab.com

Jharkhandlab.com

विषय सूची

अंतरा भाग – 2			
पाठ	नाम	खंड	पृष्ठ संख्या
कविता खंड			
पाठ – 1	जयशंकर प्रसाद	(क) देवसेना का गीत (ख) कार्नेलिया का गीत	3–4 5–6
पाठ – 2	सूर्यकांत त्रिपाठी निराला	(क) गीत गाने दो मुझे (ख) सरोज–स्मृति	7–8 9–11
पाठ – 3	सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय	(क) यह दीप अकेला (ख) मैंने देखा एक बूँद	12–14 15–16
पाठ – 4	केदारनाथ सिंह	(क) बनारस (ख) दिशा	17–21 22–23
पाठ – 5	विष्णु खरे	(क) एक कम (ख) सत्य	24–26 27–29
पाठ – 6	रघुबीर सहाय	(क) बसंत आया (ख) तोड़ो	30–31 32–33
पाठ – 7	तुलसीदास	(क) भरत–राम का प्रेम (ख) पद	34–35 36–37
पाठ – 8	मलिक मुहम्मद जायसी	बारहमासा	38–41
पाठ – 9	विद्यापति	पद	42–45
पाठ – 10	केशवदास	कवित्त / सवैया	46–48
पाठ – 11	घनानंद	कवित्त / सवैया	49–52
गद्य खंड			
पाठ – 1	रामचन्द्र शुक्ल	प्रेमधन की छायास्मृति	55–57

jharkhandlab.com

पाठ – 2	पंडित चंद्रधर शर्मा गुले. री	सुमिरनी के मनके	58–62
पाठ – 3	ब्रजमोहन व्यास	कच्चा चिट्ठा	63–67
पाठ – 4	फणीश्वरनाथ 'रेणु'	संवदिया	68–70
पाठ – 5	भीष्म साहनी	गांधी, नेहरू और यास्सेर अराफत	71–74
पाठ – 6	असगर वजाहत	शेर, पहचान, चार हाथ, साझा	75–79
पाठ – 7	निर्मल वर्मा	जहाँ कोई वापसी नहीं	80–82
पाठ – 8	रामविलास शर्मा	यथास्मै रोचते विश्वम्	83–86
पाठ – 9	ममता कालिया	दूसरा देवदास	87–90
पाठ – 10	हजारी प्रसाद द्विवेदी	कुटज	91–94
अंतराल भाग–2			
पाठ – 1	प्रेमचंद	सूरदास की झोपड़ी	97–99
पाठ – 2	संजीव	आरोहण	100–101
पाठ – 3	विश्वनाथ तिरपाठी	बिस्कोहर की माटी	102–104
पाठ – 4	प्रभाष जोशी	अपना मालवा–खाऊ–उजाडू सभ्यता में	105–107
अभिव्यक्ति और माध्यम			
1	अनुच्छेद लेखन		109–110
2	कार्यालयी पत्र		111–113
3	जनसंचार माध्यम		114–117
4	संपादकीय लेखन		118–119
5	रिपोर्ट (प्रतिवेदन) लेखन		120–121
6	आलेख लेखन		122–123
7	पुस्तक समीक्षा		124
8	फीचर लेखन		125–126
	JAC वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा, 2023 प्रश्न–सह–उत्तर		127–133

Jharkhandlab.com

Jharkhandlab.com

अंतरा

भाग - 2

Jharkhandlab.com

कविता खंड

पाठ – 1 (क) देवसेना का गीत

जयशंकर प्रसाद (सन् 1889-1937)

कवि परिचय

जयशंकर प्रसाद का जन्म काशी के सुप्रसिद्ध परिवार सुंघनीसाहू के घर में हुआ था। उनकी शिक्षा आठवीं तक हुई, परंतु उन्होंने स्वाध्याय के बल पर संस्कृत, पालि, उर्दू और अंग्रेजी भाषा का ज्ञान प्राप्त किया। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वह इतिहास, पुराण, धर्म शास्त्र, दर्शन आदि विषयों के जानकार और प्रकांड विद्वान थे।

प्रसाद जी ने अपना आरंभिक लेखन ब्रजभाषा में किया। बाद में वे हिंदी में लिखने लगे। उनकी उल्लेखनीय काव्य कृतियां 'आंसू', 'लहर', 'झरना' और 'कामायनी' है। 'कामायनी' छायावादी युग का एकमात्र महाकाव्य है। इनकी रचनाओं में भारतीय प्रकृति और संस्कृति का गौरव गान मिलता है। वे छायावाद के शिखर कवि हैं। उनकी भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है।

पाठ परिचय

'देवसेना का गीत' जयशंकर प्रसाद के नाटक स्कंदगुप्त के द्वितीय अंक में संकलित है। इस गीत को एक नारी पात्र देवसेना ने गाया है। देवसेना मालव नरेश बंधु वर्मा की बहन है। बंधु वर्मा हूणों के आक्रमण में युद्ध करते हुए सपरिवार वीरगति को प्राप्त हो गए। देवसेना राजपरिवार में अकेली बच गई। उसने अपने राष्ट्र की सेवा का प्रण लिया। वह स्कंद गुप्त से प्रेम करती थी परंतु स्कंद गुप्त धन कुबेर की पुत्री विजया से प्रेम करता था। उसने देवसेना के प्रणय निवेदन को ठुकरा दिया। देवसेना अत्यंत आहत हो जाती है। जीवन के अंतिम क्षणों में विजया के ना मिल पाने पर स्कंद गुप्त देवसेना को पाना चाहता है, परंतु आहत देवसेना उसे ठुकरा देती है। यौवन की ढलती बेला में इन बातों से उसकी पीड़ा अत्यंत सघन हो जाती है तथा उसे लगता है कि अंतिम समय में भी वह अपने आंचल में वेदना को लेकर ही विदा होगी। उसके इन्हीं मार्मिक भावों की अभिव्यंजना यह गीत है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. "मैंने भ्रमवश जीवन संचित मधुकरियों की भीख लुटाई"- पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- देवसेना स्कन्द गुप्त से प्रेम करती थी तथा उसे पाना चाहती थी, परंतु स्कन्दगुप्त देवसेना की ओर आकृष्ट ना हो सका, तब वह विजया को पाने के लिए लालायित था। देवसेना स्कंद गुप्त के प्रति प्रेम का भ्रम पाले हुए थी। देव सेना को जीवन में जो कुछ भी मिला, वह उसे संभाल नहीं पाई। देव सेना ने अनुभव किया कि उसने जीवन भर की संचित पूंजी को लुटा दिया है। जीवन की सांध्य बेला में उसे अपनी भूल का एहसास हुआ। वह अपनी इस भ्रम भरी भूल का प्रायश्चित करती है।

प्रश्न 2. कवि ने आशा को बावली क्यों कहां है?

उत्तर प्रायः हर व्यक्ति किसी भी विशेष आशा के सहारे जीवन बिताता है। हर व्यक्ति अपने जीवन में कुछ सपने देखता है। प्रेम की आशा में व्यक्ति अपने मोहक सपनों को बुनता है भले ही उसे असफलता क्यों ना मिले। यहां तक कि व्यक्ति धुन का पक्का होने की हालत में पागलपन की स्थिति तक पहुंच जाता है । आशा ही व्यक्ति को बावला बनाए रखती है।

प्रश्न 3. 'मैंने निज दुर्बल..... होड़ लगाई' इन पंक्तियों में 'दुर्बल पद बल' और 'हारी होड़' में निहित व्यंजना स्पष्ट कीजिए।

उत्तर कवि ने इस पंक्ति में व्यंजनार्थ प्रस्तुत किया है। कवि इस पंक्ति के माध्यम से व्यक्त करता है कि देवसेना को ज्ञात है कि वह असमर्थ एवं शक्ति हीन है। वह जानती है कि उसके पैर कमजोर हैं। यानी वह परिस्थितियों के सम्मुख कमजोर है फिर भी वह परिस्थितियों से टकराती है। 'दुर्बल पद बल' में यही व्यंजना व्याप्त है। 'हारी होड़' में कवि व्यक्त करता है कि देवसेना को अपने प्रेम के हारने का ज्ञान है इसके बावजूद वह प्रलय से लोहा लेती है। देवसेना इन बातों से अपनी लगन शीलता का परिचय देती हैं।

प्रश्न 4. काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

(क) श्रमित स्वप्न की मधुमाया.....तान उठाई।

उत्तर- जयशंकर जी ने इन पंक्तियों में स्मृति बिंब को साकार कर दिया है। देवसेना अपने असफल प्रेम की मधुर कल्पना में डूबी हुई है। तभी उसे प्रेम की तान-सी सुनाई पड़ती है, वह उसे सुनकर चौंक उठती है 'श्रमित स्वप्न' कहने में कवि ने व्यंजना शक्ति का सहारा लिया है। 'विहाग' एक ऐसा राग है जो अर्द्ध रात्रि में गाया जाता है, देवसेना को यह अपने जीवन के संध्याकाल में सुनाई देता है। 'गहन विपिन' तथा 'तरु छाया' जैसे सामासिक शब्द प्रयोग से कविता में आकर्षण पैदा हुआ है।।

(ख) लौटा लो .....लाज गंवाई।

उत्तर- जयशंकर प्रसाद जी ने अपनी कविता 'देवसेना का गीत' में देवसेना के निराशा एवं हताशा पूर्ण मनोःस्थिति का वर्णन किया है। देवसेना ने स्कंदगुप्त के प्रति जो प्रेम हृदय में संभाल कर रखा था उसने उसे बहुत पीड़ा दी है। अब वह वेदना के कारण उस प्रेम को संभाल कर रखने में स्वयं को असमर्थ पाती है। अतः वह अपनी धरोहर को स्कन्दगुप्त को वापस लौटा देना चाहती है। उसकी यही वेदना कविता की 'करुणा हा-हा खाती' में उभरकर परिलक्षित हुई है। देवसेना कहती है कि उसने स्कंदगुप्त के प्रेम को संभालते-संभालते अपने मन की लज्जा तक को गवाँ दिया है। 'हा -हा' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।

प्रश्न 5. देवसेना की हार या निराशा के क्या कारण हैं?

उत्तर देवसेना की हार या निराशा के पीछे अनेक कारण रहे हैं, जैसे- हूणों का आक्रमण में देवसेना के भाई व परिवार के अन्य सभी सदस्यों का वीरगति को प्राप्त हो जाना। पूरे परिवार में वह अकेली ही बची थी। वह अपने भाई के स्वप्न को साकार होते देखना चाहती थी, लेकिन वह चाहकर भी कोई विशेष प्रयत्न नहीं कर पाई। देवसेना स्कंदगुप्त से प्रेम करती थी, जबकि स्कंदगुप्त स्वयं धनकुबेर की पुत्री विजया पर आसक्त था। इस तरह देवसेना को प्रेम में भी असफलता ही हाथ लगी। देवसेना स्वयं को उपेक्षित जानकर निराशा से भर उठी। देवसेना को वृद्ध पर्णदत्त के आश्रम में गीत गा कर भिक्षा तक मांगने को विवश होना पड़ा।

Jharkhandlab.com

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'देवसेना का गीत' कविता का सारांश लिखिए।

उत्तर. 'देवसेना का गीत' जयशंकर प्रसाद के नाटक 'स्कंदगुप्त' के द्वितीय अंक में संकलित है। इस गीत को नाटक की एक नारी पात्रा देवसेना ने गाया हैं। देवसेना मालवा नरेश बंधुवर्मा की बहन है। आर्यावर्त पर हूणों के आक्रमण के फलस्वरुप बंधुवर्मा वीरगति को प्राप्त कर जाता है। देवसेना का पूरा परिवार देश के लिए उत्सर्ग हो जाता है, तथा वह अकेली जीवित बच जाती है। असहाय देवसेना वृद्ध पर्णदत्त के आश्रम के सामने गाना गाकर भीख मांगती है तथा महादेवी की समाधि को परिष्कृत करती है। देवसेना वेदना से भर जाती है, तथा अपने भाई के स्वप्न को पूरा करना चाहती है। चूँकि वह राज परिवार से है, इसीलिए वह स्कंदनगुप्त के प्रति आकृष्ट हो जाती है, परंतु वह मालवा के धनकुबेर की पुत्री विजया पर अनुरक्त था। विजया उसे नहीं मिल पाती तथा वह जीवन की संध्या बेला में देव सेना को पाना चाहता है। किंतु एक बार स्कंदगुप्त के द्वारा ठुकराए जाने की बात से आहत देवसेना उसके अनुरोध को अस्वीकार कर देती है। यौवन की ढलती बेला में उसका दुख अत्यंत सघन हो जाता है। उसने अपने जीवन में अपने -भाई, परिवार और राज्य को खो दिया था। वह स्कंदगुप्त का प्रेम पाना चाहती थी, उसे मन- ही- मन अपना सर्वस्व मान लिया था किंतु प्रतिदान स्वरूप उसे केवल वेदना ही मिली। वह अत्यंत दुखी हैं। वह सोचती है कि जीवन के अंतिम क्षणों में वह अपने आंचल में वेदना को लेकर ही विदा लेगी। उसके इन्हीं मार्मिक भावों की अभिव्यंजना इस गीत में है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. देवसेना का गीत में विषय क्या है?

उत्तर. देवसेना अपने जीवन के अंतिम दिनों में एक गीत के माध्यम से अपनी वेदना को प्रकट करती है तथा अपने प्रेम की अभिलाषा पर अफसोस जाहिर करती है। देवसेना जीवन-भर स्कंदगुप्त से प्रेम करती रही, किंतु स्कंदगुप्त मालवा की कन्या (विजया) का सपना देखता रहा। अब जीवन के आखिरी दिनों में स्कंदगुप्त उससे विवाह करना चाहता है, जिसे वह ठुकरा देती हैं।

प्रश्न 2. 'वेदना मिली विदाई' में कौन सा रस विद्यमान हैं?

उत्तर. इस पंक्ति में देवसेना की भावुक अभिव्यक्ति हुई है। इन पंक्तियों में उनकी हृदय की मार्मिकता परिलक्षित हो रही हैं। इसमें प्रसाद गुण हैं। शैली पांचाली रीति हैं, और रस की दृष्टि से वियोग श्रृंगार हैं।

प्रश्न 3. देवसेना ने अपने जीवन के अंतिम क्षण कहां व्यतीत किए?

उत्तर. देवसेना जीवन के अंतिम समय में वृद्ध पर्णदत्त के साथ आश्रम में गाना गाकर भीख मांगती थी और महादेवी की समाधि को परिष्कृत किया करती थी।

प्रश्न 4. स्कंदगुप्त आजीवन कुँवारा रहने की प्रतिज्ञा क्यों लेता है?

उत्तर. जीवन के अंतिम समय में वह देवसेना का प्रेम पाना चाहता है जबकि वह उसके प्रेम को अपने यौवनकाल में ठुकरा चुका हैं। देवसेना उसके इस व्यवहार से अत्यंत दुखी होती है तथा बहुत मनाने के बाद भी उसके पास नहीं जाती है। इसलिए स्कंदगुप्त आजीवन कुंवारा रहने की प्रतिज्ञा करता है।

अति लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. देवसेना किसकी बहन थी?

उत्तर. देवसेना बंधु बर्मा की बहन थी।

प्रश्न 2. देवसेना के भाई की मृत्यु कैसे हुई?

उत्तर. देवसेना का भाई मालवा नरेश बंधुवर्मा था, जिसकी मृत्यु हूणों के आक्रमण के फलस्वरुप हुई।

प्रश्न 3. देवसेना ने क्या प्रतिज्ञा की?

उत्तर. भाई की मृत्यु के पश्चात देवसेना ने भाई के सपनों को पूरा करने के लिए राष्ट्र सेवा की प्रतिज्ञा ली थी।

प्रश्न 4. 'देवसेना का गीत' जयशंकर प्रसाद के कौन से नाटक से लिया गया है?

उत्तर. 'देवसेना का गीत' प्रसाद के 'स्कंदगुप्त' नाटक से लिया गया है।

प्रश्न 5. देवसेना किससे प्रेम करती थी?

उत्तर. देवसेना स्कंदगुप्त से प्रेम करती थी।

प्रश्न 6. आर्यवर्त पर किसने आक्रमण किया?

उत्तर. हूणों ने आर्यवर्त पर आक्रमण किया था।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. देवसेना का गीत कविता प्रसाद जी के किस नाटक से संबंधित है?

(1) चंद्रगुप्त (2) स्कंदगुप्त
(3) ध्रुवस्वामिनी (4) अजातशत्रु

प्रश्न 2. देवसेना कौन थी?

(1) राजा बंधु वर्मा की बहन (2) धनकुबेर की बहन
(3) बंधु वर्मा की पुत्री (4) धन कुबेर की पुत्री

प्रश्न 3. "मेरी यात्रा पर लेती थी नीरवता अनंत अगड़ाई" का आशय बताएं।

(1) देवसेना यात्रा करती थी
(2) देवसेना एकाकी जीवन जीती रही
(3) देवसेना रोती रही
(4) देवसेना भटकती रहती

प्रश्न 4. देवसेना की हार या निराशा के क्या कारण थे?

(1) स्वजनों की मृत्यु
(2) संघर्ष भरा जीवन
(3) स्कंदगुप्त द्वारा उसके प्रेम को अस्वीकार कर देना
(4) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 5. देवसेना आश्रम में किसके साथ रहती थी?

(1) पर्णदत्त के साथ (2) स्कंद गुप्त के साथ
(3) चंद्रगुप्त के हाथ (4) बंधु वर्मा के साथ

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1. - (2) 2. - (1)
3. - (2) 4. - (4)
5. - (1)

Jharkhandlab.com

(ख) कार्नेलिया का गीत

जयशंकर प्रसाद (सन् 1889-1937)

पाठ परिचय

जयशंकर प्रसाद के सुप्रसिद्ध नाटक 'चंद्रगुप्त' की एक नारी पात्रा कार्नेलिया ग्रीक सम्राट सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस की पुत्री है। वह सिंधु तट पर अवस्थित ग्रीक शिविर में बैठी भारत की प्राकृतिक सुषमा और भारतीय संस्कृति पर मुग्ध होकर गौरव गान कर रही है।

कार्नेलिया चंद्रगुप्त की वीरता और सौंदर्य पर मुग्ध है तथा उसे प्रेम करती है, इसलिए प्रिय के देश की हर चीज उसे प्यारी लगने लगी है। वह यहां के प्राकृतिक सौंदर्य, भारतीय संस्कृति एवं भारतीयों के विशाल हृदय से अत्यंत प्रभावित है। इस गीत में कार्नेलिया ने इस देश की अनुपम सुंदरता और संस्कृति की असली पहचान व्यक्त की है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'कार्नेलिया का गीत' कविता में प्रसाद ने भारत के किन विशेषताओं की ओर संकेत किया है ?

उत्तर चंद्रगुप्त नाटक से उद्धृत कार्नेलिया का गीत में जयशंकर प्रसाद जी ने भारत की विभिन्न विशेषताओं की ओर संकेत किया है, जैसे भारत प्राकृतिक रूप से सुंदर है, इसलिए प्रसाद जी ने भारत को मधुमय कहा है। प्रसाद जी ने इस तथ्य की ओर संकेत किया है कि भारत भूमि पर ही सूर्य की प्रथम किरण अवतरित होती है। इस देश में हर प्राणी को आश्रय सुलभता से प्राप्त होता है। भारतीयों का हृदय दया, करुणा, सहानुभूति जैसे मानवीय गुणों का भंडार है। भारतीय सभी के सुख की कामना से जीते हैं, इसलिए भारतीय सभ्यता, संस्कृति विश्व में महान एवं गौरवशाली मानी जाती है।

प्रश्न 2. 'उड़ते खग' और 'बरसाती आंखों के बादल' में क्या विशेष अर्थ व्यंजित होता है?

उत्तर प्रसाद जी ने कार्नेलिया का गीत में उड़ते खगों को जिस दिशा में जाने की बात कही है वह भारत देश है। यहां आकर पक्षियों तक को आश्रय मिलता है। इतना ही नहीं भारत भूमि पर आकर सभी जीवों, प्राणियों को आत्मिक शांति एवं संतोष मिलता है। किसी अनजान तक को सहारा देना भारतीय संस्कृति की ही विशेषता रही है। 'बरसाती आंखों के बादल' से यह अर्थ विशेष रूप से प्रकट होता है कि भारतीय दया, करुणा, सहानुभूति जैसे मानवीय गुणों से परिपूर्ण हैं। यहां के लोग दूसरों के दुखों को देख कर दुखी हो उठते हैं, दूसरों के दुख में दुखी होने से उनके आंखों में आंसू आ जाते हैं।

प्रश्न 3. काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

"हेमकुंभ ले उषा सवेरे-भरती ढुलकाती सुख मेरे

मदिर उंघते रहते जब-जगकर रजनी भर तारा।"

उत्तर - प्रसाद जी ने कविता की इन पंक्तियों में उषा कालीन प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन किया है। यहां प्रसाद जी ने उषा को पनिहारिन के रूप में उपस्थित करके उषा का मानवीकरण कर दिया है। प्रसाद जी लिखते हैं कि उषा रुपी पनिहारिन आकाश रूपी कुएं से सूर्यरूपी कलश में मंगल जल लेकर आ रही है। वह मंगल भावना से उस जल को लोगों पर बिखेर देती है। इस जल के बिखरने से चारों और सुनहरी आभा बिखर जाती है। इससे पूर्व सभी पर रात की मस्ती चढ़ी रहती है। तभी तो तारे भी उँघते प्रतीत होते हैं। इन पंक्तियों में मानवीकरण के साथ-साथ रूपक अलंकार भी द्रष्टव्य है। पंक्तियों में गेयता एवं संगीतात्मकता झलकती है।

प्रश्न 4. "जहां पहुंच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा" पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए -

उत्तर - इन पंक्तियों का आशय यह है कि भारत वर्ष सभी की आश्रय स्थली है। यहां न केवल पक्षी बल्कि, अनजान लोग भी सहारा पाते हैं। तात्पर्य यह है कि भारतवासी इतने विशाल हृदय के स्वामी हैं कि भारत में आकर सभी को आत्मिक सुख व संतोष मिलता है। अनजान लोगों तक को सहारा देना भारतीयों की विशेषता है। यही भारतीयता की विशेष पहचान है।

प्रश्न 5. कविता में व्यक्त प्राकृतिक चित्रों को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- इस कविता में कवि नेप्रकृति के निम्नलिखित मनोहारी चित्र प्रस्तुत किए हैं-

i. सरोवरों में खिले पराग और सुगंध से भरे कमल फूलों पर पेड़ के शिखरों से छनकर आती हुई किरणें नाचती हुई प्रतीत हो रही है।

ii. पंख पसार कर उड़ते रंग-बिरंगे पक्षी आकाश में इंद्रधनुषी छटा बिखेर रहे हैं।

iii. पेड़-पौधों पर फैली सबूह की सुनहरी किरणें मगंल कुंकुम की तरह लगती हैं।

iv. प्रातः रूपी उषा रानी सूर्य रूपी स्वर्णघट से किरण रूपी सुख-शांति एवं आनंद की वर्षा करती है।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'कार्नेलिया का गीत' में कवि किस की शोभा का वर्णन करता है ?

उत्तर प्रस्तुत कविता में कवि ने ग्रीक सम्राट सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस की बेटी के माध्यम से भारत की प्राकृतिक सुषमा और सांस्कृतिक गरिमा का चित्रण किया है। कार्नेलिया भारत की प्रकृति और संस्कृति के प्रति अपने स्नेह को व्यक्त करते हुए कहती है कि यह देश अद्भुत है। इसके कण-कण में माधुरी और सौंदर्य भरा है। भारत पूर्वी देश होने के कारण सूर्य की किरणें सबसे पहले यहीं पड़ती है। प्रातः काल में सूर्य की किरणें जब हरी-हरी घास के ऊपर बिखरती हैं, तो ऐसा लगता है कि प्रकृति ने जीवन की हरियाली पर मंगल कुमकुम बिखेर दिया हो। तमाम पक्षी इंद्रधनुष की भांति अपने पंखों को पसार कर शीतल हवा के सहारे भारतवर्ष को अपना घोंसला समझकर इधर ही

jharkhandlab.com

आते हैं। यह देश अनजान लोगों को भी सहारा देता है। यहां के लोग अत्यंत दयालु और परोपकारी हैं। कहानियों में इस देश की अनुपम सुंदरता और संस्कृति की महानतम विशेषताओं की असली पहचान व्यक्त की गई है। इस देश की संस्कृति की परम विशिष्टता 'अनजान को सहारा देना' और 'लहरों को किनारा देना' है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. कार्नेलिया का परिचय दें।

उत्तर कार्नेलिया सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस की पुत्री है। वह चंद्रगुप्त नाटक की एक नारी पात्र है। वह भारत की प्रकृति और संस्कृति का गुणगान करते हुए भारत के प्रति अपना प्रेम व्यक्त करती है।

प्रश्न 2. 'कार्नेलिया का गीत' में किसका वर्णन है?

उत्तर - कार्नेलिया भारत भूमि की महिमा का बखान कर रही है। प्रातः कालीन लालिमा से युक्त हमारा यह देश बहुत ही आनंददायी है। विश्व के कोने-कोने से आए ज्ञानियों, जिज्ञासुओं एवं शुभकामनाओं वाले मनुष्यों को यहां आकर तृप्ति एवं संतुष्टि का अहसास मिलता है।

प्रश्न 3. कार्नेलिया के गीत की क्या विशेषता है?

उत्तर - 'कार्नेलिया का गीत' के माध्यम से कवि जयशंकर प्रसाद ने भारत की विशेषताओं की ओर संकेत किया है। इस गीत में उन्होंने भारत के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहा है कि भारत ही ऐसा देश है, जहां पर सूर्य की किरण सबसे पहले पहुंचती है। भारत के कण-कण में प्राकृतिक सौंदर्य की भरमार है।

प्रश्न 4. 'कार्नेलिया का गीत' में किसका मानवीकरण किया गया है?

उत्तर- प्रस्तुत गीत में उषा का मानवीकरण कर उसे पानी भरने वाली स्त्री के रूप में चित्रित किया गया है। इन पंक्तियों में भोर का सौन्दर्य दिखाई पड़ता है। कवि के अनुसार भोर रूपी स्त्री सूर्य रूपी सुनहरे घड़े से आकाश रूपी कुँए से मंगल जल भरकर लोगों के जीवन में सुख के रूप में लुढ़का जाती है।

अति लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. कार्नेलिया का गीत किस प्रकार का गीत है?

उत्तर कार्नेलिया का गीत देश की गौरव गाथा का गीत है। यह देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत है।

प्रश्न 2. स्कंदगुप्त किसका सपना देखते थे?

उत्तर- स्कंदगुप्त मालवा के धन कुबेर की पुत्री विजया का स्वप्न देखते थे।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'कार्नेलिया का गीत' कविता प्रसाद जी के किस नाटक से संबंधित है?

(1) चंद्रगुप्त (2) स्कंदगुप्त
(3) ध्रुवस्वामिनी (4) अजातशत्रु

प्रश्न 2. कार्नेलिया कौन थी ?

(1) चंद्रगुप्त की पुत्री (2) सेल्यूकस की बहन
(3) सेल्यूकस की बेटी (4) चंद्र गुप्त की बहन

प्रश्न 3. कार्नेलिया किस नदी के तट पर गीत गाती है?

(1) सिंधु नदी के तट पर
(2) सतलज नदी के तट पर
(3) यमुना नदी के तट पर
(4) गंगा नदी के तट पर

प्रश्न 4. 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' पंक्ति से क्या आशय है?

(1) भारत देश में लोग प्रेम पूर्ण माहौल में रहते हैं
(2) यहां की धरती सूखी-सूखी है
(3) यहां लोगों में परस्पर बैर-भाव है
(4) उपर्युक्त सभी

5. 'कार्नेलिया का गीत' कविता का मूल भाव क्या है?

(1) भारत के गौरव व विशेषताओं का बखान करना
(2) भारत के अतीत की कमियों को उजागर करना
(3) भारत वासियों के परिश्रमी होने की विशेषता को उजागर करना
(4) भारत के युद्ध कौशल की विशेषताएं बताना

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1 - (1) 2 - (3)
3 - (1) 4 - (1)
5 - (1)

Jharkhandjob.com

पाठ – 2 (क) गीत गाने दो मुझे

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
(सन् 1898-1961)

कवि परिचय

छायावाद और हिंदी की स्वच्छंदतावादी कविता के प्रमुख आधार स्तंभ निराला का काव्य- संसार बहुत व्यापक है। उनमें भारतीय इतिहास, दर्शन और परंपरा का व्यापक बोध है और समकालीन जीवन के यथार्थ के विभिन्न पक्षों का चित्रण भी। उन्होंने भारतीय प्रकृति और संस्कृति के विभिन्न रूपों का गंभीर चित्रण अपने काव्य में किया है।सन 1916 में प्रकाशित कविता 'जूही की कली' से उनको प्रसिद्धि मिली और वे मुक्त छंद के प्रवर्तक माने गए।

यद्यपि निराला मुक्त छंद के प्रवर्तक माने जाते हैं तथापि उन्होंने विभिन्न छंदों में भी कविताएँ लिखी हैं। उनके काव्य-संसार में काव्य-रूपों की विविधता है। निराला की काव्यभाषा के भी अनेक रूप और स्तर हैं। 'राम की शक्तिपूजा' और 'तुलसीदास' में तत्सम-प्रधान पदावली है, तो भिक्षुक जैसी कविता में बोलचाल की भाषा का सृजनात्मक प्रयोग। भाषा का कसाव,शब्दों की मितव्ययिता और अर्थ की प्रधानता उनकी काव्य भाषा की जानी-पहचानी विशेषताएं हैं।

निराला की प्रमुख काव्य कृतियां हैं- 'परिमल', 'गीतिका', 'अनामिका', 'तुलसीदास', 'कुकुरमुत्ता', 'अणिमा' 'नये पत्ते', 'बेला', 'अर्चना' आदि। उनके उपन्यासों में 'बिल्लेसुर बकरिहा' विशेष चर्चित है।

पाठ परिचय

गीत गाने दो मुझे कविता में निराला ने ऐसे समय की ओर इशारा किया है जिसमें चोट खाते-खाते, संघर्ष करते-करते होशवालों के होश खो गए हैं यानी जीवन जीना आसान नहीं रह गया है।पूरी मानवता हाहाकार कर रही है। लगता है पृथ्वी की लौ बुझ गई है, मनुष्य में जिजीविषा खत्म हो गई है। इसी लौ को जगाने की बात कवि कर रहा है। इस गीत के माध्यम से कवि निराशा में आशा का संचार करना चाहता है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. कंठ रुक रहा है, काल आ रहा है - यह भावना कवि के मन में क्यों आई?

उत्तर- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के विराट हृदय ने तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों और उससे उत्पन्न मनुष्य की पीड़ा का अनुभव किया था। उनके व्यक्तिगत जीवन में भी कष्ट एवं समस्याएं थीं, जिसके कारण वेदना के स्वर उनकी कविताओं में मुखरित होती रहीं। लगातार संघर्ष के कारण उत्पन्न हताशा तथा निराशा अब उनके मार्ग को अवरुद्ध कर रही है। मन में व्याप्त निराशा तथा दुख के कारण उनका कंठ रुक रहा है, जिससे वह कुछ कह पाने की स्थिति में नहीं हैं।

रचनाकार युग दृष्टा होता है, भविष्य की घटनाओं का आभास उन्हें हो जाता है। कवि निराला भी काल की पदचाप को सुन रहे हैं। वह गीत गाकर लोगों में आशा की भावना का संचार करना चाहते हैं तथा आते हुए काल से उन्हें सचेत करना चाहते हैं। समाज में फैली हुई अव्यवस्था को देखकर और भविष्य के संकट के आभास के कारण ही कवि के मन में यह भावना आई है।

प्रश्न -2. 'ठग- ठाकुरों' से कवि का संकेत किसकी ओर है?

उत्तर- 'ठग-ठाकुरों' से निराला का अभिप्राय पूंजीवादी- सामंती वर्ग से है। निराला शोषितों और वंचितों के पक्षधर हैं। उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से इन्हीं शोषितों और वंचितों के विद्रोह को स्वर दिया है।कवि का मानना है कि सामाजिक अव्यवस्था के लिए पूंजीवादी- सामंती शोषणकर्ता जिम्मेदार हैं क्योंकि सामाजिक व्यवस्था में इसी वर्ग की प्रभुता है।

प्रश्न 3. 'जल उठो फिर सींचने को' इस पंक्ति का भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कवि निराला संघर्ष को जीवन का सत्य मानते हैं।वे परिस्थितियों पर मानव विजय के आकांक्षी कवि हैं। निराशा और संघर्ष के बीच वे मनुष्य को नवजागृति की चेतना प्रदान कर रहे हैं। समस्त मानवता के लिए उनका यह संदेश है कि निराशा की परिधि से निकलने के लिए उत्साह की ज्वाला जगानी होगी। उत्साह की आग रूपी उष्णता को बादल का रूप लेकर धरती को सींचना होगा। तभी मानवता का कल्याण संभव हो सकेगा।

प्रश्न 4. प्रस्तुत कविता दुख और निराशा से लड़ने की शक्ति देती है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कवि के व्यक्तिगत जीवन के दुख और निराशा ने संसार के दुख और निराशा में समन्वयात्मक संबंध स्थापित कर लिया है। कवि विश्व की पीड़ा को आत्मसात करते हुए मानवता को यह संदेश देते हैं कि चोट खा- खाकर संघर्ष करते-करते होश खोने की कोई आवश्यकता नहीं है।स्वयं पर संयम रखकर मानवता के प्रति अगाध प्रेम व श्रद्धा का भाव रखकर सचेष्ट होना ही श्रेयस्कर है। इसलिए अब तक यदि हमने कुछ खोया भी है तो उसे भूल कर अपने जीवन में आशा जगाएं। मानवता को बचाने के लिए हम अपने अस्तित्व को पुनः जानें- पहचानें और लोगों का कल्याण करें। शोषण, अत्याचार, अन्याय के विरुद्ध कवि का यही स्वर दुख और निराशा से लड़ने की शक्ति देती है।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उनकी सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

गीत गाने दो मुझे तो, वेदना को रोकने को
चोट खाकर राह चलते
होश के भी होश छूटे,
हाथ जो पाथेय थे, ठग-
ठाकुरों ने रात लूटे
कंठ रुकता जा रहा है,
आ रहा है काल देखो।

उत्तर- **संदर्भ** : प्रस्तुत काव्यांश सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविता 'गीत गाने दो मुझे' से उद्धृत है। यह कविता उनके काव्य-संग्रह अर्चना (1950)में संकलित है।

Jharkhandlab.com

प्रसंग : कवि निराला ने वैश्विक समस्याओं की पृष्ठभूमि से उभरी हुई अपनी चिंता और वेदना को इस कविता में चित्रित किया है। कवि का व्यथित हृदय अपनी वेदना को रोकने, उसे समाप्त करने तथा नवीन आशा के संचार के लिए गीत गाने की इच्छा व्यक्त कर रहा है।

व्याख्या : मनुष्य के हृदय की वेदना, पीड़ा को समाप्त करने और जीवन के प्रति नवोल्लास जगाने के लिए कवि गीत गाना चाहता है। जीवन- पथ के संघर्षों ने मनुष्य को विचलित कर दिया है। जीवन के प्रति उसका विश्वास डगमगा गया है। पूंजीवादी व्यवस्था ने आजीविका के नाम पर उसका शोषण किया है। अब तो ऐसा लगता है कि उनके सामने साक्षात काल अर्थात मृत्यु ही आ गया है, व्यथा से उनका कंठ अवरुद्ध हो रहा है। इस पूंजीवादी सामंती व्यवस्था में मानव का अस्तित्व संकट में है।

विशेष-

1. कविता का स्वर प्रगतिवादी है।
2. भाषा तत्सम शब्दों से युक्त खड़ी बोली हिन्दी है।
3. शैली मुक्तक है।
4. 'गीत गाने दो' में अनुप्रास अलंकार है, 'ठग-ठाकुरों' में रूपक अलंकार है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'गीत गाने दो मुझे' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'गीत गाने दो मुझे' कविता का प्रतिपाद्य निराश मानव के मन में आशा का संचार करना है।सामाजिक अव्यवस्था ने मनुष्यों के हौसले तोड़ दिए हैं। शोषण, अत्याचार, अन्याय से मानवता त्रस्त है। मनुष्य में संघर्ष करने की क्षमता क्षीण होने लगी है।इस कविता के माध्यम से कवि मनुष्यों में इसी जीवन संघर्ष की क्षमता को जगाना चाहता है।

प्रश्न 2. 'गीत गाने दो मुझे' कविता में चित्रित सामाजिक स्थितियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- 'गीत गाने दो मुझे' कविता में कवि ने स्पष्ट किया है कि आज की सामाजिक स्थिति अत्यंत विषम एवं सोचनीय है। संघर्षशील व्यक्ति संघर्ष और परिश्रम के बाद भी जीवन की उचित सुविधाएं नहीं प्राप्त कर सकता है।

समाज में पूंजीवादी और सामान्य वर्ग का बोलबाला है। उनकी लालची निगाहों में जनता कैद है।वह चाह कर भी अपने अस्तित्व की रक्षा नहीं कर पा रही है जिसके कारण लोगों में निराशा फैल गई है।

प्रश्न 3 'गीत गाने दो मुझे तो, वेदना को रोकने को ।' - पंक्ति का काव्य- सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - 'गीत गाने दो मुझे' कविता में कवि निराला का स्वर प्रगतिवादी है। वह सांसारिक छल- प्रपंचों से दुखी हैं और उससे मुक्ति पाने के लिए गीत गाना चाहते हैं।

काव्यांश की भाषा तत्सम शब्दों से युक्त खड़ी बोली है और शैली मुक्तक है। 'गीत गाने दो' में अनुप्रास अलंकार है।

प्रश्न 4 'बुझ गई है लौ पृथा की' जल उठो फिर सींचने को' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने पतनशील संसार में लुप्त मानव मूल्यों की बात करते हुए, मानव को दिशानिर्देश करने के लिए प्रेरित किया है। कवि का मानना है कि पृथ्वी का तेज़ (प्रकाश) लुप्त सा हो रहा है, वह अंधेरे में भटकते हुए मानवों का दिशानिर्देश नहीं कर पा रही है। मनुष्य की स्वयं की प्रज्ञा व उसकी जिजीविषा भी समाप्त हो रही है। ऐसी स्थिति में संघर्षशील विवेकी मानवों को स्वयं आगे बढ़कर ज्ञान की मशाल जलानी होगी और संसार को दिशानिर्देश करने के लिए प्रश्न करना होगा।

अति लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न1. 'गीत गाने दो मुझे' कविता निराला के किस काव्य-संग्रह में संकलित है।

उत्तर- 'गीत गाने दो मुझे' कविता निराला द्वारा रचित काव्य कृति 'अर्चना' में संकलित है।

प्रश्न 2. 'गीत गाने दो मुझे' में कवि निराला का स्वर किस विचारधारा की अभिव्यक्ति करता है।

उत्तर- 'गीत गाने दो मुझे' में कवि निराला का स्वर प्रगतिवादी विचारधारा की अभिव्यक्ति करता है, जिसमें वे पूंजीवादी-सामंती व्यवस्था के शोषण के विरुद्ध अपनी आवाज़ मुखर करते हैं।

प्रश्न 3. 'पाथेय' शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर - 'पाथेय' शब्द का अर्थ है संबल अथवा सहारा।

प्रश्न 4. 'गीत गाने दो मुझे' कविता की भाषा क्या है?

उत्तर- 'गीत गाने दो मुझे' कविता की भाषा तत्सम-निष्ठ खड़ी बोली हिंदी है।

प्रश्न 5. 'गीत गाने दो मुझे' में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है। अनुप्रास अलंकार से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- वर्णो की आवृत्ति अनुप्रास अलंकार कहलाता है। 'गीत गाने दो मुझे' में 'ग' वर्ण की आवृत्ति से अनुप्रास अलंकार बन पड़ा है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. मुक्त छंद के प्रवर्तक कवि कौन माने गए हैं?

1. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
2. सुमित्रानंदन पंत
3. महादेवी वर्मा
4. जयशंकर प्रसाद

प्रश्न 2. निराला द्वारा संपादित पत्रिका कौन सी है?

1. सैनिक
2. विशाल भारत
3. प्रतीक
4. मतवाला

प्रश्न 3. कवि निराला के बचपन का नाम क्या था?

1. चंद्र कुमार
2. राकेश कुमार
3. सूर्य कुमार
4. शशि कुमार

प्रश्न 4. 'आ रहा है काल देखो' पंक्ति में 'काल' का अभिप्राय है-

1. समय
2. कल
3. भविष्य
4. मृत्यु

प्रश्न 5. 'भर गया है ज़हर से' में ज़हर से कवि का तात्पर्य है-

1. आघात
2. निराशा
3. संघर्ष
4. चोट

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1. - 1
2. - 4
3. - 3
4. - 4
5. - 2

Jharkhandlab.com

(ख) सरोज स्मृति

- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
(सन् 1898-1961)

पाठ परिचय

सरोज स्मृति कविता निराला की दिवंगत पुत्री सरोज पर केंद्रित है। यह कविता बेटी के दिवंगत होने पर पिता का विलाप है। पिता के इस विलाप में कवि को कभी शकुंतला की याद आती है। कभी अपनी स्वर्गीय पत्नी की। बेटी के रूप-रंग में पत्नी का रूप-रंग दिखाई पड़ता है, जिसका चित्रण निराला ने किया है। इस कविता में एक भाग्यहीन पिता का संघर्ष, समाज से उसके संबंध, पुत्री के प्रति बहुत कुछ न कर पाने का अकर्मण्यता बोध प्रकट हुआ है। कवि का जीवन- संघर्ष भी इस कविता के माध्यम से प्रकट हुआ है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सरोज के नव-वधू रूप का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर- नव- वधू के रूप में सरोज अत्यधिक सुंदर दिखाई दे रही थी। उस पर कलश का पवित्र जल छिड़का गया। उसके होठों पर मंद हंसी बिजली के समान प्रतीत होती थी। उसके हृदय में पति की सुंदर छवि विद्यमान थी। अपने दांपत्य जीवन की सुखद कल्पना में उसका अंग-अंग खिल रहा था।सरोज की आंखें लज्जा और संकोच के कारण झुकी थीं जिनमें एक अद्भुत चमक विद्यमान थी। उसके अधर कांप रहे थे। उसके सौंदर्य में रति का साकार रूप दिखाई दे रहा था।

प्रश्न 2. कवि को अपनी स्वर्गीया पत्नी की याद क्यों आई?

उत्तर- संतान के विवाह के अवसर पर यदि माता-पिता में से किसी एक का अभाव है तो उनका स्मरण आना स्वाभाविक बात है। कवि निराला ने अपनी पुत्री सरोज को माता-पिता दोनों का प्यार दिया।अपनी पुत्री के विवाह- आयोजन पर अपनी पत्नी की याद आना स्वाभाविक था। साथ ही सरोज में उन्हें अपनी पत्नी की ही प्रतिमूर्ति दिखलाई पड़ती है। सरोज के वधू रूप को देखकर उन्हें अपने यौवन की प्रथम गीति याद आ गई, जिसे उन्होंने अपनी प्रिया के साथ गाया था।

प्रश्न 3. 'आकाश बदल कर बना मही' में 'आकाश' और 'मही' शब्द किनकी ओर संकेत करते हैं।

उत्तर- 'आकाश' का रूप निराकार है तथा 'मही' साकार रूप में है। 'आकाश' शब्द से कवि निराला अपनी दिवंगत पत्नी के निराकार रूप तथा 'मही' शब्द से पुत्री सरोज के साकार रूप की ओर संकेत कर रहे हैं।

कवि निराला अपनी पत्नी की छवि सरोज में देखते हैं।एक निराकार है तथा दूसरा साकार। स्वर्गीया पत्नी आकाश की तरह निराकार है, तो पुत्री धरती की तरह साकार। 'आकाश' उनकी पत्नी और 'मही' उनकी पुत्री की ओर संकेत है।

प्रश्न 4. सरोज का विवाह अन्य विवाहों से किस प्रकार भिन्न था?

उत्तर- सरोज का विवाह अत्यंत सादगी पूर्ण तरीके से हुआ था। इसमें किसी भी प्रकार का प्रदर्शन या दिखावा नहीं था। विवाह का निमंत्रण पत्र किसी को नहीं भेजा गया, केवल कुछ स्वजन ही विवाह के अवसर पर उपस्थित थे। कवि निराला ने माता-पिता दोनों के द्वारा की जाने वाली सभी वैवाहिक रस्मों को स्वयं निभाया। ना तो कोई संगीत था और ना ही रात्रि जागरण। 'मौन' के बीच विवाह बड़ी सादगी तथा शांति के साथ संपन्न हुआ। विवाह के बाद पुत्री को दी जाने वाली कुल शिक्षा स्वयं पिता निराला ने दी तथा पुत्री के लिए पुष्प-सेज भी पिता ने ही तैयार की। वास्तव में सरोज का विवाह अन्य विवाहों से भिन्न था।

प्रश्न 5. 'शकुंतला' के प्रसंग के माध्यम से कवि क्या संकेत करना चाहता है?

उत्तर- 'शकुंतला' कालिदास कृत 'अभिज्ञान- शाकुंतलम्' नाटक की नायिका है, जिसका लालन-पालन कण्व ऋषि ने अपने आश्रम में किया था। मातृहीना शकुंतला का विवाह कण्व ऋषि के हाथों बड़े ही सादगी से संपन्न हुआ था। कवि ने भी अपनी पुत्री सरोज के विवाह में माता-पिता दोनों का दायित्व स्वयं निभाया था। शकुंतला के प्रसंग के माध्यम से कवि मातृहीना पुत्री सरोज की ओर संकेत करना चाहता है।

प्रश्न 6. 'वह लता वहीं की, जहां कली तू खिली' पंक्ति के द्वारा किस प्रसंग को उद्घाटित किया गया है?

उत्तर- सरोज की माता की मृत्यु के बाद उसका लालन-पालन ननिहाल में हुआ। सरोज ने वहीं अपना होश संभाला और वहीं की मिट्टी में पलकर बड़ी हुई। कवि ने सरोज की माता को 'लता' तथा सरोज को 'कली' कहा है। वह कली सरोज वहीं पर खिली, जहां की लता उसकी मां थी।

प्रश्न 7. कवि ने अपनी पुत्री का तर्पण किस प्रकार किया?

उत्तर- भारतीय संस्कृति में दिवंगत व्यक्ति की आत्मा की शांति के लिए विधिवत तर्पण करने का विधान है। तर्पण वस्तुतः धन-धान्य का अर्पण होताहै। कवि अपनी पुत्री को सामान्य तर्पण नहीं देता। वह उसे अपने समस्त सद्कर्मों का तर्पण देता है।

प्रश्न 8 निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए-

(क) नत नयनों से आलोक उत्तर
(ख) शृंगार, रहा जो निराकार
(ग) पर पाठ अन्य यह, अन्य कला
(घ) यदि धर्म, रहे नत सदा माथ

उत्तर - (क) विवाह के अवसर पर लज्जावश सरोज की झुकी हुई आंखों से दिव्य प्रकाश आलोकित हो रहा था। मानो दांपत्य जीवन की भावी सुखद कल्पनाओं की ज्योति उसके नेत्रों में जगमगा रही हो।

(ख) कवि सरोज के वधू रूप में उस सिंगार का दर्शन करता है, जो आकारहीन होकर भी उसके काव्य रस की उमड़ती हुई धारा के समान प्रस्फुटित हो रहा था। कवि अपनी पुत्री को देखकर अपने यौवन काल के दिनों को स्मरण करता है।

(ग) कवि निराला पुत्री सरोज को उसी प्रकार शिक्षा दे रहे हैं जैसे कण्व ऋषि ने शकुंतला के विदाई के अवसर पर दी थी, परंतु उसे स्मरण हो आता है कि उसके द्वारा दी जाने वाली शिक्षा कण्व ऋषि से भिन्न है, क्योंकि उसकी पुत्री सरोज की स्थिति शकुंतला से भिन्न है।

jharkhandlab.com

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

(क) **देखा मैंने, वह मूर्ति-धीति**
मेरे वसंत की प्रथम- गीति-
शृंगार, रहा जो निराकार,
रस कविता में उच्छवसित-धार।

उत्तर- **संदर्भ-** प्रस्तुत काव्यांश सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की कविता 'सरोज- स्मृति' से उद्धृत है। यह कविता 'अनामिका' काव्य संग्रह में संकलित है।

प्रसंग - प्रस्तुत काव्यांश में कवि निराला अपनी दिवंगत पुत्री सरोज के आडंबरविहीन विवाह के क्षणों को याद कर रहे हैं। उन्हें अपनी मृत पत्नी का निराकार रूप पुत्री में साकार होता दिख रहा है।

व्याख्या-कवि निराला को पुत्री सरोज के विवाह के समय वधू रूप में सज्जित पुत्री में अपनी पत्नी की छवि दिखाई पड़ती है। पुत्री में पत्नी की प्रतिबिंबित छवि को देखकर उन्हें जीवन -वसंत का प्रथम गीत स्मरण हो आता है। कवि को लगता है कि जो श्रृंगार-रस उनकी कविताओं में वेग से प्रवाहित होता रहा था, निराकार रूप में, वही सरोज के रूप में साकार हो गया था। वास्तव में निराला जिस सौंदर्य का दर्शन सरोज में कर रहे थे, वह उनकी स्वर्गीया पत्नी के निराकार रूप को साकार कर रहा था।

विशेष -

1. कविता आत्मकथात्मक है जिसमें स्मृतियों के माध्यम से जीवन गाथा प्रस्तुत किया गया है।
2. कविता की भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली हिंदी है।
3. कविता मुक्त छंद में लिखी गई है।

(ख) हो इसी कर्म पर वज्रपात
यदि धर्म, रहे नत सदा माथ
इस पथ पर, मेरे कार्य सकल
हों भ्रष्ट शीत के-से शतदल।
कन्ये, गत कर्मों का अर्पण
कर, करता मैं तेरा तर्पण।

संदर्भ-पूर्ववत्

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियां 'सरोज-स्मृति' का अंतिम अंश है। यहां कवि ने अपने हृदय की संपूर्ण करुणा अपनी पुत्री के प्रति अर्पित की है। शोक संतप्त पिता अपने समस्त पुण्य कर्मों से पुत्री का तर्पण करता है।

व्याख्या-सरोज कवि निराला के जीवन की एक मात्र सहारा थी। उसके मृत्यु ने कवि को झंझोड़ दिया। कर्मवादी निराला को नियति से हारना पड़ा। पितृ धर्म का पालन न कर पाने की पीड़ा से कवि व्याकुल हो उठे हैं। निराला आजीवन कविकर्म का पालन करते रहें, परंतु अपनी पुत्री के लिए ना तो समय दे सके ना ही धन की उचित व्यवस्था कर सके। बीमार पुत्री का इलाज और देखभाल न कर पाने की विवशता पर उन्हें पश्चाताप है। वे अपने समस्त रचना कर्म पर वज्रपात की बात करते हैं। जिस कवि कर्म के कारण पितृधर्म के समक्ष उन्हें नतमस्तक होना पड़ा वैसे कर्म नष्ट हो जाएं यही कवि की कामना है। वे कहते हैं, उनके सारे कार्य नष्ट हो जाएं, जैसे तुषारपात से शीत ऋतु में कमल नष्ट हो जाता है। निराला का मानना है कि वह कवि-कर्म किस काम का जो पिता -धर्म के पालन में बाधा बन जाए। कवि सरोज को 'कन्ये' कहकर संबोधित करते हुए कहते हैं कि गत कर्मों का अर्पण कर मैं तुम्हारा तर्पण करता हूं। कवि को अपने गत कर्मों के पुण्यफल में गहरी आस्था है क्योंकि उनके गतकर्म जातीय जीवन के उद्धार के लिए समर्पित रहे हैं अतः वे पवित्र कर्म थे। कवि की वही जमापूंजी है। उसी कर्म को अर्पित कर वे पुत्री सरोज का तर्पण करते हैं।

विशेष-

1. सरोज स्मृति कविता एक आत्माभिव्यक्तिमूलक प्रगीतात्मक रचना है।
2. करुण रस की सृष्टि के साथ कथा का विस्तार हुआ है।

अति लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की कविता 'सरोज स्मृति' की मूल संवेदना क्या है?

उत्तर - 'सरोज स्मृति' कविता कवि की दिवंगता पुत्री सरोज की स्मृतियों पर आधारित है। यह एक शोकगीत है जिसमें कवि निराला ने अपनी पुत्री की असामयिक मृत्यु से उत्पन्न पीड़ा एवं एक पिता के हृदय का प्रलाप व्यक्त किया है। इस कविता में कवि निराला की वेदना, जीवन संघर्ष और आत्म चिंतन झलकता है।

प्रश्न 2. 'मुझ भाग्यहीन की तू संबल' पंक्ति में निराला की वेदना व्यक्त हुई है, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - निराला कर्मवादी थे,भाग्य को महत्व नहीं देते थे। जीवन भर संघर्ष किया, कभी हार नहीं मानी, परंतु एकमात्र पुत्री सरोज की आकस्मिक और अकाल मृत्यु ने उन्हें घायल कर दिया। भाग्य को महत्त्व न देने वाले निराला पुत्री की मृत्यु के पश्चात अपने को भाग्यहीन मान बैठे। इस शब्द में निराला की गहरी पीड़ा व्यक्त हुई है।

प्रश्न 3. 'सरोज -स्मृति' एक शोक गीत है। शोकगीत से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - शोकगीत अर्थात किसी आत्मीय जन के मृत्यु पर किया गया प्रलाप। 'सरोज -स्मृति' कविता हिंदी में अपने ढंग का एकमात्र शोकगीत है। यह कवि निराला की दिवंगत पुत्री सरोज पर केंद्रित है। इस गीत को उन्होंने सरोज की अकाल मृत्यु के शोक में लिखा था।

प्रश्न 4. कविता में शकुंतला का प्रसंग कवि ने उठाया है।शकुंतला कौन है?

उत्तर- शकुंतला मेनका और विश्वामित्र की पुत्री है जिसका लालन-पालन कण्व ऋषि के आश्रम में होता है। कवि ने मातृहीना पुत्री सरोज की तुलना मातृस्नेह से वंचित कन्या शकुंतला से की है।

Jharkhandlab.com

प्रश्न 5. कवि निराला मुक्त छंद के प्रवर्तक माने जाते हैं। मुक्त छंद से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- जिस छंद में वर्णों और मात्राओं का बंधन नहीं होता है, उसे मुक्त छंद कहते हैं। चरणों की अनियमित, असमान, स्वच्छंद गति तथा भाव के अनुकूल यति विधान ही मुक्त छंद की विशेषताएं हैं। हिंदी में मुक्त छंद की परंपरा सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने आरंभ की थी।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'सरोज-स्मृति' कविता की रचना किस वर्ष हुई?

1. 1935 2. 1936
3. 1937 4. 1938

प्रश्न 2. सरोज का विवाह आमूल नवल क्यों है?

1. सादगी के कारण
2. पिता द्वारा पुष्प सेज तैयार करने के कारण
3. आत्मीय जनों की अनुपस्थिति के कारण
4. ये सभी

प्रश्न 3. सरोज के सौंदर्य में किसका रूप नजर आता है?

1. कवि की पत्नी का 2. कवि की माता का
3. किसी अप्सरा का 4. इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 4. सरोज के विवाह पर कौन आमंत्रित थे?

1. समाज 2. मित्र बंधु
3. आत्मीय जन 4. कोई नहीं

प्रश्न 5. शकुंतला कौन थी?

1. कविता की नायिका
2. अभिज्ञान शाकुंतलम् की नायिका
3. कवि की पत्नी
4. सरोज की नानी

प्रश्न 6. सरोज का पालन पोषण कहां हुआ था?

1. पिता के घर में 2. ननिहाल में
3. दादी के पास 4. अनाथ आश्रम में

प्रश्न 7. 'जलद' शब्द का पर्यायवाची क्या होगा?

1. जल 2. जलना
3. बादल 4. जहाज

प्रश्न 8. 'उर' शब्द का क्या अर्थ है?

1. उड़ना 2. उतरना
3. ऊंचाई 4. ह्रदय

प्रश्न 9. 'भर जलद धरा को ज्यों अपार' में कौन- सा अलंकार है?

1. पुनरुक्तिप्रकाश 2. रूपक
3. उत्प्रेक्षा 4. इनमें से कोई नहीं

प्रश्न10. 'कांपा अधरों पर थर- थर- थर' में कौन- सा अलंकार है?

1. पुनरुक्तिप्रकाश 2. रूपक
3. उत्प्रेक्षा 4. अतिशयोक्ति

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1. - 1 2. - 4
3. - 1 4. - 4
5. - 2 6. - 2
7. - 3 8. - 4
9. - 3 10. - 1

Jharkhandlab.com

पाठ – 3 | (क) यह दीप अकेला

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'
(सन् 1911-1987)

jharkhandlab.com

कवि परिचय

अज्ञेय का मूल नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन है। उन्होंने अज्ञेय नाम से काव्य रचना की। उनकी प्रारंभिक शिक्षा अंग्रेजी और संस्कृत में हुई। हिंदी उन्होंने बाद में सीखी। वे आरंभ में विज्ञान के विद्यार्थी थे। क्रांतिकारी आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हें अपना अध्ययन बीच में ही छोड़ना पड़ा। वे चार वर्ष जेल में रहे तथा दो वर्ष नजरबंद।

अज्ञेय ने देश-विदेश की अनेक यात्राएं कीं। उन्होंने कई नौकरियां की और छोड़ीं। कुछ समय तक जोधपुर विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर भी रहे। वे हिंदी के प्रसिद्ध समाचार साप्ताहिक 'दिनमान' के संस्थापक संपादक थे। इसके अलावा उन्होंने 'सैनिक, विशाल 'भारत', 'प्रतीक', 'नया प्रतीक' आदि अनेक साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया। उन्होंने 'सप्तक' परंपरा का सूत्रपात करते हुए 'तार सप्तक', 'दूसरा सप्तक', 'तीसरा सप्तक' का संपादन किया। प्रत्येक सप्तक में सात कवियों की कविताएं संग्रहित हैं जो शताब्दी के कई दशकों की काव्य-चेतना को प्रकट करती हैं।

अज्ञेय ने कविता के साथ कहानी, उपन्यास, यात्रा-वृतांत, निबंध, आलोचना आदि अनेक साहित्यिक विधाओं में लेखन कार्य किया। 'शेखर- एक जीवनी', 'नदी के द्वीप', 'अपने-अपने अजनबी' (उपन्यास), 'अरे यायावर रहेगा याद', 'एक बूँद सहसा उछली' (यात्रा- वृतांत), 'त्रिशंकु', 'आत्मनेपद' (निबंध), 'परंपरा', 'कोठरी की बात', 'शरणार्थी', 'जय दोल' और 'ये तेरे प्रतिरूप' (कहानी संग्रह) प्रमुख रचनाएं हैं।

अज्ञेय प्रकृति-प्रेम और मानव मन के अंतर्द्वंदों के कवि हैं। उनकी कविता में व्यक्ति की स्वतंत्रता का आग्रह है और बौद्धिकता का विस्तार भी। उन्हें अनेक पुरस्कार मिले हैं, जिनमें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार', 'भारत भारती सम्मान' और 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्रमुख हैं।

पाठ परिचय

यह दीप अकेला कविता में अज्ञेय ऐसे दीप की बात करते हैं जो स्नेह भरा है, गर्व भरा है, मदमाता भी है किंतु अकेला है। कवि कहता है कि इस अकेले दीप को भी पंक्ति में शामिल कर लो। पंक्ति में शामिल करने से उस दीप की महत्ता एवं सार्थकता बढ़ जाएगी। दीप सब कुछ है, सारे गुण एवं शक्तियां उसमें हैं, उसकी व्यक्तिगत सत्ता भी कम नहीं है फिर भी पंक्ति की तुलना में वह एक है, एकाकी है। दीप का पंक्ति या समूह में विलय ही उसकी ताकत का, उसकी सत्ता का सार्वभौमीकरण है, उसके लक्ष्य एवं उद्देश्य का सर्वव्यापीकरण है। ठीक यही स्थिति मनुष्य की भी है। व्यक्ति सब कुछ है, सर्वशक्तिमान है सर्वगुण- संपन्न है फिर भी समाज में उसका विलय समाज के साथ उसकी अंतरंगता से समाज मजबूत होगा, राष्ट्र मजबूत होगा। इस कविता के माध्यम से अज्ञेय ने व्यक्तिगत सत्ता को सामाजिक सत्ता के साथ जोड़ने पर बल दिया है। दीप का पंक्ति में विलय व्यष्टि का समष्टि में विलय है और आत्म- बोध का विश्वबोध में रूपांतरण।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न1. 'दीप अकेला' के प्रतीकार्थ को स्पष्ट करते हुए यह बताइए कि उसे कवि ने स्नेहभरा, गर्वभरा है, मदमाता क्यों कहा है?

उत्तर- कवि अज्ञेय ने प्रस्तुत कविता में ऐसे दीप की बात कही है जो स्नेहभरा है, गर्वभरा है, मदमाता भी है, किंतु अकेला हैं। कवि ने 'दीप' के माध्यम से व्यक्ति की बात की है। यह व्यक्ति संगठन से दूर अकेले में जी रहा है। इस एक व्यक्ति में सभी गुण व शक्तियाँ मौजूद हैं। उसकी व्यक्तिगत सत्ता कम नहीं है, फिर समूह की तुलना में वह एक है, एकाकी है। यदि दीप का पंक्ति या समूह में विलय कर लिया जाए तो उसकी ताकत और सत्ता का सार्वभौमिकरण हो जाए। इससे व्यक्ति के लक्ष्य एवं उद्देश्य का भी सर्वव्यापीकरण संभव है।

प्रश्न 2. यह दीप अकेला है 'पर इसको भी पंक्ति को दे दो' के आधार पर व्यष्टि का समष्टि में विलय क्यों और कैसे संभव है?

उत्तर- कवि अज्ञेय ने 'यह दीप अकेला' में दीप को व्यक्ति का प्रतीक माना है और पंक्ति को समाज का प्रतीक। समाज का निर्माण व्यक्ति से होता है। व्यक्ति का हित समाज के साथ है। व्यष्टि की शक्ति समष्टि में अंतर्निहित होती है। समष्टि में विलय से ही व्यष्टि की सार्थकता है। कवि दीप (व्यक्ति या व्यष्टि) की विशेषताओं से परिचित है। वह जानता है कि दीप अकेला भी आत्मविश्वास को जीवित रख सकता है, किंतु उस आत्मविश्वास की सार्थकता पंक्ति के साथ मिल जाने से है। पंक्ति में जाकर ही दीप अपने प्रकाश को दूसरे के हित में लगा सकता है। कभी व्यक्ति की उपलब्धियों के व्यापक उपयोग के लिए 'दीप' को 'पंक्ति' में देना चाहता है, इसलिए वह व्यक्ति को समाज के साथ जोड़ना चाहता है।

प्रश्न 3. 'गीत' और 'मोती' की सार्थकता किससे जुड़ी है?

उत्तर- गीत की सार्थकता जन से जुड़ी है।यदि कोई गीत जन-जन का न बन पाए तो वह गीत निरर्थक हो जाता है। मोती की सार्थकता पनडुब्बा से जुड़ी है। यदि मोती को गहरे जल पनडुब्बा बाहर न निकाले तो मोती की ओर कौन आकृष्ट होगा।

प्रश्न 4. 'यह अद्वितीय - यह मेरा यह मैं स्वयं विसर्जित' - पंक्ति के आधार पर व्यष्टि के समष्टि में विसर्जन की उपयोगिता बताइए।

उत्तर- कवि के अनुसार अहंकार का मद हमें अपनों से अलग कर देता है। अतः कवि ने अहंकार भाव को नष्ट करने के लिए 'मैं', 'मेरा' भाव को विसर्जित यानी त्याग देने को कहा है। मनुष्य द्वारा अहंकार त्याग देने पर उसका समूह में विलय हो जाता है। इससे व्यक्ति की सत्ता का सार्वभौमिकरण हो जाता है। व्यक्ति के लक्ष्य व उद्देश्यों का सर्वव्यापीकरण हो जाता है। व्यक्ति का आत्मबोध विश्वबोध में बदल जाता है।

प्रश्न 5. 'यह मधु है...तकता निर्भय'- पंक्तियों के आधार पर बताइए कि 'मधु', 'गोरस' और 'अंकुर' की क्या विशेषता है?

उत्तर- कवि ने अपनी कविता में 'मधु', 'गोरस' और 'अंकुर' की जो विशेषताएँ बताई हैं, वे ये हैं-

मधु- मधु में संचित होने की विशेषता है। वह संचित अवस्था में मिठास से भरपूर होता है।

गोरस - गोरस अर्थात् दूध, दही में अमृतत्व की विशेषता होती है। यह पवित्र होता है।

अंकुर - अंकुर में धरती को फोड़ने की ताकत होती है। वह सूर्य को देखने के लिए निर्भय हो उठता है।

प्रश्न 6. भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

(क) "यह प्रकृत, स्वयंभू ..... शक्ति को दे दो।"

उत्तर- दीप यानी व्यक्ति प्राकृतिक रूप में होता है। वह स्वयं पैदा होने वाला है। वह स्वयं ब्रह्मा है। इसमें सभी प्रकार की शक्तियाँ विद्यमान हैं। अतः इसे भी दस हजार से युक्त शक्ति को दे दो अर्थात् व्यक्ति का समष्टि में विलय कर दो।

(ख) 'यह सदा द्रवित, चिर-जागरूक....., चिर-अखंड अपनापा।"

उत्तर- व्यक्ति सब कुछ है, सर्वशक्तिमान है, सर्वगुण सम्पन्न है। समाज में उसका विलय होने से तथा समाज के साथ उसकी अंतरंगता से समाज मजबूत होगा,राष्ट्र मजबूत होगा।

(ग) **"जिज्ञासु, प्रबुद्ध, सदा श्रद्धामय, इसको भक्ति को दे दो।"**

उत्तर- व्यक्ति सदैव जिज्ञासु है, वह परम सत्ता में विलीन हो जाना चाहता है, उसमें समाज के प्रति श्रद्धा है। आत्मबोध को विश्वबोध में बदल देने का उसमें गुण है। अतः उसे भक्ति यानी राष्ट्र-प्रेमभाव का अवसर दिया जाए।

प्रश्न-7. 'यह दीप अकेला' एक प्रयोगवादी कविता है। इस कविता के आधार पर लघु मानव के अस्तित्व और महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- हिंदी साहित्य इतिहास में समय-समय पर विभिन्न साहित्यिक आंदोलन चलते रहे, उन्हीं में से एक आंदोलन का नाम प्रयोगवाद काव्यान्दोलन है। प्रयोगवादी कवियों में 'अज्ञेय' जी का नाम सर्वोपरि है। प्रयोगवादी कविता में भय, दुख, संघर्ष, संत्रास से पीड़ित व्यक्ति के अस्तित्व को लेकर सदैव प्रश्नचिह्न लगे रहे हैं। अज्ञेय जी ने व्यक्तिवादी विचारों को समाजवादी विचारधारा में परिवर्तित करने पर बल देने के लिए 'दीप' का प्रतीक रूप में प्रयोग किया है। उन्होंने 'दीप' में समूह की सभी विशेषताओं को देखते हुए उसे भी समूह में शामिल कर लेने का आग्रह किया है। सत्य ही है कि व्यक्ति से ही समाज का निर्माण होता है। अकेला व्यक्ति सर्वगुण सम्पन्न होने पर भी समाज को दिशाबोध कराने में असमर्थ होता है, जबकि व्यक्ति समाज में सम्मिलित होकर सम्पूर्ण समाज को एक दिशा देने में सक्षम होता है। कवि का 'लघु मानव' से तात्पर्य व्यक्ति से है। व्यक्ति समाज में अपना स्थान निर्धारित करके 'महामानव' बन जाता है। कवि ने इसी विचार को आत्मबोध से विश्वबोध की ओर अग्रसर होना कहा है। लघुमानव से ही महामानव बना जा सकता है।

8. कविता के लाक्षणिक प्रयोगों का चयन कीजिए और उनमें निहित सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- अज्ञेय जी की यह कविता लाक्षणिक है। इसमें 'दीप' के माध्यम से व्यक्ति में असीम संभावनाओं को व्यक्त किया है। 'गर्वभरा, मदमाता' से स्पष्ट है कि कवि ने दीप का मानवीकरण कर दिया है। यह भी कि व्यक्ति में संवेदनाएं हैं। अज्ञेय जी ने कविता के माध्यम से व्यक्तिगत सत्ता को सामाजिक सत्ता के साथ जोड़ने पर बल दिया है।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

यह मधु- स्वयं काल की मौना का युग- संचय,

यह गोरस- जीवन-कामधेनु का अमृत-पूत पय,

यह अंकुर-फोड़ धरा को रवि को तकता निर्भय,

यह प्रकृत, स्वयंभू, ब्रह्म, अयुतः इसको भी शक्ति को दे दो।

यह दीप, अकेला स्नेह भरा

है गर्व भरा मदमाता, पर इसको भी पंक्ति को दे दो।

संदर्भ: प्रस्तुत काव्यांश **'यह दीप अकेला'** शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता प्रयोगवादी कवि सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय हैं। यह कविता **'बावरा अहेरी'** काव्य संग्रह में संकलित है।

प्रसंग: प्रस्तुत काव्यांश में कवि अज्ञेय ने अपार संभावनाओं से युक्त एक अकेले व्यक्ति का समाज निर्माण में विशिष्ट योगदान को अपने शब्दों में व्यक्त किया है।

व्याख्या: प्रस्तुत काव्यांश में दीप के प्रतीकात्मक माध्यम से व्यक्ति को 'मधु', 'गोरस', 'अंकुर' तथा 'ब्रह्म' आदि के प्रतीकों से संबद्ध करते हुए समाज में उसकी महत्ता को प्रतिपादित किया गया है। कवि के अनुसार मनुष्य का व्यक्तित्व मधु के समान है, जो काफी समय तक संचित करने के पश्चात ही सामने आता है, जिसका संचय मधुरता के टोकरे या पिटारे में किया जाता है। मनुष्य का यह व्यक्तित्व कामधेनु के अमृत रूपी पवित्र दूध के समान है। जिस प्रकार कामधेनु का दूध पावन परम शक्ति प्रदान करता है ठीक उसी प्रकार मनुष्य अपने व्यक्तित्व के शक्तिवर्द्धक गुणों से समाज का हित करता है। मनुष्य का यह व्यक्तित्व अंकुर की तरह समस्त बाधाओं को तोड़कर बाहर आने की क्षमता रखता है। यह मनुष्य प्रकृति से ही उत्पन्न है। मनुष्य पृथ्वी की छाती को फाड़कर उसमें निहित संपदा को अर्जित करते हुए सूर्य की ओर देखता है।

व्यक्ति प्राकृत, स्वयंभू, ब्रह्मा के सदृश है तथा अन्य जीवो से पृथक है। उसकी सत्ता सबसे अलग है। जैसे ब्रह्मा की उत्पत्ति स्वयं हुई है तथा उन्होंने अपनी शक्ति से सृष्टि के सृजन के लिए रचनात्मक कार्य किए, वैसे ही व्यक्ति को समष्टि अर्थात समाज की शक्ति की आवश्यकता है। भले ही उसमें शक्ति निहित है, वह विशिष्ट है, किंतु उसकी शक्ति को क्रियान्वित करने के लिए उसे समाज रुपी शक्ति के साथ जोड़ना आवश्यक है।

कवि का मानना है कि व्यष्टि का निर्माण मधु, दूध तथा अंकुर के समान स्वयं होता है। जैसे इनकी अंतर्निहित

Jharkhandboard.com

शक्ति के कारण ही इनका अस्तित्व है, वैसे ही व्यक्ति में असीम शक्ति निहित है, किंतु उसकी शक्ति की सार्थकता केवल समष्टि के साथ है। व्यष्टि अपने आप में विशिष्ट है, किंतु उसकी विशेषता तभी सार्थक है, जब वह समष्टि का एक विशेष अंग बने।

विशेष:

1. यह एक प्रतीकात्मक कविता है जो व्यष्टिगत होते हुए भी समष्टि में व्याप्त है।
2. कवि सामूहिकता तथा संगठन में ही व्यक्ति की पूर्णता मानता है।
3. खड़ी बोली के शब्दों में सरल, सहज व सुबोधगम्य अभिव्यक्ति हुई है। तत्सम शब्दों की भी बहुलता है।
4. 'दीप' व्यक्ति का तथा 'पंक्ति' संगठन- समूह, समाज का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।
5. तुकांत शैली में मुक्त छंद की रचना है।
6. कवि समाज के प्रत्येक व्यक्ति का महत्व स्वीकारते हुए समाज से संबद्ध होने को प्रेरित करता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. कवि अज्ञेय किस काव्य-धारा के जनक कवि माने जाते हैं?

1. छायावाद
2. हालावाद
3. प्रगतिवाद
4. प्रयोगवाद

प्रश्न 2. अज्ञेय को 'कितनी नावों में कितनी बार' के लिए में किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया था?

1. साहित्य अकादमी पुरस्कार
2. हिंदी साहित्य पुरस्कार
3. ज्ञानपीठ पुरस्कार
4. इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 3. अज्ञेय का प्रथम उपन्यास कौन सा है?

1. शेखर एक जीवनी
2. नदी के द्वीप
3. अपने अपने अजनबी
4. आत्मनेपद

प्रश्न 4. 'यह दीप अकेला' कविता में कवि व्यक्ति को किससे जोड़ना चाहता है?

1. समाज से
2. व्यक्ति से
3. सपनों से
4. परिश्रम से

प्रश्न 5. 'यह दीप अकेला' कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

1. व्यक्ति समाज के बिना अधूरा है
2. समाज व्यक्ति के बिना सामर्थ्यवान नहीं हो सकता
3. व्यक्ति की शक्ति की सार्थकता समाज के साथ जुड़ने में ही है
4. उपर्युक्त सभी

प्रश्न 6. 'यह दीप अकेला' कविता किस काव्य संग्रह से ली गई है?

1. बावरा अहेरी
2. हरी घास पर क्षण भर
3. नदी के द्वीप
4. कितनी नावों में कितनी बार

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1. - 4
2. - 3
3. - 1
4. - 1
5. - 4
6. - 1

Jharkhandlab.com

(ख) मैंने देखा, एक बूँद

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'
(सन् 1911-1987)

पाठ परिचय

मैंने देखा, एक बूँद कविता में अज्ञेय ने समुद्र से अलग प्रतीत होती बूँद की क्षणभंगुरता को व्याख्यायित किया है। यह क्षणभंगुरता बूँद की है, समुद्र की नहीं। बूँद क्षण भर के लिए ढलते सूरज की आग से रंग जाती है। क्षणभर का यह दृश्य देखकर कवि को एक दार्शनिक तत्व भी दिखने लग जाता है। विराट के सम्मुख बूँद का समुद्र से अलग दिखना नश्वरता के दाग से, नष्ट होने के बोध से मुक्ति का एहसास है। इस कविता के माध्यम से कवि ने जीवन में क्षण के महत्व को क्षणभंगुरता को प्रतिष्ठापित किया है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'सागर' और 'बूँद' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर- 'बूँद' जीवात्मा का प्रतीक है और 'सागर' परमात्मा का प्रतीक। बूँद क्षणभंगुर होता है और सागर शाश्वत। बूँद की सार्थकता सागर के साथ संबद्ध होने में ही है।

2. 'रंग गई क्षण-भर ढलते सूरज की आग से' पंक्ति के आधार पर बूँद के क्षण भर रंगने की सार्थकता बताइए।

उत्तर- बूँद क्षणभर के लिए ढलते सूरज की आग में रंग जाती है। इसका तात्पर्य विराट के सम्मुख बूँद का समुद्र से अलग नश्वरता के दाग से, नष्टशीलता के बोध से मुक्ति का अहसास है। बूँद की सार्थकता उसके नश्वर जीवन में है।

प्रश्न 3. 'सूने विराद के सम्मुख ..... दाग से!'- पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- इस काव्य-पंक्ति के माध्यम से कवि ने अपना दर्शन प्रस्तुत किया है कि विराट के सम्मुख बूँद का समुद्र से अलग दिखना नश्वरता के बोध से मुक्ति का अहसास है।

प्रश्न 4. 'क्षण के महत्त्व' को उजागर करते हुए कविता का मूल भाव लिखिए।

उत्तर- **'मैं ने देखा, एक बूँद'** कविता का मूल भाव बूँद के माध्यम से जीवन की क्षणभंगुरता को प्रतिष्ठित करना है। क्षणभंगुरता बूँद की है, समुद्र की नहीं। इस तरह कवि ने जीवन में क्षण को महत्त्व दिया है।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

मैंने देखा
एक बूँद सहसा
उछली सागर के झाग से;
रंग गई क्षणभर
ढलते सूरज की आग से।
मुझको दिख गया:
सुने विराट के सम्मुख
हर आलोक -छुआ अपनापन
है उन्मोचन
नश्वरता के दाग से!

संदर्भ: प्रस्तुत काव्यांश **मैंने देखा एक बूँद** कविता से उद्धृत है। यह कविता अज्ञेय की 'अरी ओ करुणा प्रभामय' काव्य -संग्रह से ली गई है।

प्रसंग: अज्ञेय ने क्षण के महत्व तथा क्षणभंगुर विश्व की चेतना को एक छोटी सी कविता में स्पष्ट किया है। कवि बूँद के माध्यम से लघु के विराट में विलीन होने की प्रक्रिया को अपने शब्दों से अभिव्यक्त कर रहा है।

व्याख्या: कवि ने सागर की लहरों के झाग से उछलती हुई एक बूँद को देखा। वह ढलते हुए सूरज की चमक से क्षण भर में ही रंग गई और कुछ क्षणों के लिए सूर्य के आलोक के स्पर्श से स्वर्णिम हो गई। इस दृश्य को देखकर कवि को एक दार्शनिक तत्व का ज्ञान हुआ, जिससे उसने यह जान लिया कि विराट के सम्मुख बूँद का समुद्र से अलग दिखना नश्वरता के दाग से नष्ट होने के बोध से मुक्ति है। क्षणभर में वह पुनः उसी विशाल सागर में समा गई।

बूँद सागर में मिलकर अपना अस्तित्व खो देती है तथा सागर से अलग हो अपने अस्तित्व को धारण करती है। बूँद का सागर में मिलना ही उसकी मुक्ति है। कवि आत्मज्ञानी है। उसने 'बूँद' और 'सागर' के माध्यम से आत्मा और ब्रह्म के स्वरूप को बताया है। जैसे बूँद का अपनापन सागर से होता है, वैसे ही आत्मा का अपनापन ब्रह्म से होता है। कुछ दिनों के लिए वह इस नश्वर संसार में शरीर धारण करके आता है उन्हें ज्ञान (ब्रह्म) के आलोक में अपनी आत्मा को प्रकाशित करने से उसी विराट (ब्रह्म) से उसकी एकाकारिता हो जाती है, जिससे उसे सांसारिक बंधनों एवं इस नश्वर संसार से मुक्ति मिल जाती है, क्योंकि इस संसार से परे शून्य में स्थित ब्रह्म से उसका अपनापन हो जाता है। वह सागर में बूँद की तरह ब्रह्मा से मिलकर उससे एकाकार हो जाता है।

विशेष:

1. अज्ञेय जी ने बड़े ही सरल शब्दों में आत्मानुभूति को अभिव्यक्त किया है।
2. कविता प्रकृति प्रेम परिलक्षित है।
3. दृष्टांत व अन्योक्ति अलंकार है।
4. बूँद क्षणभंगुर जीवन का प्रतीक है।
5. समुद्र विराट ब्रह्म का प्रतीक है।
6. कवि का दार्शनिक विचार उपस्थित हुआ है।
7. खड़ी बोली का प्रयोग है।

jharkhandlab.com

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'मैंने देखा, एक बूँद' कविता में कवि ने किसका महत्व प्रतिपादित किया है?

1. दिन का
2. क्षण का
3. बूँद का
4. स्वयं का

प्रश्न 2. 'मैंने देखा, एक बूँद' कविता का मूल भाव क्या है?

1. क्षण के महत्व और क्षणभंगुरता को अभिव्यक्त करना
2. संसार के सम्मुख व्यक्ति के अस्तित्व की सार्थकता सिद्ध करना
3. मनुष्य के जीवन में आए एक गरिमामय क्षण के महत्व को प्रतिपादित करना
4. उपर्युक्त सभी

प्रश्न 3. जब मनुष्य रूपी बूँद सागर रुपी संसार से पृथक होती है तो विराट सत्ता के सम्मुख उसे क्या महसूस होता है?

1. वह मरणशीलता के बंधनों से मुक्त हो जाती है
2. वह इस क्षण को गरिमामय मानती है
3. बूँद को क्षणिक जीवन की सार्थकता का बोध होता है
4. उपर्युक्त सभी

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1. - 2
2. - 4
3. - 4

Jharkhandlab.com

पाठ – 4

(क) बनारस

केदारनाथ सिंह (सन् 1934-2018)

कवि परिचय

केदारनाथ सिंह का जन्म स्थान बलिया जिला के चकिया नामक ग्राम है। उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम. ए. किया। उसके बाद 'आधुनिक हिन्दी कविता में 'बिम्ब- विधान' विषय पर पीएच० डी० की। ये कुछ वर्ष तक गोरखपुर में प्राध्यापक के पद पर रहे। उसके बाद उन्होंने जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय भारतीय भाषा केंद्र में हिन्दी के प्रोफेसर पद से अवकाश ग्रहण किया। केदारनाथ सिंह 1950 ई० से लिखने लगे थे। उनकी काव्यकृतियाँ निम्नलिखित हैं- 'अभी बिल्कुल अभी', 'जमीन पक रही है', 'यहाँ से देखो' 'अकाल में सारस' 'उत्तर कबीर' इत्यादि। कवि मानवीय संवेदना और प्रकृति के कवि हैं। अपनी कविताओं में वे बिंब-विधान को अधिक महत्व देते हैं। संवेदना और विचार बोध उनकी कविता में साथ-साथ चलते हैं। उनके अनुसार जीवन के बिना प्रकृति और वस्तुएँ कुछ भी नहीं हैं। यह अनुभूति उन्हें आदमी के और निकट ले आती है। फलस्वरूप उनकी भाषा अधिक लचीली और पारदर्शी बन गयी है। उनके शिल्प में बातचीत की सहजता और अपनत्व सहज ही नजर आता है।

पाठ परिचय

बनारस कविता में वसंत के बहाने प्राचीनतम नगर बनारस की महान सांस्कृतिक परंपराओं, वहाँ के लोक-जीवन की विशिष्टताओं, प्राचीनकाल के गौरव और धरोहरों पर प्रकाश डालते हुए, वर्तमान की विडंबनाओं पर भी प्रकाश डाला गया है।

बनारस को शिव की नगरी एवं तीनों लोकों से न्यारा कहा जाता है। यहाँ से प्रवाहित होने वाली गंगा का विशेष महात्म्य है। यहाँ की गंगा से लोगों की विशिष्ट आस्था भी जुड़ी है। बनारस में गंगा, गंगा के घाट, मंदिर तथा घाटों के किनारे बैठे भिखारियों के कटोरों में अचानक उतरते बनारस के अक्स को कवि देखता है। कहा जाता है कि काशी और गंगा का सान्निध्य पाकर मनुष्य सीधे मोक्ष प्राप्त कर लेता है। यही कारण है कि जो जीवन-काल में बनारस नहीं जा पाते, उनके परिजन मृत्यु पश्चात उनका दाह संस्कार वहीं करते हैं। इस तरह बनारस में अहर्निश चिता भी जलती रहती है। गंगा में बँधी नाव, मंदिरों घाटों पर प्रज्ज्वलित दीप एवं हवन आदि से उठते धुएँ, यही तो बनारस की पहचान है। बनारस में हर काम अपनी रौ-एक विशिष्ट तरंग या गति में होता है। फिर भी बनारस स्वयं इन सबसे निर्लिप्त भी रहता है। बनारस का यही चरित्र है। कवि कहता है कि बनारस आस्था, भक्ति, श्रद्धा, वैराग्य, विरक्ति और विश्वास का अद्भुत संगम है। बनारस रहस्यपूर्ण शहर है और कवि इस कविता में उन रहस्यों को खोलते हैं। कविता की भाषा अत्यन्त सरल और सुबोध है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. बनारस में वसंत का आगमन कैसे होता है? और उसका क्या प्रभाव इस शहर पर पड़ता है?

उत्तर - बनारस में वसंत का आगमन बिना शोर शराबे का, अन्य जगहों से भिन्न रूप में होता है। वसंत के आगमन के साथ धूल का बवंडर उठने लगता है, जो लोगों के मुँह में पड़कर उनकी जीभों में किरकिराहट उत्पन्न करता है। वसंत के आने पर भी बनारस के मूलभूत स्वरूप, स्वभाव एवं संस्कार में कोई परिवर्तन नहीं आता।

प्रश्न 2. 'खाली कटोरों में वसंत का उतरना' से क्या आशय है?

उत्तर- वसंत के समय श्रद्धालुओं की भीड़ अधिक हो जाने के कारण भिखारियों के खाली कटोरे सिक्कों से भर जाते हैं। भिखारियों की इस खुशी की वसंत से तुलना की गई है। उनके लिए वसंत का यही एहसास है। 'खाली कटोरों में वसंत के उतरने' की यही अर्थ व्यंजना है।

प्रश्न 3. बनारस की पूर्णता और रिक्तता को कवि ने किस प्रकार दिखाया है?

उत्तर - बनारस मोक्ष की नगरी मानी जाती हैं। यहाँ मंदिरों और घाटों पर 'जलने-वाले 'दीये' उसकी पूर्णता के प्रतीक हैं तो दूसरी ओर अहर्निश के शवदाह और हवन के धुएँ-मृत्यु के द्वारा-पैदा की गयी रिक्तता को दर्शाते हैं।

प्रश्न 4. बनारस में धीरे-धीरे क्या होता है? धीरे-धीरे से कवि क्या कहना चाहता है ?

उत्तर- कवि के अनुसार बनारस में कोई आपा-धापी भाग-दौड़ नहीं है। यहाँ मनुष्य और प्रकृति के सारे क्रिया-कलाप धीरे-धीरे सम्पन्न होते हैं। यहाँ धूल धीरे-धीरे उतरती है। इस 'धीरे-धीरे' का मतलब इस शहर की आपाधापी से मुक्त जीवन की शांत और सुस्त चाल से है।

प्रश्न 5. धीरे -धीरे होने की सामूहिक लय में क्या क्या बँधा है ?

उत्तर- बनारस शहर में धीरे-धीरे होने की सामूहिक लय में यहाँ की पुरानी परम्पराएँ, धार्मिक, आध्यात्मिक आस्थाएँ, गंगा और उसके घाटों एवं मंदिरों की अवस्थिति नावों के बाँधने आदि की जगहें बँधी हुई हैं, अर्थात् उनके स्वरूप और स्वभाव में सहस्त्राब्दियों के बाद भी कोई परिवर्तन नहीं आया है।

प्रश्न 6. सई-साँझ घुसने पर बनारस की किन विशेषताओं का पता चलता है?

उत्तर - सई साँझ बनारस में प्रवेश करने पर इसकी अद्भुत बनावट पर ध्यान जाता है। यह शहर आधा जल में डूबा हुआ और आधा बाहर निकला हुआ प्रतीत होता है। शहर की आधी आबादी मंत्र जपती हुई, आधी पुष्पांजलि देती हुई, आधी आबादी चिताग्नि में जलती हुई, आधी आबादी शंख बजाती हुई, पूजा-पाठ करती हुई, पुष्प अर्पण करती हुई, आधी आबादी नींद में पड़ी हुई दिखाई पड़ती है। ध्यानपूर्वक देखने से यह शहर आधा ही नजर आता है और आधा छुपा ही रहता है।

Jharkhandlab.com

प्रश्न7. बनारस शहर के लिए जो मानवीय क्रियाएँ इस कविता में आई हैं, उनके व्यंजनार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कवि ने 'बनारस' कविता में बनारस शहर की प्रवृत्तियों का मानवीकरण किया है। वसंत के आगमन के साथ शहर की सुगबुगाहट मनुष्य के जगने की प्रवृत्ति को दर्शाती है। पुराने शहर की जीभ का किरकिराना तथा दशाश्वमेध घाट के आखिरी पत्थर का कुछ और मुलायम हो जाना, शहर की प्रवृत्तियों को मानवीय क्रियाओं में स्पष्ट करने का प्रयास है। कवि ने एक टाँग पर खड़े होकर अर्घ्य देते व्यक्ति की तरह शहर की प्रवृत्तियों को सामने लाकर बनारस की जीवन शैली को स्पष्ट करने का सुंदर प्रयोग किया है।

प्रश्न8. शिल्प-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

(क) 'यह धीरे-धीरे होना ....समूचे शहर को'

(ख) 'अगर ध्यान से देखो .... और आधा नहीं है'

(ग) 'अपनी एक टॉग पर ....बेखबर'

उत्तर-

(क)
- सहज तथा सामान्य बोलचाल की भाषा में बनारस के जीवन को दार्शनिकता के साथ अभिव्यक्त किया गया है।
- तत्सम तथा देशज शब्दों से युक्त सरल, भावपूर्ण तथा प्रवाहमयता का गुण भाषा में सर्वत्र दिख जाता है। 'धीरे-धीरे' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।
- प्रसाद गुण है।

(ख)
- सहज, सरल तथा आम बोल-चाल की व्यावहारिक शब्दावली।
- मुक्त छंद की कविता।
- प्रसाद गुण।
- बनारस की आध्यात्मिकता की ओर संकेत किया गया है।

(ग)
- बनारस श्रद्धा और भौतिकता, प्राचीनता और नवीनता का सुंदर समन्वय है।
- भाषा वैविध्यपूर्ण, बेखबर उर्दू शब्द, सहज, सरल आम बोल-चाल की भाषा।
- 'बिल्कुल बेखबर' में अनुप्रास अलंकार तथा 'एक टाँग पर खड़ा है यह शहर' में मानवीकरण अलंकार है।
- कवि ने सूक्ष्म तथा गंभीर अर्थ प्रकट करने वाली चेतना को दिशा दी है।
- प्रसाद गुण।
- मुक्त छंद।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

(क) इस शहर में वसंत अचानक आता है
और जब आता है तो मैंने देखा है
लहरतारा या मडुवाडीह की तरफ से
उठता है धूल का एक बवंडर
और इस महान पुराने शहर की जीभ
किरकिराने लगती है।

उत्तर- **प्रसंग-** प्रस्तुत काव्यावतरण कविवर केदारनाथ सिंह की कविता 'बनारस' से उद्धृत है। इस अवतरण में बनारस में वसंत किस तरह आता है, उसी का वर्णन हुआ है।

व्याख्या- कवि कहता है कि बनारस में वसंत अचानक आता है, और जब भी आता है, तब उसके किसी महल्ले चाहे वह लहरतारा हो या मडुआडीह उसकी तरफ से एक तेज धुल का बवंडर उठता है और सारे शहर में फैल जाता है। धूल के बवंडर के कारण इस पुराने शहर की जीभ किरकिराने लगती है अर्थात लोगों के मुँह में धूल भर जाती है।

विशेष: 'शहर की जीभ का किरकिराना' एक नवीनतम अर्थ-व्यंजक प्रयोग है। शहर के पुरानेपन के साथ धुल का बवंडर वसंत के आगमन के आनंद को थोड़ा बदमजा कर देता है। ठीक उसी तरह जिस तरह स्वादिष्ट पकवान में धुल या कंकड़ का कण पड़ जाने से मन खीझ उठता है। कुछ वैसा ही हाल बनारस का हो जाता है। 'शहर की जीभ की किरकिराहट' में मानवीकरण अलंकार का सौंदर्य है। कवि ने भावपूर्ण एवं सटीक शब्दों का चयन किया है।

(ख) **जो है वह सुगबुगाता है**
जो नहीं है वह फेंकने लगता है पचखियाँ
आदमी दशाश्वमेघ पर जाता है
और पाता है घाट का आखिरी पत्थर
कुछ और मुलायम हो गया है
सीढ़ियों पर बैठे बंदरों की आँखों में
एक अजीब सी नमी है
और एक अजीब सी चमक से भर उठा है
भिखारियों के कटोरे का निचाट खालीपन

उत्तर-

(i) **प्रसंग-** प्रस्तुत काव्यावतरण कवि केदारनाथ सिंह की कविता 'बनारस' से उद्धृत है। इन काव्य पंक्तियों में कवि ने बनारस में वसंत के आगमन के प्रभाव को दर्शाया है।

(ii) **व्याख्या** - वसंत के आगमन के साथ बनारस शहर सुगबुगाने लगता है. अर्थात् उगी हुई वनस्पतियों में हरियाली झलकने लगती हैं और बीज धरती के भीतर पड़े होते हैं। उनके अंकुर फूट निकलते हैं। लोग दशाश्वमेघ घाट जाते हैं और पाँव रखते ही घाट के आखिर पत्थर के स्पर्श में एक नई कोमलता का अहसास होता है। घाट की सीढ़ियों पर बैठे बंदरों की आँखों में बिल्कुल नयी किस्म की चमक और नमी दिखाई पड़ने लगती है। यहाँ तक कि भिखारियों का बिल्कुल खाली कटोरा भी एक अजीब चमक से भर उठता है अर्थात घाटों पर आवाजाही बढ़ने से भिखारियों के खाली कटोरों में कुछ सिक्के ज्यादा गिरने लगते हैं।

(iii) **विशेष**- इन वर्णनों के माध्यम से कवि ने बनारस की पोर-पोर में छा जाने वाली उमंग, मस्ती और एक नयी उम्मीद

jharkhandlab.com

की ओर संकेत किया है। अभिधात्मक और विवरणात्मक वर्णन में देशज शब्दों का प्रयोग कवि ने किया है।

(ग) तुमने कभी देखा है
खाली कटोरों में वसंत का उतरना !
यह शहर इसी तरह खुलता है
इसी तरह भरता है
और खाली होता है यह शहर
इसी तरह रोज-रोज एक अनंत शव
ले जाते हैं कंधे
अँधेरी गली से
चमकती हुई गंगा की तरफ।

उत्तर- **प्रसंग**- प्रस्तुत काव्यावतरण केदारनाथ सिंह की कविता 'बनारस' से अवतरित है। इन काव्य पंक्तियों में कवि ने वसंतकालीन बनारस के परिवेश से परिचित कराया है।

व्याख्या- कवि पाठकों से ही प्रश्न पूछते हैं कि क्या तुमने कभी- बनारस में वसंत को आते देखा है। जब बनारस में वसंत आता है, अर्थात् श्रद्धालु जब यहाँ आते हैं तो भिखारियों के कटोरों में सिक्के बढ़ जाने से उनकी आँखों में खुशी के मारे चमक आ जाती है। मान्यता है कि इस पवित्र नगरी में अंतिम संस्कार होने से मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसलिए लोग दूर दराज से भी अपने परिजनों के शव यहाँ लेकर आते हैं और अंतिम संस्कार करते हैं। कवि कहते हैं कि श्रद्धालुओं के आने से एक ओर तो यह शहर भरता जाता है, वहीं दूसरी ओर शवों के दाह संस्कार से खाली होता जाता है।

विशेष- इस कविता में कवि ने नये प्रयोग किए हैं। शहर के खुलने से कवि का अभिप्राय है कि बनारस शहर धीरे-धीरे खुलता है। यहाँ कुछ भी अचानक नहीं होता। यहाँ जितना नया जीवन रूपाकार ग्रहण करता है, मृत्यु उसी अनुपात में उसे खाली भी करती रहती है। कंधों पर अनंत शव के ढोए जाने से कवि का तात्पर्य है कि यहाँ शवदाह का अनवरत सिलसिला चलता रहता है। वसंत के आगमन पर भी बनारस शहर अपना रूप एवं रंग-ढंग नहीं बदलता। वह अपनी चाल में चलता रहता है। ऐसा अनोखा शहर है बनारस।

(घ) यह धीरे-धीरे होना
धीरे-धीरे होने की सामूहिक लय
दृढ़ता से बांधे है समूचे शहर को
इस तरह कि कुछ भी गिरता नहीं है
कि हिलता नहीं कुछ भी
कि जो चीज जहाँ थी
वहीं पर रखी है
कि गंगा वहीं है
कि वहीं पर बंधी है नाव
कि वहीं पर रखी है तुलसीदास की खड़ाऊँ
सैकड़ों बरस से

उत्तर- **प्रसंग**- प्रस्तुत काव्यांश केदारनाथ सिंह की कविता 'बनारस' से अवतरित है। इस काव्यांश में कवि ने बनारस के जीवन, प्रकृति और चीजों की अपरिवर्तनशीलता एवं लयबद्धता की ओर संकेत किया है।

व्याख्या- बनारस में सबकुछ धीरे-धीरे होता है। धूल धीरे धीरे उड़ती है। घंटे धीरे धीरे बजते हैं और लोग भी धीरे-धीरे चलते हैं। धीरे-धीरे होना इस शहर की एक विशिष्ट पहचान है। सबकुछ धीरे-धीरे एक ही लय में बंधकर घटित होता जाता है। फलस्वरूप यहाँ हर चीज यथावत बनी रहती है। कोई चीज गिरती नहीं, स्खलित नहीं होती। एक लयबद्धता पूरे शहर को बाँधे रखती है। जो चीज जहाँ रखी गयी थी, वह आज भी वहीं रखी हुई है। कोई भाग- -दौड़, आपाधापी नहीं। सबकुछ शांति और लयबद्ध गति से हो रहा है। गंगा जहाँ थी, आज भी वहीं हैं। माँ गंगा के घाटों पर जहाँ नावें बांधी जाती थी, आज भी वहीं बँधी है। संत कवि तुलसीदास की खड़ाऊ सैकड़ों वर्ष पूर्व जहाँ रखी गयी थी, वहीं पर वह आज भी रखी हुई है।

विशेष- इस अवतरण में बनारस की यथास्थिति को उसके स्वभाव और लय, में दिखाया गया है। यह शहर स्थितप्रज्ञ अवस्था में रहता है। अत्यधिक उल्लास और अत्यधिक अवसाद दोनों ही स्थितियों में यह तटस्थ बना रहता है। यह शहर किसी सन्यासी की तरह समाधिस्थ अवस्था में रहता है। यह अपरिवर्तनशीलता उसकी परम्पराप्रियता की भी परिचायक है। यह धीमापन ही शहर का प्राण है। 'धीरे-धीरे में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।

(ङ) कभी सई-साँझ
बिना किसी सूचना के
घुस जाओ इस शहर में
कभी आरती के आलोक में
इसे अचानक देखो
अद्भुत है इसकी बनावट
यह आधा जल में है आधा मंत्र में
आधा फूल में है
आधा शव में। आधा नींद में है
आधा शंख में
अगर ध्यान से देखो
तो यह आधा है
और आधा नहीं है।

उत्तर- **प्रसंग**- प्रस्तुत काव्यावतरण केदारनाथ सिंह की कविता 'बनारस' में संकलित है। इस अवतरण में कवि ने बनारस शहर की वास्तविकता को उजागर करने की कोशिश की है।

व्याख्या- कवि कहता है कि किसी शाम को तुम अचानक इस शहर में आओ तो तुम्हें यह शहर अद्भुत दिखाई देगा। कभी यह नगर आधा जल में निमग्न लगेगा और कभी आधा शहर मंत्र जपता नजर आयेगा। कभी चारों तरफ इतने फूल दिखायी पड़ेंगे कि आधा शहर फूलों से भर जाएगा। यहाँ गंगा किनारे घाटों में अनवरत जलते हुए शवों को देखकर लगता है कि आधा शहर शव ही शव है और इनके जल जाने से आधा शहर ही खाली हो गया। यहाँ आधा शहर नींद में सोता दिखाई देगा तो मंत्र जपते लोगों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि आधा शहर ही मंत्रजप कर रहा है। आधा शहर शंख बजाता हुआ दिखाई पड़ेगा। यदि ध्यान से देखो तो यह शहर आधा ही दिखाई पड़ता है। इस शहर का रहस्य पूर्णतः कभी नहीं खुलता। जो भी दिखाई पड़ता है, वह अर्धसत्य ही होता है। यह आधा सत्य शहर के एक पहलू को ही दिखाता है, दूसरा ढँका ही रहता है। इस तरह यह शहर अद्भुत है।

jharkhandlab.com

विशेष- कवि ने बनारस शहर के स्वभाव, चरित्र और स्वरूप का वर्णन करने का सुंदर प्रयास किया है, परन्तु वह स्वयं स्वीकारते हैं कि इसे शब्दों के द्वारा पूरी तरह चित्रित नहीं किया जा सकता है। इसकी संपूर्णता के दर्शन शब्दों के द्वारा कतई संभव नहीं है। इसका स्वभाव विचित्र है।

'आधा' शब्द में चमत्कार है। कवि ने इसका प्रयोग प्रतीकात्मक रूप में किया है।

(घ) जो है वह खड़ा है
बिना किसी स्तंभ के
जो नहीं है उसे थामे है
राख और रोशनी के ऊँचे-ऊँचे स्तंभ
आग के स्तंभ
और पानी के स्तंभ,
धुएँ के
खुशबू के
आदमी के उठे हुए हाथों के स्तम्भ,
किसी अलक्षित सूर्य को
देता हुआ अर्घ्य
शताब्दियों से इसी तरह
गंगा के जल में
अपनी एक टांग पर खड़ा है यह शहर
अपनी दूसरी टाँग से
बिल्कुल बेखबर !

उत्तर- **प्रसंग-** प्रस्तुत काव्यावतरण केदारनाथ सिंह की कविता' 'बनारस' की अंतिम पंक्तियाँ है। कवि ने इस अवतरण में बनारस की विचित्र विशेषताओं पर प्रकाश डाला है।

व्याख्या- इस अवतरण के पूर्व के अवतरण में कवि ने बनारस के चेहरे की पूर्णता उजागर करने की कोशिश की है, किन्तु उसके चेहरे के पहलू को कुछ अंश में ही देख और दिखा सका है। कवि कहता है कि यह शहर बिना किसी अवलम्ब के खड़ा है। चिताओं से उठती ऊँची-ऊँची लपटें और गंगा-जल के ऊपर उठती हुई ऊँची-ऊँची तरंगें, चिताओं और हवन के धूएँ, राख और रोशनी के स्तंभ इस शहर को थामे हुए हैं। गंगा तट पर हाथ उठाये लोग किसी अलक्षित सूर्य को अर्घ्य देते रहते हैं। अर्घ्यदाताओं के ऊपर उठे हुए हाथ भी इस नगर को थामने वाले स्तंभ हैं। यह शहर शताब्दियों से अपने इसी रूप में यथावत कायम् है। गंगा के जल में यह शहर एक टाँग पर खड़ा नजर आता है। यहाँ लोग आस्था और भक्ति में इस तरह मग्न रहते हैं कि उन्हें बाहरी दुनिया-दारी की तनिक भी फिक्र नहीं होती। ये भक्त लोग अपनी सारी गतिविधियाँ, समस्याएँ, चिंताएं छोड़कर आस्था और भक्ति में खो जाते हैं। यह शहर बाहरी परिवर्तनों, छल छद्म से पूर्णतः अप्रभावित है तथा यहाँ आस्था, विश्वास, विरक्ति, वैराग्य और श्रद्धा का अद्भुत समन्वित रूप दिखाई पड़ता है।

इस अवतरण में बनारस शहर की विशेषताओं और विचित्रताओं का उल्लेख है। यहाँ के लोग संस्कृति एवं धर्म को महत्वपूर्ण स्थान देते हैं। लक्षणा शब्द-शक्ति है। माधुर्य गुण है। भाषा सहज व मुहावरेदार खड़ी बोली है।

प्रश्न 2. बनारस' कविता में प्राचीनतम शहर बनारस का चित्रण किस प्रकार का है ?

उत्तर- 'बनारस' कविता में कवि ने यहाँ के सांस्कृतिक वैभव का चित्रण किया है। यह प्राचीन शहर महान सांस्कृतिक परम्परा एवं लोक-जीवन की विशिष्टताओं को समेटे हुए है। यह शहर आस्था और विश्वास, भक्ति और पौराणिकता का केन्द्र है। बनारस और गंगा का सामिप्य मनुष्य को बैकुंठधाम का दर्शन करा देता है। यह अवधारणा है कि बनारस शहर में जाकर दर्शन करने से जीते जी मुक्ति होती है। यहाँ से प्रवाहित होने वाली गंगा का विशेष महात्म्य है। यहाँ की गंगा से लोगों की विशिष्ट आस्था भी जुड़ी हुई है। बनारस में गंगा, गंगा के घाट, मंदिर तथा मंदिर घाटों के किनारे बैठे भिखारियों के कटोरे में अचानक उतरते बनारस के अक्स को कवि देखता है। कवि ने इस कविता में बनारस के इसी रूप का चित्रण किया है । गंगा में बंधी नाव, मंदिरों-घाटों पर प्रज्ज्वलित दीप एवं हवन आदि से उठते हुए धूएँ, मोक्ष की कामना हेतु अहर्निश जलती चिता इत्यादि, यही तो बनारस की पहचान है। यहाँ हर काम एक विशिष्ट लय, गति तथा तरंग में होता है। यह अद्भुत जगह है। कवि ने इस अद्भुत शहर के रहस्यों को खोलने का सुंदर प्रयत्न किया है। कविता की भाषा अत्यंत सरल एवं सुबोध है, परन्तु अर्थ में विलक्षण गहराई है। कवि की सूक्ष्म दृष्टि दिखाई पड़ती है।

लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. बनारस कविता में शहर का जीवन कैसे चलता है?

उत्तर - कवि के अनुसार बनारस शहर में धूल धीरे-धीरे उड़ती है, यहाँ लोग धीरे-धीरे चलते हैं धीरे-धीरे ही यहाँ मंदिरों में घंटे बजते हैं, तथा शाम भी यहाँ धीरे-धीरे होती है। कवि के अनुसार यहाँ सभी कार्य धीरे-धीरे होना इस शहर की विशेषता है। यह शहर को सामूहिक लय प्रदान करता है।

प्रश्न 2. बनारस कविता का विषय क्या है?

उत्तर- 'बनारस' कविता में प्राचीनतम शहर बनारस के सांस्कृतिक वैभव के साथ ठेठ बनारसीपन पर भी प्रकाश डाला गया है। बनारस शिव की नगरी और गंगा के साथ विशिष्ट आस्था का केन्द्र है। बनारस में गंगा, गंगा के घाट, मंदिर तथा मंदिरों और घाटों के किनारे बैठे भिखारियों के कटोरे जिसमें श्रद्धालुओं के आने से सिक्के की खनक, वसंत के आने की सूचना देते हैं।

प्रश्न 3. बनारस से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर- बनारस भारत के प्राचीन क्षेत्रों में से एक है। यह तीन हजार वर्ष पुराना शहर माना जाता है। इसे वाराणसी के नाम से भी जाना जाता है। यह हिन्दुओं के पवित्र तीर्थस्थलों में एक है, इसलिए भी यह आध्यात्मिक महत्व रखता है।

अति लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'खाली कटोरे' में बसंत के उतरने का क्या अर्थ है ?

उत्तर- इसका अर्थ यह है कि भिखारियों को भीख मिलने लगी।

प्रश्न 2. रोज रोज में कौन-सा अलंकार है ?

उत्तर - पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार

प्रश्न 3. बनारस' कविता में शहर का जीवन कैसा रहता है ?

उत्तर- 'बनारस' कविता में शहर का जीवन धीमी गति से चलता है।

प्रश्न 4. 'बनारस' किस नदी के तट पर बसा है ?

उत्तर- 'बनारस' गंगा नदी के तट पर बसा है !

प्रश्न 5. 'बनारस' की संस्कृति कैसी है?

उत्तर- 'बनारस' की संस्कृति अत्यन्त प्राचीन और महान है।

प्रश्न 8. 'बनारस' में क्या-क्या यथास्थिति रखी हुई है।

उत्तर- 'बनारस' में गंगा, घाटों से बँधी नाव, तुलसीदास की खड़ाऊँ आज भी यथास्थिति रखी हुई है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. किस शहर में वसंत अचानक आता है ?

(1) पटना (2) गुजरात
(3) हैदराबाद (4) बनारस

प्रश्न 2. किस महल्ले से धूल का बवंडर आता है?

(1) लहरतारा (2) सोनतारा
(3) रामनगर (4) गोदोलिया

प्रश्न 3. किसकी आँखों में अजीब सी नमी है?

(1) मुर्गे (2) बंदर
(3) हाथी (4) भक्त

प्रश्न 4. बनारस में किसकी खडाऊं आज भी ज्यों की त्यों यथास्थान रखी हुई है !

(1) कालीदास (2) कबीरदास
(3) तुलसीदास (4) संत रैदास

प्रश्न 5. 'बनारस' कविता के कवि का नाम क्या है ?

(1) जयशंकर प्रसाद (2) केदारनाथ सिंह
(3) महादेवी वर्मा (4) सुमित्रानंदन पंत

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1 - (4) 2 - (1)
3 - (2) 4 - (3)
5 - (2)

Jharkhandlab.com

(ख) दिशा

केदारनाथ सिंह (सन् 1934-2018)

पाठ परिचय

दिशा कविता बाल मनोविज्ञान को बहुत ही सहजता से प्रस्तुत करती है। इस कविता की भाषा सहज और सपाट है। कवि पतंग उड़ाते हुए एक बच्चे से पूछता है कि हिमालय किधर है। बालक अत्यन्त भोलेपन से अपनी उड़ती हुई पतंग की दिशा में इशारा करते हुए कहता है कि उधर है। कवि बालक के इस उत्तर पर मुग्ध हो जाता है और यह संदेश देता है कि हर व्यक्ति का अपना यर्थाथ होता है। हमें किसी के प्रति निंदात्मक दृष्टिकोण नहीं रखना चाहिए। हर व्यक्ति अपने ढंग से सोचता है, और यह सही भी है। यद्यपि यह कविता आकार में अत्यन्त छोटी है तथापि इस कविता का संदेश यह है कि हम बड़े भी बच्चों से कुछ न कुछ सीख सकते हैं। कविता का मूल प्रतिपाद्य यही है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. बच्चे का उधर-उधर कहना क्या प्रकट करता है?

उत्तर - बच्चे का उधर-उधर, कहना' प्रकट करता है कि वह इस बात को नहीं जानता है कि दिशाएँ चार होती हैं। उसके ज्ञान के अनुसार तो दिशा एक ही है, जिधर उसकी पतंग उड़ती ही भागी चली जा रही है। उसका सर्वस्व वही है।

प्रश्न 2. 'मैं स्वीकार करूँ मैंने पहली बार जाना हिमालय किधर है'- प्रस्तुत पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- अपने प्रश्न 'हिमालय किधर है' के उत्तर में बालक द्वारा अपनी पतंग के उड़ने की दिशा की ओर संकेत करना कवि को दुविधा में डाल देता है। वह सोचता है कि भले उस बच्चे ने अज्ञानतावश गलत बताया है परन्तु उसके इस उत्तर में उसका भोलापन, निर्दोषिता, कोमलता एवं अपना यथार्थ है। प्रत्येक व्यक्ति का अपना एक सत्य होता है। हम उसे गलत नहीं ठहरा सकते हैं। यह बालक के बाल मनोविज्ञान का सच है और इसे झुठलाया भी नहीं जा सकता।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

हिमालय किधर है?
मैंने उस बच्चे से पूछा जो स्कूल के बाहर
पतंग उड़ा रहा था
उधर-उधर, उसने कहा
जिधर उसकी पतंग भागी जा रही थी
मैं स्वीकार करूँ
मैंने पहली बार जाना
हिमालय किधर है !

उत्तर- **प्रसंग** - प्रस्तुत काव्यावतरण केदारनाथ सिंह की कविता 'दिशा' से उद्धृत है। यह छोटी-सी कविता बाल मनोविज्ञान पर प्रकाश डालती है।

व्याख्या- कवि एक पतंग उड़ा रहे बच्चे से हिमालय की दिशा के बारे में पूछता है। बालक अत्यन्त भोलेपन और दृढ़ता से उत्तर देता है, उधर- अर्थात् जिधर उसकी पतंग उड़ी जा रही थी । कवि को पहली बार पता चलता है कि पारम्परिक ज्ञान से हटकर भी एक ज्ञान होता है । हिमालय की एक नयी अवस्थिति के बारे में बालक बताता है, हालांकि वह गलत है फिर भी बालक के सत्य को झूठलाया नहीं जा सकता क्योंकि यह ज्ञान उस पर आरोपित नहीं, अपितु बालसुलभ सहज सत्य है।

विशेष- कविता छोटी है, सीधी, सपाट, सहज किन्तु बड़ा ही गूढ़ संदेश देती है कि हर व्यक्ति का अपना यथार्थ होता है और उस यथार्थ को अस्वीकार भी नहीं किया जा सकता।

प्रश्न 2. केदारनाथ सिंह की छोटी-सी कविता 'दिशा' का निहितार्थ क्या है?

उत्तर - कवि ने इस छोटी-सी कविता में वयस्कों और बच्चों के यथार्थ में अंतर को स्पष्ट करना चाहा है। कवि के द्वारा हिमालय की दिशा पूछे जाने पर बालक अत्यन्त भोलेपन एवं दृढ़ता से उत्तर देता है- उधर, जिधर उसकी पतंग उड़ी जा रही थी। कवि जानता है कि बच्चे का दिशा ज्ञान सही नहीं है, पर दिशाओं के बारे में उसमें एक सहज बोध है और बच्चे निष्कपट होते हैं, उनके सत्य में भोलापन होता है। उसे झुठलाना संभव नहीं है । बड़ों का यथार्थ बोध ठोस धरातल पर होता है, जबकि बच्चों का निर्दोषिता, कोमलता और भोलापन लिए होता है। इस छोटी-सी कविता का निहितार्थ यही है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'दिशा' कविता में कवि पर क्या प्रभाव होता है ?

उत्तर - 'हिमालय किधर है। इस प्रश्न पर पतंग उड़ाने में मग्न, मस्त बच्चे का अपनी उड़ती हुई पतंग की दिशा में इंगित कर बतलाना कवि के मन को मोह लेता है, और कवि यह पाता है कि हर व्यक्ति या बच्चे की अपनी सोच होती है, अपना यथार्थ होता है। अपना सत्य होता है। हम उसके सत्य को कदापि नहीं झुठला सकते है।

प्रश्न 2. 'दिशा' शीर्षक कविता का मूल कथ्य क्या है ?

उत्तर- यह कविता बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। सबका यथार्थ अलग-अलग होता है। बच्चे की पतंग जिस दिशा में उड़ रही है, वही उसका सर्वस्व है। उसे किसी और से कुछ लेना देना नहीं है वही उनका सत्य है। कवि ने इस कविता के माध्यम से बतलाना चाहा है कि हर व्यक्ति या बच्चे की सोच, मानसिकता, यथार्थबोध, सत्य अलग होता है और उसके लिए वही उचित है। यहाँ बच्चे के भोलेपन और कोमलता को दिखाया गया है।

jharkhandlab.com

अति लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. दिशा कविता से हमें क्या संदेश मिलता है?

उत्तर - इस कविता से हमें यह संदेश मिलता है कि हम बच्चों से भी भोलापन, सहजता, सरलता सीख सकते हैं। निरंतर आगे बढ़ते रहना, अपनी खुशी तलाशना, छल-छदम से दूर होकर बच्चों की भाँति सहज, सरल एवं शांत जीवन जीना।

प्रश्न 2. हिमालय किधर है यह प्रश्न किसने किससे पूछा ?

उत्तर - हिमालय किधर है यह प्रश्न कवि ने एक बच्चे से पूछा।

प्रश्न 3. बच्चा कौन-सा खेल खेल रहा था ?

उत्तर - बच्चा पतंग उड़ा रहा था।

प्रश्न 4. 'दिशा' कविता किससे संबंधित है?

उत्तर – बाल मनोविज्ञान से।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. कवि के प्रश्न पर बच्चे के 'उधर-उधर' कहने का क्या अभिप्राय है?

(1) पंतग की उड़ान की दिशा
(2) उत्तर दिशा
(3) पूर्व दिशा
(4) ज्ञान न होने का संकेत

प्रश्न 2. 'दिशा' कविता का मूल भाव क्या है?

(1) बच्चे यथार्थ को अपने ढंग से देखते हैं
(2) बच्चों को दिशा का ज्ञान देना आवश्यक है
(3) बच्चों को व्यावहारिक ज्ञान देना आवश्यक है
(4) अपनी जिज्ञासाओं का समाधान स्वयं करना चाहिए

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1 - (1) 2 - (1)

Jharkhandlab.com

पाठ – 5 (क) एक कम

विष्णु खरे (सन् 1940-2018)

Jharkhandlab.com

कवि परिचय

विष्णु खरे का जन्म मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा में हुआ। अंग्रेजी साहित्य में एम0. ए0 करने के बाद उन्होंने अपने जीवन का प्रारंभ एक पत्रकार के रूप में किया। वे 'इंदौर समाचार' के उपसंपादक रहे। कॉलेज में अध्यापन कार्य किया । उनकी रचनाओं में 'एक गैर रूमानी समय में', 'खुद अपनी आँखों से' 'सबकी आवाज के पर्दे में', 'पिछला बाकी' इत्यादि प्रमुख हैं।

विष्णु खरे वस्तुतः नकार और अकविता के दौर के कवि हैं। उनकी कविताओं में विद्रोह और अस्तित्व के स्वर दिखाई पड़ते हैं। उन्होंने अमानवीय स्थितियों के विरुद्ध मोर्चा खोला है। वे हिंदी साहित्य के प्रतिनिधि कवियों में से एक थे। उन्हें हिंदी अकादमी दिल्ली का साहित्य सम्मान, शिखर सम्मान, रघुवीर सहाय सम्मान, मैथिली शरण गुप्त सम्मान से सम्मानित किया गया।

पाठ परिचय

एक कम कविता के माध्यम से कवि ने स्वतंत्र भारत की तस्वीर प्रस्तुत की है। उन्होंने यह बताया है कि परतंत्र भारतवासियों को यह उम्मीद थी कि आजादी के बाद सब कुछ अच्छा हो जायेगा। सभी खुशहाल होंगे, सबको अधिकार मिलेंगे, परन्तु आजादी के बाद की तस्वीर ही उलट गई। कुछ स्वार्थी, बेईमान और भ्रष्ट तो अमीर बन गए, परंतु भोली- भाली जनता की माली हालत और भी ज्यादा खराब हो गई क्योंकि उनके भीतर नैतिकता तथा सत्यता भरी थी। कवि इस माहौल में स्वयं को असमर्थ पाता है और ईमानदारों के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट करता है। बेईमानी के ऊपर व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि तुम सब निश्चिंत रहो। इस बेईमानी की दौड़ में ये ईमानदार लोग बिल्कुल शामिल नहीं है। इसलिए उनकी प्रतिस्पर्धा में एक कम है, अर्थात् भीख माँगता हुआ व्यक्ति, जिसे भीख माँगना स्वीकार है परंतु अनैतिकता के बल पर वह कदापि आगे नहीं बढ़ना चाहता, अमीर होना नहीं चाहता ।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. कवि ने लोगों के आत्मनिर्भर, मालामाल और गतिशील होने के लिए किन तरीकों की ओर संकेत किया है ? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर - आजादी के बाद कवि ने भारत के अनेक लोगों को आत्मनिर्भर, मालामाल और गतिशील होते देखा है। छलकपट , धोखाधडी, विश्वासघात,भ्रष्टाचार, स्वार्थपरता एवं अन्याय के बल पर लोगों ने अपनी स्थिति को सुधारा है। अनेक लोग सामर्थ्यवान बनने के लिए ईमानदारी का त्याग कर बेईमानी का सहारा लेते हैं, अनैतिक तरीकों से लोग धनवान बने हैं और दूसरों को धक्का देते हुए आगे बढ़ने की प्रवृति को ही अपनी उन्नति का माध्यम बनाया है।

प्रश्न 2. हाथ फैलाने वाले व्यक्ति को कवि ने ईमानदार क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- हाथ फैलाने वाले व्यक्ति को कवि ने ईमानदार इसलिए कहा है क्योंकि वह अन्य लोगों की भाँति धोखेबाजी, बेइमानी या रिश्वतखोरी नहीं कर सका। इसलिए वह धनवान बनने में असमर्थ रहा और आज इतना गरीब हैं कि अपना पेट भरने के लिए उसे दूसरों के सामने हाथ फैलाना, भीख मांगना पड़ रहा है। वह अपनी वास्तविक स्थिति को नहीं छिपाता, यदि वह अन्य लोगों की भांति बेइमानी, धोखाधड़ी, करता तो आज वह भी उनके जैसा मालामाल हो जाता।

प्रश्न 3. कवि ने स्वयं को लाचार, कामचोर, धोखेबाज़ क्यों कहा है?

उत्तर- हाथ फैलाने वाला व्यक्ति लाचार हे, क्योंकि ईमानदारी के कारण वह धन संचय नहीं कर पाया। वह कामचोर है उसने यदि ईमानदारीपूर्वक काम किया होता तो आज उसे हाथ फैलाने की जरूरत नहीं पड़ती। वह धोखेबाज़ है, क्योंकि परिश्रम न करके उसने अपने आपको धोखा दिया है।

प्रश्न 4. 'मैं तुम्हारा विरोधी, प्रतिद्वंद्वी या हिस्सेदार नहीं' से कवि का क्या अभिप्राय है?

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने ऐसे तबके के लोगों को संबोधित किया है जो भ्रष्टाचार या अनैतिकता मे लिप्त थे। कवि कहता है कि तुम्हें मुझसे डरने या प्रतिस्पर्धा करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि मैं तुम्हारा प्रतिद्वंदी नहीं। लेखक उन्हें पहले से आगाह कर देना चाहते हैं कि वह इस दौड़ में सम्मिलित नहीं है। प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि ने विरोध तथा कुछ न कर पाने का दुःख अभिव्यक्त किया है।

प्रश्न5. भाव -सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

(क) 1947 के बाद से

इतने लोगों के इतने तरीकों से

आत्मनिर्भर, मालामाल और गतिशील होते देखा है

उत्तर- 1947 के आजादी के बाद भारत के अनेक लोगों ने अनेक तरीकों से अनैतिक, भ्रष्टाचार बेइमानी का रास्ता अपना कर स्वयं का विकास किया। वे धनवान और मालामाल बनते रहे। कवि यह कहना चाहता है कि स्वतंत्रता के बाद देश की आस्थावान, ईमानदार और संवेदनशील जनता का स्वतंत्रता से मोह भंग हो गया है। स्वतंत्रता सेनानियों की कल्पना का भारत अब दिखाई नहीं देता है क्योंकि हर तरफ बेईमानी, धोखाधड़ी एवं स्वार्थपरता का बोल- बाला ब्याप्त है। कवि ने व्यंजना पूर्ण भाषा का प्रयोग करते हुए देश की वर्तमान स्थिति का चित्रण किया है।

(ख) मानता हुआ कि हाँ मैं लाचार हूँ कंगाल या कोढ़ी

या मैं भला चंगा हूँ और कामचोर और

एक मामूली धोखेबाज

उत्तर- इन पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहते हैं कि आज के समाज में आपसी भाईचारा, विश्वास के स्थान पर धोखाधड़ी, अविश्वास बढ़ गया है। स्वतंत्रता के बाद देश की

आस्थावान, ईमानदार और संवेदनशील जनता का मोह भंग हो गया है। हर तरफ स्वार्थ परता का माहौल बना हुआ है। अपने ही अपनो के द्वारा छले जा रहे हैं। ईमानदार व्यक्ति दो वक्त की रोटी के लिए भी असमर्थ है। वह दूसरों के सामने हाथ फैला कर भीख मांगने के लिए विवश है। आज समाज में ईमानदार लोगों की कमी है।

(ग) तुम्हारे सामने बिलकुल नंगा निर्लज्ज और निराकांक्षी

मैंने अपने को हटा लिया है हर होड़ से

उत्तर- देश की ईमानदार, आस्थावान, संवेदनशील जनता का अपने ही लोगों द्वारा छले जाने से मोह भंग हो रहा है। कवि ईमानदार लोगों के प्रति सहानुभूति तथा स्वयं को भ्रष्टाचारियों के विरुद्ध कुछ न कर पाने की स्थिति में पाता है। वह ऐसे लोगों के जीवन-संघर्ष में बाधक नहीं बनना चाहता है।

प्रश्न 6. शिल्प-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए --

(क) कि अब जब आगे कोई हाथ फैलाता है

पच्चीस पैसे एक चाय या दो रोटी के लिए

तो जान लेता हूँ

मेरे सामने एक ईमानदार आदमी, औरत या बच्चा खड़ा है।

उत्तर- (1) भाषा में सरलता, सजीवता व प्रवाहमयता है।

(2) "हाथ फैलाना" मुहावरे के प्रयोग से कवि ने कथन को प्रभावपूर्ण बनाया है।

(3) 'पच्चीस पैसे' में अनुप्रास अलंकार है

(4) काव्यांश में मुक्त छंद का प्रयोग है।

(ख) मैं तुम्हारा विरोधी प्रतिद्वंदी हिस्से दार नहीं

मुझे कुछ देकर या न देकर भी तुम

निश्चिंत रह सकते हो।

उत्तर- (1) भाषा में व्यंजना - शक्ति का प्रयोग करते हुए यह बताया गया है कि आज सभी में एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ लगी है। किन्तु कवि स्वयं को इस होड़ से अलग बताता है। वह संपन्न वर्ग की राह में बाधक नहीं।

(2) ये पंक्ति मुक्त छंद में लिखी गई है।

(3) व्यंजनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

(1) "जब कोई आगे हाथ फैलाता है पच्चीस पैसे एक चाय या दो रोटी के लिए तो जान लेता हूँ मेरे सामने एक ईमानदार आदमी, औरत या बच्चा खड़ा है"। इन पंक्तियों के प्रकाश में 'एक कम' का मर्म खोलिए ।

उत्तर- कवि ने आज़ादी के बाद भारत के अनेक लोगों को आत्मनिर्भर, मालामाल और गतिशील होते देखा। छल-कपट, धोखाधडी, विश्वासघात ,भ्रष्टाचार, स्वार्थपरता एवं अन्याय के बल पर लोगों ने अपनी स्थिति को सुधारा है। अनैतिक तरीकों से लोग धनवान बने हैं और दूसरों को धक्का देकर आगे बढ़ने की प्रवृत्ति को ही उन्होंने अपनी उन्नति का साधन बनाया है। इस पंक्ति में एक व्यक्ति कम है वे हैं भिखारी। हाथ फैलाने वाले अर्थात् भीख मांगने वाले व्यक्ति को कवि ने ईमानदार इस लिए कहा है, क्योंकि अन्य लोगों की तरह उन्होंने धोखाधड़ी, बेईमानी या रिश्वतखोरी नहीं की। इसलिए वह धनवान नहीं बन सका और आज इतना गरीब है कि पेट भरने के लिए उसे दूसरों के आगे हाथ फैलाना पड़ता है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

(1) कवि किसे ईमानदार मानते हैं?

उत्तर कवि ने हाथ फैलाने वाले को ईमानदार कहा है।

(2) हाथ फैलाने वाले को कवि ने ईमानदार क्यों कहा है?

उत्तर हाथ फैलाने वाले को कवि ने ईमानदार इसलिए कहा है क्योंकि वे अपनी वास्तविक स्थिति को नहीं छुपाते।

(3) स्वतंत्रता के बाद किस तरह के लोग धनी (संपन्न) बन रहे हैं?

उत्तर- सन् 1947 की आजादी के बाद स्वतंत्र भारत में लोग विभिन्न तरीके से आत्मनिर्भर और सम्पन्न थे। ये वही लोग हैं जो स्वार्थी और सत्ता लोलुप है। ये सभी आज संपन्न है। इन्होंने अपने अमानवीय गुणों के बल पर धन संपत्ति एकत्र कर ली है।

(4) कवि ने स्वयं को किस होड़ से अलग माना है?

उत्तर- कवि ने स्वयं को धन अर्जित कर सम्पन्न बनने की होड़ से अलग माना है। क्योंकि इस होड़ में वे लोग सम्मिलित हैं जो बेइमानी, भ्रष्टाचार, अनैतिकता से धन अर्जित करने में लगे हैं। कवि अपने आप को इनसे अलग मानता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'एक कम' कविता के कवि कौन है ?

(1) रामविलास शर्मा (2) विष्णु खरे
(3) महादेवी वर्मा (4) रामधारी सिंह दिनकर

प्रश्न 2. कविता में कवि ने किसके प्रति सहानुभूति दिखाई है?

(1) बेइमान के प्रति (2) धोखेबाज के प्रति
(3) ईमानदार के प्रति (4) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 3. विष्णु खरे का जन्म कब हुआ?

(1) सन् 1940 (2) सन् 1840
(3) सन् 1945 (4) सन् 1845

प्रश्न 4. समाज में किस तरह के लोग संपन्न (धनी) बनते जा रहे हैं ?

(1) धोखेबाज (2) स्वार्थी
(3) बेईमान (4) इनमें से सभी

प्रश्न 5. निम्नलिखित में से कौन सी रचना विष्णु खरे की नहीं है?

(1) एक कम (2) सत्य
(3) विपथगा (4) खुद अपनी आँख से

प्रश्न 6. कविता के आधार पर 1947 के बाद किसका प्रभाव अधिक है ?

(1) सत्य का (2) ईमानदारी का
(3) आपसी भाईचारे का (4) धोखेबाजों का

jharkhandlab.com

प्रश्न 7. कविता के आधार पर कौन व्यक्ति आत्मनिर्भर और मालामाल है?

(1) देशभक्त (2) ईमानदार

(3) धोखेबाज (4) इनमें से सभी

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1. - (2) 2. - (3)

3. - (1) 4. - (4)

5. - (3) 6. - (4)

7. - (3)

Jharkhandlab.com

(ख) सत्य

विष्णु खरे (सन् 1940-2018)

पाठ परिचय

'सत्य' विष्णु खरे की एक सशक्त कविता है। कवि ने दो महत्वपूर्ण पौराणिक पात्रों युधिष्ठिर और विदुर के द्वारा सत्य की पहचान कराने की कोशिश की है। सत्य बाहर नहीं बल्कि व्यक्ति के भीतर विद्यमान होता है। हमारे दृढ़संकल्प शक्ति के द्वारा ही हम उसे प्राप्त कर सकते हैं। सत्य हमारी तरह- तरह से परीक्षा लेता है कि हम उसे पाने को कितने लालायित हैं। वह हमारे दृढ संकल्प को जानने के बाद ही हमें अपनी झलक देता है। यह हमारी आत्मा का अभिन्न अंग है। कवि का संदेश है कि हमें सत्य का दामन कभी- भी नहीं छोड़ना चाहिए। उसे पाने की ईमानदार कोशिश ही हमें उसके दर्शन करा सकती है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सत्य क्या पुकारने से मिल सकता है? युधिष्ठिर विदुर को क्यों पुकार रहे हैं - महाभारत के प्रसंग से सत्य के अर्थ खोलें।

उत्तर- विष्णु खरे जी ने अपनी कविता 'सत्य' के माध्यम से महाभारत के पौराणिक संदर्भों और पात्रों द्वारा जीवन में सत्य के महत्व को स्पष्ट किया है। सत्य पुकारने से नहीं मिलता, उसके पीछे दूर तक जाना पड़ता है । तब हमारी अंतरात्मा में उसका प्रकाश भरता है, जो जीवन भर हमारा मार्गदर्शन करता है। युधिष्ठिर विदुर को इसलिए पुकार रहे हैं, जिससे वे उनके प्रति हुए अन्याय को सुने और सत्य का पक्ष लें। धृतराष्ट्र ने पांडवों को खांडवप्रस्थ जैसे स्थान बंटवारे में दिया था। जहाँ जंगल था जो विद्रोहियों से भरा था। उसने समृद्ध और उपजाऊ देश अपने अधिकार में रखे थे। यह अन्याय ही तो था। विदुर ने इस अन्याय को चुपचाप देखा था। युधिष्ठिर विदुर को इस लिए पुकार रहे थे और जानना चाहते थे कि उन्होंने सत्य का साथ क्यों नहीं दिया। किन्तु विदुर ने कोई उत्तर नहीं दिया। सत्य पुकारने से नहीं मिलता यह हमसे दूर होता जाता है। सत्य हमारे, अन्तर्मन की शक्ति है जिसे पुकारने की जरूरत नहीं है, उसे प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं पाना होता है।

प्रश्न 2. 'सत्य का दिखना और ओझल होना' से कवि का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर- कवि कहता है कि वर्तमान समय में तीव्रगति से होने वाले परिवर्तनों के कारण सत्य का कोई स्थिर स्वरूप नहीं रहा है। वह हमें कभी दिखता है तो कभी ओझल हो जाता है। इस कथन से कवि का तात्पर्य है कि आज के समाज में सत्य को पहचानना बहुत कठिन है। सत्य का कोई एक स्थिर रुप नहीं है, कोई एक पहचान नहीं है इसलिए कभी हमें सत्य प्रत्यक्ष दिखाई दे जाता है तो कभी हमें उसके प्रति संशय उत्पन्न हो जाता है। हर व्यक्ति सत्य के बारे में संशयग्रस्त है।

प्रश्न 3. सत्य और संकल्प के अंतर्संबंध पर अपने विचार व्यक्त कीजिए?

उत्तर- सत्य और संकल्प के बीच पूरक संबंध है। सत्य को वही पा सकता है जो संकल्पवान एवं दृढ़ निश्चयी हो। सत्य के प्रति निष्ठा रखना और उस पर अडिग रहना अत्यंत कठिन होता है। मनुष्य का व्यक्तिगत स्वार्थ उसे सत्य के मार्ग से विचलित कर सकता है। जो व्यक्ति सत्य पर अडिग रहने का दृढ़ संकल्प करता है, वह किसी भी परिस्थिति में सत्य को नहीं छोड़ता। जिस प्रकार युधिष्ठिर ने तब तक विदुर का पीछा किया जब तक वे शमी वृक्ष के नीचे रुक न गए। जो व्यक्ति सत्य पर अडिग रहने का दृढ़ संकल्प करता है। वही सत्य का पालन कर सकता है।सत्य का स्वरूप बदलता रहता है अतः सत्य की सही पहचान संकल्प शक्ति से ही संभव हो पाती है। सत्य की प्राप्ति दृढ़ निश्चयी व्यक्ति को ही हो पाती है, कवि महाभारत के पात्रों के माध्यम से यही कहना चाहता है ।

प्रश्न 4. 'युधिष्ठिर जैसा संकल्प' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- युधिष्ठिर जैसा संकल्प से तात्पर्य है सत्य के मार्ग पर अडिग होकर चलने की शक्ति। युधिष्टिर ने जय और पराजय की चिंता किए बिना अपने पूरे जीवन में सत्य का मार्ग चुना है। इसके लिए उन्होंने विदुर तक को अपने सम्मुख झुकने पर विवश कर दिया है।

अतः मनुष्य यदि युधिष्ठिर के समान दृढ़ संकल्प कर ले तो अपने सच्चे उद्देश्य को अवश्य प्राप्त कर लेगा।

प्रश्न 5. सत्य की पहचान हम कैसे करें? कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- जिस समय और समाज में हम जी रहे हैं, उसमें सत्य की पहचान कठिन है। सत्य कभी दिखता है। कभी आँखों से ओझल रहता है। सत्य का कोई स्थिर रूप, आकार या पहचान नहीं है। सत्य की पहचान अस्थिर है। आवश्यक नहीं कि एक व्यक्ति का सत्य दूसरे का भी सत्य हो। बदलते परिवेश तथा मानवीय संबंधों में परिवर्तन से सत्य की पहचान परिवर्तित हो जाती है।

सत्य के प्रति संशय के विस्तार के बावजूद, यह हमारी आत्मा की आंतरिक शक्ति है। सत्य को पहचानने के लिए हमें अपनी आत्मा की आवाज़ को सुनना होगा। सत्य, सूक्ष्म रूप से आत्मा में विद्यमान है। सत्य की पहचान अनुभूति से होती है। उसे आँखों से देखा नहीं जा सकता है।

प्रश्न 6. कविता में बार- बार प्रयुक्त 'हम' कौन हैं और उसकी चिन्ता क्या है?

उत्तर- कविता में बार-बार 'हम शब्द का प्रयोग कवि ने वर्तमान पीढ़ी के उन लोगों के लिए किया है जो इस संसार में हैं तथा जो सत्य की तलाश में है। उनकी चिंता यह है कि इस

jharkhandlab.com

बदलते हालात में सत्य का स्वरूप स्थिर नहीं है,पल-पल परिवर्तित हो रहा है, तब सत्य की पहचान कैसे की जाए? सत्य को कैसे अपने अंतर में धारण किया जाए? आज के परिवेश मे सत्य का रूप वस्तु, स्थिति और घटनाओं, पात्रों के अनुसार बदलता रहता है। ऐसे में सत्य की पहचान कैसे की जाए और उसे अपनी अन्तरात्मा में कैसे धारण किया जाए, कवि यह समझ नहीं पा रहा है।

प्रश्न7. सत्य की राह पर चल। अगर अपना भला चाहता है तो सच्चाई को पकड़ ।- इन पंक्तियों के प्रकाश में कविता का मर्म खोलिए।

उत्तर- कवि ने इस कविता के माध्यम से सत्य के महत्व को प्रतिपादित किया है। सत्य कविता हमें सच्चाई की राह पर चलने की प्रेरणा देती है। सत्य पुकारने से नहीं मिलता, उसका पीछा करना पड़ता है, दृढ़ संकल्प और निश्चयात्मक बुद्धि से। वह हमारी अन्तरात्मा की आवाज है। कविता में मिथकीय प्रतीकों के माध्यम से कवि ने बताया है कि यदि व्यक्ति अपना भला चाहता है तो उसे सत्य की राह पर निरंतर चलते रहना चाहिए। सत्य का निष्ठा से अनुगमन करते चलो, यह अवश्य प्राप्त होगा। भले ही बदलते समय में सत्य का रूप बदल रहा हो पर हमारी अन्तरात्मा के भीतर उसकी चमक जाग उठती है। सत्य एक प्रकाशपुंज है जो हमारे भीतर तब समा जाती है जब हम निरंतर सत्य की राह पर चलते है।

अतः यह कविता सत्य की राह पर चलने की उपादेयता को प्रमाणित करती है। साथ ही यह भी संदेश देती है कि यदि मनुष्य अपना भला चाहता है तो उसे सच्चाई को पकड़े रहना चाहिए।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'सत्य' कविता में प्रयुक्त मिथकीय पात्रों का प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर- जब किन्हीं पौराणिक पात्रों को लेकर कोई युगसत्य वर्तमान सन्दर्भों में व्यक्त किया जाता है तो उसे 'मिथक काव्य कहा जाता है। इस कविता में प्रयुक्त मिथकीय पात्र महाभारत से लिए गए हैं। युधिष्ठिर आम आदमी के प्रतीक हैं और विदुर सत्य के प्रतीक हैं विदुर के पीछे पुकारते, भागते हुए युधिष्ठिर का तात्पर्य है कि आम आदमी सत्य को पुकारता रह जाता है पर उसे प्राप्त नहीं कर पाता।

प्रश्न 2. निम्न पंक्तियों की व्याख्या करें-

कभी दिखता है सत्य
और कभी ओझल हो जाता है
और हम कहते रह जाते हैं कि रुको यह हम हैं

उत्तर-

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियाँ विष्णु खरे की कविता 'सत्य' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में कवि ने युधिष्ठिर और विदुर के पौराणिक संदर्भ के माध्यम से यह बताया है कि आज सत्य कभी दिखाई देता है तो कभी ओझल हो जाता है और हम पुकारते रह जाते हैं।

व्याख्या- कवि कहता है कि हमें सत्य कभी दिखाई देता है और कभी हमारी आंखों के आगे से ओझल हो जाता है। हम उससे यह कहते ही रह जाते हैं कि रुको, यह हम हैं अर्थात् सत्य का कोई एक स्थिर रूप, आकार या पहचान नहीं है। हम जब तक उसे अनुभूत कर पाते हैं, तब तक वह लुप्त हो जाता है और हम उसे रुकने के लिए पुकारते ही रह जाते हैं।

कवि ने यहाँ 'विदुर को' सत्य रूप में प्रस्तुत किया है। धर्मराज उनसे सत्य के बारे में जिज्ञासा करते हैं परन्तु यह समझ नहीं पाते कि विदुर स्वयं सत्य रूप हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. पुकारने पर सत्य दूर क्यों चला जाता है?

उत्तर पुकारने पर सत्य का हमसे दूर जाने का कारण यह है कि वह यह जानना चाहता है कि हम उसके पीछे कितनी दूर तक जा सकते हैं। अर्थात् सत्य हमारे संकल्प की दृढ़ता की परीक्षा लेता है।

प्रश्न 2. वर्तमान समय में सत्य का स्वरूप कैसा है ?

उत्तर- कवि के अनुसार वर्तमान समय में सत्य का स्वरूप स्थिर नहीं है। वह अपना रूप और आकार बदलता रहता है। साथ ही सत्य पुकारने से नहीं मिलता वह हमसे दूर हटता जाता है। वह कभी दिखता है तो कभी आँखों से ओझल हो जाता है। केवल दृढ निश्चयी व्यक्ति ही सत्य को पा सकता है।

प्रश्न 3. सत्य की पहचान हम कैसे करे ? कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- सत्य की पहचान करना वर्तमान समय में बहुत कठिन है। आज सत्य का स्वरूप समाज के साथ बदल रहा है सत्य को हम तभी पहचान पाते है जब हमारे मन में दृढ़ निश्चय हो । उसे अन्तरात्मा से ही पहचान पाना संभव है।

प्रश्न 4. खांडवप्रस्थ से लौटते हुए युधिष्ठिर ने क्या सोचा ?

उत्तर- खांडवप्रस्य से लौटते हुए युधिष्ठिर ने सोचा कि विदुर ने उनके प्रश्नों का उत्तर क्यों नहीं दिया? सम्भवतः वह चुप रहकर संकेत देना चाहते थे कि सत्य की समीक्षा व्यक्ति को स्वयं ही करनी होती है और स्वयं ही उसको प्राप्त करना होता है। कोई बाहरी व्यक्ति उसके सत्य के मार्ग का निर्देशन नहीं कर सकता ।

प्रश्न 5. शिल्प-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

यदि हम किसी तरह युधिष्ठिर जैसा संकल्प पा लेते हैं

तो एक दिन पता नहीं क्या सोच कर रुक ही जाता है सत्य।

उत्तर- (क) भाषा सरल भावानुकूल तथा प्रवाहपूर्ण है। तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है।

(ख) पहली पंक्ति में उपमा अलंकार है।

(ग) मुक्त छंद का प्रयोग हुआ है।

(घ) सत्य को मानवीय क्रियाएं करते हुए दिखाया गया है अतः मानवीकरण अलंकार है।

Jharkhandeb.com

अति लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. युधिष्ठिर के पुकारने पर विदुर कहाँ चले गए?

उत्तर युधिष्ठिर के पुकारने पर विदुर घने जंगल में चले गए।

प्रश्न 2. धर्म राज किसे कहा गया है?

उत्तर युधिष्ठिर को धर्म राज कहा गया है।

प्रश्न 3. सत्य को पुकारने से कवि का क्या तात्पर्य है?

उत्तर सत्य को पुकारने से कवि का तात्पर्य है अपने अंदर सत्य को धारण करने के लिए उसकी तलाश करना।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1 'सत्य' कविता के आधार पर बताइए कि विदुर किसका प्रतीक है?

(1) सत्य का (2) असत्य का
(3) पाप का (4) झूठ का

प्रश्न 2. पांडवों के माता का क्या नाम है?

(1) कोशल्या (2) कुंती
(3) सीता (4) द्रौपदी

प्रश्न 3. 'सत्य' कविता में किस युद्ध का वर्णन है,

(1) विश्व युद्ध (2) महाभारत
(3) कलिंग युद्ध (4) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 4. सत्य की प्राप्ति कैसी की जा सकती है ?

(1) दृढ़ संकल्प होकर (2) अस्थायी रहकर
(3) (1) और (2) दोनों (4) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 5. 'सत्य' कविता के कवि कौन है?

(1) रघुवीर सहाय (2) तुलसी दास
(3) विष्णु खरे (4) जयशंकर प्रसाद

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1. - (1) 2. - (2)
3. - (2) 4. - (1)
5. - (3)

Jharkhandlab.com

पाठ – 6 (क) वसंत आया

रघुवीर सहाय (सन् 1929-1990)

कवि परिचय

रघुवीर सहाय नई कविता के कवि हैं, उनकी कुछ कविताएं अज्ञेय द्वारा संपादित 'दूसरा सप्तक' में संकलित है। कविता के अलावा उन्होंने रचनात्मक और विवेचनात्मक गद्य भी लिखा है। उनके व्यंग्य संसार में आत्म परक अनुभवों की जगह जन जीवन के अनुभवों के रचनात्मक अभिव्यक्ति अधिक है।वे व्यापक सामाजिक संदर्भों के निरीक्षण अनुभव और बोध को कविता में व्यक्त करते हैं।

रघुवीर सहाय ने काव्य रचना में अपने पत्रकार दृष्टि का सृजनात्मक उपयोग किया है। वे मानते हैं कि अखबार की खबर के भीतर दबी और छुपी हुई ऐसी अनेक खबरें होती हैं, जिनमें मानवीय पीड़ा छिपी रह जाती है ।उस छिपी हुई मानवीय पीड़ा की अभिव्यक्ति करना कविता का दायित्व है। रघुवीर सहाय ने अपने काव्य दृष्टि के अनुरूप ही अपनी नई काव्य भाषा का विकास किया है। अनावश्यक शब्दों के प्रयोग से प्रयास पूर्वक बचते हैं ।भयाक्रांत अनुभव की आवेश रहित अभिव्यक्ति उनकी कविता की प्रमुख विशेषता है।

रघुवीर सहाय की प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं - 'सीढ़ियों पर धूप', 'आत्महत्या के विरुद्ध', 'हंसो हंसो जल्दी हंसो' और 'लोग भूल गए हैं।' काव्य संग्रह पर उन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' मिला था।

पाठ परिचय

वसंत आया कविता के माध्यम से कवि कहते हैं कि आज मनुष्य का प्रकृति से रिश्ता टूट गया है। वसंत ऋतु का आना अब अनुभव करने के बजाए कैलेंडर से जाना जाता है। ऋतु में परिवर्तन पहले की तरह ही स्वभावतः घटित होते रहते हैं, पत्ते झड़ते हैं, कोपलें फूटती हैं, हवा बहती है, ढाक के जंगल दहकते हैं, कोमल भ्रमर अपनी मस्ती में झूमते हैं, पर हमारी निगाह उन पर नहीं जाती। हम निरपेक्ष बने रहते हैं। वास्तव में कवि ने आज के मनुष्य की आधुनिक जीवन शैली पर व्यंग्य किया है।

इस कविता की भाषा में जीवन की विडंबना छिपी हुई है। प्रकृति से अलगाव को व्यक्त करने के लिए कवि ने देशज शब्दों और क्रियाओं का भरपूर प्रयोग किया है। अशोक, मदन, महीना, पंचमी, नंदनवन, जैसे परंपरा में रचे बसे हैं, जीवन अनुभव की भाषा में इस कविता को आधुनिकता के सामने एक चुनौती की तरह खड़ा कर दिया है। कविता में बिंब और प्रतीकों का भी सुंदर प्रयोग हुआ है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. वसंत आगमन की सूचना कवि को कैसे मिली ?

उत्तर – वसंत आगमन की सूचना कवि को सुबह जब जा रहे थे तो सड़क में सूखी पत्तियां जो पैरों के नीचे आकर चरमराहट की आवाज करती है,उससे तथा कैलेंडर से प्राप्त हुई। उसने किसी बंगले के अशोक के पेड़ पर चिड़िया की आवाज सुनी, सुबह 6:00 बजे गर्म पानी से नहाए हवा का उसे अनुभव हुआ। इन सभी बातों से उसे पता चला कि वसंत का आगमन हो गया है।

प्रश्न 2. 'कोई छह बजे सुबह--------- फिरकी सी आई, चली गई' इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर– प्रस्तुत पंक्ति में कवि ने ऋतु परिवर्तन को बताया है।फाल्गुन महीनों में गर्म- सर्द मौसम होता है । कभी-कभी सुबह की हवा ऐसी होती है, जिससे हल्की गर्माहट होती है। वह तेज चलती है जैसी फिरकी घूमती है वैसे ही हवा भी चक्कर दार चलती है ।

प्रश्न 3. 'वसंत पंचमी' अमुक दिन होने का प्रमाण कवि ने क्या बताया और क्यों ?

उत्तर- कवि के अनुसार वसंत पंचमी होने का प्रमाण यह था कि उसके कार्यालय में वसंत-पंचमी के अवसर पर अवकाश घोषित हो चुका था। वह नहीं जानता था कि वसंत-पंचमी किस दिन होगी। वह व्यस्त दिन-चर्या और भाग-दौड़ में वसंत ऋतु के आगमन को नहीं जान पाया था।

प्रश्न 4. 'और कविताएँ पढ़ते रहने से.... आम बौर आवेंगे'- में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - रधुवीर सहाय जी ने अपनी कविता **वसंत आया** में आज की आधुनिक जीवन-शैली पर व्यंग्य किया गया है। आज मनुष्य के साथ विडंबना यह है कि वह प्रकृति से अपनी अंतरंगता खो चुका है। मनुष्य वातावरण में होने वाले ऋतु परिवर्तन का अनुभव करने में असमर्थ हैं। ऋतु परिवर्तन से मिलने वाले आनंद से वंचित है। अवकाश में वह प्रकृति से दूर किसी एकांत कमरे में बैठा कविताएँ-कथाएँ पढ़-पढ़कर प्रकृति को अनुभव करने की कोशिश करता है। इस तरह कविता में प्रकृति से कटे मनुष्य को आधुनिकता के सामने एक चुनौती के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

प्रश्न 5. अलंकार बताइए :-

क. बड़े-बड़े हैं पियराए पत्ते

ख. कोई छः बजे सुबह जैसे गर्म पानी से नहाई हो

ग. खिली हुई हवा आई, फिरकी सी चली गई

घ. कि दहर दहर दहकेंगे ढाक के जंगल

उत्तर– क. पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार तथा अनुप्रास अलंकार।

ख. उत्प्रेक्षा अलंकार।

ग. उपमा अलंकार तथा मानवीकरण अलंकार।

घ. पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार तथा अनुप्रास अलंकार।

प्रश्न 6. किन पंक्तियों से ज्ञात होता है कि आज मनुष्य प्रकृति के नैसर्गिक सौंदर्य की अनुभूति से वंचित है ?

उत्तर- "यही नहीं जाना था कि आज के नगण्य दिन जानूँगा जैसे मैंने जाना कि वसंत आया ।" -इस पंक्ति से स्पष्ट है कि आज मनुष्य प्रकृति के नैसर्गिक सौंदर्य के अनुभूति से वंचित है।

jharkhandlab.com

प्रश्न 7. 'प्रकृति मनुष्य की सहचरी है' इस विषय पर विचार करते हैं हुए आज के संदर्भ में इस कथन की वास्तविकता पर प्रकाश डालें ?

उत्तर- यह सच है कि प्रकृति मनुष्य की सहचरी है। उसने मानव विकास में अपना पूरा योगदान दिया है। उसने मनुष्य को सभी सुख-सुविधाएं प्रदान की है। मनुष्य ने प्रकृति की गोद में रहकर ज्ञान प्राप्त किया है। आज वह चांद पर पहुंच गया है। प्रकृति के पास सभी उत्तम साधन हैं, मनुष्य के पास अपना कुछ नहीं है। लेकिन जब से मनुष्य धरती पर निवास करने लगा तब से अपना साम्राज्य फैलाना शुरू कर दिया। विकास के नाम पर चारों ओर कल कारखाने लगाकर प्रकृति का दोहन करने लगा। प्रकृति के साधन सीमित हो रहे हैं। आज प्रकृति भी हम सब का साथ छोड़ रही है।

प्रश्न 8. 'वसंत आया' कविता में कवि की चिंता क्या है? उसका प्रतिपाद्य लिखिए।

उत्तर - मनुष्य ने भौतिक प्रगति के लिए प्रकृति को बहुत नुकसान पहुंचाया है । कवि ने कहा है कि आज मनुष्य का प्रकृति से रिश्ता टूट गया है। ऋतुएं पहले की तरह अपनी व्यवस्था से चलती है, परंतु मनुष्य उनसे दूर हो गया है । प्रकृति जो कभी मानव जाति का साथी था, आज उससे दूर है। मनुष्य के पास अत्याधुनिक सुविधाएं होने का साधन है, लेकिन प्रकृति की सुंदरता को देखने और महसूस करने की संवेदना नहीं बची है ।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'वसंत आया' कविता के रचयिता कौन हैं ?

1. रघुवीर सहाय
2. जयशंकर प्रसाद
3. तुलसीदास
4. निराला

प्रश्न 2. कवि ने चिड़िया के चहकने की तुलना किससे की है ?

1. बहन के 'दा' कहने से
2. बहन से
3. वसंत ऋतु से
4. पीले पत्तों से

प्रश्न 3. कवि को वसंत के आने का पता कैसे चला ?

1. मौसम से
2. पीले पत्तों से
3. कैलेंडर से
4. बहन से

प्रश्न 4. कवि को ढाक के जंगलों के दहकने का पता कैसे चला ?

1. चिड़ियों के जगने से
2. कविताओं से
3. पत्थरों से
4. ऑफिस से

प्रश्न 5. 'पियराय' शब्द का अर्थ क्या है ?

1. पीहर
2. पीना
3. पीले हो चुके
4. पानी पी चुके

प्रश्न 6. कवि ने निम्नलिखित में से वसंत की कौन सी विशेषता बताई है?

1. ढाक के जंगल दहकते हैं
2. वृक्ष फूलों से लद जाते हैं
3. पीले-पीले पत्ते गिरने लगते हैं
4. ये सभी

प्रश्न 7. 'वसंत आया' कविता में कवि की चिंता क्या है ?

1. पलाश के जंगलों में लगी आग
2. पेड़ों से पत्तों का झरना
3. मनुष्य का प्रकृति से रिश्ता टूटना
4. नव निर्माण करना

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1. - 1
2. - 1
3. - 3
4. - 2
5. - 3
6. - 4
7. - 3

Jharkhandlab.com

(ख) तोड़ो

रघुवीर सहाय (सन् 1929-1990)

पाठ परिचय

तोड़ो उद्बोधनपरक कविता है। इसमें कवि सृजन हेतु भूमि को तैयार करने के लिए चट्टानें, ऊसर और बंजर को तोड़ने का आह्वान करता है । परती को खेत में बदलना सृजन की आरंभिक परंतु अत्यंत महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। यहां कवि विध्वंस के लिए नहीं उकसाता, वरन जीवन के लिए प्रेरित करता है । कविता की ऊपरी ढांचा सरल प्रतीत होता है, परंतु प्रकृति से मन की तुलना करते हुए कवि ने इसको नया आयाम दे दिया है। यह बंजर प्रकृति में है और मानव मन में भी है । कवि मन में व्याप्त ऊब तथा खीज को भी तोड़ने की बात करता है, अर्थात उसे भी उर्वर बनाने की बात करता है। मन के भीतर की ऊब तथा खीज सृजन में बाधक है । कवि सृजन का आकांक्षी है इसलिए उसको भी दूर करने की बात करता है। अतः कवि मन के बारे में प्रश्न उठा कर आगे बढ़ जाता है, इससे कविता का अर्थ विस्तार होता है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. पत्थर और चट्टान किसका प्रतीक है ?

उत्तर - पत्थर और चट्टान रूकावटों तथा बाधाओं के प्रतीक हैं।

प्रश्न 2. कवि को धरती और मन की भूमि में क्या-क्या समानताएँ दिखाई पड़ती हैं ?

उत्तर- **तोड़ो** कविता के अनुसार कवि रघुवीर सहाय को धरती और मन की भूमि में कुछ समानताएँ दिखती हैं। उन्होंने इन समानताओं को इस प्रकार व्यक्त किया है-

धरती और मन दोनों में बंजरपन का गुण होता है। धरती पर पत्थर-चट्टानें रूकावटें बनती हैं जबकि मन में खीज और उब मन के विकास में बाधक हैं। धरती और मन के सभी बंधन झूठे हैं। जिस प्रकार धरती में रस होने पर बीज उगाने की क्षमता होती है, वैसे ही मन में रस होने से विचार-भाव पैदा करने की क्षमता होती है।

प्रश्न 3. भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए:-

'मिट्टी में रस होगा ही जब वह पोसेगी बीज को
हम इसको क्या कर डालें इस अपने मन की खीज को?
गोड़ो गोड़ो गोड़ो ।'

उत्तर– इस पंक्ति का भाव यह है कि मिट्टी और मनुष्य का मन एक जैसा होता है, अगर मिट्टी उपजाऊ कम हो, तो वह किसी भी बीज का पोषण नहीं कर पाएगी। उसी प्रकार मन अगर स्वस्थ नहीं है तो उसकी सृजन शक्ति प्रभावित होगी। मन तब स्वस्थ होगा जब उसके अंदर की खीज बाहर निकलेगी। इस पंक्ति में कवि ने मिट्टी की तरह मन को उपजाऊ बनाने के लिए प्रेरित किया है।

प्रश्न 4. कविता का आरंभ 'तोड़ो तोड़ो तोड़ो' से हुआ है और अंत में 'गोड़ो गोड़ो गोड़ो' से विचार कीजिए कि कवि ने ऐसा क्यों कहा ?

उत्तर– कविता का आरंभ **तोड़ो तोड़ो तोड़ो** से करके कवि ने मनुष्य की विघ्न, खीज तथा बाधाएँ इत्यादि को तोड़कर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया है। इन सबको तोड़ने के बाद ही मनुष्य के अंदर सृजन शक्ति का विकास होता है। विघ्न खीज तथा बाधाएँ मनुष्य के सृजनशक्ति के विचारों को प्रभावित करती है। **गोड़ो गोड़ो** शब्द का प्रयोग आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से किया गया है।

प्रश्न 5. 'ये झूठे बंधन टूटें
तो हम धरती को जानें
यहाँ पर झूठे बंधनों और धरती को जानने से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर – प्रस्तुत पंक्ति में कवि ने झूठे बंधन का अर्थ बताया है कि झूठे बंधन मनुष्य को उसके रास्ते से विचलित करते हैं। जिस प्रकार पृथ्वी में पत्थर और चट्टानें उसे बंजर बनाती हैं, उसी प्रकार उसके मन में व्याप्त बंधन उसकी सृजन शक्ति को विकसित नहीं होने देती है।

धरती को जानने से कवि का तात्पर्य है कि धरती में पूरे संसार का पोषण करने की शक्ति है, लेकिन इसमें मौजूद पत्थर और चट्टानें उसे बंजर बना देती है । मनुष्य का मन इस पृथ्वी की तरह है यदि वह झूठे बंधन के जाल में फंस जाता है तो वह अपनी सृजन शक्ति को खो देता है। अतः मनुष्य को आत्मावलोकन करके अपनी सृजन शक्ति का विकास करना चाहिए।

प्रश्न 6. 'आधे-आधे गाने' के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर – **आधे-आधे गाने** के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि उनके द्वारा लिखा गया गीत अधूरा है। कवि मानव की शक्ति को अधूरी क्रियात्मक शक्ति बताता है। यह गीत तभी पूरा होगा जब मनुष्य अपने अंदर की खीज और ऊब बाहर निकाल कर अपने को उमंग और उल्लास से भर लेगा।

jharkhandlab.com

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'तोड़ो' कविता के निम्नलिखित में से कौन सी शैली है ?

1. रागात्मक शैली
2. उद्बोधन शैली
3. द्वंद्वात्मक शैली
4. उपर्युक्त में से कोई नहीं

प्रश्न 2. कवि ने 'तोड़ो' कविता में क्या आह्वान किया है ?

1. नवनिर्माण की भूमि के लिए चट्टानें तोड़ने का
2. ऊसर जमीन को गोड़ कर उपजाऊ बनाने का
3. मन में व्याप्त ऊब तथा खीज को तोड़कर नवसृजन का
4. उपर्युक्त में से कोई नहीं

प्रश्न 3. 'तोड़ो' कविता का मुख्य भाव या प्रतिपाद्य क्या है ?

1. नवसृजन या नव निर्माण के लिए प्रेरित करना
2. विध्वंस करने के लिए प्रेरित करना
3. जिंदगी में धन प्राप्ति करने की प्रेरणा
4. उपर्युक्त में से कोई नहीं

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1. - 2
2. - 3
3. - 1

Jharkhandlab.com

पाठ – 7 (क) भरत राम का प्रेम

तुलसीदास (सन् 1532-1623)

कवि परिचय

तुलसीदास लोकमंगल की साधना के कवि हैं। उन्हें समन्वय का कवि भी कहा जाता है। तुलसीदास का भावजगत धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से बहुत व्यापक है। उनमें मानव प्रकृति और जीवन जगत संबंधी गहरी अंतर्दृष्टि और व्यापक जीवन अनुभव था, जिसके कारण उनकी रचना में लोक जीवन के विभिन्न पक्षों का उद्घाटन संभव हो सका। तुलसी के काव्य में विश्व बोध और आत्मबोध का अद्वितीय समन्वय हुआ है।

तुलसीदास की रचनाओं में भाव, विचार, काव्यरुप, छंद- विवेचन और भाषा की विविधता मिलती है। ब्रज और अवधी दोनों ही भाषाओं पर तुलसी का असाधारण अधिकार था। इनकी रचना 'रामचरितमानस' को हिंदी का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य माना जाता है। इसकी भाषा अवधि है तथा इसमें मुख्यतः दोहा और चौपाई छंद का प्रयोग हुआ है। 'कवितावली' कवित्त और सवैया छंद में रचित उत्कृष्ट रचना है। तुलसीदास द्वारा ब्रज भाषा में रचित 'विनय पत्रिका' आध्यात्मिक जीवन को परिलक्षित करती है।

पाठ परिचय

प्रस्तुत चौपाई और दोहे **रामचरितमानस** के 'अयोध्या कांड' से ली गई हैं। इन छंदों में राम वन गमन के पश्चात भरत की मनोदशा का वर्णन किया गया है। भरत भावुक हृदय से बताते हैं कि राम का उनके प्रति अत्यधिक प्रेम भाव है। वे बचपन से ही भरत को खेल में सहयोग देते रहते थे और उनका मन कभी नहीं तोड़ते थे। वह कहते हैं कि इस प्रेम भाव को भाग्य सहन नहीं कर सका और माता के रूप में उसने व्यवधान उपस्थित कर दिया। राम के वन गमन से अन्य माताएं और अयोध्या के सभी नगरवासी अत्यंत दुखी हैं।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'हारेहुं खेल जितावहिं मोंही' भरत के इस कथन का क्या आशय है?

उत्तर- तुलसीदास जी ने 'रामचरितमानस' के इस प्रसंग में प्रभु श्री राम के छोटे भाई भरत का श्रीराम के प्रति गहन विश्वास प्रकट किया है। भरत भ्राता राम के प्रति विश्वास एवं प्रेम व्यक्त करते हुए कहते हैं कि भ्राता राम का मुझ पर विशेष स्नेह रहा है। बचपन में जब खेल में मैं हार जाता था, तो मुझे ही विजयी घोषित करते थे। भरत का ऐसा कहने का तात्पर्य यह है कि भ्राता राम खेल में भी कभी अपने अनुजों का ह्रदय व्यथित नहीं कर सकते।

प्रश्न 2. 'भरत -राम प्रेम' कविता में तुलसी ने राम के स्वभाव की किन विशेषताओं का वर्णन किया है?

उत्तर- तुलसी भरत के माध्यम से राम के स्वभाव की विशेषताओं का वर्णन करते हुए कहते हैं कि भ्राता राम अपराध करने वालों पर भी क्रोधित नहीं होते। राम खेल में भी कभी अप्रसन्न नहीं होते। भरत का कहना है कि उनके प्रति राम का विशेष स्नेह रहा है। बचपन में खेलते समय जीतने पर भी राम हारने का स्वांग करते थे ताकि अनुज को दुख ना हो। श्रीराम स्वभाव से सरल है तथा सदैव सभी के प्रति निश्चल प्रेम भावना रखते हैं।

प्रश्न 3. भरत का आत्म परिताप उनके चरित्र के किस उज्ज्वल पक्ष की ओर संकेत करता है?

उत्तर- भरत का आत्म परिताप प्रभु श्री राम के प्रति हुए अन्याय के कारण व्यक्त हुआ है। उन्हें यह संताप दुखी कर देता है कि उनकी माता कैकयी के द्वारा जो कष्ट राम को मिला है, उसमें उनका कोई हाथ नहीं है। भरत का यह आत्म -परिताप उनके भ्रातृ प्रेम एवं निष्कपट व्यवहार को दर्शाता है।

प्रश्न 4. राम के प्रति अपने श्रद्धा भाव को भरत किस प्रकार प्रकट करते हैं, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- रामचरितमानस के 'अयोध्या कांड' से उद्धृत इस अंक में भरत अपने भ्राता श्री राम के प्रति गहन आस्था विश्वास और प्रेम प्रकट करते हुए कहते हैं कि मैं भ्राता राम के सरल स्वभाव को भली-भांति जानता हूं। वे किसी के द्वारा अपराध किए जाने पर भी कभी क्रोधित नहीं होते हैं। उनका तो मेरे प्रति विशेष स्नेह हैं। इसलिए बचपन में उन्होंने खेल में भी मेरा कभी मन नहीं दुखाया।

प्रश्न 5. 'महीं सकल अनरथ कर मूला' पंक्ति द्वारा भरत के विचारों -भावों का स्पष्टीकरण कीजिए।

उत्तर- 'महीं सकल अनरथ कर मूला'- पंक्ति द्वारा भरत स्पष्ट करना चाहते हैं कि- 'मैं ही सारे अनर्थों का मूल हूं।' राम के वन जाने में अन्य किसी का कोई विशेष दोष नहीं है। वास्तव में, विधाता से हम दो भाइयों का प्रेम सहा नहीं गया। उसने माता के बहाने हम दोनों के बीच भेद उत्पन्न करने का प्रयत्न किया है। भरत अपने दुर्भाग्य को कोसते हैं और अपने जीवन की निरर्थकता पर विलाप करते हैं।

प्रश्न 6 'फरै कि कोदव बालि सुसाली। मुकुता प्रसव कि संबुक काली।' पंक्ति में छिपे भाव और शिल्प सौंदर्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- फरै कि कोदव बालि सुसाली। मुकुता प्रसव कि संबुक काली।'इस पंक्ति में भरत जी स्वयं को दोषी मान रहे हैं। वे मानते हैं कि कोदों की बाली उत्तम धान पैदा नहीं कर सकती। इसी तरह काली घोंघी मोती पैदा करने में असमर्थ होती है। इसलिए सपने में भी अन्य को दोष देना न्यायोचित नहीं है। उसने तो अपने पापों का परिणाम जाने बिना ही माता का मन दुखाया है। तुलसीदास जी ने अवधी भाषा में सहज अभिव्यक्ति की है। चौपाई छंद में रचित पद नीतिपरक है। उदाहरण अलंकार का श्रेष्ठ चित्रण है।

jharkhandlab.com

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न -1. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

पुलकि सरीर सभां भए ठाढ़े। नीरज- नयन नेह जल बाढ़े।।
कहा मोर मुनिनाथ निबाहा। एहि तें अधिक कहौं मैं कहा।।

उत्तर- **संदर्भ-** प्रस्तुत काव्यांश 'भरत-राम का प्रेम' शीर्षक पद से उद्धृत है। यह पद तुलसीदास के द्वारा रचित ग्रंथ 'रामचरितमानस' के 'अयोध्या कांड' का अंश है।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश में राम के वन गमन के बाद भरत की मानसिक दशा का वर्णन किया गया है वह अपने प्रति राम के अनन्य प्रेम को याद करते हुए अपने हृदय के भावों को प्रकट कर रहे हैं।

व्याख्या- भरत राम के वन गमन से उद्विग्न हैं। वे राम को मनाने चित्रकूट गए। वहां मुनि वशिष्ठ के कहने पर वह सभा में बोलने के लिए उठे तो उनका शरीर रोमांचित हो गया और उनके कमल के समान नेत्रों से प्रेम के आंसू बहने लगे। उन्होंने कहा कि मेरी भावना तो मुनि वशिष्ठ के कथन में ही व्यक्त हो गई है। इससे अधिक मैं और क्या कहूं। भरत कहते हैं कि मैं अपने भाई के स्वभाव को अच्छी तरह जानता हूं अर्थात उनका स्वभाव अत्यंत स्नेही है। इन पंक्तियों में भरत का राम के प्रति गहरा प्रेम और श्रद्धा भाव की अभिव्यक्ति हुई है।

विशेष- (1) भरत का राम के प्रति अनन्य प्रेम प्रकट हुआ है।
(2) काव्यांश अवधी भाषा में रचित है।
(3) काव्यांश में भक्ति तथा शांत रस का अन्यतम रूप मिलता है।
(4) नीरज- नयन तथा नेह-जल में रूपक अलंकार है
(5) काव्यांश में संगीतात्मकता के गुण उपस्थित हैं।
(6) शैली प्रबंधात्मक है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न-1. रामचरितमानस में कितने कांड हैं? उनके नाम लिखिए

उत्तर- रामचरितमानस में सात कांड हैं। ये निम्नलिखित हैं-

(i) बालकांड (ii) अयोध्याकांड
(iii) अरण्यकांड (iv) किष्किंधाकांड
(v) सुंदरकांड (vi) लंकाकांड
(vii) उत्तरकांड

प्रश्न-2. भरत और राम के प्रेम को वर्तमान के लिए आप कितना प्रासंगिक मानते हैं

उत्तर - भरत और राम का प्रेम वर्तमान के लिए प्रासंगिक है और आवश्यक भी। आज रिश्तों का महत्व समाप्त होता जा रहा है,या यूं कहें कि सारे रिश्ते खोखले होते जा रहे हैं। बाहर से दिखावा और अंदर से नाम मात्र की भी मजबूती नहीं। भौतिकता के पीछे भागते- भागते मनुष्य वास्तविक सुख और आनंद से वंचित होता जा रहा है। वास्तव में सच्चा सुख और आनंद आपसी प्रेम से ही मिलता है।समाज में यदि भरत और राम के समान भाइयों में प्रेम व्यवहार हो तो जीवन की अनेक समस्याएं एवं बुराइयां स्वयं समाप्त हो जाएंगी।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. तुलसीदास का जन्म स्थान कहां था?
1. वृंदावन, उत्तर प्रदेश 2. बाँदा, उत्तर प्रदेश
3. अमेठी, उत्तर प्रदेश 4. लखनऊ, उत्तर प्रदेश

प्रश्न 2. तुलसीदास की माता का नाम क्या था?
1. तुलसी 2. हुलसी
3. चंद्रावती 4. इरावती

प्रश्न 3. तुलसीदास किस शाखा के कवि हैं?
1. राम भक्त 2. कृष्ण भक्त
3. शिव भक्त 4. उपर्युक्त सभी

प्रश्न 4. तुलसीदास की पत्नी का क्या नाम था?
1. रत्नावली 2. अपराजिता
3. सुलोचना 4. प्रभावती

प्रश्न 5 तुलसीदास की भाषा कौन सी है?
1. अवधी 2. ब्रज
3. उपर्युक्त दोनों 4. इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 6. तुलसी के राम स्वभाव से कैसे हैं?
1. कठोर 2. चंचल
3. क्रोधी 4. अति कृपालु

प्रश्न 7. भरत राम का प्रेम 'रामचरितमानस' के किस कांड से संबंधित है?
1. बालकांड 2. अयोध्याकांड
3. अरण्यकांड 4. सुंदरकांड

प्रश्न 8. भरत राम को मनाने किस प्रसिद्ध स्थल पर गए थे?
1. चित्रकूट 2. ऋषि मुख पर्वत
3. लंका 4. कैकई देश

प्रश्न 9. भरत, वन में राम के पास क्यों गए थे?
1. राज्य अभिषेक के लिए 2. राम को मनाने के लिए
3. वन घूमने के लिए 4. राम की रक्षा के लिए

प्रश्न 10.- सभा किस स्थल पर लगाई गई थी?
1. अयोध्या 2. किष्किंधा
3. लंका 4. चित्रकूट

प्रश्न 11. भरत ने सब अनर्थ का मूल किसको माना है?
1. राम को 2. कैकई को
3. राजा दशरथ को 4. स्वयं को

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1. - 2 2. - 2
3. - 1, 4. - 1
5. - 3 6. - 4
7. - 2 8. - 1
9. - 2 10. - 4
11. - 4

Jharkhandlab.com

(ख) पद

तुलसीदास (सन् 1532-1623)

पाठ परिचय

प्रस्तुत पद **गीतावली** से उद्धृत है जिनमें से प्रथम पद में राम के वनगमन के बाद माता कौशल्या के हृदय की विरह वेदना का वर्णन किया गया है। वे राम की वस्तुओं को देखकर उनका स्मरण करती हैं और बहुत दुखी हो जाती है। दूसरे पद में माँ कौशल्या राम के वियोग में दुखी अश्वों को देखकर राम से एक बार पुनः अयोध्यापुरी आने का निवेदन करती है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. राम के-वन गमन के बाद उनकी वस्तुओं को देखकर मां कौशल्या कैसा अनुभव करती है? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

उत्तर- तुलसीदास अपनी रचना 'गीतावली' के प्रस्तुत पद में राम वन गमन के बाद माता कौशल्या की स्थिति का वर्णन करते हुए कहते हैं कि माता कौशल्या राम के वन गमन के पश्चात व्याकुल हो उठती हैं। वह राम के धनुष- बाण, सुंदर- जूतियां को देखकर अतीत में खो जाती हैं। उन्हें स्मरण हो आता है कि सुबह- सवेरे अपने पुत्र राम को प्यार से जगाती थीं और अपना स्नेह राम पर लुटाती हुई बताती हैं कि उनके छोटे भाई और मित्र सभी उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। माता कौशल्या उन्हें भोजन कराती हुईं उन पर बलिहारी जाती हैं। राम के साथ बिताए पुराने दिनों को माता कौशल्या चित्र की भांति स्थिर भाव से याद करते हुए दुखी हो उठती हैं।

प्रश्न 2. 'रहि चकि चित्रलिखी थी' पंक्ति का मर्म अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- माता कौशल्या राम के वन गमन के बाद उनकी याद में व्याकुल हैं। वे राम के साथ बिताए दिनों को याद करते हुए किसी चित्र की भांति जड़ हो जाती हैं। वह राम के वन जाने पर आंतरिक रुप से अत्यधिक व्याकुल व दुखी हैं। तुलसीदास ने माता कौशल्या के हृदय की वेदना का वर्णन किया है।

प्रश्न 3. 'गीतावली' में संकलित पद 'राधौ एक बार फिरि आवौ' में निहित करुणा और संदेश को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- तुलसीदास जी ने 'गीतावली' के इस पद में मां कौशल्या द्वारा राम के वियोग में दुखी अश्वों को देखकर राम के एक बार पुनः अयोध्या लौट आने का निवेदन करने के दृश्य को उपस्थित किया है। माता कौशल्या राम के वियोग में दुखी घोड़ों को सहलाते हुए अपनी आंतरिक पीड़ा उनके सम्मुख व्यक्त कर रही हैं। माता कौशल्या जिस प्राण प्रिय बेटे राम को देख-देख कर जीती थीं, उसी पुत्र ने उन्हें भुला दिया है। वे पथिकों से निवेदन करती हैं कि यदि वन में कहीं राम उन्हें मिले तो वे माता कौशल्या का संदेश उन्हें अवश्य पहुंचा दे।

प्रश्न 4. (क) उपमा अलंकार के दो उदाहरण छांटिए।

(ख) उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग कहां और क्यों किया गया है? उदाहरण सहित उल्लेख कीजिए।

उत्तर- (क) उपमा अलंकार के दो उदाहरण-

1. "कबहुं समुझि वनगमन राम को रहि चकि चित्रलिखी सी।"
2. "तुलसीदास वह समय कहे तें लागति प्रीति सिखी सी।"

(ख) "तदपि दिनहिं दिन होत झांवरे मनहुं कमल हिममारे।"

-इन पंक्तियों में उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग हुआ है। यहां दिन को कमल की तरह मुरझाते हुए दिखाया गया है। अर्थात् दिन ऐसे कुम्हलाते जाते हैं मानो कमल दिनों-दिन कुम्हलाते जाते हैं।

प्रश्न 5. पठित पदों के आधार पर सिद्ध कीजिए कि तुलसीदास का भाषा पर पूरा अधिकार था?

उत्तर - किसी भी कवि का भाषा पर अधिकार होना आवश्यक गुण है। तुलसीदास का अवधी और ब्रज भाषा दोनों पर समान अधिकार प्राप्त था। वे संस्कृत के भी अच्छे ज्ञाता थे। रामचरितमानस की रचना उन्होंने अवधी भाषा में की, तो विनयपत्रिका, कवितावली, गीतावली, दोहावली की रचना ब्रज भाषा में की है। यहां संकलित पद गीतावली से लिए गए हैं और ये ब्रज भाषा में लिखे गए हैं।उनकी भाषा में भावों को व्यक्त करने की पूरी क्षमता है। पदों में कौशल्या का वियोग वात्सल्य व्यंजित है। तुलसी की भाषा में व्यंजना-शब्द शक्ति है। उनकी भाषा में प्रतीकात्मक, आलंकारिकता एवं सहजता के गुण विद्यमान हैं। इस प्रकार काव्यभाषा में पाए जाने वाले समस्त गुण तुलसी के इन पदों में उपलब्ध हैं, जो इस बात के द्योतक हैं कि भाषा पर तुलसीदास का पूरा अधिकार है।

प्रश्न 6. पाठ के किन्हीं चार स्थानों पर अनुप्रास के स्वाभाविक एवं सहज प्रयोग हुए हैं उन्हें छांट कर लिखिए।

उत्तर

1. "कबहुँ प्रथम ज्यों जाइ जगावती कहि प्रिय बचन सवारे।"
2. "ए बर बाजि बिलोकि आपने बहुरो बनहिं सिधावौ।"
3. "जे पर प्याइ पोखि कर पंकज वार वार चुचुकारे।"
4. कबहुँ कहति यों "बड़ी बार भइ जाहु भूप पहँ, भैया।"

Jharkhandlab.com

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. निम्नलिखित काव्यांश का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

राघौ! एक बार फिरि आवौ।

ए बर बाजि बिलोकि आपने बहुरो बनहिं सिधावौ।।

जे पय प्याइ पोखि कर-पंकज वार वार चुचुकारे।

क्यों जीवहिं, मेरे राम लाडिले ! ते अब निपट बिसारे।।

भरत सौगुनी सार करत हैं अति प्रिय जानि तिहारे।

तदपि दिनहिं दिन होत झाँवरे मनहुँ कमल हिममारे।।

सुनहु पथिक! जो राम मिलहिं बन कहियो मातु संदेसो।

तुलसी मोहिं और सबहिन तें इन्हको बड़ो अंदेसो।।

उत्तर- माता कौशल्या अपने पुत्र को देखने के लिए लालायित हैं, इसलिए पुत्र को अयोध्या आने का संदेश पथिक के माध्यम से देते समय वह घोड़ों की करुण दशा का सहारा लेती हैं। वह अप्रत्यक्ष रूप में यह कहना चाहती हैं कि जब घोड़ों की यह दशा है तब मां की क्या दशा होगी?

राम ने घोड़ों को दूध पिला कर पाला था, तो कौशल्या ने भी राम को अपना दूध पिलाकर पाला था। प्रस्तुत काव्यांश का भाव सौंदर्य यही है।

प्रस्तुत काव्यांश में ब्रज भाषा का प्रयोग है। काव्यांश में करूण एवं वात्सल्य भाव का वर्णन है। संपूर्ण पद में अनुप्रास अलंकार है। 'कर -पंकज' में रूपक अलंकार है, 'मनहुं कमल हिममारे' में उत्प्रेक्षा अलंकार हैं, 'वार-वार' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है। बिबों का सुंदर प्रयोग है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. तुलसीदास जी के जीवन मृत्यु का उचित क्रम का चयन करें।

1. 1432 - 1562
2. 1732-1823
3. 1532 -1623
4. 1623- 1732

प्रश्न 2. तुलसीदास के गुरु का क्या नाम था?

1. नरहरिदास
2. शिवहरिदास
3. माधवाचार्य
4. वल्लभाचार्य

प्रश्न 3. तुलसीदास के आराध्य कौन थे?

1. कृष्ण
2. शिव
3. विष्णु
4. राम

प्रश्न 4.-"रहि चकि चित्रलिखी सी।" में कौन -सा अलंकार है?

1. रूपक
2. पुनरुक्तिप्रकाश
3. उपमा
4. अनुप्रास

प्रश्न 5. 'कबहुँ प्रथम ज्यों जाइ जगावति।' पंक्ति में अलंकार का विकल्प क्या होगा?

1. उपमा
2. रूपक
3. मानवीकरण
4. अनुप्रास

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1. - 3
2. - 1
3. - 4
4. - 3
5. - 4

Jharkhandlab.com

पाठ – 8

बारहमासा

मलिक मुहम्मद जायसी (सन् 1492-1542 ई०)

कवि परिचय

हिन्दी सूफी प्रेमाख्यानक काव्यधारा के सर्वश्रेष्ठ कवि मलिक मुहम्मद जायसी का जन्म रायबरेली जिले के जायस नामक स्थान में हुआ, इसलिए वे जायसी कहलाए। इनके पिता का नाम शेख ममरेज था। इनके माता-पिता का निधन इनके बचपन में ही हो गया इसलिए वे फकीरों और साधुओं के साथ रहने लगे। इनके बाएं कान एवं बाई आँख चेचक से जाती रही थी। जिसका उल्लेख उन्होंने स्वयं पद्मावत में किया है। 'मुहम्मद बाई दिसी तजा, एक सरवन एक आंखी' अर्थात् ईश्वर के द्वारा इनकी बाई आँख तथा बाँया कान को त्याग दिया गया। वे यद्यपि चेहरे से कुरूप थे, तथापि मन से अत्यंत सुन्दर, हृदय से कोमल और भावुक थे। उन्होंने अपने समय के प्रसिद्ध सूफी संत सैयद अशरफ और शेख बुरहान से दीक्षा ली थी। उनकी प्रमुख कृतियाँ 'पद्मावत' 'अखरावट' तथा 'आखिरी कलाम' है।

पाठ परिचय

मलिक मुहम्मद जायसी भक्तिकाल के निर्गुण प्रेममार्गी शाखा के प्रतिनिधि सूफी कवि हैं। 'पद्मावत' की रचना अवधी भाषा मे हुई है। इस महाकाव्य में प्रेम के त्रिकोण-राजा रत्नसेन उनकी स्वकीया प्रिया नागमती और परकीया पद्मावती (ब्रह्मरूप) का चित्रण है। यह प्रेमाख्यान कथा है। राजा रत्नसेन नागमती को रोते बिलखते छोड़कर एक शुक से पद्मावती के रूप का वर्णन सुनकर उसे प्राप्त करने के लिए योगी वेश में अपने संगियों को लेकर निकल पड़ता है। राजा रत्नसेन के वियोग में नागमती अत्यन्त विकल हो जाती है। ऋतुचक्रों की दुसह मार भी उस पर पड़ती है। अगहन, पूस, माघ, फागुन के जाड़े का मौसम उसे अकेले में बहुत डराता और सताता है। उसकी इसी व्यथा कथा का 'जायसी ने 'पदमावत' के नागमती वियोग खंड में 'बारहमासा' के रूप में चित्रित किया है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोतर

प्रश्न 1. अगहन मास की विशेषता बताते हुए विरहिणी (नागमती) की व्यथा-कथा का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर- अगहन महीने में दिन छोटा और रातें बड़ी होने लगती है। सूर्य के दक्षिणायन हो जाने के कारण दिन मे भी ठंडक बढ़ जाती है। रात्रि तो बर्फ के समान हो ही जाती है। इस मास में प्रेमिकाओं को अपने प्रिय के स्पर्श से ही उष्मा प्राप्त होती है। लेकिन विरहणियों की दशा अत्यन्त कातर हो जाती है। उन्हें अपने प्रिय के वियोग में ये लंबी और सर्द रातें काटने को दौड़ती है। नागमती की विरह वेदना इस महीने में काफी बढ़ जाती है। पति के वियोग में उसे सुंदर वस्त्र, साज श्रृंगार सभी व्यर्थ प्रतीत होते हैं। वह वियोग की शीतल अग्नि में जल रही है। उसका सारा शरीर जलकर राख हो रहा है परंतु उसका पति उसकी सुध नहीं ले रहा है। वह उसके वियोग की पीड़ा से अनभिज्ञ है। उसके दुख दर्द को समझ ही नहीं पा रहा है।

प्रश्न 2. 'जीयत खाइ मुएँ नहि छाँड़ा' पंक्ति के संदर्भ में नायिका की विरह- दशा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए ।

उत्तर - यह नागमती का भावोद्गार है। वह अपने विरह को बाज पक्षी के समान कह रही है। यह विरह रूपी बाज पक्षी उसके शरीर पर नजर गड़ाए हुए है तथा उसे नोच-नोच कर खा रहा है। ऐसा लगता है कि वह उसे मरने के बाद भी नहीं छोड़ेगा। अकेलेपन में वह अपने पति को याद कर कर के सूखती जा रही है, गलती जा रही है और अब उसे अपनी मृत्यु स्पष्ट दिखाई दे रही है। प्रिय के वियोग में उसकी दशा अत्यन्त दयनीय हो गई है।

प्रश्न 3. माघ महीने में विरहिणी को क्या अनुभूति होती है ?

उत्तर - माघ महीने में सर्दी और बढ़ जाती है। इस महीने में पाला पड़ने और वर्षा होने के कारण सर्दी अपने चरम पर पहुँच जाती है। गर्म कपड़े भी सर्दी को कम करने में अक्षम हो जाते हैं। ऐसे समय में विरहिणी स्त्री का दुख दर्द और बढ़ जाता है। नागमती की दशा अत्यन्त दयनीय हो गई है। वर्षा के छींटे और पाले तो उसके शरीर को ठिठुराते ही है। आँखों से बहने वाले आंसू भी उसे कम पीड़ित नहीं करते। विरह दुख की अधिकता से उसका शरीर दुर्बल हो जाता है तथा वह तिनके के सदृश हिलने लगता है। नागमती की विरहाग्नि एवं विरहानुभूति का वर्णन कवि ने इन पंक्तियों में किया है। साथ ही अन्य विरहिणियों का भी चित्र उकेरा गया है।

प्रश्न 4. वृक्षों से पत्तियों तथा वनों से ढाँखें किस माह में गिरते हैं ? इससे विरहिणी का क्या संबंध है ?

उत्तर- वृक्षों से पत्तियों तथा वनों से ढाँखे वसंत ऋतु में गिरने लगते हैं। इस ऋतु के आते ही पतझड़ शुरू हो जाता है। वृक्षों की शाखाएँ पत्तों- पुष्पों से रहित हो जाती है। यहाँ पतझड़ निराशा और विरह का प्रतीक है। इस ऋतु में होली का त्योहार आता है। यह फागुन का महीना होता है। जिसमें रंगों का त्योहार मनाया जाता है। लेकिन प्रियतम के बिना विरहिणी का जीवन रंगहीन, उल्लासहीन एवं निराश हो गया है। वह हताशा से सोचती है कि उसका पति राजा रत्नसेन अब वापस नहीं आएगा। एक ओर सब लोग होली और वसन्तपर्व के उल्लास में डूबे हुए हैं, वही नागमती विरह की अग्नि में जल रही है तथा वह पवन से प्रार्थना करती है कि मेरा शरीर जब इस विरहाग्नि से जलकर राख हो जायेगा तो इस राख को उड़ाकर मेरे प्रियतम के चरणों पर रख देना ताकि मैं मरने के बाद भी उनके दर्शन और स्पर्श का सुख प्राप्त कर सकूँ। इन पंक्तियों में नागमती के प्रिय-मिलन की उत्कट अभिलाषा व्यक्त हुई हैं।

प्रश्न 5. निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए-

(क) पिय सों कहेंहु संदेसड़ा ऐ भँवरा ऐ काग ।
सो धनि बिरहें जरि मुई तेहिक धुआँ हम लाग ।।

उत्तर - **प्रसंग-** प्रस्तुत काव्यावतरण जायसी रचित महाकाव्य 'पद्मावत' के 'नागमती वियोग खण्ड' से संकलित 'बारहमासा' से अवतरित है। इस काव्यांश में नागमती ने भौरे और कौए के माध्यम से, विरह संदेश अपने प्रियतम राजा रतनसेन के पास भेजा है।

व्याख्या- पद्मावती का रूपवर्णन सुनकर राजा रतनसेन अपनी पटरानी नागमती को रोता-बिलखता छोड़कर योगी वेश में घर-बार त्याग कर पद्मावती को प्राप्त करने हेतु निकल पड़ता है।

इधर पति के वियोग में नागमती की दशा अत्यन्त कारुणिक हो गई है। वह विरहाग्नि में जल रही है। शीत ऋतु की ठंडी एवं

लम्बी रातें उसके लिए अत्यन्त कष्टकर साबित हो रही है। वह अपनी इस व्यथा कथा को राजा रत्नसेन के पास कौए और भौरों के माध्यम से भेजना चाहती है। वह उनसे कहती है- "हे भ्रमर! हे काग! तुम मेरा संदेश मेरे प्रियतम से जाकर कह दो। उन्हें कह दो कि तुम्हारी प्रियतमा तुम्हारे विरह की अग्नि मे जल कर राख हो गई है और उसके धुएँ से हम काले हो गए हैं।"

विशेष- ऋतु के प्रभाव से विरहोद्दीप्त अवस्था का वर्णन हुआ है। विरहाग्नि में जलकर खाक हो जाना, और धुएँ से भौरों और कौओं का काला पड़ जाना अतिशयोक्ति अलंकार है एवं इस पर फारसी, काव्य की मसनवी शैली का प्रभाव है जिसमें मृत्यु के बाद भी विरहिनी की तड़प और उसके प्रभाव का वर्णन है।

नायिका प्रोषितपतिका है। रस. विप्रलम्भ श्रृंगार है। आलंबन रत्नसेन, आश्रय नागमती है। छंद दोहा है। भाषा अवधी है। अलंकार अतिशयोक्ति है। विरह की पराकाष्ठा है।

(ख) रकत ढरा माँसू गरा, हाड़ भए सब संख ।
धनि सारस होइ ररि मुई, आइ समेटहु पंख ।।

उत्तर- **प्रसंग**- प्रस्तुत काव्यांश जायसी की महाकाव्यात्मक कृति 'पद्मावत' नागमती वियोग खंड से संकलित अंश बारहमासा' से अवतरित है। इस काव्यांश में विरह का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन हुआ है।

व्याख्या- रतनसेन के वियोग में नागमती मरणदशा को पहुँच चुकी है। वह अपने प्रियतम को सम्बोधित करते हुए कहती है-' हे प्रिय । तुम्हारे विरह में मेरी आँखों के आँसू नही बल्कि हृदय और शरीर का रक्त बह गया है। शरीर का रक्त ही आँसू बनकर आँखों से अनवरत बह रहे हैं तथा रक्त के बह जाने से शरीर का माँस भी गल गया है। अब केवल हड्डी ही बच गई है जो उजले शंख की भाँति दिखाई पड़ रही है। मेरी दशा मृत सारस की जोड़ी के समान हो गई है। अतः मुझ मृत सारस रूपी वियोगिनी के पंख अब तो आकर समेट लो।"

विशेष- वियोग का यह वर्णन अत्यन्त कारुणिक तथा अतिशयोक्तिपूर्ण है। विरह की मरण दशा का चित्रण, भारतीय वियोग वर्णन में मिलता है, परन्तु रक्त के आँसू बनकर बह जाने, मांस के गल जाने, पक्षी समान मृत देह के पंख समेट लेने के लिए प्रिय से निवेदन करना फारसी काव्य की मसनवी बोली का प्रमाण है। भाषा अवधी अतिशयोक्ति अलंकार, छंद दोहा, रस विप्रलंभ श्रृंगार, आलम्बन रत्नसेन, आश्रय नागमती, नायिका प्रोषितपतिका।

(ग) तुम्ह बिनु कंता धनि हरुई, तन तिनुवर भाडोल !
तेहि पर विरह जराई कै, चहै उड़ावा झोल ।।

उत्तर- **प्रसंग**- प्रस्तुत काव्यावतरण जायसी के महाकाव्य 'पद्मावत' के वियोग-खण्ड के 'बारहमासा' से अवतरित है। इस अंश में नागमती की विरह कातर क्षीणकाय दशा का वर्णन हुआ है।

व्याख्या- नागमती राजा रत्नसेन से अपनी विरहव्यथा के प्रभाव के विषय में कहती है। वह कहती है कि तुम्हारे वियोग में मैं प्रतिदिन दुर्बल होती जा रही हूँ और अब मेरी देह तिनके की भाँति कृशकाय हो गई है। जैसे तिनका हवा के हल्के झोंके से हिलने लगता है, वैसे ही मैं तुम्हारे वियोग के प्रभाव से काँपती रहती हूँ। मैं तुम्हारी विरहाग्नि में जलकर खाक हो रही हूँ। अब यह खाक भी हवा के माध्यम से उड़ जायेगी अर्थात् इस धरती से मेरा नाम हमेशा के लिए मिट जायगा। मेरा जीवन समाप्त हो जायगा।

विशेष- विरह की अधिकता के कारण नागमती अत्यन्त दुर्बल हो गई है। इस दुर्बलता के कारण वह हवा के झोंके से भी काँप उठती है। उसका शरीर सूखकर तिनके के समान हो गया है। विराहाग्नि में जलकर राख हो जाने की कल्पना फारसी काव्य की मसनवी शैली की देन है। नायिका प्रोषितपतिका है। रस विप्रलंभ श्रृंगार, आलम्बन रतनसेन, आश्रय नागमती, उद्दीपन विभाव- शीत ऋतु, छंद दोहा, अलंकार अतिशयोक्ति और भाषा अवधी है।

घ) यह तन जारौं छार कै, कहौं कि पवन उड़ाउ ।
मकु तेहि मारग होइ परौं, कंत धरैं जहँ पाऊ ।।

उत्तर- **प्रसंग**- प्रस्तुत काव्यावतरण जायसी के महाकाव्य 'पद्मावत' के वियोग खण्ड के 'बारहमासा' से अवतरित है जिसमें नागमती की विराहाग्नि के चरमोत्कर्ष का वर्णन हुआ है।

व्याख्या- नागमती अपने प्रिय पति राजा रतनसेन को संबोधित करते हुए कहती है कि यदि तुम्हारी इच्छा है कि मैं तुम्हारे विरह में तड़प तड़प कर मर जाऊँ, तो मैं इसके लिए प्रस्तुत हूँ। अब मैं इस शरीर को जलाकर राख बना देना चाहती हूँ लेकिन मेरी एक अंतिम कामना है कि मेरी इस राख को पवन उड़ाकर ले जाय और उस पथ पर बिखेर दें, जिस पथ से मेरा कंत जानेवाला हो। इस प्रकार मैं न सही, मेरी राख तो मेरे प्रियतम का चरणस्पर्श कर सकेगी अर्थात् उनका दर्शन और स्पर्श पा सकेगी।

विशेष- विरह में मरणदशा तक पहुँच जाना भारतीय परम्परा के मेल में है, परन्तु मृत्यु को प्राप्त होकर भस्म चिता का प्रिय के स्पर्श की आकांक्षा का वर्णन फारसी काव्य की मसनवी शैली के प्रभाव को दर्शाता है। श्रृंगार रस में वीभत्स रस का समावेश है जो कि उचित नहीं प्रतीत होता है। छंद दोहा, अलंकार अतिशयोक्ति, भाषा अवधी, विप्रलम्भ श्रृंगार, नायिका प्रोषितपतिका, आलंबन रतनसेन, आश्रय नागमती है। इस छंद में एक ओर विरह की चरम दशा का वर्णन हुआ है, दूसरी ओर पति के लिए एक भारतीय नारी का सर्वस्व त्याग न्योछावर कर देने की कामना विरह में भी त्याग भावना का सम्पुट लिये हुए है।

प्रश्न 6. प्रथम छंदों में से अलंकार छाँटकर लिखिए और उनसे उत्पन्न काव्य-सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर- कवि ने अनुप्रास, उपमा, विरोधाभास, उत्प्रेक्षा और स्वर मैत्री अलंकारों का प्रयोग किया है। इस काव्य अलंकरण से कविता सुंदर बन गई है। दीपक और बाती के दृष्टांत के माध्यम से कवि ने नायिका को वियोग की ज्वाला में उसी प्रकार जलता हुआ दिखाया है, जिस प्रकार दीपक की बत्ती निरंतर जलती रहती है। फिर-फिर में यमक अलंकार है। पहले 'फिरै में 'राजा रत्नसेन के वापस आने का तथा दूसरे 'फिरै में 'शारीरिक सौंदर्य के पुनः लौटने की ओर संकेत है। 'सियरी अग्नि' में विरोधाभास है। प्रेम की अग्नि वह अग्नि है, जो बाहरी लोगों को दिखाई नहीं देती पर प्रेमी जन विरह की अग्नि में निरंतर जलते रहते हैं।

दूसरे छंद में उत्प्रेक्षा, अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश आदि अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग किया गया है। अनुप्रास अलंकारों के प्रयोग से काव्य में निरंतरता व प्रवाहमयता का गुण विद्यमान है। 'घर-घर' 'और 'कँपि-कँपि' में पुनरुक्तिप्रकाश के प्रयोग से शब्दों पर बल पड़ा है। इससे सर्दी की अधिकता का बोध होता है। 'सौर सुपेती आवै

jharkhandlab.com

जूड़ी' में विरोधाभास है। रजाई में गर्मी प्रदान करने का गुण विद्यमान है, परंतु विरहिणी को रजाई सर्दी ही देती है। 'पँखी' में श्लेष अलंकार है, जो प्रिय प्रवास का बोध कराता है। 'विरह संचान' में रूपक अलंकार है। वियोग बाज पक्षी के समान है।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. विरहिणी नागमती अपनी व्यथा का संदेश परदेशी पति के पास कैसे पहुँचाना चाहती है ? अपने शब्दों में वर्णन करें।

उत्तर- मलिक मुहम्मद जायसी कृत 'पद्मावत' की नायिका नागमती का पति राजा रत्नसेन परदेश चला गया। उसके वियोग में नायिका जल रही है। इस रचना में बारह महीनों में से चार महीनों अगहन, पूस, माघ, फागुन का विरहोद्दीपक रूप का वर्णन हुआ है। इन चार महीनों में अगहन की शीत ऋतु उसके लिए अत्यन्त दाहक प्रतीत होती है। अगहन का शीत विरहाग्नि में जलती नागमती भौरें और काग के माध्यम से अपने प्रिय के पास अपनी करुण दशा का संदेश भेजती है। वे उनसे अनुरोधपूर्वक कहती है कि वे उनके प्रियतम के प्रवास में जाकर कह दें कि उनकी प्रिया विरहाग्नि में जल मरी है। उसी की चिता के धुआँ लगने से हम काले हो गये हैं। नागमती के विरह का चरमोत्कर्ष यहाँ दिखलाई पड़ता है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'बारहमासा' कविता कहाँ से ली गयी है?

उत्तर- 'बारहमासा' कविता मलिक मोहम्मद जायसी के प्रसिद्ध प्रबंध काव्य पद्मावत के 'नागमती वियोग खंड' से लिया गया है।

प्रश्न 2. प्रस्तुत कविता का वर्ण्यविषय क्या है?

उत्तर- इस कविता में सिंहल देश की राजकुमारी पदमावती और चित्तौड़ के राजा रत्नसेन के प्रेम की कथा है तथा राजा रत्नसेन और पद्मावती के विरह की भी कथा है।

प्रश्न 3. "ज्यों दीपक बाती " से कवि का क्या आशय है ?

उत्तर- कवि नागमती के वियोग को बताते हुए कहते हैं कि नागमती वियोग में जल रही है, जिस प्रकार दीपक की बाती जलती है।

प्रश्न 4. बारहमासा कविता में विशेष क्या है?

उत्तर- कविता में नागमती के वियोग का वर्णन किया गया है। वियोग रस का प्रयोग किया गया है। कविता में लयात्मकता है, भावों के अनुकूल भाषा का प्रयोग उचित रूप से किया गया है।

प्रश्न 5. बारहमासा कविता की नायिका के दुख का कारण क्या है?

उत्तर- प्रस्तुत कविता में नायिका प्रोषितपतिका है, अर्थात् उसका पति उसे छोड़कर अन्य देश चला गया है। वह दुखी होकर बारह महीनों की चर्चा करती है और कहती है कि पति के बिना हर मौसम व्यर्थ है। इस गीत में वह अपनी दशा को हर महीने की विशेषता के साथ पिरोकर रखती हैं।

प्रश्न 6. 'अब धनि देवस विरह भा राती' का क्या तात्पर्य है।

उत्तर - शीत ऋतु में दिन छोटे हो जाते हैं और रातें लम्बी हो जाती हैं। अगहन का महीना आ जाने से शीतऋतु का प्रारम्भ हो गया है और रातें लम्बी एवं दिन छोटे होने लगे हैं। विरहिणी नागमती का विरह बढ़ता जा रहा है और वह इसके कारण दुर्बल हो रही है। इसलिए वह कहती है कि मैं दिन की तरह छोटी अर्थात् दुर्बल होती जा रही हूँ एवं विरह की रातें लंबी होती जा रही है।

प्रश्न 7. अबहूँ फिरै-फिरै रंग सोई' का कथ्य स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर - विरहिणी नागमती कहती है कि उसका रूप-रंग उसके प्रियतम राजा रत्नसेन के साथ ही चला गया है किन्तु उसे पूरा विश्वास है कि उनके लौट आने से उसका रंग-रूप पुनः खिल उठेगा। पत्नी अपने पति को आकर्षित करने के लिए श्रृंगार करती है, अतः उसके साथ रहने पर हर नारी का सौंदर्य बना रहता है।

प्रश्न 8. यह तन जारौं छार कै..... जहँ पाउ के भाव पक्ष एवं कला पक्ष के काव्य सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- भावपक्ष - जायसी द्वारा रचित 'बारहमासा' से लिए गए इस दोहे में विरहिणी नागमती की आकांक्षा की अभिव्यक्ति है। वह चाहती है कि विरह के कारण उसका शरीर जल कर राख हो जाए और पवन उसकी राख उड़ाकर उस पथ पर डाल दें जिसपर उसके प्रियतम के चरण पड़े। पति के प्रति उत्कट प्रेम की अभिव्यक्ति इस दोहे में हुई है।

कला-पक्ष- प्रस्तुत पंक्तियों की रचना दोहा-छंद्र में हुई है। इनमें अवधी भाषा का प्रयोग है। वियोग श्रृंगार रस की मार्मिक विवेचना है। नागमती की प्रिय-मिलन की उत्कट आकांक्षा है। अनुप्रास अलंकार है।

अति लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. रानी नागमती किसके वियोग में व्याकुल थी?

उत्तर - रानी नागमती राजा रत्नसेन के वियोग में व्याकुल थी।

प्रश्न 2. "बारहमासा' में नागमती का वियोग वर्णन किस माह से प्रारम्भ हुआ ?

उत्तर- 'बारहमासा' में नागमती का वियोग वर्णन अगहन माह से प्रारम्भ हुआ।

प्रश्न 3. नागमती अपने प्रिय को किसके माध्यम से संदेश भिजवाती है।

उत्तर - नागमती अपने प्रिय को संदेश भौंरे और कौए के माध्यम से भिजवाती है।

प्रश्न 4. "ज्यों दीपक बाती" से कवि का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर - कवि नागमती के वियोग को बताते हुए कहता है कि नागमती विरह की अग्नि में दीपक की भाँति जल रही है, अर्थात् उसका वियोग उसे पल पल जला रहा है।

jharkhandlab.com

प्रश्न 5. नागमती किसे जलाकर राख कर देना चाहती है ?

उत्तर - नागमती अपने शरीर को जलाकर राख कर देना चाहती है।

प्रश्न 6. माघ के महीने में लोग कैसे वस्त्र पहनते हैं?

उत्तर- माघ के महीने मे लोग गर्म वस्त्र पहनते हैं।

प्रश्न 7. नायिका को कौन-सी अग्नि जला रही है ?

उत्तर- नायिका को विरह की अग्नि जला रही है।

प्रश्न 8. फागुन के महीने में लोग किस त्योहार का आनन्द लेते हैं?

उत्तर- फागुन के महीने में लोग होली का आनन्द लेते हैं। सभी मिलजुलकर एक-दूसरे पर रंग डालते हैं।

प्रश्न 9. नागमती किस लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तत्पर है?

उत्तर - नागमती प्रिय मिलन के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तत्पर है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'बारहमासा' जायसी के किस महाकाव्य से लिया गया है ?

(1) अखरावट (2) पद्मावत
(3) रामचरित मानस (4) नागमती

प्रश्न 2. 'बारहमासा' में किसके वियोग का वर्णन किया गया है ?

(1) जायसी का (2) राजा रत्नसेन का
(3) नागमती का (4) पद्मावती का

प्रश्न 3. अगहन मास में दिन और रात की स्थिति कैसी होती है।

(1) दिन छोटे रातें बड़ी होती हैं।
(2) दिन बड़े रातें छोटी होती है।
(3) दिन बड़े रातें भी बड़ी होती है।
(4) दिन छोटे तथा रातें भी छोटी होती है।

प्रश्न 4. अगहन मास में सभी अपने घरों में क्या-क्या तैयारियाँ करने लगे?

(1) सभी अपने घरों में पकवान बनाने लगे ।
(2) सभी अपने घरों में गरम कपड़े निकालने लगे।
(3) सभी अपने घरों में रहने लगे
(4) इनमें से कोई नहीं ।

प्रश्न 5. नागमती का खोया हुआ रूप-रंग कैसे वापिस आ सकता है ?

(1) अपना ध्यान रख कर
(2) गाँव वालों से बात चीत कर
(3) रत्नसेन के वापस आने पर
(4) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 6. नागमती को कौन-सी आग जला रही थी?

(1) विरह की (2) सर्दी की
(3) गरमी की (4) मिलन की

प्रश्न 7. अगहन के बाद कौन-सा महीना आता है ?

(1) भादो (2) आश्विन
(3) पूस (4) कार्तिक

प्रश्न 8. चकवा और चकवी का मिलन कब होता है ?

(1) रात में (2) शाम में
(3) दिन में (4) कभी-नहीं

प्रश्न 9. नागमती ने विरह को किसकी संज्ञा दी है ?

(1) साँप की (2) कौए की
(3) चिड़िया की (4) बाज की

प्रश्न10. नागमती की हड्डियाँ विरह में कैसी हो गई है ?

(1) शंख की तरह खोखली (2) बाज की तरह
(3) बाँस की तरह खोखली (4) उपर्युक्त सभी

प्रश्न11. माघ महीने में नागमती की क्या स्थिति होती है ?

(1) आग के समान जलने लगती हैं
(2) रुई के समान जलने लगती है
(3) विरह से जलने लगती है
(4) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न12. राजा रत्नसेन से बिछड़ने के बाद नागमती कैसे रहती है?

(1) वह न तो श्रृंगार करती थी न आभूषण पहनती थी
(2) वह न रंगीन वस्त्र पहनती थी
(3) वह वियोग में रहती थी
(4) उपर्युक्त सभी

प्रश्न13. नागमती विरह की अग्नि में जलकर क्या बन गयी है?

(1) अंगारा (2) कोयला
(3) राख (4) मिट्टी

प्रश्न14. बारहमासा पाठ के पदों की भाषा कौन-सी है ?

(1) ब्रज (2) अवधी
(3) हरियाणावी (4) राजस्थानी हिंदी

प्रश्न15 'सैचान' शब्द का क्या अर्थ है ?

(1) कोयल (2) बाज
(3) शैतान (4) सच्चाई

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1 - (2) 2 - (3)
3 - (1) 4 - (2)
5 - (3) 6 - (1)
7 - (3) 8 - (3)
9 - (4) 10 - (1)
11 - (2) 12 - (4)
13 - (3) 14 - (2)
15 - (2)

Jharkhandjac.com

पाठ – 9

पद

विद्यापति (सन् 1380-1460)

कवि परिचय

विद्यापति का जन्म मधुबनी (बिहार) के बिस्पी गाँव में हुआ था। विद्यापति मिथिला नरेश राजा शिवसिंह के अभिन्न मित्र, राजकवि और सलाहकार थे। साहित्य, संस्कृति, संगीत, ज्योतिष, इतिहास, दर्शन, न्याय, भूगोल आदि के वे प्रकांड पंडित थे। उन्होंने संस्कृत, अवहट्ट (अपभ्रंश) और मैथिली - तीन भाषाओं में रचनाएँ कीं। वे आदिकाल और भक्तिकाल के संधिकवि कहे जाते हैं। राधा-कृष्ण के प्रेम के माध्यम से इन्होंने लौकिक प्रेम के विभिन्न रूपों का चित्रण किया है। उनकी महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं - 'कीर्तिलता', 'कीर्तिपताका', 'पुरुष परीक्षा', 'भू-परिक्रमा', 'लिखनावली' और 'पदावली'।

पाठ परिचय

प्रस्तुत पाठ में विद्यापति के तीन पद लिए गए हैं। पहले पद में विरहिणी राधा के हृदय के उद्‌गारों को प्रकट करते हुए उन्होंने उसको अत्यंत दुखी और कातर बताया है। प्रियतम गोकुल छोड़कर मधुपुर जा बसे हैं। कवि ने उनके कार्तिक मास में आने की संभावना प्रकट की है। दूसरे पद में प्रियतमा सखी से कहती है कि मै जन्म-जन्मांतर से अपने प्रियतम का रूप ही देखती रही परंतु अभी तक नेत्र संतुष्ट नहीं हुए हैं। उनके मधुर बोल कानों में गूंजते रहते हैं। तीसरे पद में कवि ने विरहिणी का दुखभरा चित्र प्रस्तुत किया है। दुःख के कारण नायिका के नेत्रों से अश्रुधारा बहे चली जा रही है। वह विरह में क्षण-क्षण क्षीण होती जा रही है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोतर

प्रश्न 1. प्रियतमा के दुख के क्या कारण हैं ?

उत्तर - विद्यापति की पदावली से उद्‌धृत पद में नायिका के दुख के अनेक कारण हैं। मुख्य रूप से वह विरहिणी है और उसी कारण शोकाकुल होकर वह अपने भाव व्यक्त करते हुए बताती है कि सावन मास में प्रियतमा का दुख बढ़ जाता है। यह पीड़ा उसके लिए असहनीय है। वह प्रिय के परदेश चले जाने से अकेली जीवन व्यतीत कर रही है। नायिका का प्रिय उसके दिल को चुराकर अपने साथ ले गया है। अब नायिका को लगता है कि उसके प्रिय का मन उसकी ओर नहीं है बल्कि अन्यत्र है। वह अपने प्रिय से उपेक्षित हो रही है।

प्रश्न 2. कवि 'नयन न तिरपित भेल' के माध्यम से विरहिणी नायिका की किस मनोदशा को व्यक्त करना चाहता है ?

उत्तर - विद्यापति जी ने 'नयन न तिरपित भेल' पंक्ति के माध्यम से नायिका की अतृप्त अवस्था को दर्शाया है। राधिका जीवन भर अपने प्रेमी के रूप-सौंदर्य को निहारती है परंतु वह उसे देख-देखकर कभी तृप्त नहीं हो सकी है। इस अतृप्ति अवस्था का मुख्य कारण यह है कि प्रेमी का रूप सौंदर्य नित्य प्रतिपल बदलता ही रहता है। प्रेमी का रूप सौंदर्य स्थिर नहीं है। इसी कारण नायिका अपने प्रिय के रूप सौंदर्य का वर्णन करने में स्वयं को असमर्थ पाती है। नायिका के व्यक्त मनोभावों से ज्ञात होता है कि नायिका अपने प्रिय से मिलन के क्षणों में भी अतृप्त ही रहती है।

प्रश्न 3. नायिका के प्राण तृप्त न हो पाने का कारण अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर - विद्यापति की पदावली से उद्‌धृत पदों के आधार पर नायिका कभी आत्मिक तृप्ति नहीं पा सकी है। उसकी अतृप्ति का मुख्य कारण प्रेमी के रूप सौंदर्य एवं प्रेम में निरंतर परिवर्तन होना है। हर बार जब भी नायिका अपने प्रेमी से मिलती है तो उससे मिलने वाला सुख नया रूप बदलता है। इस कारण वह अपने प्रिय से मिलने वाले आनंद का वर्णन करने में भी स्वयं को असमर्थ पाती है। नायिका को प्रेमी की वाणी और उसका रूप सदैव अतृप्त ही करता है। दूसरे शब्दों में नायिका अपने प्रेमी से हर समय मिलने को आतुर रहती है। प्रेमी से हर बार मिलकर भी उसके हृदय की आग शांत नहीं हो पाती है। तात्पर्य यह है कि नायिका के हृदय में प्रेमी के प्रति प्रेम भाव हमेशा रहता है।

प्रश्न 4. 'सेह पिरित अनुराग बखानिअ तिल-तिल नूतन होय' से लेखक का क्या आशय है ?

उत्तर - विद्यापति की पदावली से उद्‌धत इस पद में कवि के कहने का आशय यह है कि नायिका की सखी उससे प्रेम में मिलने वाले अनुभवों के विषय में जानना चाहती है। दूसरी ओर नायिका प्रेम में मिलने वाले आनंद का वर्णन करने में स्वयं को असमर्थ पाती है। प्रेम-मिलन से मिलने वाले आनंद का वर्णन करना इसलिए दुष्कर है कि यह आनंद सदैव परिवर्तनशील है। उससे मिलने वाले आनंद से वह कभी तृप्ति का अनुभव नहीं कर सकी है। तात्पर्य यह है कि प्रेम कोई स्थिर भाव नहीं जिससे तृप्त हुआ जा सके। प्रेम भाव तो नित्य प्रति परिवर्तनशील व आनंददायक है, जिससे कभी तृप्त नहीं हुआ जा सकता।

प्रश्न 5. कोयल और भौरों के कलरव का नायिका पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

उत्तर - कोयल और भौरों के कलरव का नायिका पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। कोयल का मधुर स्वर और भौरों का गुंजन सुनकर नायिका अपने हाथों से अपने कानों को बंद कर लेती है। कारण ये दोनों ध्वनियां उसे अपने प्रेमी का स्मरण करा देती है। वियोग सहने वाली नायिका कभी नहीं चाहती कि उसे अपने प्रिय की याद आए क्योंकि प्रिय की याद उसको और अधिक दुखी करती है। अपने प्रेमी को याद करते करते अब दुःख उसके लिए असहनीय हो गया है।

प्रश्न 6. कातर दृष्टि से चारों तरफ प्रियतम को ढूंढने की मनोदशा को कवि ने किन शब्दों में व्यक्त किया है ?

उत्तर - विद्यापति जी ने अपने पद में नायिका की शारीरिक चेष्टाओं का वर्णन करते हुए बताया है कि नायिका कातर दृष्टि से अपने प्रिय को चारों ओर ढूंढती फिरती है। विद्यापति ने उसकी भावुक मनोदशा का इन शब्दों में वर्णन किया है- "कातर दिठि करि, चौदिस हेरि-हेरि नयन गरए जल-धारा"

jharkhandlab.com

विद्यापति जी इन पंक्तियों में बता रहे हैं कि नायिका का शरीर कृष्ण पक्ष के चंद्रमा के समान दिन-प्रतिदिन दुबला-पतला होता जा रहा है। उसकी आँखो से आँसू बहते रहते हैं। अर्थात् वह अपने प्रिय की याद में सदैव रोती रहती है।

7. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए -

उत्तर-

तिरपित - तृप्त

बिदगध - विदग्ध

पिरित - प्रीत

अपजस - अपयश

तोहारा - तुम्हारा

छिन - क्षण

निहारल - निहारना

साओन - श्रावण

छिन - क्षण

कातिक - कार्तिक

प्रश्न 8. निम्नलिखित शब्दों का आशय स्पष्ट कीजिए -

(क) एकसरि भवन पिआ बिनु रे मोहि रहलो न जाए।
सखि अनकर दुःख दारून रे जग के पति आए ॥

उत्तर - विद्यापति जी के पदों की इन पंक्तियों का आशय यह है कि नायिका घर में अकेली है। उसका पति परदेश गया हुआ है। नायिका को पति के बिना घर में अकेले रहना नहीं भाता है। नायिका अपनी सखी को कहती है कि पति के बिना अकेले रहने से मिलने वाले दुख की गंभीरता को समझने वाला उसके पास कोई नहीं है।

(ख) जनम अवधि हम रूप निहारल नयन न तिरपित भेल।
सेहो मधुर बोल सवनहि सूनल स्रुति पथ परस न गेल ॥

उत्तर - विद्यापति जी के पदों की इन पंक्तियों का आशय यह है कि नायिका अपने पति से मिलकर कभी संतुष्ट नहीं हुई है। कारण वह हमेशा अपने पति से मिलने को आतुर रहती है। वह जिन्दगी भर पति को देखकर भी तृप्त नहीं हुई। वह हमेशा उन्हें देखते रहना चाहती है। अपने प्रिय के मधुर वचनों को वह सदैव सुनते रहना चाहती है।

(ग) कुसुमित कानन हेरि कमलमुखि, मूदि रहए दु नयान।
कोकिल-कलरव, मधुकर धुनि सुनि, कर देइ झाँपड़ कान ॥

उत्तर - विद्यापति जी के पदों की इन पंक्तियों का आशय यह है कि नायिका हरे-भरे बाग-बगीचों को देखना पसंद नहीं करती है। पति के अभाव में उसके लिए ये बाग-बगीचे, कोयल-भॅवरें की आवाज उसके दुख को और अधिक बढ़ा देते हैं इसलिए वह इन्हें देखकर अपनी आँखों और कानों को हाथ से बंद कर लेती है।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. विद्यापति की विरहिणी नायिका का काव्यांशों के आधार पर अपने शब्दों में चित्रण कीजिए।

उत्तर - विद्यापति की विरहिनी नायिका को सावन महीने में अपने प्रियतम से अलग रहने के कारण कष्ट हो रहा है। उसके पत्र को प्रिय तक पहुंचाने वाला कोई नहीं है। उसे घर में अकेले रहना पड़ रहा है। उसके दुख पर कोई विश्वास नहीं कर रहा है। उसका मन उसके पास नहीं है। उसके प्रियतम उसके पास नहीं है। अपने प्रियतम के साथ किए गए रमन का आनंद उसे समझ में नहीं आया। वह उसके रूप दर्शन और मधुर बोल से तृप्त नहीं हो पाई है। उसे अपने प्रिय से मिलने से ही तसल्ली होती है। फूलों से भरे वन प्रदेश, कोयल की कूक और भंवरों की गुंजन से नायिका बचना चाहती है। नायक की याद में दिन प्रतिदिन दुबली होती जा रही है। दुर्बलतावश यदि वह धरती पर बैठ भी जाए तो उठ नहीं पाती है। कातर दृष्टि से चारों ओर देखते हुए वह अपनी नजरों से अपने प्रियतम को खोजती है। उसकी आंखों से लगातार आंसुओं की धारा प्रवाहित होती रहती है। नायक के विरह में वह कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के चांद के समान हो गई है। प्रिय के विरह में उसकी दशा दयनीय हो गई है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. विद्यापति और जायसी प्रेम के कवि हैं दोनों में मुख्य अंतर क्या है ?

उत्तर - मलिक मुहम्मद जायसी एवं विद्यापति दोनों ही प्रेम के कवि हैं। विद्यापति माधव व राधा कह कर अपने प्रेम वर्णन को आध्यात्मिकता का स्वरूप प्रदान करते हैं। जायसी की प्रेम पद्धति सूफी विचारधारा से प्रभावित है जिसमें पद्मावती ईश्वर है और रत्नसेन साधक। दोनों के प्रेम में मौलिक अंतर यह है कि जायसी ने प्रेम का अलौकिक रूप में वर्णन किया है जबकि विद्यापति ने प्रेम के लौकिक रूप का वर्णन किया है।

प्रश्न 2. विद्यापति के काव्य भाषा की विशेषताएँ बताएँ।

उत्तर - विद्यापति ने मैथिली भाषा को काव्यभाषा के रूप में चुना है। उन्होंने पदों में आंचलिक शब्दों का भी खुलकर प्रयोग किया है। विभिन्न अलंकारों का सहज एवं स्वाभाविक चित्रण किया है। पदों को प्रभावी बनाने के लिए चित्रात्मक भाषा का भी प्रयोग किया है। कई शब्दों की पुनरावृति भी की है।

अति लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. किस वस्तु का वर्णन करना असंभव है ?

उत्तर - परिवर्तनशील वस्तु का वर्णन करना असंभव है।

प्रश्न 2. किसकी कूक तथा गुंजन सुनकर राधा अपने दोनों कानों को बंद कर लेती हैं ?

jharkhandlab.com

उत्तर - कोयल की कूक तथा भौंरे की गुंजन सुनकर राधा अपने दोनों कानों को बंद कर लेती है।

प्रश्न 3. लखिमादेवी के पति कौन थे ?

उत्तर - लखिमादेवी के पति राजा शिवसिंह थे।

प्रश्न 4. कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के चंद्रमा की भाँति क्षीण कौन होती जा रही है ?

उत्तर- राधा कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के चंद्रमा की भाँति क्षीण होती जा रही है।

प्रश्न 5. विद्यापति जी ने किसके मुख से राधा के विरह का वर्णन कृष्ण के सम्मुख करवाया है ?

उत्तर- विद्यापति जी ने राधा की सखी के मुख से राधा के विरह का वर्णन कृष्ण के सम्मुख करवाया है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. विद्यापति के पदों में नायक-नायिका कौन है ?

1. राम-सीता
2. राधा-कृष्ण
3. विद्यापति-लखिमादेई
4. शिवसिंह-लखिमादेई

प्रश्न 2. विद्यापति के पदों में नायिका अपने नायक के पास क्या भेजना चाहती है ?

1. पत्र
2. फूल
3. माखन
4. मोरपंख

प्रश्न 3. राधा किस महीने में कृष्ण के वियोग की पीड़ा सहने में असमर्थ हैं ?

1. सावन
2. फाल्गुन
3. आषाढ़
4. पूस

प्रश्न 4. राधा का मन अपने साथ कौन ले गया है ?

I. गोपियों
2. उद्धव
3. कृष्ण
4. कवि

प्रश्न 5. कवि नायिका को कृष्ण के किस मास तक वापस आ जाने का सांत्वना देते हैं ?

I. भादो
2. पूस
3. सावन
4. कार्तिक

प्रश्न 6. नायिका को प्रेम का स्वरूप कैसा लगता है ?

1. एक समान
2. प्रतिपल नवीन
3. कटु
4.. नीरस

प्रश्न 7. सखिया नायिका से किस विषय के बारे पूछ रही हैं ?

1. प्रेम के अनुभव के विषय में
2. विरह के क्षणों के विषय में
3. वियोग की अवस्था के विषय में
4. नायक के विषय में

प्रश्न 8. विद्यापति किस राजा के दरबारी कवि थे ?

1. नरेश सिंह
2. वीरेंद्र सिंह
3. रतन सेन
4. शिव सिंह

प्रश्न 9. राधा के मुख की उपमा किससे की गई है ?

1. सरोवर
2. चाँद
3. दर्पण
4. कमल

प्रश्न10. पुष्पित बागों को देखकर राधा की क्या प्रतिक्रिया होती है?

1. प्रसन्नता से झुमने लगती है।
2. पुष्प तोड़ने लगती है।
3. पुष्प निहारने लगती है।
4. आँखें बंद कर लेती है।

प्रश्न11. विद्यापति किन दो काल के संधि कवि थे ?

1. रीतिकाल - पुराधुनिक काल
2. आदिकाल- रीतिकाल
3. भक्तिकाल- रीतिकाल
4. आदिकाल - भक्तिकाल

प्रश्न12. कोयल, भंवरों की आवाज सुनकर राधा क्या करती है ?

1. कान बंद कर लेती है।
2. मधुर स्वर में गाती है।
3. रोने लगती है।
4. सोने लगती हैं।

प्रश्न13. विद्यापति की अधिकतर रचनाएँ किस भाषा में मिलती हैं ?

1. संस्कृत
2. मैथली
3. अवहट्ट
4. अपभ्रंश

प्रश्न14. कृष्ण के वियोग में राधा की शारीरिक अवस्था कैसी हो गई है ?

1. पूर्णिमा के चाँद के समान
2. कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के चाँद के समान
3. अमावस्या के चांद के समान
4. चाँद की चाँदनी के समान

प्रश्न15. नायिका भूमि पर बैठने के बाद उठ क्यों नहीं पाती ?

1. नींद के कारण
2. चोट लगने के कारण
3. विरह पीड़ा से अत्याधिक कमजोर होने के कारण
4. बीमार होने के कारण

प्रश्न16. राधा की व्यग्रता और अधिक कब बढ़ जाती है ?

1. कृष्ण का गुणनान करते समय
2.. कृष्ण के रूप सौंदर्य का स्मरण करते समय
3. कृष्ण की सुंदरता का बखान करते समय
4. उपर्युक्त सभी

प्रश्न17. कृष्ण गोकुल को छोड़कर कहाँ चले गए हैं ?

1. मथुरा
2. आगरा
3. अपनी नानी के घर
4. वृंदावन

Jharkhandlab.com

प्रश्न18. विद्यापति की रचनाएँ है ?

1. कीर्तिलता 2. कीर्तिपताका
3. पदावली 4 उपर्युक्त सभी

19. कुसुमित कानन, कोकिल-कलरव में कौन सा अलंकार है?

1. रूपक 2. उपमा
3. अनुप्रास 4 श्लेष

20. कृष्ण के विरह के परिणामस्वरूप राधा कैसी हो गई है ?

1. अत्यंत कमजोर 2. प्रसन्नचित
3. क्रोधित 4. भयभीत

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1 - 2	2 - 1
3 - 1	4 - 3
5 - 4	6 - 2
7 - 1	8 - 4
9 - 4	10 - 4
11 - 4	12 - 1
13 - 2	14 - 2
15 - 3	16 - 4
17 - 1	18 - 4
19 - 3	20 - 1

Jharkhandlab.com

पाठ – 10 कवित/सवैया

केशवदास (सन् 1555-1617)

कवि परिचय

केशवदास का जन्म बेतवा नदी के तट पर स्थित ओरछा नगर में हुआ ऐसा माना जाता है। ओरछा पति महाराज इंद्रजीत सिंह उनके प्रधान आश्रय दाता थे जिन्होंने 21 गांव उन्हें भेंट में दिए थे। उन्हें वीर सिंह देव का आश्रय भी प्राप्त था। वे साहित्य और संगीत धर्म शास्त्र और राजनीति ज्योतिष और वैद्यक सभी विषयों के गंभीर अध्येता थे। केशवदास की रचना में उनके तीन रूप आचार्य महाकवि और इतिहासकार दिखाई पड़ते हैं।

आचार्य का आसन ग्रहण करने पर केशवदास को संस्कृत की शास्त्रीय पद्धति को हिंदी में प्रचलित करने की चिंता हुई जो जीवन के अंत तक बनी रही। केशवदास ने ही हिंदी में संस्कृत की परंपरा की व्यवस्था पूर्वक स्थापना की थी। उनके पहले भी रीति ग्रंथ लिखे गए पर व्यवस्थित और सर्वांगपूर्ण ग्रंथ सबसे पहले उन्होंने प्रस्तुत किए।

उनकी प्रमुख प्रमाणिक रचनाएं हैं- 'रसिक प्रिया', 'कवि प्रिया', 'रामचंद्रिका', 'वीरसिंह देव चरित', 'विज्ञान गीता', 'जहांगीर जस चंद्रिका' आदि। 'रतन बावनी' का रचनाकाल अज्ञात है किंतु उसे उनकी सर्वप्रथम रचना माना जा सकता है।

पाठ परिचय

केशवदास की प्रसिद्ध रचना **रामचंद्रचंद्रिका** का एक अंश यहाँ हमारा पाठ्य विषय है। इस अंश में तीन छंद हैं। छंदों में से पहला छंद **सरस्वती वंदना** के नाम से संकलित है। **सरस्वती वंदना** में कवि ने मां सरस्वती की उदारता और वैभव का गुणगान किया है। कवि कह रहे हैं कि मां सरस्वती की महिमा का वर्णन करना ऋषि-मुनियों और देवताओं के द्वारा भी संभव नहीं है।

दूसरे छंद **पंचवटी-वन-वर्णन** में कवि ने पंचवटी के महात्म्य का सुंदर वर्णन किया है।

अंतिम छंद **अंगद** में श्री रामचंद्र जी के गुणों का वर्णन है। वह रावण को समझाते हुए कह रहा है कि राम का वानर हनुमान समुद्र को लाँघकर लंका में आ गया और तुमसे कुछ करते नहीं बना। इसी प्रकार तुमसे लक्ष्मण द्वारा खींची गई धनुरेखा भी पार नहीं की गई थी। तुम श्रीराम के प्रताप को पहचानो।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न-1. देवी सरस्वती की उदारता का गुणगान क्यों नहीं किया जा सकता?

उत्तर- कवि मानते हैं कि वाणी की देवी माता सरस्वती की उदारता का गुणगान करने में आज तक कोई भी सफल नहीं हुआ है। देवगण और प्रसिद्ध ऋषि-मुनियों ने उनकी उदारता का वर्णन करना चाहा किंतु यह संभव नहीं हो सका। अतीत में भी उनकी उदारता का वर्णन हुआ है, वर्तमान में भी हो रहा है और भविष्य में भी ऐसा होगा। किंतु कोई भी उनकी उदारता का संपूर्ण वर्णन नहीं कर सकता।

सरस्वती की उदारता में नित्य नवीन अध्याय जुड़ते रहते हैं। नवीनता के संचार के कारण ही उनकी उदारता का वर्णन किसी के लिए संभव नहीं होता। यहां तक कि उनके पति ब्रह्मा, पुत्र महादेव तथा पुत्र कार्तिकेय ने भी उनकी उदारता का गुणगान करने का प्रयास किया, किंतु वे सफल न हो सके।

प्रश्न-2. चार मुख, पांच मुख, और षटमुख किन्हें कहा गया है और उनका देवी सरस्वती से क्या संबंध है?

उत्तर- 'चार मुख' सृष्टिकर्ता ब्रह्मा के लिए प्रयुक्त हुआ है। 'पांच मुख' महादेव अर्थात शंकर के लिए तथा 'षट्मुख' शंकर के पुत्र कार्तिकेय के लिए प्रयुक्त हुआ है। कवि ने सरस्वती को प्रजापति ब्रह्मा की पत्नी माना है। शंकर को कवि ने ब्रह्मा एवं सरस्वती का पुत्र बताया है। इस संबंध से 'कार्तिकेय' ब्रह्मा तथा सरस्वती के पौत्र हैं।

प्रश्न- 3. कविता में पंचवटी के किन गुणों का उल्लेख किया गया है?

उत्तर- कवि ने पंचवटी को शिव के समान कल्याण प्रदायिनी माना है। वह मानता है कि प्रभु श्रीराम की कृपा से पंचवटी का प्राकृतिक सौंदर्य ऐसा है कि वहां पहुंचते ही दुख की चादर फट जाती है अर्थात मनुष्य दुखों से दूर हो जाता है। यहां कपट धोखा जैसे अवगुणों के लिए कोई स्थान नहीं है।

पंचवटी का भाव ऐसा है कि व्यक्ति का मन सात्विक हो जाता है इस स्थान का सामीप्य प्राप्त कर मनुष्य की पाप की बेड़ी कट जाती है और ज्ञान की प्राप्ति होती है।

कवि केशवदास का मानना है कि पंचवटी साक्षात शिव के समान है, जिसके दर्शन मात्र से सामान्य प्राणी भी कल्याण पद को पा लेता है।

प्रश्न-4. तीसरे छंद में संकलित कथा अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- **अंगद** शीर्षक के अंतर्गत लिखे सवैये में कवि केशवदास ने रामायण की तीन सुप्रसिद्ध घटनाओं की ओर संकेत किया है। ये तीनों घटनाएं क्रमशः ये है-

'धनुरेख गई ना तरी'- रावण के आदेश से हिरण बने मारीच ने सीता को छला। राम द्वारा तीर से आहत होने पर उस कपटी के मुख से निकला- 'हे राम!' इस ध्वनि से भ्रमित सीता ने श्रीराम की सहायता हेतु जाने के लिए लक्ष्मण को बाध्य कर दिया। लक्ष्मण ने पंचवटी क्षेत्र से दूर जाने से पूर्व सीता की सुरक्षा के लिए अपने तीर से एक रेखा खींची। यह रेखा सीता के लिए एक सुरक्षा-चक्र था तथा सीता को इसे लांघने की मनाही थी। पंचवटी से लक्ष्मण के चले जाने के बाद रावण ने छद्मवेश में पंचवटी के निकट पहुंचकर सीता से भिक्षा मांगी। छली रावण ने जब लक्ष्मण द्वारा बनाए

jharkhandlab.com

सुरक्षा घेरे को लांघना चाहा तो वह उसे पार न कर पाया।

'बारिधि बाँधिकै बाट करी'- श्रीराम ने वानर- भालू सेना की सहायता से समुंद्र को बांधकर पत्थरों का पुल बना लिया। इस तरह प्रभु श्री राम ने लंका पर चढ़ाई के लिए वहां तक जाने का मार्ग बनाया।

'जरी लंक-जराई जरी'- प्रभु श्री राम के सेवक हनुमान सीता की खोज में लंका पहुंचे। वहां रावण की सेना द्वारा उन्हें बंदी बना लिया गया। तब रावण की आज्ञा से रावण के सेवकों ने हनुमान की पूंछ पर तेल छिड़क कर आग लगा दी। हनुमान का तो कुछ नहीं बिगड़ा बल्कि स्वर्ण जड़ित रावण की लंका जलकर राख हो गई।

प्रश्न-5. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

(क) पति बर्नै चारमुख पूत बर्नै पंचमुख नाती बर्नै षटमुख तदपि नई-नई।

(ख) चहुँ ओरनि नाचति मुक्तिनटी गुन धूरजटी एंटी पंचबटी।

(ग) सिंधु तरयो उनको बनरा तुम पै धनुरेख गई न तरी।

(घ) तेलनि तूलनि पूँछि जरी न जरी, जरी लंक जराई -जरी।

उत्तर- (क) कवि केशवदास ने इस काव्य पंक्ति में व्यक्त किया है कि अभी तक सभी सरस्वती की उदारता का वर्णन करने मे असमर्थ रहे हैं। जब चार, पांच और छह मुख वाले अर्थात ब्रह्मा, शिव और कार्तिकेय सरस्वती का गुणगान नहीं कर पाए, तब एक मुख अर्थात सामान्य आदमी का तो क्या कहना। सरस्वती की उदारता का वर्णन न कर सकने का मुख्य कारण सरस्वती का नित नया रूप धारण करना है।

इस पंक्ति में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार का प्रयोग हुआ है। कवि ने सरल, सहज व सुबोध ब्रज भाषा में सहजाभिव्यक्ति की है।

(ख) कवि केशव दास जी ने बड़ा ही मनोहारी वर्णन करते हुए पंचवटी की सुंदरता का उल्लेख किया है। कवि कहता है कि पंचवटी के चारों ओर दुर्लभ मुक्ति या मोक्ष नदी की भांति बहता रहता है। यहां आकर हर प्राणी मुक्ति का अनुभव करता है अपने गुणों के कारण पंचवटी शिव के समान है।

कवि ने पंचवटी- वर्णन मैं अतिशयोक्ति अलंकार का प्रयोग किया है। इसी के साथ रूपक का भी सुंदर योग देखने को मिलता है। कवि ने अपने भावों को ब्रजभाषा में व्यक्त किया है।

(ग) कवि केशवदास जी ने अपने इस सवैये में अंगद के माध्यम से रावण पर व्यंग्य किया है। अंगद रावण को प्रभु श्रीराम की शक्ति का परिचय देना चाहता है। अंगद बताता है कि राम का एक छोटा सेवक वानर (हनुमान) भी उसकी लंका में घुस आया और सोने की लंका को क्षणभर में जला डाला। परंतु स्वयं को शक्तिशाली समझने वाला रावण लक्ष्मण द्वारा खींची गई एक रेखा को भी नहीं लांघ सका, जबकि प्रभु श्री राम अपने सेना सहित समुद्र लांघ लंका तक पहुंच गए। अंततः अंगद रावण को धिक्कारता है।

कवि ने भावाभिव्यक्ति के लिए ब्रजभाषा को माध्यम बनाया है।

(घ) केशवदास जी ने इस सवैये में रावण की असफलता का वर्णन किया है। केशवदास जी लिखते हैं कि प्रभु श्रीराम के सेवक हनुमान ने लंका में पहुंचकर लंका को जला डाला। हनुमान की पूंछ का कुछ भी न बिगड़ा, जबकि स्वर्णजड़ित संपूर्ण लंका नगरी जलकर राख हो गई। कवि ने इस समय में हनुमान की कुशलता और वीरता को भी उजागर किया है।

यमक और अनुप्रास अलंकार के प्रयोग से छंद का सौंदर्य बढ़ा है। कवि ने बड़ी ही मनोरंजक ब्रज भाषा में मनोभावों को व्यक्त किया है।

प्रश्न-6. निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) भावी भूत वर्तमान जगत बखानत है केसोदास, केहूँ ना बखानी काहू पै गई।

(ख) अघओघ की बेरी कटी बिकटी निकटी प्रकटी गुरुज्ञान -गटी।

उत्तर- (क) कवि केशवदास जी कहते हैं कि देवी सरस्वती की उदारता इतनी अधिक है कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक संसार के अनेक प्राणी प्रयास करके थक गए हैं, परंतु कोई भी उनकी उदारता का वर्णन नहीं कर सका। कवि को लगता है कि उनकी उदारता अवर्णनीय है, इसलिए भविष्य में भी किसी से उनकी उदारता का वर्णन नहीं हो सकेगा।

(ख) इस पंक्ति के माध्यम से कवि केशवदास पंचवटी के महात्म्य की चर्चा करते हैं। यह वह स्थान है जहां सीता, राम तथा लक्ष्मण ने वास किया। इस स्थान का वातावरण रमणीय तथा स्वच्छ है। यह पापरहित तथा पवित्र-स्थली है।यहां आने वाले सभी मनुष्यों के पाप नष्ट हो जाते हैं। यह स्थान ज्ञान का अतुल भंडार है और सभी प्राणियों में ज्ञान का उदय करता है।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न-1. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

सिंधु तरयो उनको बनरा तुम पै धनुरेख गई न तरी।

बाँधोई बाँधत सो न बन्यो उन बारिधि बाँधिकै बाट करी।

श्रीरघुनाथ-प्रताप की बात तुम्हैं दसकंठ न जानि परी।

तेलनि तूलनि पूँछि जरी न जरी, जरी लंक जराई-जरी।।

उत्तर- **संदर्भः** प्रस्तुत सवैया केशवदास द्वारा रचित **रामचंद्रचंद्रिका** के **अंगद** शीर्षक के अंतर्गत वर्णित है।

प्रसंगः अंगद रावण को राम लक्ष्मण एवं हनुमान की महानता एवं उनके पराक्रम के विषय में बताते हुए उन्हें समझा रहे हैं।

Jharkhandlab.com

व्याख्या: अंगद रावण को समझाते हुए कह रहे हैं कि श्री राम के दूत हनुमान एक सामान्य वानर होते हुए भी समुद्र पार कर गए और तुम लक्ष्मण के द्वारा धनु से खींची गई रेखा भी नहीं पार कर सके। कहने का आशय यह है कि तुम में स्थित शक्ति एवं पराक्रम उनके दूत की शक्ति के तुलना में कुछ नहीं। तुमने सिर्फ एक बानर को बाँधना चाहा, लेकिन उसे तुम बांध नहीं सके, जबकि श्रीराम ने तो सागर को भी बाँध दिया एवं उसके ऊपर मार्ग बना दिया। तुमने हनुमान की पूँछ को आग से जलाना चाहा, किंतु वह पूँछ तुमसे जल न सकी। उस पूँछने सोने और रत्नों से जली लंका को जला दिया। हे रावण! इतना सब कुछ देखने के बाद भी तुमको श्री राम के प्रताप का ज्ञान नहीं हो सका। श्रीराम शक्ति और पराक्रम एवं अन्य सभी गुणों में तुमसे श्रेष्ठ हैं। अतः उनके प्रताप को अच्छी तरह पहचानो।

विशेष: 1. कवि ने अपने ईष्ट प्रभु श्री राम की स्तुति की है और दुराचारी रावण की निंदा भी की है।

2. रचना सरल, सहज, सुबोध ब्रजभाषा में है।

3. सवैया छंद में निबद्ध इस रचना में वीर रस व्याप्त है

4. रचना में अनुप्रास तथा यमक अलंकार का प्रयोग हुआ है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. कवि केशवदास किस काल के कवि थे?

1. आदिकाल 2. भक्ति काल
3. रीतिकाल 4. आधुनिक काल

प्रश्न 2. कवि केशवदास का जन्म कब हुआ था?

1. 1535 2. 1545
3. 1555 4. 1556

प्रश्न 3. केशवदास की काव्य भाषा क्या थी?

1. संस्कृत 2. प्राकृत
3. अवधी 4. ब्रज

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से कौन सी रचना केशवदास की प्रसिद्ध रचना है?

1. रामचंद्रिका 2. रामचरितमानस
3. दोनों 4. इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 5. कवि केशवदास के अनुसार किस देवी की उदारता का गुणगान संभव नहीं है?

1. देवी लक्ष्मी 2. देवी मनसा
3. देवी जगधात्री 4. देवी सरस्वती

प्रश्न 6. षटमुख किसे कहा गया है ?

1. कार्तिकेय 2. शिव
3. ब्रह्मा 4. विष्णु

प्रश्न 7. पंचवटी का प्रसंग किस से जुड़ा हुआ है ?

1. श्री कृष्ण 2. श्री राम
3. श्री विष्णु 4. इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 8. बांधोई बांध सो न बान्यो उन बारिधि बांधि के बाट करी में कौन सा अलंकार है?

1. अनुप्रास 2. यमक
3. पुनरुक्ति प्रकाश 4. इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 9. अंगद द्वारा किसका उपहास किया गया है?

1. रावण 2. विभीषण
3. कुंभकरण 4. इनमें से कोई नहीं

प्रश्न10. अंगद शीर्षक सवैया में किस रस की अभिव्यक्ति हुई है?

1. वीर रस 2. वीभत्स रस
3. शृंगार रस 4. शांत रस

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1	- 3	2	- 3
3	- 4	4	- 1
5	- 4	6	- 1
7	- 2	8	- 1
9	- 1	10	- 1

Jharkhandlab.com

पाठ–11

कवित्त/सवैया

घनानंद (सन् 1673-1760)

कवि परिचय

रीतिकाल के रीतिमुक्त काव्यधारा के सर्वश्रेष्ठ कवि घनानंद हैं। वे दिल्ली के तत्कालीन बादशाह मुहमदशाह रँगीले के दरबार में मीरमुंशी थे तथा सुजान नामक नर्तकी पर आसक्त थे। एक दिन दरबारियों ने बादशाह से कहा कि घनानंद बहुत अच्छा गाते हैं। बादशाह ने उन्हें गाना सुनाने को कहा परंतु घनानंद ने असमर्थता व्यक्त की। इसपर दरबारियों ने कहा कि अगर सुजान को बुलाया जाय तो वे अवश्य गाना सुनाएँगे। उसे बुलाया गया और घनानंद ने उसकी ओर मुख और बादशाह की ओर पीठ करके ऐसा गाना सुनाया कि सारा दरबार मंत्रमुग्ध हो गया। बादशाह ने इसे अपनी अवमानना समझा तथा उन्हें दिल्ली से निष्कासित कर दिया परन्तु सुजान इनके साथ नहीं गई। सुजान के इस व्यवहार से उन्हें आघात लगा और वे वृंदावन जा कर निंबार्क सम्प्रदाय में दीक्षित हो गए। वे कृष्ण भक्ति में निमग्न होकर काव्यरचना करते रहे परंतु वे अपनी प्रेयसी को आजीवन भूल नहीं पाए । वियोग-वर्णन में उनका कोई सानी नहीं है। इसलिए उन्हें 'प्रेम की पीड़ा का कवि' कहा जाता है। इनकी सर्वाधिक लोकप्रिय रचना सुजानहित है। 'सुजान-सागर', 'विरह- लीला', 'रसकेलि वल्ली' इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। वे प्रेमसंवेदना एवं भक्ति संवेदना के कवि हैं। इनकी भाषा परिष्कृत और साहित्यिक ब्रजभाषा है। कोमलता और मधुरता से ओत-प्रोत है। इन्होंने लोकोक्तियों, मुहावरों के प्रयोग से भाषा के सौन्दर्य में चार चाँद लगा दिए हैं।

पाठ परिचय

कवित्त

प्रथम कवित्त में कवि ने अपनी प्रेमिका सुजान से मिलन की उत्कट अभिलाषा प्रकट की है। अपनी प्रेमिका को देखे हुए बहुत दिन बीत गए हैं। उसने वादा किया परंतु आई नहीं । कवि गहरी उदासी में डूबा है। मिलन की सारी संभावनाएँ समाप्त हो गई है। उसके प्राण केवल उसके आने की आहट को सुनने के लिए बचे हुए हैं। दूसरे कवित्त में कवि को अपने प्रेम पर पूरा विश्वास है, वह कहता है कि आखिर तुम कब तक मेरे प्रेम को इस तरह ठुकराती रहोगी। एक-न-एक दिन तुम्हें मेरी पुकार सुननी ही पड़ेगी ।

सवैया

इस सवैये में कवि घनानंद की प्रेम की आकुलता और पीड़ा का वर्णन है। कवि अपनी प्रिया के सौन्दर्य-सुधा का पान करके जीवित था, जब उसकी सुजान उसके साथ थी। संयोग-सुख में उसके प्राण पलते थे परंतु वियोग की कातर दशा में, वह व्याकुल बना फिरता है। कवि कहते हैं कि एक समय था, जब दोनों के मध्य प्रेयसी के गले का हार भी उन्हें व्यवधान लगता था, परंतु आज तो विरह रूपी पहाड़ उसके सामने आकर खड़ा हो गया है। इसमें कवि ने मिलन और विरह की अवस्थाओं की तुलना की है।

दूसरे सवैये में कवि अपनी प्रेमिका को एक प्रेमपत्र लिखते हैं, जिसमें उसके सुंदर चरित्र का वर्णन करते हैं, लेकिन निष्ठुर सुजान उस पत्र को पढ़े बिना ही फाड़कर फेंक देती है। यह कवि पर बड़ा आघात है और वे इस वेदना से अत्यन्त व्याकुल हैं।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोतर

प्रश्न 1. 'कवि ने चाहत चलन ये संदेसो ले सुजान को' क्यों कहा है?

उत्तर इस पंक्ति में कवि को अपनी प्रेयसी सुजान से मिलने की व्यग्रता दिखाई देती है। वह रह रह कर अपनी प्रेमिका से मिलन की प्रार्थना कर रहा है परन्तु उनकी प्रार्थना का सुजान (प्रेमिका)पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है। वे इस कारण दुखी है। कवि आश्वासनों पर विश्वास करते -करते, उसके आने की प्रतीक्षा करते -करते बुरी तरह थक गया है। उन्हें प्रतीत हो रहा है कि उनका अंतिम समय आ गया है। अतः वे कह उठते हैं कि बहुत लम्बे समय से मैं तुम्हारे आने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। परंतु तुम्हारा कुछ पता नहीं। तुमसे मिलने की आस में मेरे प्राण अटक गये हैं। यदि एक बार तुम्हारा संदेश आ जाए तो मैं उन्हें लेकर ही मृत्यु को प्राप्त कर लूंगा। कवि इन पंक्तियों में अपने जीवन का आधार प्रेमिका के संदेश को बताते हैं जिसे पाने के लिए उनका मन व्याकुल हो गया है। यदि एक बार उसे संदेश मिल जाए, तो वह आराम से अपने प्राण त्याग दें।

प्रश्न 2. कवि मौन होकर प्रेमिका के कौन से प्रण पालन को देखना चाहता है?

उत्तर कवि के अनुसार उनकी प्रेमिका कठोर बनी हुई है। वह न उसे मिलने आती है और न ही कोई संदेश भेजती है।कवि को लगता है कि सुजान ने चुप्पी साध लेने का प्रण किया हुआ है। कवि मौन रहकर अपनी प्रेमिका सुजान के इस प्रण-पालन को देखना चाहता है कि उसकी प्रेमिका कब तक कठोर बनी रहती है। वह बार-बार अपनी प्रेमिका को पुकार रहे हैं, उसकी पुकार को कब तक सुजान अनसुना करती है।कवि यही देखना चाहता है।

प्रश्न 3. कवि ने किस प्रकार की पुकार से 'कान खोलि है' की बात कही है?

उत्तर कवि ने अपनी करुण भरी पुकार से नायिका (सुजान) के कान खोलने की बात कही है। कवि कहता है कि सुजान कब तक मेरी बातों को अनसुना करेगी। कब तक वह अपने कानों में रूई डालकर बहरी बनी बैठी रहेगी। एक दिन ऐसा अवश्य आएगा कि मेरे हृदय की पुकार उसके कानो तक अवश्य पहुँचेगी। भाव यह है कि कवि को विश्वास है कि एक दिन उसकी प्रेमिका अवश्य उनको प्रेम भाव से अपना लेगी।

प्रश्न 4. प्रथम सवैये के आधार पर बताइए कि प्राण पहले कैसे पल रहे थे और अब क्यों दुखी हैं?

उत्तर प्रथम सवैये के आधार पर संयोगावस्था होने के कारण प्रेयसी (सुजान)कवि के पास ही थी। अतः कवि उसे देखकर ही सुख पाता और जीवित था। तब उसके प्राण संतुष्ट होकर पल रहे थे। उनकी प्रेमिका उनके साथ थी परन्तु अब स्थिति उसके विपरीत है। प्रेमिका के बिछुड़ने पर उसके प्राण व्याकुल हो उठे हैं। यह वियोगावस्था है। प्रेमिका (सुजान) की अनुपस्थिति उसे व्याकुल बना रही है। कवि के प्राण अपने

प्रेमिका से मिलने के लिए व्याकुल हैं। इस कारण वह दुखी है।कवि की प्रेमिका सुजान अब कवि के निकट नहीं हैं।

प्रश्न 5. घनानंद की रचनाओं की भाषिक विशेषताओं को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर घनानंद की रचनाओं की भाषिक विशेषताएँ-

(क) घनानंद की रचनाओं में अलंकारों का सुन्दर वर्णन मिलता है। उसमें मधुरता और कोमलता का समावेश है।वे अलंकारों का प्रयोग बड़ी प्रवीणता से करते हैं। उनकी दक्षता का परिचय उनकी रचनाओं का पठन करतें ही मिल जाता है। इनकी भाषा में लाक्षणिकता भी मिलती है। इन्हें अलंकार प्रयोग में महारथ हासिल है।

(ख) घनानंद ब्रज भाषा के प्रवीण कवि थे।

(ग) काव्य भाषा में सर्जनात्मकता के जनक भी थे।

प्रश्न 6. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों की पहचान कीजिए।

(क) कहि कहि आवन छबीले मनभावन को ,गहि गहि राखति ही दैं दैं सनमान को ।

उत्तर प्रस्तुत पंक्ति में 'कहि कहि', 'गहि गहि', तथा 'दै दै' की आवृति में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।

(ख) कूक भरी मूकता बुलाय आप बोलि हैं।

उत्तर प्रस्तुत पंक्ति में कवि ने अपनी चुप्पी को कोयल की कूक के समान बताया है। इसके माध्यम से कवि अपनी प्रेमिका (सुजान) पर व्यंग्य करता है। इस पंक्ति में विरोधाभास अलंकार है।

(ग) अब न घिरत घन आनंद निदान को।

उत्तर प्रस्तुत पंक्ति में 'घन आनंद' शब्द के दो अर्थ हैं। इसमें एक अर्थ आनंद है तो दूसरा अर्थ स्वयं कवि घनानंद से है। इसमें श्लेष अलंकार है। 'घ' वर्ण की आवृत्ति के कारण इसमें अनुप्रास अलंकार है।

प्रश्न 7. निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए

(क) बहुत दिनान की अवधि आसपास परे
खरे अरबरनि भरे हैं उठि जान को।

उत्तर - प्रस्तुत पंक्ति का आशय यह है कि तुम्हारे (सुजान) इंतजार में बहुत दिन बीत गए। इस आस में कि तुम आओगी। अब मेरे प्राण निकलने वाले है। भाव यह है कि कवि इस आस में थे कि उनकी प्रेमिका अवश्य आएगी परंतु वह नही आयी। अब उनके कुछ ही दिन शेष रह गए हैं और वह अपने अंतिम दिनों में अपनी प्रेमिका के दर्शन चाहता है।

(ख) मौन हू सौं देखिहौं कितेक पन पालिहौ जू
कूकभरी मूकता बुलाय आप बोलिहै ।

उत्तर कवि मौन रहकर अपनी निष्ठुर सुजान को प्रण का निर्वाह करते हुए देखना चाहता है ।कवि कहते हैं कि मेरी कूकभरी (पुकार भरी) चुप्पी सुजान को बोलने पर विवश कर देगी। भाव यह है कि कवि की प्रेमिका उससे नही बोल रही है और कवि उसे चुप रहकर बोलने के लिए विवश कर देंगे।

(ग) तब तौ छबि पीवत जीवत है, अब सोचन लोचन जात जरे।

उत्तर कवि घनानंद सुजान मे मिलकर जीवित रहता था। उसके रूप सौंदर्य का रसपान कर सुख पाता था और उसको देखकर आनंद से भर उठता था। परंतु अब वियोग की अवस्था है। अब उससे बिछड़ कर मिलन के क्षणों को याद कर-करके उसके नेत्र जल जाते हैं। अर्थात कवि दुखी है। उसे अब भी सुजान से मिलने की चाह व आशा है।

(घ) सो घनानंद जान अजान लौं टूक कियौ पर बाँचि न देख्यौ।

उत्तर कवि घनानंद ने अपने हृदय का दुख एक प्रेम पत्र में लिखा और सुजान को भेजा था। परंतु निष्ठुर सुजान ने बिना पढ़े ही उस प्रेम पत्र के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। अर्थात् यह कि सुजान ने कवि की भावनाओं को समझे बिना ही उसके हृदय को तोड़ दिया । उसके इस व्यवहार से कवि का हृदय आहत होता है। उसने एक बार भी पत्र को खोलकर नहीं देखा और पत्र को फाड़ दिया ।

(ङ) तब हार पहार से लागत हे, अब बीच में आन पहार परे।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति का आशय यह है कि जब कवि प्रेयसी के साथ रहता था अर्थात् मिलन के क्षणों में उसके गले का हार पहाड़ के समान प्रतीत होते थे। परन्तु आज हम दोनों के मध्य विरह रुपी पहाड़ विद्यमान है। भाव यह है कि वियोग के कारण दोनों एक दूसरे से बहुत दूर हो गए हैं।

प्रश्न 8. संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए -

(क) झूठी बतियानि की पत्यानि तें उदास ह्वै कै,
अब ना घिरत घन आनँद निदान को।
अधर लगे हैं आनि करि कै पयान प्रान,
चाहत चलन ये सँदेसों लै सुजान को।।

उत्तर **प्रसंग-** प्रस्तुत पंक्तियाँ घनानंद द्वारा रचित हैं। प्रस्तुत पंक्तियों में कवि प्रेमिका के वियोग के कारण अपनी स्थिति का वर्णन करते हैं। कवि मिलन की आस लगाए बैठे है, परंतु सुजान उनकी ओर से विमुख बनी बैठी है।

व्याख्या - मैंने तुम्हारी झूठी बातों पर विश्वास किया, किन्तु उस पर विश्वास करके आज मैं उदास हूँ। अब तो उदासी इतनी बढ़ गई है कि अब मेरे हृदय को आनंद देने वाले बादल भी घिरते दिखाई नहीं दे रहे हैं। जो मेरे हृदय को सुख दे पाते। मेरे प्राण अब कंठ तक पहुँच गए हैं अर्थात् मेरे प्राण निकलने वाले हैं। मेरे प्राण इस लिए अटके हुए हैं कि तुम्हारा कोई संदेश आए और मैं उसे लेकर ही मरूं। भाव यह है कि कवि अपनी प्रेमिका (सुजान) के संदेश की राह देख रहा है। उसके प्राण अब संदेश के लिए अटके हुए हैं।

(ख) जान घनानंद यों मोहि तुम्हें पैज परी,
जानियैगो टेक टरें कौन धौ मलोलिहै।।
रुई दिए रहौगे कहाँ लौ बहरायबे की?
कबहूँ तौ मेरियै पुकार कान खोलिहै।

उत्तर - **प्रसंग** - प्रस्तुत पंक्तियाँ में कवि घनानंद अपनी वियोग की अवस्था का वर्णन करते हैं। कवि कहते हैं कि उसकी प्रेमिका निष्ठुर हो गई है।

Jharkhandlab.com

व्याख्या - घनानंद कहते हैं कि हे सुजान तुम्हें अपनी जिद्द छोड़कर मुझसे बोलना ही पड़ेगा। लगता है तुमने अपने कानों में रुई डाल ली है। इस तरह तुम कब तक मेरी बात नहीं सुनने का बहाना करोगी। कभी तो ऐसा दिन आएगा, जब तुम्हारे कानों तक मेरी करुण पुकार पहुंचेंगी। भाव यह है कि सुजान की अनदेखी पर कवि चीत्कार उठते हैं और उसके सम्मुख यह कहने पर विवश हो जाते हैं कि एक दिन सुजान कवि के प्रेम निवेदन को स्वीकार करेगी।

(ग) तब तो छबि पीवत जीवत हे,

अब सोचत लोचन जात जरे।

हित-तोष के तोष सु प्रान पले,

बिललात महा दुख दोष भरे ।

उत्तर - **प्रसंग**- प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि घनानंद रचित **सवैया** से उद्धृत है। इसमें कवि संयोग और वियोग की स्थिति का वर्णन करते हैं।

व्याख्या- कवि घनानंद अपनी प्रेयसी सुजान से कह रहे हैं कि जब कवि उसके निकट था तो उसे देखकर जीवित था अब उसे बिछड़ कर उसे याद करके उसकी आँखे जली जाती हैं। अर्थात् अब वह बहुत व्याकुल रहता है। प्रेमिका के निकट रहकर उनके प्राण को संतोष मिलता था परंतु अब उनसे दूर रहकर कवि को महादुख झेलना पड़ रहा है। अब उनका हृदय दुखों से भरा पड़ा है।

(घ) ऐसो हियो हितपत्र पवित्र जु,

आन-कथा न कहूँ अवरेख्यौ।

सो घनआनंद जान अजान लौं,

टूक कियौ पर बाँचि न देख्यौ।

उत्तर- **प्रसंग**- प्रस्तुत पंक्तियाँ रीतिकालीन कवि घनानंद द्वारा रचित **सवैया** से लिया गया है। कवि ने अपनी प्रेमिका को जो प्रेम पत्र लिखा है उस पत्र को उसने बिना पढ़े ही फाड़ कर फेंक दिया है। कवि ने प्रेमिका की निष्ठुरता को व्यक्त किया है।

व्याख्या- कवि घनानंद ने थक हार कर प्रेम के सुन्दर चरित्र को पत्र में व्यक्त किया था। उसने विशेष ध्यान रखा था कि पत्र में कोई अन्य बाते न आएँ। कवि ने ऐसा प्रेम पत्र लिखा था जो अन्यत्र कहीं भी न मिल सके। यह प्रेम पत्र एक पवित्र कथा के समान था। लेकिन निष्ठुर सुजान (प्रेमिका) ने बिना पढ़े फाड़ कर टुकड़े टुकड़े कर दिए।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. घनानंद वियोग के कवि हैं प्रकाश डालिए।

उत्तर घनानंद रीतिकाल के रीति मुक्त काव्य धारा के कवि है जिन्हें वियोग के कवि के रूप में जाना जाता है। घनानंद सुजान से प्रेम करते थे, किन्तु सुजान ने उनसे बेबफाई की, परिणामस्वरूप उनका हृदय वियोग वेदना से ओत- प्रोत हो गया। घनानंद ने अपनी वेदना का चित्रण अपनी रचनाओं में किया है इसलिए उन्हें वियोग वेदना का कवि कहा जाता है। घनानंद की कविताओं में प्रिय की निष्ठुरता का, अपनी विकलता का, दर्शन की लालसा का, प्रिय के सौन्दर्य आदि का मार्मिक चित्रण किया गया है।

प्रश्न 2. 'सो घनानंद जान अजान लौं टूक कियो पर बाँचि न देख्यौ' के काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर - भाव-पक्ष– घनानंद कवि सुजान को उपालम्भ देते हुए कहते हैं कि मैने हृदयरूपी प्रेम पत्र आपको पढ़ने हेतु दिया था। आपने अनजान की भांति उसे बिना पढ़े ही टुकड़े-टुकड़े करके फेंक दिया। यह अच्छा नहीं किया। इस हृदयरूपी प्रेम पत्र पर यह केवल आपके ही सुन्दर चरित्र अंकित थे अर्थात् मैं तो केवल आपसे ही प्रेम करता था। पर आपने मेरे इस प्रेम की कदर नहीं की और मेरे हृदय को तोड़कर अच्छा नहीं किया। यही शिकायत आपसे है।

कला-पक्ष– 'जान अजान लौं' में विरोधाभास अलंकार है। जान शब्द सुजान और जानकार का बोधक होने से इसमें श्लेष अलंकार है। सरस, साहित्यिक ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है। भाषा लाक्षणिकता से युक्त है। वियोग रस का प्रभावशाली एवं सफल वर्णन हुआ है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. कवि क्यों दुःखी है?

उत्तर कवि घनानंद प्रेमिका (सुजान) के वियोग में दुखी हैं। उनकी प्रेमिका ने कहा था वह उनसे मिलने आयेगी लेकिन वह कोई जवाब नहीं देती और न ही अपने आने का कोई संदेश भेजती है। इसलिए कवि दुखी है।

प्रश्न 2. कवि मौन होकर क्या देखना चाहता है?

उत्तर - कवि मौन होकर यह देखना चाहते हैं कि उनकी प्रेमिका (सुजान) कब तक उसके संदेश का जवाब नहीं देती। कवि को विश्वास है कि उनका मौन ही उनके प्रेमिका की चुप्पी का जवाब है।

प्रश्न 3. दूसरे सवैये में कवि ने किसका वर्णन किया है?

उत्तर – दूसरे सवैये में कवि को यह दुःख है कि उसने अपने हृदय के सभी प्रेमभाव से लिखे पत्र, जो प्रेमिका को भेजे थे वह उसने पढ़े नहीं और टुकड़े टुकड़े करके फेंक दिए।

प्रश्न 4. दोनों कवित्त में क्या विशेष है?

उत्तर – प्रथम कवित्त में करुण रस है और दूसरे कवित्त में श्रृंगार रस है। दोनों में ही ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

(1) घनानंद किस काल के कवि है?

(1) भक्तिकाल (2) आधुनिकाल
(3) रीतिकाल (4) आदिकाल

(2) घनानंद के प्रेमिका का नाम बताएँ ।

(1) सुजान (2) मेनका
(3) (1) एवं (2) दोनों (4) इनमें से कोई नहीं

(3) घनानंद की काव्य भाषा क्या है?

(1). खड़ी बोली (2). अवधी

(3). ब्रजभाषा (4). बघेली

(4) कवि प्रथम 'कवित्त' किसको संबोधित करता है?

(1). प्रेमिका (सुजान) को (2). सखा को

(3). पिता को (4). माता को

(5). 'सुजान सागर' किसकी रचना है?

(1) घनानंद (2) केशवदास

(3) विद्यापति (4) तुलसीदास

(6) घनानंद किसे प्रेम पत्र लिखते हैं?

(1) अप्सरा को (2) देवी को

(3) दोस्त को (4) सुजान को

(7) संकलित कविता में कवि घनानंद के कितने कवित्त और सवैये दिए हैं?

(1) दो कवित्त दो सवैया (2) चार कवित्त तीन सवैया

(3) तीन कवित्त तीन सवैया (4) इनमें से कोई नहीं

(8) घनानंद के प्राण किसमें अटके हुए हैं?

(1) सुजान के दर्शन में (2) घर जाने के लिए

(3) पत्र लिखने के लिए (4) इनमें से सभी

(9) निम्न में से कौन सी रचना घनानंद की नहीं है?

(1) सुजान सागर (2) रस केलि वल्ली

(3) विरह लीला (4) रसिक प्रिया

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

(1) - (3) (2) - (1)

(3) - (3) (4) - (1)

(5) - (1) (6) - (4)

(7) - (1) (8) - (1)

(9)- (4)

Jharkhandlab.com

Jharkhandlab.com

गद्य खंड

Jharkhandlab.com

पाठ – 1

प्रेमघन की छाया-स्मृति

रामचंद्र शुक्ल (सन् 1884-1941)

लेखक परिचय

आचार्य रामचंद्र शुक्ल का जन्म उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले के अगौना गाँव में हुआ था। उनके पिता कानूनगो (राजस्व निरीक्षक) थे। शुक्ल जी की औपचारिक शिक्षा इण्टरमीडिएट तक ही हुई थी। पिता उन्हें उर्दू, अंग्रेजी एवं फारसी की शिक्षा दिलाना चाहते थे, परंतु उन्हें हिन्दी से विशेष लगाव था। उन्होंने स्वाध्याय के द्वारा संस्कृत, अंग्रेजी, बाँग्ला और हिन्दी के प्राचीन एवं नवीन साहित्य का अध्ययन किया। वे एक मिशन स्कूल में ड्राइंग शिक्षक के रूप में नियुक्त हुए। वे नागरी प्रचारिणी सभा में सहायक संपादक भी रहे। तदुपरान्त वे नागरी प्रचारिणी पत्रिका के संपादक भी रहे। वे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी प्राध्यापक रहे तथा वहीं हिन्दी के विभागाध्यक्ष बना दिये गये।

उनकी प्रथम सुविख्यात रचना 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' है। 'रस मीमांसा' 'चिन्तामणि' उनकी महत्वपूर्ण कृति है। उन्होंने 'जायसी ग्रंथावली' तथा 'भ्रमरगीत सार' का संपादन भी किया। शुक्ल जी हिन्दी के उच्च कोटि के आलोचक, इतिहासकार और साहित्य चिंतक हैं। उनकी गद्य शैली अत्यन्त जीवंत और प्रभावशाली है। उनके गद्य में व्यंग्य और विनोद का गहरा पुट भी मिलता है। आचार्य शुक्ल बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार थे।

पाठ परिचय

प्रेमघन की छाया-स्मृति एक संस्मरणात्मक निबंध है। इसमें शुक्लजी ने आत्मकथात्मक शैली में हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रति अपने प्रारंभिक रुझानों का बड़ा ही रोचक वर्णन किया है। लेखक का बचपन साहित्यिक परिवेश से भरा-पूरा था। इस निबंध में यह बताया गया है. कि. शुक्ल जी बाल्यावस्था से ही भारतेन्दु मंडल के साहित्यकारों के सम्पर्क में आ गए थे। विशेषकर बदरी नारायण चौधरी प्रेमघन ने उन्हें तथा उनकी समवयस्क मंडली को प्रभावित किया तथा उनके मार्गदर्शन में उनके व्यक्तित्व का परिमार्जन हुआ। शुक्लजी के पिताजी फारसी के अच्छे ज्ञाता थे। वे पुरानी हिंदी कविता के प्रेमी थे। वे रात में अपने घर के सभी सदस्यों को रामचरित मानस तथा रामचन्द्रिका को पढ़कर सुनाया करते थे। शुक्लजी को भारतेन्दु हरिश्चंद्र के नाटक प्रिय लगते थे। जब शुक्लजी की उम्र आठ वर्ष की थी तब उनकी बाल बुद्धि राजा हरिश्चंद्र तथा कवि हरिश्चंद्र में कोई अंतर नहीं समझ पाती थी। मिर्जापुर आने पर पता चला कि हिंदी के प्रसिद्ध कवि बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन यहाँ रहते हैं, जो भारतेन्दु हरिश्चंद्र के मित्र थे। बहुत प्रयत्न करके वे अपने मित्रों के साथ उनके मकान के नीचे उनकी एक झलक पाने को प्रतीक्षा करते रहे और उन्हें प्रेमघन के दर्शन हुए। लेखक ज्यों-ज्यों सयाने होते गए, त्यों-त्यो उनका झुकाव हिंदी साहित्य की ओर बढ़ता गया। वे केदारनाथ पाठक- की पुस्तकालय, से पुस्तकें लाकर पढ़ा करते थे। उनकी मित्र मंडली में काशी प्रसाद जायसवाल भगवानदास हालना, पं० बदरीनाथ गौड़, पं० उमाशंकर द्विवेदी आदि थे। चौधरी साहब से लेखक का अच्छा परिचय हो गया था। लेखक सदा शुद्ध हिंदी बोलते थे जिससे अन्य लोगों को विचित्र लगता था। प्रेमघन रईस व्यक्ति थे। उनके व्यक्तित्व में बड़प्पन झलकता था तथा प्रायः उनके कथन वक्र होते थे अर्थात् वे बातों को घुमा-फिरा कर बोलते थे। जिसका अच्छा चित्रण लेखक ने किया है। इस संस्मरण में लेखक ने अपने पिता, बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बदरीनारायण चौधरी, पं० केदारनाथ पाठक के व्यक्तित्व और कृतित्व की विशेषताओं के साथ-साथ उनके भीतर के लेखक के आकार लेते स्वरूप से एक साथ परिचय कराया है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. लेखक ने अपने पिताजी के किन किन विशेषताओं का उल्लेख किया ?

उत्तर- लेखक ने अपने पिताजी की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया है। लेखक के पिताजी फारसी के अच्छे ज्ञाता थे। उन्हें हिंदी की पुरानी कविता से प्रेम था तथा हिंदी में लिखे वाक्यों को फारसी में अनुवाद करने का शौक था।लेखक के पिता हर रात अपने परिवार को रामचरितमानस को चित्रात्मक ढंग से सुनाने का शौक रखते थे। भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटकों के प्रशंसक भी थे।

प्रश्न 2. बचपन में लेखक के मन में भारतेंदु जी के संबंध में कैसी भावना जगी रहती थी ?

उत्तर - बचपन में लेखक के पिता उन्हें भारतेंदु जी के नाटक पढ़कर सुनाया करते थे। इस कारण लेखक के बाल मन में मधुर भावना भारतेंदु के प्रति जगी रहती थी। वे राजा हरिश्चंद्र तथा कवि भारतेंदु हरिश्चंद्र में अंतर नहीं कर पाते थे। इसलिए लेखक के मन में बचपन से ही भारतेंदु जी के संबंध में एक अपूर्व मधुर भावना जगी रहती थी।

प्रश्न 3. उपाध्याय बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' की पहली झलक लेखक ने किस प्रकार देखी है ?

उतर- लेखक के पिता का मिर्जापुर में बदली होने के बाद जब लेखक मिर्जापुर आए,तो पता चला कि भारतेंदु के एक मित्र उपाध्याय बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन यहां रहते हैं। लेखक ने बालकों की मंडली बनाकर जो उनके घर से परिचित थे उन्हें लेकर डेढ़ मील का सफर तय करने के बाद पत्थर के एक बड़े मकान के पास पहुंचे। वहां से खाली बरामदा दिखाई देता था, घनी लताओं के कारण बीच-बीच में खंभे तथा खुली जगह दिखाई पड़ती थी, सड़क के चक्कर लगाने के बाद लताओं के समूह में एक मूर्ति खड़ी दिखाई पड़ी । दोनों कंधों पर बाल बिखरे हुए थे, देखते ही देखते वह एकदम से ओझल हो गई इस प्रकार लेखक ने पहली झलक देखी थी ।

प्रश्न 4 लेखक का हिंदी साहित्य के प्रति झुकाव किस तरह बढ़ता गया ?

उत्तर- लेखक के पिता हिंदी प्रेमी थे । इस कारण बचपन से ही हिंदी साहित्य के प्रति झुकाव रहा। जैसे -जैसे लेखक बड़ा हुआ, उसका झुकाव हिंदी साहित्य की तरफ बढ़ता गया। उसके पिता के पास भारत जीवन प्रेस की पुस्तकें आती थीं। वह केदारनाथ जी पाठक के हिंदी पुस्तकालय से पुस्तक लाकर पढ़ने लगा इस प्रकार वे हिंदी साहित्य के रस में दिनों दिन डूबता चला गया।

jharkhandlab.com

प्रश्न 5. 'निस्संदेह' शब्द को लेकर लेखक ने किस प्रसंग का जिक्र किया है ?

उत्तर- मिर्जापुर में लेखक के साथ हिंदी प्रेमियों की मंडली थी। वे हिंदी के नए पुराने लेखकों की चर्चा करते रहते थे। वे प्रायः बातचीत में शुद्ध हिंदी का प्रयोग करते थे, इसमें निस्संदेह इत्यादि शब्द का प्रयोग अधिक होता था। लेखक के आसपास में उर्दू भाषा का अधिक प्रभाव था उनके लिए शुद्ध हिंदी अनोखी भाषा भी थी । अतः उन्होंने लेखक मंडली का नाम निस्संदेह रखा हुआ था।

प्रश्न 6. पाठ में कुछ रोचक घटनाओं का उल्लेख है ऐसे तीन घटनाएं चुनकर उन्हें अपने शब्दों में लिखिए ?

उत्तर- ये रोचक घटनाएं निम्नलिखित है –

बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' की बातचीत का ढंग उनके लेखों के ढंग से एकदम निराला होता था। नौकरों तक के साथ उनका संवाद सुनने लायक होता था, अगर किसी नौकर के हाथ से कभी कोई गिलास वगैरह गिरा तो उनके मुंह से यही निकला कि 'कारे बचा त नाहीं । उनके प्रश्नों के पहले क्यों साहब अक्सर लगा रहता था ।

मिर्जापुर में पुरानी परिपाटी के एक बहुत ही प्रतिभाशाली कवि रहते थे। जिनका नाम था वामन आचार्य गिरि । एक दिन वे सड़क पर चौधरी साहब के ऊपर एक कविता जोड़ते चले जा रहे थे। अंतिम चरण रह गया था कि चौधरी साहब अपने बरामदे में कंधों पर बाल छिटकाए खंभे के सहारे खड़े थे । उनको खंभे के साथ खड़े देखकर वह भी पूरा हो गया। उसका अंतिम पद था 'खंभा टेकी खड़ी जैसे नारि मुगलाने की '।

एक दिन चौधरी साहब के एक पड़ोसी उनके यहां पहुंचे ।देखते ही सवाल हुआ क्यों साहब एक बात मैं अक्सर सुना करता हूं , पर उसका ठीक अर्थ समझ में आया नहीं। आखिर घनचक्कर के क्या मायने है। पड़ोसी ने कहा वाह! यह क्या मुश्किल बात है, एक दिन रात को सोने के पहले कागज कलम लेकर सवेरे से रात तक का जो- जो काम किए हो सब लिख जाइए और पढ़ जाइए ।

एक दिन लोग बैठे बातचीत कर रहे थे कि इतने में एक पंडित जी आ गए । चौधरी साहब ने पूछा "कहिए क्या हाल है ?"पंडित जी बोले " कुछ नहीं आज एकादशी थी कुछ जल खाया है और चले आ रहे हैं।" प्रश्न हुआ- जल ही खाया है कि कुछ फलाहार भी पिया है।

प्रश्न 7. "इस पुरातत्व की दृष्टि में प्रेम और कुतूहल का अद्भुत मिश्रण रहता था।" यह कथन किस के संदर्भ में कहा गया है और क्यों ? स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर - "इस पुरातत्व की दृष्टि में प्रेम और कुतूहल का अद्भुत मिश्रण रहता था " यह कथन उपाध्याय बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' के बारे में कहा गया है । इसका कारण यह है कि उनकी आयु लेखक मंडली से बहुत अधिक थी। वे उन्हें पुरानी चीज समझते थे, इस कारण वे उन्हें समझने की कोशिश करते थे। उनके मन में एक कुतूहल रहता था।

प्रश्न 8. प्रस्तुत संस्मरण में लेखक ने चौधरी साहब के व्यक्तित्व के किन किन पहलुओं को उजागर किया ?

उत्तर- लेखक ने चौधरी साहब के व्यक्तित्व के निम्नलिखित पहलुओं को उजागर किया है-

उनके बात करने का ढंग निराला था,उसमें विलक्षण वक्रता रहती थी । वे लोगों को बनाया करते थे, वे विलक्षण व्यक्तित्व के स्वामी थे । चौधरी साहब खासे हिंदुस्तानी रईस थे, उनके घर पर त्यौहार पर उत्सव मनाया जाता था तथा उनकी हर अदा से रियासत तथा तबीयतदारी टपकती थी ।

प्रश्न 9. समवयस्क हिंदी प्रेमियों की मंडली में कौन कौन से लेखक मुख्य थे?

उत्तर - लेखक की समवयस्क हिंदी प्रेमियों के मंडली में प्रमुख लेखक थे पंडित बद्रीनाथ गौड़, पंडित उमाशंकर द्विवेदी, पंडित लक्ष्मी नारायण चौबे, बा. भगवानदास हालना, श्री काशी प्रसाद जी जयसवाल आदि लेखक थे।

प्रश्न10. 'भारतेंदु जी के मकान के नीचे का यह हृदय-परिचय बहुत शीघ्र गहरी मैत्री में परिणत हो गया ' कथन का आशय स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर - लेखक की भेंट पंडित केदारनाथ जी पाठक से भारतेंदु जी के घर के नीचे हुई। जब लेखक को पता चला कि यह मकान भारतेंदु जी का है तो भावनाओं में खो गए । उनकी यह भावुकता देखकर केदारनाथ जी प्रभावित हुए। वे दोनों मित्र बन गए। यहीं से लेखक की हिंदी प्रेमियों की एक मंडली बननी शुरू हो गई। यह लेखक के जीवन का महत्वपूर्ण पड़ाव था ।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. लेखक के पिता भारत जीवन प्रेस की पुस्तकें छिपाकर क्यों रखते थे तथा लेखक ने पुस्तकें पढ़ने के लिए कौन-सा मार्ग अपनाया?

उत्तर- लेखक के पिता साहित्य प्रेमी थे । उन्हें भारतेंदु हरिश्चंद्र बहुत प्रिय थे। उनके संस्कारों का प्रभाव लेखक पर भी पड़ा, जिस कारण उनका हिंदी साहित्य के प्रति झुकाव बढ़ता गया। लेखक के घर भारत जीवन प्रेस से पुस्तकें आती थीं, लेकिन लेखक के पिता उन पुस्तकों को छिपाकर रखने लगे, क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं लेखक का ध्यान स्कूल की पढ़ाई से हट न जाए तथा वह बिगड़ न जाए। लेखक ने पुस्तकें पढ़ने के लिए पंडित केदारनाथ जी पाठक द्वारा खोले गए पुस्तकालय में जाकर वहां से पुस्तकें लाकर पढने का मार्ग अपनाया।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. लेखक के पिताजी भारत जीवन प्रेस की किताबें छुपा देते थे क्यों ?

उत्तर- लेखक के पिताजी को यह डर था, कहीं उनके बेटे रामचंद्र शुक्ल जी का मन स्कूल की पढ़ाई से हट न जाए इसलिए वह प्रेस की किताबें छुपा देते थे ।

प्रश्न 2. उपाध्याय जी कौन सी भाषा के समर्थक थे ?

उत्तर - उपाध्याय जी नागरी भाषा के समर्थक थे और हमेशा से ही नागरी भाषा में लिखते थे। उनका कहना है कि नागर अपभ्रंश से जो लोगों की भाषा विकसित हुई है वही नागरी कहलाई ।

Jharkhandlab.com

प्रश्न 3. चौधरी साहब किस स्वभाव के व्यक्ति थे ?

उत्तर- चौधरी साहब खानदानी रईस थे। उनके बात करने का तरीका उनके लेखों से बिल्कुल अलग था। वे एक खुशमिजाज और हर बात पर व्यंग्य देने वाले स्वभाव के व्यक्ति थे।

प्रश्न 4. इस पाठ के आधार पर लेखक की शैली का वर्णन कीजिए ?

उत्तर - लेखक ने इस पाठ में बहुत ही खूबसूरत और आकर्षक शैली का प्रयोग किया है। लेखक ने प्राचीन समय की बातों को ठीक-ठीक रूप में सामने लाने की कोशिश की है। तब के समय में बोली जाने वाली स्थानीय भाषा या जन भाषा हिंदी तथा उर्दू के सुंदर मिश्रित रूप का प्रयोग किया है। यह रचना तत्कालीन समय के सामाजिक परिवर्तन, वातावरण तथा सामाजिक स्थिति का सटीक वर्णन करती है । यह पाठ प्राचीन भारत के दर्शन को रोचक शैली में आधुनिकता के साथ प्रस्तुत करता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. प्रेमघन की छाया स्मृति निबंध किस शैली में लिखा गया है ?

(1) विचारात्मक का (2) आलोचनात्मक
(3) संस्मरणात्मक (4) विवरणात्मक

प्रश्न 2. लेखक के पिताजी का तबादला कहां हो गया था ?

(1) जयपुर में (2) मिर्जापुर में
(3) गोरखपुर में (4) कोलकाता में

प्रश्न 3. मिर्जापुर आने से पहले ही लेखक के मन में किसके प्रति विशेष स्नेह की भावना थी ?

(1) भारतेंदु हरिश्चंद्र (2) राजा हरिश्चंद्र
(3) बाल मंडली हिंदी प्रति (4) साहित्य प्रेमियों के

प्रश्न 4. लेखक के पिता रात को कौन सी किताब पढ़ा करते थे ?

(1) रामायण (2) महाभारत
(3) रामचरितमानस (4) श्रीमद्भगवद्गीता

प्रश्न 5. निम्नलिखित में से किस प्रेस की पुस्तकें लेखक के घर आतीं थी?

(1) हिंदुस्तान (2) भारत जीवन
(3) सरस्वती (4) हंस

प्रश्न 6. लेखक के पिताजी को किस भाषा का अच्छा ज्ञान था ?

(1) अरबी (2) बंगला
(3) उर्दू (4) फारसी

प्रश्न 7. उपाध्याय जी मिर्जापुर का क्या अर्थ बताते थे?

(1) लक्ष्मीपुर (2) दुर्गापुर
(3) विष्णुपुर (4) मानपुर

प्रश्न 8. लेखक के आयु बढ़ने के साथ-साथ उनकी रूचि किसके प्रति बढ़ने लगी ?

(1) सिनेमा के प्रति (2) हिंदी साहित्य के प्रति
(3) लेखन के प्रति (4) नाटक के पर

प्रश्न 9. लेखक को कितने साल की उम्र से ही हिंदी की मित्र मंडली मिलने लगी थी ?

(1) 10 वर्ष (2) 14 वर्ष
(3) 12 वर्ष (4) 16 वर्ष

प्रश्न 10. लेखक के पिता का तबादला जब हमीरपुर से मिर्जापुर हुआ तब लेखक की उम्र कितनी थी ?

(1) 18 वर्ष (2) 12 वर्ष
(3) 8 वर्ष (4) 10 वर्ष

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1 - 3	2 - 2
3 - 1	4 - 3
5 - 2	6 - 4
7 - 1	8 - 2
9 - 4	10 - 3

Jharkhandlab.com

पाठ – 2 सुमिरिनी के मनके

पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी (सन् 1883-1922)

लेखक परिचय

पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी बहुभाषाविद् थे। प्राचीन इतिहास और पुरातत्व उनका प्रिय विषय था। उनकी गहरी रुचि भाषा विज्ञान में थी। गुलेरी जी की सृजनशीलता के चार मुख्य पड़ाव हैं- 'समालोचक', 'मर्यादा', 'प्रतिभा और नागरी प्रचारिणी पत्रिका'। इन पत्रिकाओं में गुलेरी जी का रचनाकार व्यक्तित्व उभरकर सामने आया। वे एक सफल निबंधकार एवं कहानीकार थे। उन्होंने उत्कृष्ट निबंधों के साथ-साथ तीन कहानियाँ - 'सुखमय जीवन', 'बुद्धू का कांटा' और 'उसने कहा था'- भी हिंदी जगत को दीं।

पाठ परिचय

सुमिरिनी के मनके नाम से तीन लघु निबंध- **बालक बच गया**, **घड़ी के पुर्ज़े** और **ढेले चुन लो** पाठ्यपुस्तक में दिए गए हैं।

(क) बालक बच गया

'बालक बच गया' निबंध का मूल प्रतिपाद्य है शिक्षा ग्रहण की सही उम्र। लेखक मानता है कि हमें व्यक्ति के मानस के विकास के लिए शिक्षा को प्रस्तुत करना चाहिए, शिक्षा के लिए मनुष्य को नहीं। हमारा लक्ष्य है मनुष्य और मनुष्यता को बचाए रखना। मनुष्य बचा रहेगा तो वह समय आने पर शिक्षित किया जा सकेगा। लेखक ने अपने समय की शिक्षा प्रणाली और शिक्षकों की मानसिकता को प्रकट करने के लिए अपने जीवन के अनुभव को हमारे सामने अत्यंत व्यावहारिक रूप में रखा है। लेखक ने इस उदाहरण से यह बताने की कोशिश की है कि शिक्षा हमें बच्चे पर लादनी नहीं चाहिए बल्कि उसके मानस में शिक्षा की रुचि पैदा करने वाले बीज डाले जाएँ।

(ख) घड़ी पुर्ज़े

'घड़ी के पुर्जे' में लेखक ने धर्म के रहस्यों को जानने पर धर्म उपदेशकों द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों को घड़ी के दृष्टांत द्वारा बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है।

(ग) ढेले चुन लो

"ढेले चुन लो" में लोक विश्वासों में निहित अंधविश्वासी मान्यताओं पर चोट की गई है।

तीनों निबंध समाज की मूल समस्याओं पर विचार करने वाले हैं। इनकी भाषा-शैली सरल बोलचाल की होते हुए भी गंभीर ढंग से विषय प्रवर्तन करने वाली है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

बालक बच गया

प्रश्न 1. बालक से उसकी उम्र और योग्यता से ऊपर के कौन-कौन से प्रश्न पूछे गए?

उत्तर - बालक की उम्र आठ वर्ष थी किंतु उससे पूछे गए प्रश्न उसकी उम्र और योग्यता से ऊपर के थे, यथा -धर्म के दस लक्षण, नौ रसों के उदाहरण, चन्द्रग्रहण का कारण, पेशवाओं का कुर्सीनामा आदि। बच्चा अपनी योग्यता के आधार पर नहीं अपितु रटंत विद्या के आधार पर इन प्रश्नों के उत्तर दे रहा था।

प्रश्न 2. बालक ने क्यों कहा कि मैं यावज्जन्म लोक सेवा करूँगा?

उत्तर - बालक ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि यही उत्तर उसको अभिभावकों और गुरुजनों ने रटवाया था।

प्रश्न 3. बालक द्वारा इनाम में लड्डू माँगने पर लेखक ने सुख की सांस क्यों भरी?

उत्तर- पाठशाला के वार्षिकोत्सव पर बच्चे से पुस्तकीय ज्ञान से हटकर जब उसकी रुचि को जानने के लिए पुरस्कार माँगने को कहा, तो उसने लड्डू की माँग की। बच्चे द्वारा लड्डू की मांग करने पर लेखक ने सुख की सांस ली क्योंकि इस उत्तर में बच्चे की सहज प्रवृत्ति झलक रही थी। यह प्रवृत्ति उस पर थोपी नहीं गई थी बल्कि यह उसका स्वाभाविक उत्तर था। बच्चे के सहज व्यवहार पर लेखक को आत्म संतुष्टि हुई।

प्रश्न 4. बालक की प्रवृत्तियों का गला घोंटना अनुचित है, पाठ में ऐसा आभास किन स्थलों पर होता है कि उसकी प्रवृत्तियों का गला घोंटा जाता है?

उत्तर- इस प्रसंग में लेखक ने कई ऐसे संकेत दिए हैं जिनसे बच्चे की प्रवृत्तियों का गला घोंटने की स्थिति उजागर होती है। जैसे, आठ वर्षीय बालक को मिस्टर हादी के कोल्लू की तरह दिखाया जाना।उसका पीला मुंह, सफेद आंखें, दृष्टि जो जमीन पर गड़ी हुई थी। उससे जो प्रश्न पूछे गए उनका उत्तर बिना अटके जवाब देना, जबकि इन प्रश्नों का संबंध उस आयु वर्ग के बच्चों से नहीं हो सकता था। यह सारी बातें यही दर्शाती हैं कि वह बच्चा किताबी ज्ञान में दबकर अपने अस्तित्व को भूल गया है।

प्रश्न 5. "बालक बच गया उसके बचने की आशा है क्योंकि वह लड्डू की पुकार जीवित वृक्षों के हरे पत्तों का मधुर मर्मर था, मरे काठ की अलमारी की सिर दुखाने वाली खरखड़ाहट नहीं" कथन के आधार पर बालक की स्वाभाविक प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- बालक सरल हृदय होते हैं। वह कल्पना की दुनिया में विचरते हैं। वह अपनी दृष्टि से संसार को देखते- परखते और समझते हैं। खेलने, कूदने, हंसने, खाने-पीने में आनंद लेते हैं। बड़ों की भांति पुस्तकीय ज्ञान ठूंस दिए जाने से बच्चे की स्वाभाविकता एवं सहजता खत्म हो जाती है। प्रस्तुत लघु निबंध के अंत में बालक के बाल सुलभ भोलेपन के कारण लड्डू की पुकार करना उसकी स्वाभाविक प्रवृत्तियों को दर्शाता है।

jharkhandlab.com

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'बालक बच गया' लघु कथा का संदेश बताइए।

उत्तर- 'बालक बच गया' लघु कथा के माध्यम के लेखक यह संदेश देते हैं कि बालक की शिक्षा उसकी अपनी क्षमता और रुचि के अनुकूल ही होनी चाहिए। बच्चे की क्षमता एवं इच्छा की उपेक्षा करने से उसके विकास एवं शिक्षा प्राप्ति में बाधा उत्पन्न होता है। माता-पिता, अभिभावक एवं शिक्षक अपनी इच्छा और रूचि को बच्चे पर न लादे और ना ही अपने जीवन के अधूरे सपने एवं उपलब्धियों को प्राप्त करने के लिए बच्चे को माध्यम बनाएँ।

अति लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. विद्यालय के वार्षिककोत्सव में किसे बुलाया गया था?

उत्तर- विद्यालय के वार्षिक उत्सव में पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी को बुलाया गया था।

प्रश्न 2. प्रतिभाशाली बालक के पिता कौन थे?

उत्तर- प्रतिभाशाली बालक के पिता विद्यालय के प्रधानाध्यापक थे।

प्रश्न 3. पिता को बालक से क्या उम्मीद थी?

उत्तर- वृद्ध महाशय ने जब बालक की प्रतिभा से खुश होकर इनाम मांगने को कहा, तो पिता को उम्मीद थी कि बालक इनाम में पुस्तक मांगेगा।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. बालक ने इनाम में क्या मांगा?

1) पेंसिल 2) किताब
3) लड्डू 4) चॉकलेट

2. बालक की प्रवृतियों का गला घोंटा जा रहा था, लेखक को ऐसा क्यों लगा?

1) बालक का किसी युवक के समान उत्तर देने पर
2) लड्डू की मांग करने पर
3) वृद्ध महाशय द्वारा बालक को आशीर्वाद देने पर
4) बालक के पिता का हृदय उल्लास से भर जाने पर

3. बालक के लड्डू मांगने पर लेखक ने सुख की साँस क्यों ली?

1) क्योंकि बच्चों को लड्डू अच्छे लगते हैं
2) क्योंकि लेखक को लगा अभी बालक का बचपन मरा नहीं है
3) क्योंकि लेखक को भी यह पसंद है
4) उपर्युक्त में से कोई नहीं

4. निबंध में प्रयुक्त इनमें से कौन था शब्द उर्दू का है?

1) विलक्षण 2) नुमाइश
3) कृत्रिम 4) मर्मर

5. 'यावज्जन्म का क्या अर्थ है?

1) अद्भुत 2) विलक्षण
3) जीवनभर 4) जलसा

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

घड़ी के पुर्जे

प्रश्न 1. लेखक ने धर्म का रहस्य जानने के लिए घड़ी के पुर्जे का दृष्टांत क्यों दिया है?

उत्तर: लेखक ने धर्म का रहस्य जानने के लिए घड़ी के पुर्जें का दृष्टांत दिया है। लेखक का मानना है कि हमें केवल घड़ी देखना ही नहीं आना चाहिए बल्कि उसे खोलकर ठीक करने का तरीका भी जानना चाहिए यदि हम धर्म के बाह्य तत्वों तथा धर्म आचार्यों के उपदेशों को आंख बंद कर मानते रहे तो हमारा भला नहीं होगा, इसके लिए हमें धर्म के रहस्य की जानकारी होनी चाहिए। धर्म आचार्यों द्वारा बताए गए धर्म के मार्ग पर आंखें मूंदकर नहीं चलना चाहिए, स्वयं भी उस पर विचार करना चाहिए।

प्रश्न- 2 "धर्म का रहस्य जानना वेदशास्त्रज्ञ धर्माचार्यों का ही काम है।" आप इस कथन से कहाँ तक सहमत है? अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर :- लेखक का मानना है कि धर्म का संबंध व्यक्ति के भाव, निष्ठा तथा ईश्वरीय चेतना से है। बाह्याचार अथवा आडंबर धर्म या धर्म के रहस्य नहीं हैं। प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म को जानने का अधिकार है । प्रत्येक बुद्धिजीवी को जागरुक तथा तत्पर भाव से धर्म के मूल भाव तथा प्रवृत्तियों को जानना चाहिए।

प्रश्न 3 घड़ी समय का ज्ञान कराती है। क्या धर्म संबंधी मान्यताएं या विचार अपने समय का बोध नहीं कराते?

उत्तर जिस प्रकार घड़ी से समय ज्ञात होता है, उसी प्रकार धर्म संबंधी मान्यताएं एक धर्म का बोध कराती हैं।समय की मांग के अनुसार धर्म का स्वरूप परिवर्तित व निर्मित होता है। उसी के अनुरूप धार्मिक नियम गढे जाते हैं ताकि समाज उसे सरलता से स्वीकार कर सके। समय बदलने के साथ ही पुराने नियम अप्रासंगिक हो जाते हैं और अप्रासंगिक नियमों को बदल देना ही उचित है।

प्रश्न 4. घड़ीसाज़ी का इम्तिहान पास करने से लेखक का क्या तात्पर्य है?

उत्तर- घड़ीसाज़ी का इम्तिहान पास करने से लेखक का तात्पर्य उन लोगों से है जो बुद्धिजीवी हैं, जिन्होंने शास्त्रों का अध्ययन किया है, जो धर्म के संस्कारों को उनकी उपयोगिता व अनुपयोगिता के संबंध में विचार विमर्श करने के योग्य हैं। लेखक का मानना है कि कम से कम ऐसे व्यक्तियों को धर्म के रहस्यों को जानने का अधिकार दिया जाना चाहिए।

प्रश्न 5. धर्म अगर कुछ विशेष लोगों वेदशास्त्रज्ञ धर्माचार्यों, मठाधीशों, पंडे -पुजारियों की मुट्ठी में है तो आम आदमी और समाज का उससे क्या संबंध होगा?अपनी राय लिखिए।

उत्तर- धर्म पर कुछ विशेष लोगों वेदशास्त्रज्ञ, धर्माचार्यों, मठाधीशों,पंडे -पुजारियों के वर्चस्व ने धर्म को रूढ़ि तथा अंधविश्वासों से ढंक दिया है। आज आम आदमी तथा समाज इन प्रवृत्तियों के कारण धर्म के वास्तविक स्वरूप

jharkhandlab.com

से दिनों -दिन दूर होता जा रहा है तथा उस पर दिखावा और कर्मकांड हावी होता जा रहा है।

प्रश्न 6. "जहां धर्म पर कुछ मुट्ठी भर लोगों का एकाधिकार धर्म को संकुचित अर्थ प्रदान करता है, वही धर्म का आम आदमी से संबंध उसके विकास एवं विस्तार का द्योतक है।" तर्क सहित व्याख्या कीजिए।

उत्तर- लेखक का मानना है कि धर्म पर कुछ लोगों ने अपना एकाधिकार बना लिया है। धर्म को संकुचित अर्थ प्रदान कर वे अपना मतलब साधते हैं। ऐसे लोग सामान्य मनुष्य को धर्म के गूढ़ रहस्यों से परिचित होने देना नहीं चाहते।धर्म मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्तियों के नवीन चेतना को जगाने का माध्यम है।धर्म तभी सार्थकता तथा व्यापकता को प्राप्त कर सकता है, जब वह संकुचित स्वार्थ वाले मुट्ठी भर लोगों के एकाधिकार से मुक्ति प्राप्त कर सच्चे अर्थ में अपनी प्रवृत्तियों का विस्तार करे।

प्रश्न 7. निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए

(क) "वेदशास्त्रज्ञ धर्माचार्यों का ही काम है कि घड़ी के पुर्जे जाने, तुम्हें इससे क्या ?"

(ख) अनाड़ी के हाथ में चाहे घड़ी मत दो पर जो घड़ीसाज़ी का इम्तहान पास कर आया है, उसे तो देखने दो।"

(ग) "हमें तो धोखा होता है कि परदादा की घड़ी जेब में डाले फिरते हो, वह बंद हो गई, तुम्हें न चाबी देना आता है न पुर्जे सुधारना, तो भी दूसरों को हाथ नहीं लगाने देते। "

उत्तर

(क) यहाँ पर लेखक व्यंग्य के माध्यम यह स्पष्ट करना चाहता है कि धर्म के रहस्य को जानने का काम वेदशास्त्रज्ञ धर्माचार्यों का ही है, सभी का नहीं। तुम धर्म को सुनो और उसका पालन करो। इसके लिए लेखक ने घड़ी का उदाहरण दिया है कि घड़ी के पुर्जों के विषय में जानकारी पाने का काम घड़ीसाज़ का है, समय देखने वालों का नहीं। तुम घड़ी से बस समय देखो, उसके पुर्जे मत गिनो। ठीक इसी प्रकार तुम धर्म के विषय में सुनो, उसके अनुसार पालन करो, धर्म के रहस्य को जानने का प्रयास मत करो।

(ख) लेखक का तात्पर्य है कि किसी अनाड़ी को वह काम न सौंपा जाए जिसे वह जानता ही नहीं है। यहाँ पर लेखक धर्माचार्यों पर व्यंग्य करते हुए कहता है कि धर्माचार्यों! चाहे तुम अपनी घड़ी अनाड़ी व्यक्ति के हाथ में मत दो, परंतु जिसे घड़ी के सभी कलपुर्जों का ज्ञान है और जिसने घड़ी ठीक करने की विद्या सीखी है उसे तो घड़ी देखने का अवसर प्रदान करो। अर्थात् जो व्यक्ति ज्ञानी नहीं है, उन्हें धर्म के रहस्य जानने का कोई अधिकार नहीं, परंतु जो जिज्ञासु हैं, जिन्हें ईश्वरीय तत्त्व का बोध है, उन्हें तो धर्म के गूढ़ रहस्यों से परिचित होने का अवसर प्रदान करो।

(ग) यहाँ पर लेखक अज्ञानी और थोड़े से ज्ञान पर अभिमान करने वाले (संकीर्ण विचारधारा) व्यक्तियों पर व्यंग्य करते हुए कहता है कि तुम्हें स्वयं तो घड़ी ठीक करना आता नहीं और तुम अपने परदादा की घड़ी जेब में डालकर घूमते हो

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'घड़ी के पुर्जे' लघु निबंध का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- धर्मोपदेशक धर्म का रहस्य आम आदमी तक पहुंचने नहीं देना चाहते। उनका मानना है कि घड़ी से समय जान लो यह देखने की कोशिश न करो कि इसका कौन-सा पुर्ज़ा कहाँ लगा है। 'घड़ी के पुर्जे' लघुकथा का उद्देश्य यह बताना है कि प्रत्येक व्यक्ति को धर्म का रहस्य जानने का अधिकार है। धर्म का विस्तार जनसाधारण में होना आवश्यक है तभी धर्म जनहितकारी हो सकता है।

अति लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. घड़ी के दृष्टांत से लेखक ने किस पर व्यंग्य किया है?

उत्तर- घड़ी के दृष्टांत से लेखक ने धर्म उपदेशकों पर व्यंग्य किया है।

प्रश्न 2. लेखक ने घड़ीसाजों के संदर्भ में क्या बात कही है?

उत्तर - लेखक ने घड़ीसाजों के संदर्भ में धर्म के रहस्यों को जानने, उस पर गौर करने तथा स्वयं को धोखे से बचाने की बात कही है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. घड़ी के पुर्जे में लेखक ने इनमें से किस विषय को प्रस्तुत किया है?

1) शिक्षा 2) धर्म
3) अंधविश्वास 4)

2. घड़ी के पुर्जे खोलकर देखने से लेखक का क्या तात्पर्य है?

1) सभी को सही समय देखना आना चाहिए
2) सभी को घड़ी की मरम्मत करनी आनी चाहिए
3) सभी को धर्म का गूढ़ ज्ञान होना चाहिए
4) उपर्युक्त सभी

3. "धर्म के पुर्जे" निबंध में लेखक ने इनमें से किन लोगों पर व्यंग्य किया है?

1) घड़ीसाजों पर 2) आम लोगों पर
3) धर्म उपदेशकों पर 4) उपर्युक्त में से कोई नहीं

4. दृष्टांत का क्या अर्थ है?

1) झंझट 2) उदाहरण
3) परीक्षा 4) दृष्टि

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

ढेले चुन लो

प्रश्न 1. वैदिक काल में हिंदुओं में कैसी लॉटरी चलती थी जिसका जिक्र लेखक ने किया है?

उत्तर- वैदिक काल में योग्य पत्नी चुनने के लिए वह विभिन्न स्थानों की मिट्टी से बने ढेले कन्या के समक्ष रखता था और उनमें

jharkhandlab.com

से कोई एक ढेला चुनने को कहता। वह जिस ढेले को चुनती उसके आधार पर यह निर्धारित किया जाता था कि वह कन्या विवाहोपरांत कैसे पुत्र को जन्म देगी। यदि अच्छे स्थान की मिट्टी का ढेला चुनती तो अच्छी संतान को जन्म देगी और यदि बुरे स्थान की मिट्टी का ढेला चुनती है तो बुरी संतान को जन्म देगी। इस प्रकार वैदिक काल में विवाह ढेले चुनने की लॉटरी पर निर्भर करता था।

प्रश्न 2. दुर्लभ बंधु की पेटियों की कथा लिखिए।

उत्तर- भारतेंदु हरिश्चंद्र के अनुवादित नाटक 'दुर्लभ बंधु' में पुरश्री के सामने तीन पेटियां रखी हुई थीं जिसमें एक सोने की, दूसरी चांदी की तथा तीसरी लोहे की बनी हुई थी। इन तीनों में से एक पेटी में वधू की प्रतिमूर्ति थी।

स्वयंवर के लिए जो आता है उसे इन तीनों में से एक पेटी चुनने को कहा जाता है। अकड़बाज सोने की पेटी चुनता है और वापस लौट जाता है। लोभी चांदी की पेटी चुनकर मायूस हो जाता है, जबकि सच्चा प्रेमी लोहे की पेटी चुनकर घुड़दौड़ का पहला इनाम पाता है।

प्रश्न 3. 'जीवन साथी' का चुनाव मिट्टी के ढेलों पर छोड़ने के कौन कौन से फल प्राप्त होते हैं?

उत्तर- मिट्टी के ढेलों द्वारा वर के चयन में अंधविश्वास की प्रवृत्ति थी। लोग इन ढेलों से प्राप्त फल की विवेचना करते थे। उनके अनुसार जीवनसाथी का चुनाव मिट्टी के ढेलों पर छोड़ने से निम्नलिखित फल प्राप्त होते हैं- यदि कन्या ने गोशाला की मिट्टी से बने ढेले का चयन किया, तो उसकी संतान पशुधन की स्वामी होगी, यदि कन्या वेदी की मिट्टी से बने ढेले का चयन करती तो संतान वैदिक पंडित होगी, खेत की मिट्टी से बने ढेले का चयन करने वाली कन्या की संतान जमींदार होगी और मसान की मिट्टी का ढेला चुनने पर माना जाता की कन्या अशुभ है।

प्रश्न 4. मिट्टी के ढेलों के संदर्भ में कबीर की साखी की व्याख्या कीजिए-

'पत्थर पूजे हरि मिलें तो मैं पूजूं पहार।

इससे तो चक्की भली, पीस खाए संसार।'

उत्तर- पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने अपनी 'ढेले चुन लो' रचना के माध्यम से समाज की रूढि परंपरा एवं अंधविश्वास पर व्यंग्य किया है। वर-वधू की योग्यता या अयोग्यता के निर्धारण में मिट्टी के ढेले को महत्व देना अनुचित है। इस वैदिक प्रथा के संदर्भ में लेखक कबीरदास की साखी वर्णित करता है-

कबीरदास जी कहते हैं कि यदि पत्थर की पूजा करने से हरि अर्थात ईश्वर की प्राप्ति हो जाती है, तो मैं पर्वत की पूजा करूं, क्योंकि विशाल पर्वत की पूजा करने से ईश्वर जल्दी दर्शन दे देंगे। यदि पत्थर पूजना हो, तो चक्की की ही पूजा श्रेष्ठ है, जिससे आटा पीस कर पूरा संसार अपना पेट तो भर लेता है।

प्रश्न 5. निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) "अपनी आँखों से जगह देखकर, अपने हाथ से चुने हुए मिट्टी के डगलों पर भरोसा करना क्यों बुरा है और लाखों करोड़ों कोस दूर बैठे बड़े-बड़े मिट्टी और आग के ढेलों-मंगल, शनिश्चर और बृहस्पति की कल्पित चाल के कल्पित हिसाब का भरोसा करना क्यों अच्छा है?"

(ख) "आज का कबूतर अच्छा है कल के मोर से, आज का पैसा अच्छा है कल की मोहर से आँखों देखा ढेला अच्छा ही होना चाहिए लाखों कोस के तेज पिंड से।"

उत्तर- (क) लेखक का आशय है कि स्वयं अपनी आँखों से सही जगह देखकर अपने हाथों से मिट्टी के ढेलों को चुनकर उन पर विश्वास करना गलत क्यों समझा जाता है, जबकि इतनी दूर आकाश में विद्यमान विभिन्न ग्रहों और नक्षत्रों की कल्पना करना, उनकी काल गणना का विश्वास करना क्यों अच्छा है अर्थात् हमें इन नक्षत्रों, ग्रहों की चालों पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

(ख) लेखक के अनुसार, इन पंक्तियों का आशय इस प्रकार है कि कल के मोर से आज का कबूतर अच्छा है। पुराने विद्वानों की कल्पित बातों पर विश्वास करके उनका पालन करने से अच्छा है कि हम वर्तमान युग के कम ज्ञानी व्यक्ति की बातों को अपनाएँ। लेखक कहता है पुराने जमाने की मूल्यवान सोने, चाँदी की मोहरों से आज का कम पैसा अच्छा है क्योंकि उसे प्रतिदिन चलाया जा सकता है, प्रयोग में लाया जा सकता है। उसी प्रकार, लाखों करोड़ों मील की दूरी पर स्थित चमचमाते हुए पिंड से आँखों देखा मिट्टी का ढेला श्रेष्ठ ही होना चाहिए। अतः हमें भविष्य के स्थान पर वर्तमान पर विश्वास करना चाहिए।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'ढेले चुन लो' लघु निबंध का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - 'ढेले चुन लो' लघु निबंध रुढियों एवं अंधविश्वासों का विरोध करती है और यह संदेश देती है कि हमें अपने बुद्धि-विवेक के बल पर ही जीवन के निर्णय लेना चाहिए।

अति लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. ढेले चुन लो में शेक्सपियर के कौन- से नाटक का जिक्र लेखक ने किया है?

उत्तर- 'ढेले चुन लो' में लेखक ने शेक्सपियर के नाटक 'मर्चेंट ऑफ वेनिस' का जिक्र किया है।

प्रश्न 2. तीन गृह सूत्रों का नाम बताइए जिसमें ढेलों की लॉटरी का जिक्र है?

उत्तर- तीन गृह्यसूत्र, जिसमें ढेलों की लॉटरी का उल्लेख है- आश्वलायन, गोभिल और भारद्वाज हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'ढेले चुन लो' निबंध का केन्द्रीय विषय क्या है?

1) शिक्षा, 2) धर्म
3) अंधविश्वास 4) उपर्युक्त सभी

2. 'ढेले चुन लो' पाठ में लड़की द्वारा निम्न में से कौन सी मिट्टी उठाने पर अपशगुन माना जाता था?

1) हवन की मिट्टी 2) गोशाला की मिट्टी
3) श्मशान की मिट्टी 4) खेत की मिट्टी

3. **वैदिक काल में हिंदू युवक विवाह करने के लिए युवती के घर क्या ले कर जाता था?**

1) सात बेर 2) सात संतरे
3) सात ढेले 4) सात आम

4. **युवती द्वारा गौशाला से लाई मिट्टी उठाने पर निम्न में से क्या माना जाताथा?**

1) युवती से उत्पन्न पुत्र विद्वान बनेगा
2) युवती से जन्म लेने वाला पुत्र पशुओं से धनवान बनेगा
3) युवती से शादी करने पर अमंगल होगा
4) उपर्युक्त में कोई नहीं

5. **बुझौवल का क्या अर्थ है?**

1) पहेली 2) हिसाब
3) कहानी 4) बकौल

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

बालक बच गया

1. - 3 2. - 1
3. - 2 4. - 2
5. - 3

घड़ी के पुर्जे

1. - 2 2. - 3
3. - 3 4. - 2

ढेले चुन लो

1. - 3 2. - 3
3. - 3 4. - 2
5. - 1

Jharkhandlab.com

पाठ - 3

कच्चा चिट्ठा

ब्रजमोहन व्यास (सन्1886-1963)

लेखक परिचय

ब्रज मोहन व्यास जी का जन्म इलाहाबाद में हुआ था। उनके गुरु पंडित गंगानाथ झा और पंडित बालकृष्ण भट्ट थे। इनसे उन्हें संस्कृत का ज्ञान मिला था। व्यास जी ने इलाहाबाद नगरपालिका के कार्यपालक पदाधिकारी के रूप में लगभग 23-24 वर्षों तक कार्य किया। इन्होंने कुमार दास कृत 'जानकी हरण' का अनुवाद किया। पंडित बालकृष्ण भट्ट और पंडित महामना मदन मोहन मालवीय की जीवनी भी लिखी। वे अपनी आत्मकथा मेरा कच्चा चिट्ठा के नाम से लिखी हिंदी गद्य के एक श्रेष्ठ लेखक के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनकी भाषा परिनिष्ठित, सूक्ति पूर्ण, मुहावरेदार एवं लोकोक्ति मय है।

पाठ-परिचय

कच्चा चिट्ठा आत्मकथात्मक रचना है। लेखक अपनी संग्रह कार्य प्रवृत्ति के कारण कहीं भी जाते थे, तो खाली हाथ नहीं लौटते थे। इन्होंने इलाहाबाद में एक विशाल संग्रहालय की स्थापना की थी। इस संग्रहालय में इन्होंने विभिन्न जगहों से लाकर 2,000 प्रस्तर मूर्तियां रखवाई। इस संग्रहालय में 5000 के लगभग मिट्टी की मूर्तियां संग्रहित हैं। इन मूर्तियों में कनिष्क कालीन प्राचीन बुद्धमूर्ति भी है। खजुराहो से उपलब्ध चंदेल प्रतिमा इस संग्रहालय के गौरव हैं। इसके अतिरिक्त रंगीन चित्रों का संग्रह एवं 14000 हस्तलिखित पोथियाँ हैं। यह पोथियाँ संस्कृत, हिंदी, अरबी और फारसी में है। यहां के संग्रह में जवाहरलाल नेहरू को अर्पित मानपत्र और चंद्रशेखर आजाद की पिस्तौल भी है। इतने बड़े संग्रहालय की स्थापना, अमूल्य धरोहरों का संग्रह और संकलन बिना किसी विशेष खर्च के किया था। इस अमूल्य धरोहर को सजाने के लिए व्यास जी ने विशेष कौशल और कठिन परिश्रम से काम लिया था। प्रस्तुत संस्मरणात्मक पाठ उनके इसी श्रम कौशल और समझ बूझ का कच्चा चिट्ठा है। यह संस्मरण वास्तव में एक स्वप्नदर्शी व्यक्ति द्वारा अपने सपनों को साकार करने की कला का कच्चा चिट्ठा है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. पसोवा की प्रसिद्धि का क्या कारण था और लेखक वहां क्यों जाना चाहता था?

उत्तर पसोवा एक बड़ा जैन तीर्थ है। वहां प्राचीन काल से प्रतिवर्ष जैनियों का एक बड़ा मेला लगता है, जिसमें दूर-दूर से हजारों जैन यात्री आकर एकत्र होते हैं। यह कहा जाता है कि इसी स्थान पर एक छोटी सी पहाड़ी थी जिसकी गुफा में बुद्धदेव व्यायाम करते थे। वहां एक विषधर सर्प भी रहता था। इसी के निकट एक स्तूप भी था। जिसमें बुद्ध के थोड़े से केश और नख-खंड रखे गए थे। लेखक वहां कुछ नई चीज की खोज में जाना चाहता था, क्योंकि लेखक के जीवन का उद्देश्य प्रयाग के संग्रहालय के लिए आवश्यक सामग्री एकत्र करना था।

प्रश्न 2. "मैं कहीं जाता हूं तो छूँछे हाथ नहीं लौटता "से क्या तात्पर्य है? लेखक कौशांबी लौटते हुए अपने साथ क्या-क्या लाया?

उत्तर - "मैं कहीं जाता हूं तो छूँछे हाथ नहीं लौटता।"-

से अभिप्राय है कि लेखक किसी भी कार्यवश कहीं भी जाता है तो वहां से खाली हाथ नहीं लौटता। लेखक पसोवा किसी चीज की खोज के लिए गया था, वहां से वापस कौशांबी लौटते हुए उन्हें गांव के भीतर से कुछ बढ़िया मृण मूर्तियां, सिक्के और मनके मिले। लेखक कौशांबी लौटते हुए एक चतुर्मुख शिव की मूर्ति जो लगभग 20 सेर वजन की थी। रास्ते से उठा लाया। उसे लाकर नगरपालिका में संग्रहालय से संबंधित एक मंडप के नीचे अन्य मूर्तियों के साथ रख दिया। इस तरह लेखक अपने उद्देश्य में सफल हुआ।

प्रश्न 3. "चांद्रायण व्रत करती हुई बिल्ली के सामने एक चूहा स्वयं आ जाए तो बेचारी बिल्ली को अपना कर्तव्य पालन करना ही पड़ता है।"_ लेखक ने यह वाक्य किस संदर्भ में कहा और क्यों?

उत्तर - चांद्रायण व्रत करती हुई बिल्ली के सामने एक चूहा स्वयं आ जाए तो बेचारी को अपना कर्तव्य पालन करना ही पड़ता है। लेखक ने यह वाक्य निम्नलिखित संदर्भ में कहा- लेखक जब पसोवा से वापस कौशांबी लौट रहा था तो रास्ते में उसने देखा कि पत्थरों के ढेर के बीच पेड़ के नीचे एक चतुर्मुख शिव की मूर्ति रखी थी। वह मूर्ति लेखक को ललचा ही रही थी। आस पास कोई नहीं था, लेखक ने उसे उठाया और इक्के पर रखकर ले आया और संग्रहालय में अन्य मूर्तियों के साथ रख दिया। लेखक चोरी नहीं करना चाहता था फिर भी उसने चोरी की, क्योंकि उस शिव मूर्ति ने लेखक को ललचा दिया। ठीक उसी प्रकार जब बिल्ली ने व्रत धारण किया हो और चूहा स्वयं चलकर बिल्ली के समक्ष आ जाए, तो बिल्ली चूहे को खाएगी ही।

प्रश्न 4. "अपना सोना खोटा तो परखवैया को कौन दोस?" से लेखक का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर- "अपना-सोना खोटा तो परखवैया को कौन दोस" से अभिप्राय है कि अपनी ही चीज खराब हो तो किसी को कोई दोष नहीं दे सकते। अर्थात् यदि अपना सोना खोटा ही है और परखने वाला उसे खोटा कह दे तो इसमें उसका कोई दोष नहीं।

प्रश्न 5. गांव वालों ने उपवास क्यों रखा और उसे कब तोड़ा ? दोनों प्रसंगों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- जब गांव से शंकर भगवान की मूर्ति चोरी हो गई, तो गांव वालों ने खाना-पीना त्याग दिया और उपवास रखा। जब गांव वालों को कौशांबी जाकर शंकर भगवान की मूर्ति वापस मिल गई तो उन्होंने उपवास तोड़ दिया। लेखक चतुर्मुख शिव की मूर्ति को ले आया तो उस गांव के 15 20 आदमी मुखिया के साथ लेखक से मिलने आए। मुखिया ने नतमस्तक होकर लेखक को निवेदन किया। "महाराज! जब

jharkhandlab.com

से शंकर भगवान हम लोगन क छोड़ के हियाँ चले आए। गाँव भर पानी नै पिहिस। अऊर तब तक ना पी जब तक भगवान गाँव ना चलिहैं। अब हम लोगन क प्रान आपै के हाथ में हैं। आप हुकुम देओ तो हम भगवान को लेवाए जाइ। लेखक ने तुरंत कहा- आप उन्हें प्रसन्नता से ले जाएँ। सब लोग बहुत प्रसन्न हुए। लेखक ने भगवान शंकर को उनके हवाले कर दिया। लेखक ने मिठाई व जल मंगाकर उन लोगों का उपवास तुड़वाया।

प्रश्न 6. लेखक बुढ़िया से बोधिसत्व की 8 फुट लंबी सुंदरमूर्ति प्राप्त करने में कैसे सफल हुआ?

उत्तर- लेखक ने बोधिसत्व की 8 फुट लंबी सुंदरमूर्ति खेत की मेड़ पर पड़ी देखी। वह मथुरा के लाल पत्थर की थी। जैसे ही लेखक उठाने लगा तो एक बुढ़िया तमक कर बोली, "बड़े चले हैं मूरत उठावै। ई हमार है। हम ना देबै।" लेखक समझ गया कि मुद्रा की झनझनाहट गरीब आदमी के ह्रदय में उत्तेजना पैदा करती है। लेखक ने बुढ़िया को दो रूपए दिए और मूर्ति ले ली। बुढ़िया ने खुशी से वह मूर्ति लेखक को दे दी, इस प्रकार लेखक मूर्ति लेने में सफल हो गया।

प्रश्न 7. "ईमान! ऐसी कोई चीज मेरे पास हुई नहीं तो उसके डिगने का कोई सवाल नहीं उठता। यदि होता तो इतना बड़ा संग्रह बिना पैसा कौड़ी के हो ही नहीं सकता।" के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

उत्तर - उपर्युक्त कथन से लेखक यह कहना चाहता है कि लेखक ने अपने ईमान को दांव पर लगाकर ही इतना बड़ा संग्रह किया। उसके पास इतना धन नहीं था कि वह हर वस्तु खरीद कर संग्रहालय के लिए लाता। इतना विशाल प्रयाग का संग्रहालय बिना पैसों के केवल इसलिए बना कि लेखक ने हर स्थान से अपनी भावनाओं के बल पर, बुद्धि के बल पर मूर्तियों, सिक्कों व पुस्तकों को एकत्र किया। इतने सारे सामान को एकत्र करना आसान कार्य नहीं था। यदि लेखक ईमानदारी से कार्य करता तो यह संग्रहालय कभी ना बन पाता।

प्रश्न 8. दो रूपये में प्राप्त बोधिसत्व की मूर्ति पर दस हजार क्यों न्योछावर किए जा रहे थे?

उत्तर- लेखक ने 8 फुट लंबे बोधिसत्व की मूर्ति एक खेत में निकौनी कर रही बुढ़िया को दो रूपए देकर खरीदी थी। जब एक फ्रांसीसी ने संग्रहालय में उस बोधिसत्व की मूर्ति को देखा, तो बोल उठता है। बहुत कीमती संग्रह! लेखक उससे पूछता है कि कीमती से आपका क्या तात्पर्य है ? फ्रांसीसी यात्री ने कहा आप इस मूर्ति को मेरे हाथ दस हजार में बेचेंगे, क्योंकि इस मूर्ति का चित्र व उसका वर्णन विदेशी पत्रों में छप चुका था इसलिए इस मूर्ति की कीमत उसने दस हजार लगाई थी। यह मूर्ति उन बोधिसत्व की मूर्तियों में से थी जो अब तक संसार में पाई गई मूर्तियों में सबसे पुरानी है। यह कुषाण सम्राट कनिष्क के राज्य काल के दूसरे वर्ष में स्थापित की गई थी।

प्रश्न 9. भद्रमथ शिलालेख की क्षतिपूर्ति कैसे हुई ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर जब भद्रमथ का शिलालेख लेखक को नहीं मिला तो लेखक हजियापुर, गुलजार मियां के घर चला गया। गुलजार मियां के मकान के सामने एक पुख्ता सजीला कुआँ था। कुएँ के चबूतरे पर चार खंभे थे जिनमें एक से दूसरे तक अठपहल पत्थर की बंडेर पानी भरने के लिए गड़ी हुई थी। गुलजार ने लेखक के कहने से खंभों को खुदवा कर ब्राह्मी अक्षरों के लेख उन्हें दे दिए। इससे भद्रमथ के शिलालेख की क्षतिपूर्ति हो गई।

प्रश्न10. लेखक अपने संग्रहालय के निर्माण में किन-किन के प्रति अपना आभार प्रकट करता है और किसे अपने संग्रहालय का अभिभावक बनाकर निश्चिंत होता है?

उत्तर - लेखक अपने संग्रहालय के निर्माण में रायबहादुर कामता प्रसाद कक्कड़, श्री महेंद्र सिंहजूदेव नागौर नरेश, दीवान लाल भार्गवेन्द्र सिंह के प्रति अपना आभार प्रकट करता है और संग्रहालय के संरक्षण एवं परिवर्धन के लिए एक सुयोग्य अभिभावक डॉ सतीश चंद्र काला को नियुक्त कर देता है और स्वयं निश्चिंत हो जाता है।

भाषा -शिल्प

प्रश्न 1. निम्नलिखित का अर्थ स्पष्ट करें---

(क) इक्के को ठीक कर लिया

उत्तर- जिस इक्के पे सवार होकर लेखक गांव जाना चाहता था उसको सही दुरुस्त कर लिया गया ताकि रास्ते में खराब ना हो।

(ख) कील-कांटे से दूरूस्थ था।

उत्तर इक्के में सही स्थान पर सही कील आदि ठुके थे।

(ग) मेरे मस्तक पर हस्बमामूल चंदन था

उत्तर लेखक उस समय के अनुरूप मस्तक पर चंदन का तिलक करता था।

(घ) सुरखाब का पर

उत्तर कोई खास बात होना।

प्रश्न 2. लोकोक्तियों का संदर्भ सहित अर्थ स्पष्ट कीजिए-

(क) चोर की दाढ़ी में तिनका–

उत्तर जब लेखक कौशांबी लौटते समय चतुर्मुख शिव की मूर्ति चुरा कर ले आए और उनसे गांव के 15-20व्यक्ति मिलने आए, तो लेखक का माथा एकदम ठनका क्योंकि गलत कार्य करने पर ग्लानि के साथ-साथ हमेशा संदेह बना रहता है। उन्हें संदेह हुआ कि यह लोग जरूर उसी मूर्ति के लिए बात करने आए होंगे और बात भी यही थी।

(ख) ना जाने केहि भेष में नारायण मिल जायं ---

उत्तर लेखक हमेशा भ्रमण करते रहते थे, क्योंकि उन्हें प्रयाग संग्रहालय हेतु मूर्तियों, सिक्कों आदि को एकत्र करने में बड़ा आनंद आता था। वे सदा घूमते रहते थे। उन्हें लगता था कि छह-आठ महीने में कोई न कोई महत्वपूर्ण चीज मिल ही जाएगी। वे बार-बार यही सोचते कि- न जाने किस रूप में और कब कोई कीमती वस्तु प्राप्त हो जाए।

(ग) चोर के घर छिछोर पैठा-

उत्तर बोधिसत्व की मूर्ति जो लेखक ने दो रूपये में खरीदी थी, जब फ्रांसीसी यात्री ने उसे 10000 में खरीदना चाहा तो लेखक को अत्यंत प्रसन्नता हुई। इस मूर्ति का चित्र और उसका वर्णन विदेशी पत्रों में छप चुका था लेखक अनायास कह उठा, "चोर के घर छिछोर पैठा" अर्थात लेखक स्वयं चोरी करके मूर्तियां एकत्र कर रहा था और ऊपर से खरीदने वाले भी आ गए।

jharkhandlab.com

(घ) यह म्याऊं का ठौर था –

उत्तर प्रयाग संग्रहालय के लिए आठ बड़े बड़े कमरे निर्धारित कर दिए गए थे परंतु सामग्री इतनी अधिक थी कि संग्रहालय के लिए पृथक विशाल भवन का निर्माण अत्यंत आवश्यक हो गया था क्योंकि वे आठ कमरे सामान को देखते हुए बहुत कम थे अर्थात् यह म्याऊं का ठौर था। इसके लिए धन की महती आवश्यकता थी।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. भद्रमथ शिलालेख के संबंध में घटित घटना का वर्णन कीजिए।

उत्तर- लेखक ने भद्रमथ का शिलालेख 25 रुपये में खरीदा था, परंतु उस पर विवाद हो गया। लेखक को वह शिलालेख अपने स्वाभिमान की रक्षा हेतु वापस करना पड़ा। उन्हें भारी नुकसान पहुंचा। वे इस बात को भलीभांति जानते थे कि जिस गांव में शिलालेख मिल सकता है। वहां से उन्हें अन्य पुरातत्व की महत्वपूर्ण वस्तुएं भी मिल सकती है। इस उद्देश्य से गुलजार मियां जो कि लेखक के भक्त थे यहां पहुंचे। गुलजार मियां का भाई म्युनिसिपैलिटी में नौकर था। उसे भी साथ ले लिया। गुलजार मियां के घर के सामने एक पुख्ता सजीला कुआं था। कुएं के बंडेर पर ब्राह्मी अक्षरों में एक लेख खुदा था। लेखक यह देखकर बहुत प्रसन्न हुए। लेकिन ऐसे सुंदर खंभे को खोदकर निकलवाने में झिझक रहे थे। गुलजार ने उनकी इस मानसिक स्थिति को जान लिया तथा तुरंत ही उसे निकलवा कर लेखक को दे दिया। भद्र मथ शिलालेख के हाथ से निकल जाने की क्षतिपूर्ति लेखक को इस प्रकार हो गई।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1- "काक: कृष्ण: पिक:कृष्ण: को भेद पिककाकयो:।

प्राप्ते वसंतसमये काक: काक: पिक: पिक: ॥"

पंक्ति का भावार्थ लिखिए।

उत्तर- कवि कहता है कि कौवा भी काला होता है, कोयल भी काली होती है। दोनों में भेद करना मुश्किल है। परंतु वसंत के आते ही पता चल जाता है कि कौन कौवा है और कौन कोयल।

2. "तीनों कारणों में से प्रत्येक मुझे प्रयुक्त करने के लिए पर्याप्त था।" इस वाक्य के संदर्भ में बताइए कि व्यास जी को किस बात का लालच था तथा वे तीन कारण कौन-कौन से थे ?

उत्तर- व्यास जी ने सुन रखा था कि दक्षिण भारत ताम्र मूर्तियों और ताल पत्र पर लिखी पोथियों की मंडी है। इन दोनों का ही प्रयाग संग्रहालय में अभाव था बहुत दिन पहले मैसूर में ओरिएंटल कॉन्फ्रेंस का अधिवेशन था। लेखक के मित्र कविवर ठाकुर गोपाल शरण सिंह साहित्य विभाग के सभापति थे। लेखक तीनों कारणों से दक्षिण भारत की यात्रा करना चाहता था। पहला, अपने मित्र ठाकुर गोपाल शरण सिंह से मिलने के लिए दूसरा दक्षिण भारत घूमने के लिए तथा तीसरा ताम्र मूर्तियां एवं ताल पत्र पर लिखी पुस्तकों के संग्रह के लिए।

3. श्रीनिवास जी कौन थे ? और उनके पास पुरातात्विक महत्व की क्या सामग्री थी?

व्यास जी ने उनसे क्या खरीदा?

उत्तर- श्रीनिवास जी मद्रास हाई कोर्ट के वकील थे और पुरातात्विक वस्तुओं के प्रेमी और संग्रह कर्ता भी थे। उनके पास सिक्कों और कांस्य एवं पीतल की मूर्तियों का अच्छा संग्रह था। लेखक ने उनसे ये सारी चीजें खरीदी।

4. "लभते वा प्रार्थयिता न वा श्रियम श्रिया दुराप: कथमीप्सितो भवेत्,।"अर्थ स्पष्ट करें।

उत्तर- उपर्युक्त पंक्तियों में कवि कह रहा है कि लक्ष्मी की इच्छा रखने वाले को लक्ष्मी मिले या ना मिले परंतु यदि लक्ष्मी किसी के पास जाना चाहे तो उन्हें कोई नहीं रोक सकता।

5. ताल पत्र पर लिखी पोथियां व्यास जी ने दक्षिण यात्रा में कहां से और कैसे प्राप्त की?

उत्तर- व्यास जी ओरिएंटल कांफ्रेंस में भाग लेने के लिए अपने मित्र गोपाल शरण सिंह के साथ मैसूर गए थे। उन्हें पता था कि दक्षिण भारत में मूर्तियों एवं ताल पत्र पर लिखी पोथियों की मंडी है पर उन्हें ताल पत्र पर लिखी पोथियां नहीं मिल सकी थी। अधिवेशन की समाप्ति के बाद रामेश्वरम की यात्रा हेतु चले गए। वहां पंडों ने उन्हें घेर लिया। व्यास जी ने गोपाल शरण सिंह को राजा साहब के रूप में पेश किया और कहा जो पंडा राजा साहब को जितनी अधिक ताल पत्र पर लिखी पोथियां भेंट करेगा, वही उनका पंडा होगा। एक युवक पंडा सिर पर एक छोटा सा -गट्ठर लाद कर ले आया और उसने ताल पत्र पर लिखी अनेक पोथियां राजा साहब को भेंट कर दी।

6. प्रयाग संग्रहालय के लिए नए भवन की आवश्यकता क्यों पड़ी?

उत्तर- अभी तक प्रयाग संग्रहालय नगर पालिका भवन के 8 बड़े बड़े कमरों में चल रहे थे लेकिन संग्रहालय के पास विविध प्रकार की पुरातात्विक महत्व की प्रचुर सामग्री एकत्र हो गई थी जिसमें 2000 चित्र, 14000 हस्तलिखित पुस्तकें, हजारों सिक्के, मनके, मोहरे इत्यादि थे। इनके प्रदर्शन और संरक्षण के लिए जगह की कमी हो रही थी। अत: प्रयाग संग्रहालय के लिए नए भवन की आवश्यकता पड़ गई।

प्रश्न 7. गांव के लोग लेखक से मिलने क्यों आए?

उत्तर लेखक पसोवा से जब कौशांबी लौट रहे थे। तब उन्हें एक छोटे से गांव के निकट पत्थरों के ढेर के बीच पेड़ के नीचे एक चतुर्मुख शिव मूर्ति मिली। मूर्ति लगभग 20 सेर वजन की थी। उसे वहां से उठाकर अपने संग्रहालय में रखने के लिए लालायित हो उठे। उन्हें मूर्ति उठाते हुए किसी ने नहीं देखा। वह चुपचाप मूर्ति उठाकर अपने साथ ले आए। कुछ दिनों बाद जब मूर्ति के गायब होने का पता चला तो सब का संदेह लेखक पर गया, क्योंकि इस विषय में वे काफी प्रसिद्ध हो गए थे। गांव के लोग अपने मुखिया के साथ वही मूर्ति वापस लेने के लिए लेखक से मिलने आए।

Jharkhandlab.com

अति लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. संग्रहालय के नए भवन का नक्शा किसने बनवाया था?

उत्तर. संग्रहालय के नए भवन का नक्शा जवाहरलाल नेहरू ने मुंबई के विख्यात इंजीनियर मास्टर साठे और मूता से बनवाया था।

2. गांव वालों ने उपवास क्यों रखा?

उत्तर गांव से चतुर्मुख शिव की मूर्ति चोरी हो जाने के कारण गांव वालों ने इसे अपने धर्म पर आघात समझकर उपवास रखा।

3. फ्रांसीसी व्यवसायी बोधिसत्व की मूर्ति को क्यों खरीदना चाहता था?

उत्तर फ्रांसीसी व्यवसायी बोधिसत्व की मूर्ति के बारे में विदेशी पत्रों में पढ़ चुका था इसलिए वह उस महत्वपूर्ण एवं अत्यंत प्राचीन मूर्ति को खरीद कर अपने साथ अपने देश ले जाना चाहता था।

4. लेखक ने बोधिसत्व की मूर्ति प्राप्त करने के लिए क्या तरीका अपनाया?

उत्तर लेखक ने सिक्कों की झनझनाहट से बुढ़िया का ध्यान आकर्षित किया तथा उस लालची बुढ़िया को दो रुपये देकर मूर्ति प्राप्त कर ली।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. ब्रजमोहन व्यास ने पुरातत्व सामग्री का संकलन, संरक्षण किसके लिए किया था?

1 प्रयाग संग्रहालय 2 कलकत्ता संग्रहालय
3 मद्रास संग्रहालय 4 दिल्ली संग्रहालय

2. प्रयाग संग्रहालय के नवीन विशाल भवन का उद्घाटन किसने किया था?

1 सतीश चंद्र काला 2 डा पन्नालाल
3 पं जवाहरलाल नेहरु 4 श्रीनिवास जी

3. ब्रज मोहन व्यास ने उद्घाटन के बाद प्रयाग संग्रहालय का दायित्व किसे सौंपा ?

1 डा० पन्नालाल
2 डा० सतीश चंद्र काला
3 ठाकुर गोपाल शरण सिंह
4 दीक्षित साहब

4. "मैं तो केवल निमित्त मात्र था। पर अरुण के पीछे सूर्य था।"

किसका कथन है?

1 ब्रज मोहन व्यास 2 कामता प्रसाद कक्कड़
3 मास्टर साठे 4 डा पन्नालाल

5. ओरिएंटल कॉन्फ्रेंस का अधिवेशन कहां पर हुआ?

1 मैसूर 2 कलकत्ता
3 मुंबई 4 मद्रास

6. लेखक कौशांबी कब गया था?

1 1948 ई० 2 1956 ई०
3 1936 ई० 4 1942 ई०

7. बुढ़िया ने मूर्ति देने के बदले कितने रुपए लिए थे ?

1 पांच रुपये 2 दो रुपये
3 तीन रुपये 4 एक रुपया

8. कौशांबी से पसोवा की दूरी कितनी है ?

1 ढाई मील 2 दो मील
3 आधा मील 4 एक मील

9. कौशांबी लौटते समय लेखक को कौन सी मूर्ति मिली?

1 शिवजी 2 गणेश जी
3 विष्णु जी 4 (भद्रमथ

10. चतुर्मुख शिव की मूर्ति अंतर्धान होने पर गांव वालों का संदेह किस पर गया?

1 चपरासी पर 2 लेखक पर
3 मुखिया पर 4 मानसिंह पर

11. लेखक ने गांव वालों का उपवास क्या खिलाकर छुड़वाया?

1 प्रसाद 2 हलवा
3 मिठाई 4 नमकीन

12. बोधिसत्व की मूर्ति कितने फीट की थी?

1 चार फीट 2 दो फीट
3 आठ फीट 4 तीन फीट

13. कौवा और कोयल की पहचान किस ऋतु में होती है?

1 ग्रीष्म ऋतु में 2 शीत ऋतु में
3 वसंत ऋतुमें 4 हेमंत ऋतु में

14 प्रयाग संग्रहालय में कौन सी मूर्ति संसार में पाई गई मूर्तियों में पुरानी है?

1 बोधिसत्व की 2 शिव की
3 भद्रमथ की 3 गणिनाथ की

15. 1938 में गवर्नमेंट ऑफ इंडिया के पुरातत्व विभाग के डायरेक्टर जनरल कौन थे?

1 श्रीनिवास जी 2 श्री के एन दीक्षित
3 श्री कृष्ण दास 4 गुलजार मियां

16 लेखक ने जिस संग्रहालय निर्माण कोष का निर्माण किया उसमें 10 वर्ष के भीतर कितने रुपए एकत्र हो गए?

1 दो लाख 2 एक लाख
3 तीन लाख 4 चार लाख

17 लेखक को संग्रहालय निर्माण के लिए भूखंड कहां मिला?

1 कंकड़ बाग 2 कंपनी बाग
3 गर्दनीबाग 4 गुलजार बाग

18 संग्रहालय भवन का नक्शा किस महोदय ने बनाया था?

1 जवाहरलाल नेहरू 2 मास्टर साठे और मूता
3 मिस्टर पन्नालाल 4 डा सतीश चंद्र काला

19- 'कच्चा चिट्ठा' ब्रजमोहन व्यास की किस रचना का अंश है

1 पंडित बालकृष्ण भट्ट (जीवनी)
2 महामना मदन मोहन मालवीय
3 मेरा कच्चा शिक्षा (आत्मकथा)
4 जानकी हरण (कुमार दासकृत)

jharkhandlab.com

20- लेखक एक रुपए में कितनी अठन्नी भुनाना चाहता था?

1 दो अठन्नी 2 एक अठन्नी

3 तीन अठन्नी 4 चार अठन्नी

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1 - 1	2 - 3
3 - 2	4 - 1
5 - 1	6 - 3
7 - 2	8 - 1
9 - 1	10 - 2
11 - 3	12 - 3
13 - 3	14 - 1
15 - 2	16 - 1
17 - 2	18 - 2
19 - 3	20 - 3

Jharkhandlab.com

पाठ–4

संवदिया

फणीश्वरनाथ रेणु (सन् 1921-1977)

लेखक परिचय

फणीश्वरनाथ 'रेणु' का जन्म बिहार के पूर्णिया जिले के औराही हिंगना नामक गांव में हुआ था। रेणु हिंदी के आंचलिक कथाकार हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं के द्वारा प्रेमचंद की विरासत को नई पहचान और भंगिमा प्रदान की। रेणु की रचनाओं में आंचलिक शब्दों के प्रयोग से लोक जीवन के मार्मिक स्थलों की पहचान हुई है। इनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह है - ठुमरी, अग्निखोर, आदिम रात्रि की महक, तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम कहानी पर फिल्म बन चुकी है। मैला आंचल और परती परीकथा उनके उल्लेखनीय उपन्यास हैं।

पाठ परिचय

संवदिया कहानी में मानवीय संवेदना की गहन एवं विलक्षण पहचान प्रस्तुत हुई है। रेणु जी ने बड़ी बहुरिया की पीड़ा को उसके भीतर के हाहाकार को संवदिया के माध्यम से अपनी पूरी सहानुभूति प्रदान की है। बड़ी हवेली में हरगोबिन संवदिया को बड़ी बहुरिया ने अपना संदेश मायके भेजने के लिए बुलाया। बड़ी बहुरिया पति की मृत्यु के बाद आर्थिक तंगी के चलते बड़ी ही अपमानजनक स्थिति में जीवन बिता रही थी। संवाद सुनाते समय बड़ी बहुरिया सिसकने लगी। संवाद सुनकर हरगोबिन का रोम रोम कलपने लगा। वह बड़ी बहुरिया का कारुणिक संदेश उसके मायके ले जाकर भी नहीं कह पाया और वापस लौट कर बड़ी बहुरिया से माफी मांग कर कहा कि वह उसका बेटा बनकर उसे कोई कष्ट नहीं होने देगा।

पाठ्य पुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. संवदिया की क्या विशेषताएँ हैं और गांववालों के मन में संवदिया की क्या अवधारणा है?

उत्तर - संवदिया यानि संदेशवाहक। प्राचीन काल में संदेश भेजने के लिए संदेशवाहको को भेजा जाता था। तब डाकघर आदि संदेश भेजने के साधन नहीं थे। संदेशवाहक इस कार्य में दक्ष होता था। वह तेजगति से यथास्थान पहुंच कर भेजे गए संदेश को यथारूप प्रस्तुत कर देता था। प्रायः गुप्त तथा महत्वपूर्ण संदेश संवदियों के द्वारा ही भेजे जाते थे। गाँव के लोग संवदिया को प्रायः निखट्टू, कामचोर अथवा गैर जिम्मेवार व्यक्ति मानते थे। उनके बारे में यही धारणा थी कि जिसे और काम नहीं मिलता, वही व्यक्ति संवदिया के व्यवसाय को अपनाते हैं। परंतु उनकी यह धारणा गलत थी। दरअसल संवदिया बनने के लिए इस कार्य में निपुण होना अति आवश्यक है। हर आदमी संवदिया का कार्य भली प्रकार नहीं कर सकता। संवदिया की मुख्य विशेषता संवाद के प्रत्येक शब्द को याद रखना, जिस सूर और स्वर में संवाद सुनाया गया है, ठीक उसी ढंग से जाकर सुनना सहज काम नहीं होता है। संवदिया बहुत संयमी और संवेदनशील व्यक्ति होता है।

प्रश्न 2. बड़ी हवेली से बुलावा आने पर हरगोबिन के मन में किस प्रकार की आशंका हुई ?

उत्तर - बड़ी हवेली से बुलावा आने पर हरगोबिन के मन में आशंका हुई कि आज के युग में संदेश भेजने के अनेक साधन उपलब्ध है। बड़ी बहुरिया को अवश्य कोई गुप्त संदेश देना होगा। इस संदेश की खबर चांद, सूरज, परेवा-पक्षी तक को नहीं होनी चाहिए।

प्रश्न 3. बड़ी बहुरिया अपने मायके संदेश क्यों भेजना चाहती थी ?

उत्तर - बड़ी बहुरिया आर्थिक तंगी के चलते बड़ी ही अपमान जनक स्थिति में जीवन बिता रही थी। पति की मृत्यु के बाद जब घर का बंटवारा हुआ तो बड़ी बहुरिया को घर परिवार में न तो सम्मान मिला था और न ही आर्थिक मदद। शहर में बस गए देवर-देवानियों भी वक्त पड़ने पर आते और अपने अपने हिस्सों को लेकर चले जाते पीछे से सभी उधार बड़ी बहुरिया को चुकाना पड़ता था। बड़ी बहुरिया के लिए मायके ही वह स्थान रह गया था जहाँ वह आश्रय की उम्मीद कर सकती थी। अतः वह अपने घरवालों को अपनी दशा बताने के लिए संदेश भेजवाती है और चाहती है कि संदेश सुनकर मायके वाले उसे लेने आ जाएँ।

प्रश्न 4. हरगोबिन बड़ी हवेली में पहुंचकर अतीत की किन स्थातियों में खो जाता है ?

उत्तर - हरगोबिन संवदिया बड़ी हवेली पहुँचकर अतीत की स्मृतियों में खो गया कि अब यह नाम की बड़ी हवेली है। पहले यहाँ दिन-रात नौकर- नौकरानियों और जन-मजदूरों की भीड़ लगी रहती थी। कभी बड़ी बहुरिया के हाथों में मेहंदी लगाकर गाँव की नाइन अपने परिवार का पालन- पोषण करती थी और अब सब काम बड़ी बहुरिया को अपने हाथों से करना पड़ता है। बड़े भईया के मरते ही तीनों भाईयो में लड़ाई-झगड़ा हुआ और वे शहर में जा बसे। बंटवारे में बड़ी बहुरिया के जेवर के साथ बनारसी साड़ी के भी तीन टुकड़े हुए। तीनों निर्दयी भाइयों ने बड़ी बहुरिया के हिस्से कुछ भी न छोड़ा।

प्रश्न 5. संवाद कहते वक्त बड़ी बहुरिया की आँखें क्यों छलछला आई ?

उत्तर- हरगोबिन जब हवेली पहुँचा तो आंगन में मोदिआइन बड़ी बहुरिया को उधार के लिए जली कटी सुना रही थी। हरगोबिन के सामने स्वयं को मोदिआइन द्वारा अपमानित होने पर बड़ी बहुरिया को अपनी दशा हरगोबिन को व्यक्त करनी पड़ी। उसने संवदिया को बताया कि देवर-देवरानी बड़े बेदर्द है। ठीक अगहनी धान के समय तथा आम के मौसम में आकर हिस्सा ले जाते हैं और कर्ज-उधार बड़ी बहुरिया को चुकाना पड़ता है। संवाद कहते वक्त अपनी करुण दशा का वर्णन करते हुए बड़ी बहुरिया का दुख आँखों के जरिए बाहर आ गया।

jharkhandlab.com

प्रश्न 6. गाड़ी पर सवार होने के बाद संवदिया के मन में कांटे की चुभन का अनुभव क्यों हो रहा था। उससे छुटकारा पाने के लिए उसने क्या उपाय सोचा ?

उत्तर - गाड़ी पर सवार होने के बाद हरगोबिन को बड़ी बहुरिया के करुण मुखड़े की याद हो आई। उसे बड़ी बहुरिया द्वारा मां को भेजा जाने वाला संदेश याद आने लगा। उसे बड़ी बहुरिया के शब्द कांटे की तरह चुभने लगे। इससे पहले हरगोबिन कभी ऐसा समाचार लेकर कहीं नहीं गया था अंत में उसे उपाय सुझा कि मायके पहुँचकर किसी को भी बड़ी बहुरिया के दुःख की खबर नहीं दूंगा और शीघ्र गाँव वापस लौट आऊंगा।

प्रश्न 7. बड़ी बहुरिया का संवाद हरगोबिन क्यों नहीं सुना सका ?

उत्तर- बड़ी बहुरिया का संदेश देने से पहले हरगोबिन विचारने लगता है कि बड़ी बहुरिया की दुर्दशा व विवशता का संदेश पाकर बड़ी बहुरिया के घरवाले गाँव का नाम लेकर थूकेंगे। कैसा गाँव है? जहाँ लक्ष्मी जैसी बहुरिया दुख भोग रही है। पूरे गाँव में उनकी बेटी को सुख देने वाला कोई नहीं है। बेटी की दुर्दशा सुन मायके वाले उन्हें लिवाने गाँव आ गए तो बड़ी बहुरिया कभी अपने गाँव वापस न लौटेगी। यही सोच-समझकर हरगोबिन बड़ी बहुरिया का संदेश उसकी माँ तथा घर परिवार के लोगों को नहीं सुना पाया ।

प्रश्न 8. 'संवदिया डटकर खाता है और अफर कर सोता है' से क्या आशय है ?

उत्तर- संवदिया जिनका संवाद लेकर जाता है और जिसको संवाद देता है। उस घर में उसकी बहुत आवभगत होती है। वह घरों में अच्छे से खाता है और यात्रा की थकान उतारने के लिए आराम से सोता है पर कुछ लोग संवदिया को संवेदनहीन, बेफिक्र व हर तरह की जिम्मेदारी से मुक्त मानते हैं। उनके आगे नाथ न पीछे पगहा कहते हैं। संवदिया को निखट्टू, कामचोर, और आलसी मानते हैं। उनका विचार है कि संवदिया हमेशा खूब पेट भरकर खाकर निश्चित होकर सोता है परंतु ऐसा सोचना अर्थहीन है।

प्रश्न 9. जलालगढ़ पहुँचने के बाद बड़ी बहुरिया के सामने हरगोबिन ने क्या संकल्प लिया ?

उत्तर - जलालगढ़ पहुँचने के बाद बड़ी बहुरिया के सामने हरगोबिन ने संकल्प लिया कि वह अब निठल्ला नहीं बैठेगा। बड़ी बहुरिया के लिए हर काम एक बेटे के समान करेगा। अब वह मां के समान उसकी देखभाल करेगा और उन्हें कोई कष्ट नहीं होने देगा।

परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

निम्नलिखित पक्तियों की व्याख्या कीजिए ?

प्रश्न 1. "बड़ी हवेली अब नाममात्र को हवेली है"।

उत्तर - प्रस्तुत पंक्ति में हरगोबिन बड़ी हवेली की तुलना उसके बीते समय से करता है। जब इस हवेली की बात ही कुछ और थी। लोगों से भरी पूरी हवेली अब बिलकुल खाली है। तीनों भाईयों के आपसी बंटवारे से हवेली में केवल बड़ी बहुरिया के अतिरिक्त सभी शहर में जा बसे थे। यह विशालकाय हवेली अब सन्नाटे में ही बसी हुई थी।

प्रश्न 2. "हरगोबिन ने देखी है अपनी आँखों से द्रौपदी चीर-हरण लीला"।

उत्तर - प्रस्तुत पंक्ति में हरगोबिन उस समय का वर्णन करता है। जब हवेली की रानी बड़ी बहुरिया की साड़ी तक उनके तीन देवरों ने तीन टुकड़े करके बांट लिए थे। तीनों भाईयों ने जमीन जायदाद का बंटवारा करते हुए, आपसी संबंधों मर्यादाओं की भी अनदेखी कर दी थी। वे इतने निर्दयी थे कि बड़ी बहुरिया के शरीर पर पहने हुए जेवरों-कपड़ो तक का भी बंटवारा कर लिया।

प्रश्न 3. "बथुआ साग खाकर कब तक जीऊं" ?

उत्तर- फणीश्वर नाथ रेणु ने इस कहानी में बड़ी बहुरिया के अभावग्रस्त जीवन का वर्णन करते हुए स्पष्ट किया है कि बड़ी बहुरिया को खाने के भी लाले पड़े थे। बड़ी बहुरिया हरगोबिन के मध्यम से अपनी माँ को बताना चाहती है कि वह अपनी माली स्थिति से परेशान है।

प्रश्न 4. "किस मुंह से वह ऐसा संवाद सुनाएगा" ?

उत्तर - यह पंक्ति हरगोबिन अपने मन में सोचता है। बड़ी बहुरिया के पति के मरते ही बड़ी बहुरिया की दशा बहुत ही खराब हो गई। उनके दर्द भरे संवाद को सुनकर हरगोबिन कष्ट में था। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि बड़ी बहुरिया की माँ को ऐसा संवाद कैसे सुनाएगा। वह ऐसा संवाद सुनाने में स्वयं को असमर्थ पाता है।

अति लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. काबूली कायदा का क्या अर्थ होता है ?

उत्तर - कबूली कायदा का अर्थ होता है - अत्याचार करके अपने पैसे वसूलना।

प्रश्न 2. हरगोबिन किस गाँव का संवदिया था ?

उत्तर - हरगोबिन जलालगढ़ का संवदिया था।

प्रश्न 3. गुल मुहम्मद आगा कितने वर्ष पहले हरगोबिन के गाँव आया था ?

उत्तर - गुल मुहम्मद आगा पाँच वर्ष पहले हरगोबिन के गाँव आया था।

प्रश्न 4. हरगोबिन जलालगढ़ पैदल क्यों गया ?

उत्तर - हरगोबिन के पास जलालगढ़ जाने के लिए पैसें नहीं थे इसलिये हरगोबिन पैदल गया।

प्रश्न 5. बड़ी बहुरिया ने हरगोबिन को खाने के लिया क्या दिया ?

उत्तर - बड़ी बहुरिया ने हरगोबिन को खाने के लिए दूध और चूड़ा दिया।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. संवदिया पाठ के लेखक है ?

1. प्रेमचंद
2. फणीश्वर नाथ रेणु
3. भीष्म साहनी
4. निर्मल वर्मा

Jharkhandlab.com

2. संवदिया का नाम क्या था ?

1. हरगोबिन 2. बालगोबिन
3. श्याम 4. रमेश

3. संवदिया के मामले में गाँव वालों की क्या गलत धारणा थी कि कैसा व्यक्ति संवदिया हो सकता है ?

1. निठल्ला 2. कामचोर
3. पेटू 4. उपर्युक्त सभी

4. हरगोबिन और बड़ी बहुरिया जिस गाँव में रहते थे उसका क्या नाम था ?

1. जलालगढ़ 2. कटिहार
3. बरौनी 4. खगड़िया

5. मोदिआइन बड़ी बहुरिया के घर क्यों आई थी ?

1. खाना खाने 2. गप्पे मारने
3. अपना उधार वसूलने 4. गाना गाने

6. "बथुआ साग खाकर कब तक जीऊं" किसने किससे कहा ?

1. बड़ी बहुरिया ने हरगोबिन से
2. हरगोबिन ने बड़ी बहुरिया से
3. बड़ी बहुरिया ने अपनी माँ से
4. हरगोबिन ने बड़ी बहुरिया की माँ से

7. बड़ी बहुरिया ने संवदिया से कैसे मर जाने की बात की ?

1. फाँसी लगाकर
2. जहर खाकर
3. गले में घड़ा बांधकर पोखर में डूब कर
4. नस काटकर

8. बड़ी बहुरिया के देवर देवरानिया किस समय गाँव आते हैं ?

1. अगहनी के समय 2. गरमी के मौसम में
3. उपर्युक्त दोनों 4. वारिश के मौसम में

9. बड़ी बहुरिया ने हरगोबिन को राह खर्च के लिए कितने रुपए दिए?

1. एक रुपया 2. दो रुपया
3 . तीन रुपया 4.. पाँच रुपया

10. हरगोबिन की नजर में बड़ी बहुरिया गांव की क्या है ?

1 मालकिन 2 लक्ष्मी
3 दुश्मन 4 बेटी

11. हरगोबिन जब हवेली पहुंचा तो बड़ी बहुरिया का कर रही थी ?

1 चारपाई पर बैठी थी।
2. खाना खा रही थी।
3. सूपे में अनाज फटक रही थी।
4. खाना बना रही थी।

12. गुल मोहम्मद आगा क्या बेचने के लिए गाँव आया था ?

1. काबली चना 2. मिठाइयाँ
3. कपड़ा 4. पान

13. बड़ी बहुरिया की माँ ने उसके लिए क्या भेजा?

1 बासमती धान का चूड़ा 2. साड़ी
3. गेहूँ 4. मिठाई

14. बड़ी बहुरिया का मायका किस गांव में था ?

1. सिरसिया गांव
2. जलालगढ़
3. कटिहार
4. थाना बिन्हपुर

15. कटिहार से जलालगढ़ कितनी दूरी पर था ?

1 बीस कोस 2. तीस कोस
3. एक कोस 4. पाँच कोस

16. हरगोबिन किसका नाम लेकर पैदल चल पड़ा था ?

1. राम 2. गणेश
3. महावीर विक्रम बजरंगी 4. बड़ी बहुरिया

17. गुल मोहम्मद आगा कहाँ पर दुकान लगा कर बैठा करता था ?

1. हवेली में
2. मोदियान के ओसारे में
3. गाँव के बाहर
4. गाँव के पंचायत ऑफिस में

18. हरगोबिन कटिहार पहुँचने के बाद जलालगढ़ तक का सफर कैसे तय किया ?

1 बस से 2. रिक्शे से
3. ट्रक से 4. पैदल

19. हरगोबिन ने अपने पास बैठे यात्री से सवाल करने पर उसका स्वभाव कैसे लगा ?

1.. सहज 2. चिड़चिड़ा
3. सरल 4. मिलनसार

20. बड़ी बहुरिया के कितने देवर थे ?

1. तीन 2. दो
3. एक 4. चार

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1 - 2	2 - 1
3 - 4	4 - 1
5 - 3	6 - 1
7 - 3	8 - 3
9 - 4	10 - 2
11 - 3	12 - 3
13 - 1	14 - 4
15 - 1	16 - 3
17 - 2	18 - 4
19 - 2	20 - 1

Jharkhandlab.com

पाठ–5

गाँधी, नेहरु और यास्सेर अराफात

भीष्म साहनी (सन् 1915-2003)

लेखक परिचय

भीष्म साहनी हिंदी साहित्य के प्रगतिशील कथाकारों में प्रमुख हैं । इनका जन्म 8 अगस्त 1915 को रावलपिंडी पाकिस्तान में हुआ था। गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर से उन्होंने अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. तथा पंजाब विश्वविद्यालय से पी एच.डी. की उपाधि प्राप्त की ।भीष्म साहनी ने व्यवसाय तथा अध्यापन का कार्य किया। पत्रकारिता तथा नाट्य मंडली 'इप्टा' से भी जुड़े रहे। उनके बड़े भाई बलराज साहनी प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता थे। 'तमस' भीष्म साहनी का महत्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। भीष्म साहनी के प्रमुख उपन्यास - झरोखे, कड़ियां, तमस, बसंती, मैया दास की माड़ी, नीलू नीलिमा नीलोफर। कहानी संग्रह- भाग्य रेखा, पहला पाठ, भटकती राख। नाटक- माधवी, हानूश, कबीरा खड़ा बाजार में है। इनकी आत्मकथा आज के अतीत है।

पाठ परिचय

गांधी, नेहरू और यासेर अराफात पाठ भीष्म साहनी की आत्मकथा 'आज के अतीत' का एक अंश है जो संस्मरण के रूप में लिखा गया है। लेखक ने इसमें किशोरावस्था से प्रौढ़ावस्था तक के सारे अनुभव को स्मरण के आधार पर वर्णित किया है। सेवाग्राम में गांधीजी, कश्मीर में नेहरू तथा फिलिस्तीन में यासेर अराफात के साथ व्यतीत किए गए कुछ निजी क्षणों का चित्रण लेखक ने बहुत प्रभावशाली ढंग से किया है। भीष्म साहनी ने अपने रोचक अनुभव को भी पाठ के बीच में जोड़ा है । जिससे यह संस्मरण अत्यंत रोचक और पठनीय बन गया है। इस पाठ में रचनाकार के व्यक्तित्व तथा तीन महान व्यक्तियों गांधी, नेहरू,यासेर अराफात के बारे में जानकारी प्राप्त होती है साथ ही राष्ट्रीय प्रेम, अंतरराष्ट्रीय मैत्री जैसे विषयों पर चर्चा हुई है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

1. लेखक सेवाग्राम कब और क्यों गया था?

उत्तर : लेखक (भीष्म साहनी) 1938 ई. के आसपास अपने बड़े भाई बलराज साहनी के पास कुछ दिनों तक रहने के लिए सेवाग्राम गए थे, जो उस समय वहाँ से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'नयी तालीम' के सह-सम्पादन के रूप में काम कर रहे थे।

2. लेखक का गाँधी जी के साथ चलने का पहला अनुभव किस प्रकार का रहा?

उत्तर : लेखक जब सेवाग्राम गया, तो उसे पता चला कि गाँधी जी सेवाग्राम में हैं और प्रतिदिन सुबह सात बजे घूमने के लिए लेखक के घर से होते हुए निकलते थे। लेखक उन्हें देखने और मिलने के लिए उत्सुक था। वह सुबह जल्दी उठकर घर के सामने खड़ा हो गया। सात बजे गाँधी जी आश्रम से निकले। उन्हें देखकर लेखक प्रसन्न हो गया। लेखक का भाई अब तक सो रहा था। लेखक ने उसे जगाया। लेखक को अकेले उनके पास जाने से संकोच हो रहा था, इसलिए वह जिद्द करके अपने बड़े भाई को अपने साथ ले गया। बलराज ने उसका परिचय गाँधी जी से करवाया। लेखक गाँधी जी से बात करना चाहता था। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि बात कैसे शुरू करें। लेखक ने गाँधी जी को रावलपिंडी आने की याद दिलाई। तब गाँधी जी की भी यादें ताजी हो गई। इस तरह उसका गाँधी जी से वार्तालाप शुरू हुआ। लेखक गांधी जी से मिलकर बहुत उत्साहित और प्रसन्न हुआ था।

3. लेखक ने सेवाग्राम में किन-किन लोगों के आने का ज़िक्र किया है?

उत्तर : लेखक लगभग तीन सप्ताह तक सेवाग्राम में रहा। वह सुबह गाँधी जी के साथ घूमने तथा शाम में प्रार्थना सभा में जाता था। वहाँ उसे जाने-माने देशभक्त सुशीला नय्यर, महादेव देशाई, जापानी भिक्षु,पृथ्वी सिंह आज़ाद, मीरा बेन, खान अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ान, राजेंद्र बाबू आदि के आने का जिक्र किया है। पृथ्वी सिंह आज़ाद से लेखक को उनके अंग्रेज़ों की गिरफ्त से भाग निकलने का किस्सा भी सुनने को मिला।

4. रोगी बालक के प्रति गाँधी जी का व्यवहार किस प्रकार का था?

उत्तर : रोगी बालक के प्रति गाँधी जी का व्यवहार सहानुभूतिपूर्ण तथा विनम्र था। रोगी बालक ने अधिक मात्रा में ईख पी ली थी, इसलिए उसके पेट में दर्द शुरू हो गया था। बालक दर्द से चिल्लाते हुए गाँधी जी को बुलाने की ज़िद्द कर रहा था। गाँधी जी आए। उन्होंने आते ही बालक के फूले हुए पेट पर हाथ फेरा और उसे सहारा देकर बैठाया। गाँधी जी ने उस बालक को मुँह में हाथ डालकर उल्टी करने के लिए कहा। लड़के के उल्टी करने तक गाँधी जी उसकी पीठ सहलाते रहे। उल्टी करते ही उसका पेट हल्का हो गया। बालक को आराम करने के लिए कहकर गाँधी जी वहाँ से मुस्कुराते हुए निकल गए। गाँधी जी के मन में उस बालक के प्रति कोई क्षोभ नहीं था। उनके चेहरे पर बालक के प्रति प्यार झलक रहा था। इस प्रकार गाँधी जी का उस रोगी बालक के प्रति व्यवहार सहानुभूतिपूर्ण एवं सेवाभाव से भरा हुआ था। एक अभिभावक' की भाँति वे उसकी देखभाल कर रहे थे।

5. कश्मीर के लोगों ने नेहरू जी का स्वागत किस प्रकार किया?

उत्तर : नेहरू जी का कश्मीर के लोगों ने कश्मीर पहुँचने पर भव्य स्वागत किया। शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में कश्मीर को शानदार ढंग से सजाया गया था। झेलम नदी पर, शहर के एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक, सातवें पुल से अमीराक दल तक नावों में उनकी शोभा यात्रा निकाली गई। नदी के दोनों ओर हज़ारों-हजार कश्मीरी निवासियों ने अदम्य उत्साह के साथ उनका स्वागत किया। वह दृश्य बहुत अद्भुत था।

6. अखबार वाली घटना से नेहरू जी के व्यक्तित्व की कौन-सी विशेषता स्पष्ट होती है?

उत्तर : अखबार वाली घटना से यह पता चलता है कि नेहरू जी कितने सहज स्वभाव के थे। हर छोटे-बड़े व्यक्ति को सम्मान देते थे।उनके लिए न ही कोई बड़ा न ही कोई छोटा है। उनमें

jharkhandlab.com

अहंकार नहीं था तथा अपने को महत्त्व देकर दूसरे को तुच्छ समझने की वृत्ति उनमें नहीं थी। भीष्म जी की टाँगें तो डर के कारण काँप रहीं थीं पर नेहरू जी ने बड़ी शालीनता से कहा "यदि आपने अखबार देख लिया हों तो मैं एक नजर देख लूँ।" इससे उनके शालीन व्यवहार का परिचय मिलता है।

7. फिलिस्तीन के प्रति भारत का रवैया बहुत सहानुभुति पूर्ण एवं समर्थन भरा क्यों था?

उत्तर: भारत की विदेश नीति अन्याय का विरोध करने की रही है। साम्राज्यवादी शक्तियों ने फिलिस्तीन के प्रति जो अन्यायपूर्ण रवैया अपनाया हुआ था उसकी भर्त्सना भारत के नेताओं द्वारा की गयी थी। भारत के नागरिकों ने भी इसी कारण फिलिस्तीन और उसके नेता यास्सेर अराफात के प्रति अपनी सहानुभूति दिखायी और समर्थन व्यक्त किया। फिलिस्तीन हमारा मित्र देश है तथा यास्सेर अराफात का भारत में बहुत सम्मान था।

8. अराफात के आतिथ्य प्रेम से संबंधित किन्हीं दो घटनाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर: जब लेखक को फिलिस्तीन की राजधानी में बुलाया गया। लेखक और उनकी पत्नी जैसे ही वहाँ पहुँचे यास्सेर अराफात बाहर आकर उनका स्वागत किया तथा चाय की मेज पर वे स्वयं फल छीलकर उन्हें खिलाते रहे। उन्होंने शहद की चाय उनके लिए स्वयं बनाकर दी। यही नहीं जब भीष्म जी (लेखक) टॉयलेट गए और बाहर निकले तो यास्सेर अराफात स्वयं तौलिया लेकर टॉयलेट के दरवाजे पर खड़े रहे जिससे भीष्म जी हाथ पोंछ सकें। ये घटनाएँ उनके आतिथ्य प्रेम की प्रमाण हैं।

9. अराफात ने ऐसा क्यों बोला कि 'वे आपके ही नहीं हमारे भी नेता हैं। उतने ही आदरणीय जितने आपके लिए।' इस कथन के आधार पर गांधीजी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: चाय-पान के समय यास्सेर अराफात और भीष्म साहनी के बीच बातचीत होने लगी। बातचीत के दौरान जब गाँधीजी का जिक्र लेखक ने किया तो अराफात ने गाँधीजी के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए कहा कि वे आपके ही नहीं हमारे भी नेता हैं और उतने ही आदरणीय भी हैं। उनके इस कथन से पता चलता है कि सिर्फ भारत में ही नहीं पूरे विश्व में गाँधी जी के प्रति सम्मान भाव था। गाँधी जी के सत्य, अहिंसा और प्रेम के सिद्धांत तथा उनके नैतिक मूल्यों ने सारे विश्व को प्रभावित कर रखा था। अपने इन्हीं गुणों के कारण वे पूरे विश्व में आदरणीय बन गए थे।

परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. यास्सेर अराफात कौन थे? उनके व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर: यास्सेर अराफात फिलिस्तीनी नेता थे। वे अपने शिष्ट और शालीन व्यवहार के साथ-साथ अपने अतिथि सत्कार के गुणों के कारण भी जाने जाते थे। भीष्म साहनी जी को उन्होंने जब भोजन पर आमंत्रित किया तो अपने हाथ से फल छीलकर दिए, शहद की चाय बनाई तथा जब वे स्नानगृह गए तो स्वयं तौलिया लेकर दरवाजे पर खड़े रहे। वे भारत तथा भारतीयों के प्रशंसक थे। वे गाँधी जी,पंडित नेहरू आदि भारतीय नेताओं को सम्मानपूर्वक अपना नेता मानते थे।

2. नेहरू जी जब कश्मीर पहुँचे, तो उनके स्वागत में क्या-क्या इंतजाम किये गये थे?

उत्तर: पंडित नेहरू कश्मीर यात्रा पर आए थे, यह बात भी लगभग उसी समय की है। वहाँ उनका भव्य स्वागत हुआ। शेख अब्दुल्ला को इनके स्वागत-समारोह का नेतृत्व सौंपा गया था। कश्मीर की सबसे खूबसूरत झेलम नदी के एक सिरे से दूसरे सिरे तक, सातवें पुल से अमीरकादल तक नावों में सवार नेहरू जी की शोभायात्रा देखने को मिली थीं। नदी के दोनों ओर हजारों की संख्या में कश्मीर निवासी अदम्य उत्साह और हर्ष के साथ उनका स्वागत कर रहे थे। यह सच में बहुत ही अद्भुत दृश्य था। शोभायात्रा समाप्त होने पर नेहरू जी को लेखक के फुफेरे भाई के बँगले में ठहराया गया था। लेखक के भाई के आग्रह पर लेखक ने पंडित जी की देखभाल में उनका हाथ बँटाया था।

3. नेहरू जी ने कौन-सी कहानी सुनाई थी? पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर: नेहरू जी ने फ्रांस के विख्यात लेखक, अनातोले फ्रांस की लिखित कहानी सुनाई। पेरिस शहर में एक गरीब बाजीगर रहता था, जो करतब दिखाकर अपना पेट पालता.था। एक बार क्रिसमस का पर्व था। पेरिस निवासी, सजे-धजे, तरह-तरह के उपहार लिए, माता मरियम को श्रद्धांजलि अर्पित करने गिरजाघर जा रहे थे। लेकिन पर्व में भाग न ले सकने के कारण बाजीगर बहुत उदास था। क्योंकि उसके पास माता मरियम के चरणों में रखने के लिए कोई उपहार नहीं था। उसने माता मरियम को अपने करतब दिखाकर उनकी अभ्यर्थना करने की सोची। तन्मयता के साथ वह मरियम को एक के बाद 'एक करतब दिखाकर थक गया और हाँफने लगा। उसके हाँफने की आवाज सुनकर, बड़ा पादरी भागता हुआ गिरजे के अंदर आया। उस वक्त बाजीगर सिर के बल खड़ा हो अपना करतब दिखा रहा था। यह देख बड़ा पादरी तिलमिला उठा और बोल पड़ा- माता मरियम का इससे बड़ा अपमान और क्या होगा। आगबबूला होकर वह आगे बढ़कर उसे लात मारकर गिरजे के बाहर निकालने ही वाला था कि माता मरियम की मूर्ति अपनी जगह से हिल गई, माता मरियम अपने मंच पर से उतरकर नट के पास आई और अपने आँचल से हाँफते हुए नट के माथे का पसीना पोंछती हुई, उसके सिर को सहलाने लगी।

4. भीष्म साहनी का साहित्यिक परिचय लिखिए।

उत्तर: साहित्यिक परिचय - भाषा- भीष्म जी की भाषा उर्दू मिश्रित सरल हिन्दी है। उनकी भाषा में पंजाबी शब्दों की सोंधी महक भी है। छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करके वे विषय को प्रभावी एवं रोचक बना देने की कला में पारंगत हैं। कहानियाँ एवं उपन्यासों में संवादों के प्रयोग से वे अद्भुत ताजगी ला देते हैं। उनकी भाषा में मुहावरों के भी प्रयोग मिलते हैं।

शैली -

भीष्म साहनी ने अपनी रचनाओं के लिए वर्णनात्मक और संस्मरण शैलियों का प्रयोग मुख्य रूप से किया है। विषय के अनुरूप चित्रात्मक शैली, संवाद शैली आदि को भी अपनाया है। बीच-बीच में हास्य-व्यंग्य के छीटों से उनकी रचनाएँ सुसज्जित हैं। पात्रों के चरित्रांकन में आपने मनोविश्लेषण की शैली का प्रयोग किया है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. गांधी जी प्रत्येक दिन कच्ची सड़क पर क्या करने जाया करते थे?

उत्तर- गांधी जी प्रतिदिन प्रातः कच्ची सड़क पर घूमने निकलते,उसके सिरे पर एक कुटिया थी, जिसमें एक रुग्ण व्यक्ति रहता था, गांधी जी प्रतिदिन उसके पास स्वास्थ्य का हाल-चाल जानने के लिए जाया करते थे।

2. नेहरू जी के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर : नेहरू जी एक लोकप्रिय व्यक्ति थे। कश्मीर की जनता ने उनका भव्य स्वागत किया। दिन भर वे स्थानीय नेताओं के साथ कार्यक्रमों में जाते, विचार-विमर्श करते और रात को चिट्ठियाँ लिखवाते। सुबह चरखा चलाते थे। वे शिष्ट और शालीन होने के साथ-साथ तर्क पूर्ण उत्तर देने वाले व्यक्ति थे। वे अत्यन्त परिश्रमी थे। वे अन्धविश्वासी नहीं थे। धर्म के बाह्यडम्बर पर उनकी श्रद्धा नहीं थी। वे उसके मर्म को समझते थे।

अति लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. भीष्म साहनी की पंडित नेहरू जी से भेंट कहाँ हुई थी?

उत्तर : भीष्म साहनी की पंडित नेहरू जी से भेंट कश्मीर में हुई थी।

2. भीष्म साहनी अपने बड़े भाई बलराज साहनी के साथ सेवाग्राम में कब रहा था?

उत्तर : भीष्म साहनी अपने भाई बलराज साहनी के साथ सेवाग्राम में सन् 1947 के लगभग रहा था।

3. लेखक कितने दिनों तक सेवाग्राम में रहा?

उत्तर : लेखक लगभग तीन सप्ताह तक सेवाग्राम में रहा।

4. बीमार बच्चा गाँधी जी को क्यों बुला रहा था?

उत्तर : बीमार बच्चा गाँधी जी को इसलिए बुला रहा था क्योंकि उसे विश्वास था कि गाँधी जी उसे ठीक कर देंगे।

5. बलराज साहनी जी क्या काम करते थे?

उत्तर- बलराज साहनी 'नयी तालिम' पत्रिका के सह-संपादक के रूप में काम करते थे।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'नई तालिम' पत्रिका के सह-संपादक कौन थे?

1. बलराज साहनी 2. भीष्म साहनी
3. महात्मा गांधी 4. पंडित जवाहरलाल नेहरू

2. महात्मा गाँधी प्रतिदिन सुबह कितने बजे घूमने निकलते थे?

1. पांच बजे 2. आठ बजे
3. सात बजे 4. चार बजे

3. लेखक ने सेवाग्राम में किन-किन लोगों के आने का जिक्र किया है

1. महादेव देसाई 2. पृथ्वी सिंह आज़ाद
3. जापानी भिक्षु 4. इनमें से सभी

4. कश्मीर में नेहरू। जी का स्वागत किसके नेतृत्व में किया गया?

1. भीष्म साहनी 2. गाँधी जी
3. शेख अब्दुल्ला 4. इनमें से कोई नहीं

5. भीष्म साहनी का जन्म कब हुआ?

1. 1914 2. 1915
3. 1916 4. 1917

6. निम्न में से कौन सी रचना भीष्म साहनी द्वारा रचित है?

1. भटकती राख
2. कबीरा खड़ा बाजार में
3. तमस
4. इनमें से सभी

7. भीष्म साहनी को किस रचना के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया?

1. झरोखे 2. कड़ियाँ
3. तमस 4. बसंती

8. लेखक और अराफात अपनी मुलाकात में किसकी निंदा कर रहे थे?

1. फिलीस्तीन की
2. पाकिस्तान की
3. गाँधी और नेहरु की
4. साम्राज्यवादी शक्तियों की

9. लेखक किसके आतिथ्य से प्रभावित हुआ था?

1. गांधी जी 2. यास्सेर अराफात
3. नेहरू जी 4. इनमें से सभी

10. लेखक सेवाग्राम कब गए थे?

1. 1930 के आसपास 2. 1938 के आसपास
3. 1940 के आसपास 4. 1948 के आसपास

11. लेखक ने सेवाग्राम में किन-किन लोगों के आने का जिक्र नहीं किया ?

1. महादेव देसाई 2. सुशीला नैय्यर
3. जापानी भिक्षु 4. नेपाली

12. रोगी बालक के प्रति गाँधी जी का व्यवहार किस प्रकार था ?

1. क्रोध पूर्ण व्यवहार 2. वात्सल्य पूर्ण व्यवहार
3. भेदभाव पूर्ण व्यवहार 4. शिष्टाचार पूर्ण व्यवहार

13. कश्मीर यात्रा में किसका जोरदार स्वागत किया गया?

1. नेहरू जी का 2. गांधी जी का
3. प्रियंका जी का 4. उपर्युक्त सभी

Jharkhandlab.com

14. लेखक को जब रास्ते में गाँधी जी मिले तो लेखक ने उनसे किस चीज का जिक्र किया?

1. अपने घर का
2. अपने बचपन का
3. गांव वालों का
4. रावलपिंडी का

15. लेखक सेवाग्राम में कितने दिन रहे?

1. दो दिन
2. तीन दिन
3. इक्कीस दिन
4. तीस दिन

16. किस सन् में कांग्रेस का हरिपुरा अधिवेशन हुआ?

1. सन् 1930
2. सन् 1938
3. सन् 1950
4. सन् 1945

17. वर्धा स्टेशन से सेवाग्राम तक का फासला कितनी दूरी का था?

1. दो मील
2. पांच मील
3. चार मील
4. सात मील

18. रुग्ण का क्या तात्पर्य है?

1. बीमार
2. अस्वस्थ
3. उपर्युक्त दोनों
4. बीमारी का नाम

19. भीष्म साहनी का जन्म कहां हुआ था?

1. उत्तर प्रदेश
2. रावलपिंडी
3. मध्य प्रदेश
4. झारखंड

20. भीष्म साहनी किस विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की?

1. पंजाब विश्वविद्यालय
2. दिल्ली विश्वविद्यालय
3. ओक्सफोर्ड विश्वविद्यालय
4. इनमें से कोई नहीं

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1-1, 2-3, 3-4, 4-3, 5-2, 6-4,
7-3, 8-4, 9-2, 10-2, 11-4, 12-2,
13-1, 14-4, 15-3, 16-2, 17-2, 18-3,
19-2, 20-1

Jharkhandlab.com

पाठ – 6 शेर, पहचान, चार हाथ, साझा

असगर वजाहत (जन्म सन्- 1946)

लेखक परिचय

असगर वजाहत का जन्म फतेहपुर उत्तर प्रदेश में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा फतेहपुर में हुई तथा विश्वविद्यालय स्तर की पढ़ाई उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से की। सन् 1955-56 से ही असगर वजाहत ने लेखन कार्य प्रारंभ कर दिया था। प्रारंभ में उन्होंने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेखन कार्य किया बाद में वे दिल्ली के जामिया मिल्लिया विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य करने लगे। वजाहत ने कहानी उपन्यास नाटक तथा लघु कथा लिखी है, उन्होंने फिल्मों और धारावाहिकों के लिए पटकथा लेखन का कार्य भी किया है। उन्होंने 'गज़ल की कहानी' वृत्तचित्र का निर्देशन किया है तथा 'बूँद-बूँद' धारावाहिक का लेखन भी किया। उनकी प्रमुख रचनाएं- 'दिल्ली पहुँचना है', 'स्विमिंग पूल', 'सब कहाँ कुछ', 'आधी बानी', 'मैं हिंदू हूँ' (कहानी संग्रह), 'फिरंगी लौट आए', 'इन्ना की आवाज', 'वीरगति', 'समिधा', 'जिस लाहौर नई देख्या', 'अकी' (नाटक) 'सबसे सस्ता गोश्त' (नुक्कड़ नाटक संग्रह), 'रात में जागने वाले', 'पहर दोपहर' तथा 'सात आसमान', 'कैसी आगि लगाई' (उपन्यास)।

पाठ परिचय

इस पाठ में **शेर**, **पहचान**, **चार हाथ**, **साझा** चार लघुकथाएँ दी गई हैं।

शेर

शेर प्रतीकात्मक और व्यंग्यात्मक लघुकथा है। इस लघुकथा के माध्यम से व्यवस्था पर व्यंग्य किया गया है। शेर व्यवस्था का प्रतीक है जिसके पेट में जंगल के सभी जानवर किसी न किसी प्रलोभन के कारण समाते जा रहे हैं। ऊपर से देखने पर शेर अहिंसावादी, न्याय प्रिय और बुद्धि का अवतार प्रतीत होता है पर जैसे ही लेखक उसके मुंह में प्रवेश न करने का फैसला करता है तो शेर अपना असली रूप में आता है और दहाड़ता हुआ उसकी और झपटता है। तात्पर्य यह है कि सत्ता तभी तक खामोश रहती है जब तक उसकी आज्ञा का पालन करते हैं जैसे ही कोई व्यवस्था का विरोध करता है तो उसे कुचलने की कोशिश की जाती है। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने सुविधा भोगियों, छद्म क्रांतिकारियों, अहिंसावादियों और सहअस्तित्ववादियों के ढोंग पर भी प्रहार किया है।

पहचान

पहचान लघुकथा में राजा को बहरी, गूँगी और अंधी प्रजा पसंद आती है जो बिना कुछ बोले, बिना कुछ सुने, और बिना कुछ देखे उनकी आज्ञा का पालन करती रहे। कहानीकार ने इसी यथार्थ की पहचान कराई है। भूमंडलीकरण और उदारीकरण के दौर में इन्हें प्रगति और उत्पादन से जोड़कर संगत और जरूरी भी ठहराया जा रहा है। प्रगति और विकास के बहाने राजा उत्पादन के सभी साधनों पर अपनी पकड़ मजबूत करता जाता है। वह लोगों के जीवन को स्वर्ग जैसा बनाने का झांसा देकर अपना जीवन स्वर्गमय बनाता है वह जनता को एकजुट होने से रोकता है और उन्हें भुलावे में रखता है। यही उसकी सफलता का राज है।

चार हाथ

चार हाथ लघुकथा पूँजीवादी व्यवस्था में मजदूरों के शोषण को उजागर करती है। पूँजीपति भाँति-भाँति के उपाय कर मजदूरों को पंगु बनाने का प्रयास करते हैं। वह उनके अहम् और अस्तित्व को छिन्न-भिन करने के नये तरीके ढूँढते हैं और अंततः उनकी अस्मिता ही समाप्त कर देते हैं। मजदूर विरोध करने की स्थिति में नहीं हैंऔर लाचारी में आधी मजदूरी पर काम करने पर विवश हैं। मजदूरों की यह लाचारी शोषण पर आधारित व्यवस्था का पर्दाफ़ाश करती है।

साझा

साझा लघुकथा में उद्योगों पर कब्जा करने के बाद पूँजीपतियों की नज़र किसानों की ज़मीन और उत्पाद पर जमी है। गाँव का प्रभुत्वशाली वर्ग भी इसमें शामिल है। वह किसान को साझा खेती करने का झाँसा देता है और उसकी सारी फसल हड़प लेती है। किसान को पता भी नहीं चलता और सारी कमाई हाथी के पेट में चली जाती है। यह हाथी और कोई नहीं बल्कि समाज का धनाढ्य और प्रभुत्वशाली वर्ग है जो किसानों को धोखे में डालकर उसकी सारी पूँजी हड़प लेती है। यह कहानी आजादी के बाद किसानों की बदहाली का वर्णन करते हुए उसके कारणों की भी पड़ताल करती है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

शेर

प्रश्न-1. लोमड़ी स्वेच्छा से शेर के मुँह में क्यों चली जा रही थी?

उत्तर- लोमड़ी शेर के मुँह में रोजगार पाने के लिए चली जा रही थी। इस लेख के माध्यम से लेखक ने शेर को तानाशाही एवं भ्रामक व्यवस्था के सूत्रधार एवं प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है।लोमड़ी को किसी ने बताया था कि शेर के मुँह में रोजगार का दफ्तर है।वह वहां प्रार्थना पत्र लेकर नौकरी पाना चाहती थी। वह शेर के द्वारा किए गए प्रचार के कारण भ्रमित हो गई थी और इस पर विश्वास कर स्वेच्छा से शेर के मुँह में जा रही थी।

प्रश्न-2. कहानी में लेखक ने शेर को किस बात का प्रतीक बताया है?

उत्तर- कहानी में लेखक ने शेर को व्यवस्था अर्थात् शासन सत्ता का प्रतीक बताया है। वह ऊपर से देखने पर अहिंसावादी, न्याय प्रिय और बुद्धि का अवतार प्रतीत होता है परंतु भीतर से खूंखार है। वह अहिंसक होने का दिखावा करती है। उसने भ्रम फैला रखा है कि वह जनता का हित चिंतक है। इसी कारण उस पर विश्वास करके जनता उसकी बात मानती है। कुछ स्वार्थवश भी उसका सहयोग करते हैं। वह सत्ता के विरोधियों को ताकत के साथ कुचल देता है। वह जनहित के नाम पर अपना हित साधती है।

Jharkhandlab.com

प्रश्न-3. शेर के मुंह और रोजगार के दफ्तर के बीच क्या अंतर है?

उत्तर- शेर के मुँह के भीतर जो भी जंगली जानवर एक बार जाता है वहाँ से वापस नहीं आता। रोजगार दफ्तर के लोग बार-बार चक्कर लगाते हैं, अर्जी देते हैं, पर वह भी वापस नहीं आते अर्थात उन्हें रोजगार नहीं मिलती। शेर जानवरों को निगल लेता है, पर रोजगार दफ्तर नौकरी चाहने वालों को निकलता नहीं लेकिन उन्हें रोजगार प्रदान करके जीने का अवसर भी नहीं देता। इस लघु कथा के माध्यम से लेखक ने वर्तमान शासन व्यवस्था पर व्यंग किया है।

प्रश्न-4. 'प्रमाण से अधिक महत्वपूर्ण है विश्वास' कहानी के आधार पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर- लेखक ने अंधविश्वासी जनता पर व्यंग करते हुए कहा है कि अविवेकी और रूढ़िवादी प्रमाण को सत्य ना मानकर विश्वास को सत्य मानते हैं। जबकि विश्वास के लिए प्रमाण की आवश्यकता होती है। शेर के मिथ्या वचनों को जंगल के जनता बिना सोचे समझे स्वीकार कर अपना अहित करते हैं। शेर अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए प्रमाणों को झुठला देता है। अतः सत्ताधारी को किसी भी ढंग से जनता का विश्वास जीतना आवश्यक है। यदि जनता का विश्वास अर्जित हो गया तो सत्ताधारी बेधड़क अपनी सत्ता चला सकते हैं।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न-1. शेर गौतम बुद्ध की मुद्रा छोड़ अपनी वास्तविक रूप में आकर क्यों झपटा?

उत्तर – लेखक रूढ़ी परंपरा के विरुद्ध सत्य जानना चाहता है। सत्य प्रचारक व्यवस्था के लिए सदैव बाधाएं पैदा करते हैं। शेर सत्य प्रचारक एवं व्यवस्था के विरुद्ध चलने वाले लेखक पर झपट पड़ा। यदि शेर लेखक पर नहीं झपटता तो निश्चय ही वह जंगल के जानवरों को सत्य से परिचित करा देता। इससे शेर और उसके समर्थकों को अपने स्वार्थ सिद्धि में परेशानियां हो सकती थी। तात्पर्य यह है कि शेर अर्थात् सत्ता तभी तक खामोश रहती है जब तक उसकी आज्ञा का पालन होता है ,जैसे ही कोई उसकी व्यवस्था पर सवाल उठाता है या उसकी आज्ञा मानने से इन्कार करता है वह उसे कुचलने का प्रयास करता है।

प्रश्न-2. असगर वजाहत की 'शेर' लघु कथा के आलोक में प्रतिपादित कीजिए कि प्रमाण से भी अधिक महत्वपूर्ण है विश्वास।

उत्तर - लेखक ने जब-सब जानवरों को एक-एक करके शेर के मुँह में जाते देखा तो विचार किया कि ऐसा वे लालच और प्रलोभन से वशीभूत होकर कर रहे हैं। लेखक ने असलियत जानने के लिए जब शेर के दफ्तर जाकर स्टाफ से पूछा कि क्या सच है। क्या शेर के पेट के अंदर रोजगार का दफ्तर है तो उत्तर मिला हाँ, यह सच है। जब लेखक ने पूछा कैसे? तो उत्तर मिला कि सब ऐसा ही मानते हैं। जब लेखक ने प्रमाण मांगा तो बताया गया कि प्रमाण से अधिक महत्वपूर्ण है विश्वास अर्थात् जानवरों को यह विश्वास था कि शेर के पेट में रोजगार दफ्तर है, जहाँ उन्हें नौकरी मिल जाएगी। इसलिए वह उसमें निरंतर समाते चले जा रहे थे। ठीक इसी तरह बेरोजगार लोगों को विश्वास है कि रोजगार दफ्तर में पंजीकरण कराने से उन्हें नौकरी मिल जाएगी पर ऐसा होता नहीं। यह तो शेर का पेट है जिसमें सब समाते जा रहे हैं, कल्याण किसी का नहीं होता।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न-1. इस लघु कथा में शेर किसका प्रतीक है ?

उत्तर- इस लघु कथा के अनुसार शेर तानाशाही एवं भ्रामक व्यवस्था का सूत्रधार एवं प्रतीक है।

प्रश्न-2. लोमड़ी ने लेखक के प्रश्न का क्या उत्तर दिया ?

उत्तर- लोमड़ी ने उत्तर दिया शेर के मुँह के अंदर रोजगार कार्यालय है। मैं वहाँ दरख्वास्त दूंगी फिर मुझे वहाँ नौकरी मिलेगी।

प्रश्न-3. शेर का मुँह खुला देखकर लेखक की हालत कैसी हुई?

उत्तर- जब लेखक जंगल में गए तब उन्होंने देखा कि शेर का मुँह खुला हुआ है और उसमें सभी जंगली जानवर एक-एक कर शेर के मुँह में चले जा रहे हैं। यह देखकर लेखक भयभीत होकर झाड़ी में छिप जाता है।

प्रश्न-4. झाड़ी के पीछे से लेखक ने क्या देखा ?

उत्तर- लेखक ने देखा कि जंगल के सभी छोटे जानवर कतार से आ रहे हैं और शेर के मुँह में घुसते चले जा रहे हैं।

प्रश्न-5. लेखक ने शेर के बारे क्या सुना था?

उत्तर- लेखक ने सुना था कि शेर अहिंसा तथा सह-अस्तित्ववाद का बहुत बड़ा समर्थक है ।इसलिए जंगली जानवरों का शिकार नहीं करता।

प्रश्न-6. उल्लू ने लेखक के प्रश्न का क्या उत्तर दिया?

उत्तर- लेखक से उल्लू ने कहा कि शेर के मुँह के अंदर स्वर्ग है और यही निर्वाण का एकमात्र रास्ता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न-1. लोमड़ी के बाद शेर के मुंह में कौन जाता है ?

1. उल्लू 2. खरगोश
3. बंदर 4. कुत्ता

प्रश्न-2. 'शेर' लघु कथा के लेखक कौन हैं ?

1. विष्णु शर्मा 2. निराला
3. महादेवी वर्मा 4. असगर वजाहत

(3) गधे ने लेखक के बात का क्या उत्तर दिया?

1. दफ्तर है
2. हरी-हरी घास का मैदान है
3. मेरा घर है
4. इनमें से कोई नहीं

प्रश्न-4. असगर वजाहत का जन्म कब हुआ

1. सन् 1946 2. सन् 1947
3. सन् 1948 4. सन् 1950

jharkhandlab.com

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

पहचान

प्रश्न-1. राजा ने जनता को हुक्म क्यों दिया कि सब लोग अपनी आँखें बंद कर लें ?

उत्तर राजा ने अपने राज्य में उत्पादन बढ़ाने के लिए जनता को आँख बंद कर लेने का हुक्म दिया और कहा इससे शांति मिलती रहेगी, पर इसके पीछे राजा का मकसद था कि जनता बिना कुछ देखे, बिना कुछ सोचे विचारे आँखें बंद करके उसकी आज्ञा का पालन करती रहे। यदि प्रजा आँखें खोलकर देखेगी तो उसे प्रजा के हित के नाम पर राजा द्वारा किया गया शोषण दिखाई देगा। प्रजा को राजा द्वारा अपने स्वार्थ सिद्धि में किए गए कार्य समझ में आ जाएंगे।

प्रश्न-2. आंखें बंद रखने और आँखें खोलकर देखने के क्या परिणाम निकले?

उत्तर- अपनी प्रजा की आँखें बंद रखने से धीरे धीरे राजा का प्रभुत्व सर्वत्र व्याप्त हो गया और वह निरंकुश हो गया। जनता को राजा द्वारा किए जाने वाले शोषण का पता नहीं चला। एक दिन खैराती, रामू और छिद्दू ने अपने स्वर्ग जैसे राज्य को देखने के लिए अपनी आँखें खोली तो वह एक दूसरे को ना देख सके सर्वत्र राजा ही उन्हें दिखाई दिया अर्थात राजा ने उत्पादन के साधनों पर अपना अधिकार जमा लिया और प्रजा जनों को भ्रम में रखकर ऐसा बना दिया कि अब वे एकजुट होकर राजा के खिलाफ खड़े होने का दुस्साहस नहीं कर सके। पूँजीपति वर्ग भी यही करता है।

प्रश्न-3. राजा ने कौन-कौन से हुक्म निकाले ? सूची बनाइए और इनके निहितार्थ लिखिए?

उत्तर- (1) प्रजा अपनी आँखें बंद रखें।

(2) प्रजा अपने कानों में पिघला शीशा डालें।

(3) प्रजा अपने होंठ सिलवा लें।

राजा चाहता था कि उसकी प्रजा अँधी, गूंगी और बहरी बनकर चुपचाप बिना विरोध किए उसकी समस्त आज्ञा का पालन करती रहे। प्रजा उसके बुरे कार्यों को देख ना सके। मुँह से उसके विरुद्ध आवाज ना उठा सके। भूमंडलीकरण और उदारीकरण के दौर में इन्हें प्रगति और उत्पादन से जोड़कर संगत और जरूरी भी ठहराया जाता है। वह लोगों के जीवन को स्वर्ग जैसा बनाने का झाँसा देकर अपना जीवन स्वर्गमय बनाता रहा। वह जनता को एकजुट होने से रोकता रहा और उन्हें भ्रम में रखता रहा कि उसके राज्य को स्वर्ग जैसा बनाया जा रहा है।

प्रश्न-4. जनता राज्य की स्थिति की ओर से आँखें बंद कर ले तो उसका राज्य पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- जिस देश की जनता राज्य की ओर से आँख बंद कर लेती है वहाँ का सत्ताधारी (शासक) स्वेच्छाचारी हो जाता है और जनता के सारे अधिकार छीन लिए जाते हैं। शासक यही चाहता है कि प्रजा गूंगी, बहरी और अँधी बनी रहे तथा उसकी आज्ञा का चुपचाप पालन करती रहे। आंख बंद कर राजा की आज्ञा का पालन करने वाली प्रजा का कोई कल्याण(भला) नहीं होता। सत्ता को निरंकुश होने से रोकने के लिए प्रजा को सजग रहना चाहिए तथा जनता को अपनी आँखें खुली रखनी चाहिए।

प्रश्न-5. खैराती, रामू और छिद्दू ने जब आँखें खोली तो उन्हें सामने राजा ही क्यों दिखाई दिया?

उत्तर- खैराती, रामू और छिद्दू ने वर्षों तक आँखें बंद रखने के बाद जब आँखें खोली तो उन्हें अपने सामने राजा ही दिखाई दिया। वह यह सोच रहे थे कि उनका राज्य अब तक स्वर्ग जैसा हो गया होगा, किंतु यह उनका भ्रम था। राजा ने अपनी स्थिति मजबूत कर ली थी और वही सर्वत्र व्याप्त था। यही नहीं वर्षों बाद आँखें खोलने पर वह तीनों एक दूसरे को भी ना देख सके। राजा की आज्ञा के पीछे का उद्देश्य था कि प्रजा जन एकजुट ना हो पाएँ जिससे राजा को सफलता मिल गई थी। 'तीनों एक दूसरे को ना देख सके' का आशय यह है कि उनको प्रजा हित का कोई काम दिखाई नहीं दिया, सर्वत्र राजा का ही प्रभुत्व दिखाई दिया।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न-1. राजा ने प्रजा को अपने आँख कान और मुँह बंद करने का आदेश क्यों दिया ?

उत्तर- इस लघु कथा में राजा प्रजा जनों को इसलिए अपनी आँखें, कान और मुँह बंद करने को कहता है, ताकि वह मनमाने ढंग से राज्य चला सके। वह चाहता है कि उसके प्रजा व्यवस्था का किसी भी रूप में विरोध ना करें। यहाँ राजा का आदेश अपनी प्रगति के लिए था, जनकल्याण के लिए नहीं।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न-1. राजा ने क्या आदेश दिया?

उत्तर- राजा ने अपने प्रजा को आदेश दिया कि राज्य के सभी लोग अपनी आँख, कान और मुँह बंद रखें ताकि उनको शांति मिलती रहे।

प्रश्न-2. राजा ने फिर कौन सा नया आदेश निकलवाया ?

उत्तर- राजा ने फिर से नया आदेश निकाला कि लोग अपने-अपने होंठ सिलवा लें, क्योंकि बोलना उत्पादन के लिए हमेशा बाधक होता है।

प्रश्न-3. राज्य की जनता अपना काम कैसे करने लगी ?

उत्तर- राज्य की जनता अपना काम आँखें बंद करके करने लगी।

प्रश्न-4. एक दिन रामू , खैराती और छिद्दू ने क्या सोचा ?

उत्तर- एक दिन रामू, खैराती और छिद्दू ने सोचा चलो आँख खोलकर अपने राज्य की स्थिति को देखें।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न-1. निम्न में से कौन सी रचना असगर वजाहत की है?

1. दिल्ली पहुंचना है
2. नीड़ से निर्माण फिर
3. आओ मिलकर बचाएं
4. इनमें से सभी

प्रश्न-2. राजा आँखें बंद करने का आदेश किसे देता है?

1. प्रजा को
2. सिपाही को
3. अग्रेजों को
4. इनमें से कोई नहीं

Jharkhandboard.com

प्रश्न-3. राजा ने कौन सा नया आदेश निकाला?

1. आंख बंद कर ले
2. बात ना करें
3. गाना गायें
4. होंठ सिलवा लें

प्रश्न-4. 'पहचान' लघु कथा किसके द्वारा लिखा गया है?

1. असगर वजाहत
2. प्रेमचंद
3. रघुवीर सहाय
4. रामचंद्र शुक्ल

प्रश्न-5. 'पहचान' लघु कथा के अनुसार राजा को कैसी प्रजा पसंद है?

1. बहरी, गूंगी और अंधी
2. चालाक ,चतुर ,मूक
3. बाचाल, मृदुभाषी
4. इनमें से सभी

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

चार हाथ

प्रश्न-1. मजदूरों को 'चार हाथ' देने के लिए मिल मालिक ने क्या किया उसका क्या परिणाम निकला?

उत्तर- मिल मालिक ने सोचा कि अगर मजदूरों के चार हाथ होते तो उत्पादन दोगुना हो जाता। मजदूरों को चार हाथ देने के लिए मिल मालिक ने वैज्ञानिकों को मोटी तनख्वाह पर रखा और उनसे इस दिशा में कार्य करने का निर्देश दिया। कई साल तक शोध और प्रयोग के बाद वैज्ञानिकों ने कहा कि यह संभव नहीं है। तब उसने लकड़ी के हाथ लगवाए पर काम न बना। फिर उसने मजदूरों के लोहे के हाथ लगवा दिए, इससे मजदूर मर गए और उसके मिल का उत्पादन बाधित हो गया।

प्रश्न-2. 'चार हाथ' न लग पाने पर मालिक की समझ में क्या बात आ गई?

उत्तर- मजदूरों के चार हाथ न लग पाने पर मिल मालिक की समझ में यह बात आ गई कि इस तरह उत्पादन दूना नहीं किया जा सकता। उसने तय किया कि उत्पादन बढ़ाने और खर्च उतना ही रखने के लिए मजदूरों की संख्या दोगुनी कर दी जाए और मजदूरी आधी कर दी जाए। उसने ऐसा ही किया और बेबस, लाचार मजदूर आधी मजदूरी पर मिल मालिक के वहाँ काम करने लगे।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न-1. मिल मालिक के दिमाग में एक दिन क्या ख्याल आया ?

उत्तर- मिल मालिक के दिमाग में एक दिन यह ख्याल आया कि यदि मजदूरों के चार हाथ होते तो दोगुना तेजी से मुनाफा कमाया जा सकता है।

प्रश्न-3. लोहे के हाथ लगाए जाने पर मजदूरों की स्थिति क्या हो गई ?

उत्तर- मिल मालिक ने मजदूरों को अत्यधिक लाभ कमाने के उद्देश्य से मजदूरों पर लोहे के हाथ लगवाए जिससे मजदूरों की मृत्यु हो गई।

प्रश्न-4. मिल मालिक के दिमाग में क्या-क्या ख्याल आते हैं ?

उत्तर - मिल मालिक के दिमाग में अजीब ख्याल आया करते थे। जैसे सारा संसार मिल हो जाएगा सारे लोग मजदूर बनेंगे और उन सभी मजदूरों का मालिक मैं बनूंगा। तब मुझे मजदूरी भी नहीं देनी पड़ेगी। मिल में और चीजों की तरह मजदूर भी बनेंगे और उनके चार हाथ होंगे, जिससे उत्पादन बढ़ेगा । मजदूरी भी कम देनी पड़ेगी।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न-1. मिल मालिक कैसा मजदूर चाहता था?

1. दो हाथों वाला
2. चार हाथों वाला
3. आठ हाथों वाला
4. तीन हाथों वाला

प्रश्न-2. मजदूरों को चार हाथ लगाने के लिए मिल मालिक ने ऊंचे वेतन पर किसे नियुक्त किया था?

1. कारीगर को
2. मजदूरों को
3. वैज्ञानिकों को
4. इनमें से सभी

प्रश्न-3. मजदूर क्यों मर गए?

1. लकड़ी के हाथ लगाने पर
2. कागज के हाथ लगाने पर
3. पहला और दूसरा दोनों
4. लोहे के हाथ लगाने पर

प्रश्न-4. 'चार हाथ' लघु कथा के लेखक कौन हैं?

1. दिनकर
2. अज्ञेय
3. प्रेमचंद
4. असगर वजाहत

प्रश्न-5. असगर वजाहत का जन्म कहां हुआ था?

1. उत्तर प्रदेश
2. मध्य प्रदेश
3. झारखंड
4. राजस्थान

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

साझा

प्रश्न-1. साझे की खेती के बारे में हाथी ने किसान को क्या बताया?

उत्तर - साझे की खेती के लिए हाथी ने किसान के सामने यह प्रस्ताव रखा कि वह उसके साथ साझे की खेती करेगा । कहा कि उसके साथ साझे की खेती करने से यह लाभ होगा कि जंगल के अन्य छोटे छोटे जानवर नुकसान नहीं पहुंचा सकेंगे।इस प्रकार खेती की रखवाली भी होती रहेगी। हाथी की बातों में आकर किसान साझे की खेती करने के लिए तैयार हो गया।

प्रश्न-2. हाथी ने खेत की रखवाली के लिए क्या घोषणा की?

उत्तर - हाथी ने साझे की खेती की रखवाली के लिए पूरे जंगल में डुग्गी पिटाया की गन्ने की खेती में उसका साझा है। अतः कोई भी जानवर खेत को नुकसान नहीं पहुंचाएगा, नहीं तो परिणाम अच्छा न होगा।

प्रश्न-3. आधी-आधी फसल हाथी ने किस तरह बाँटी?

उत्तर - गन्ना तैयार हो जाने पर हाथी ने आधी-आधी फसल बांटने के लिए एक गन्ना तोड़ा और कहा हम दोनों मिलकर गन्ना खाएंगे । हाथी ने गन्ने का एक छोर अपने मुंह में लिया और दूसरा छोर किसान के मुंह में दे दिया । जब किसान गन्ने के साथ-साथ हाथी के मुंह की ओर खींचने लगा तो उसने गन्ने को छोड़ दिया। इस तरह किसान और हाथी के बीच साझा की खेती (गन्ने) का बँटवारा हो गया।

sharmanlab.com

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न-1. 'साझा' लघु कथा का संदेश अपने शब्दों में लिखिए?

उत्तर - 'साझा' कहानी के माध्यम से लेखक ने यह संदेश दिया है कि उद्योगों पर कब्जा करने के बाद पूँजीपति वर्ग किसानों की जमीन भी हड़पना चाहते हैं। साझा खेती का प्रस्ताव एक झांसा है। वह किसान के श्रम का शोषण तथा उसकी फसल पर कब्जा करना चाहते हैं। किसान को धोखे में रखा जाता है और उसकी सारी कमाई धनाढ्य लोगों की जेब में चली जाती है।

साझा खेती में किसान का हित नहीं होता है। यह किसान की जमीन तथा उसकी कमाई छीनने का पूँजीपतियों का प्रयास है। इससे किसानों को सतर्क रहना चाहिए।

प्रश्न-2. 'साझा' लघुकथा के निहितार्थ व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए?

उत्तर - इस लघु कथा के माध्यम से लेखक ने उन पूँजीपतियों की प्रवृत्ति उजागर की है जिनकी गिद्ध दृष्टि किसान की जमीन पर टिकी हुई है। लेखक यह बताना चाहता है कि पूँजीपति किसानों को हाथी की भाँति पट्टी पढ़ा रहे हैं कि उनके साथ साझे में खेती करने से किसान को लाभ होगा। पर वास्तविकता यह है कि हाथी की तरह वह सब कुछ हड़प जाएंगे और किसान को कुछ भी नहीं मिलेगा। इस लघु कथा में हाथी पूँजीपतियों का प्रतीक है। किसान को पता भी न चलेगा कि उसकी कमाई हाथी रूपी पूँजीपति हड़प जाएंगे। अपने खून पसीने की कमाई उसे हाथी को (पूँजीपतियों को) देना पड़ जाएगा।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न-1. 'साझा' कहानी का प्रतीकार्थ क्या है?

उत्तर - पूँजीपतियों की नजर उद्योगों पर एकाधिकार करने के बाद किसानों की जमीन पर होती है। यह साझा कहानी का प्रतीकार्थ है।

प्रश्न-2. खेती की रखवाली के लिए हाथी ने क्या शर्त रखी थी?

उत्तर- खेती की रखवाली के लिए हाथी ने किसान से कहा कि उपजे हुए फसल में उसका भी आधा हिस्सा होगा।

प्रश्न-3. किसान खेती न करने का निश्चय क्यों किया?

उत्तर - साझे की खेती में उसका गुजारा नहीं हो पाता है और अकेले खेती नहीं कर सकता। इसलिए किसान ने निश्चय किया कि खेती नहीं करेगा।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न-1. हाथी ने किसान के साथ साझे में किसकी खेती की?

1. गन्ने की
2. धान की
3. गेहूं की
4. इनमें से सभी

प्रश्न-2. खेती की प्रत्येक बारीकी के बारे में किसे मालूम था?

1. लोमड़ी को
2. किसान को
3. हाथी को
4. गधे को

प्रश्न-3. फसल की सेवा कौन करता रहा?

1. गधा
2. हाथी
3. किसान
4. इनमें से सभी

प्रश्न-4. किसान किसके साथ साझा की खेती करने के लिए तैयार हो गया ?

1. डॉक्टर के साथ
2. लोमड़ी के साथ
3. गधे के साथ
4. हाथी के साथ

प्रश्न-5. किसान हाथी से पहले किसके किसके साथ साझे की खेती कर चुका था?

1. शेर
2. चिता
3. मगरमच्छ
4. इनमें से सभी

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

शेर

1.-2 2.-4
3. -2 4. -1

पहचान

1.-1 2.-1 3. -4
4. -1 5. -1

चार हाथ

1.-2 2.-3 3. -4
4. -4 5. -1

साझा

1.-1 2.-2 3.-3
4.-4 5.-4

Jharkhandlab.com

पाठ–7 जहां कोई वापसी नहीं

निर्मल वर्मा (सन् 1929-2005)

Jharkhandlab.com

लेखक परिचय

निर्मल वर्मा का जन्म शिमला (हिमाचल प्रदेश) में हुआ था। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के सेंट स्टीफेंस कॉलेज से इतिहास में एम. ए. किया और अध्यापन कार्य करने लगे। चेकोस्लोवाकिया के प्राच्य-विद्या संस्थान 'प्राग' के निमंत्रण पर सन् 1959 में वहां गए और चेक उपन्यासों तथा कहानियों का हिंदी अनुवाद किया।

निर्मल वर्मा को हिंदी के समान ही अंग्रेजी पर भी समान अधिकार प्राप्त था। उन्होंने टाइम्स ऑफ इंडिया तथा हिंदुस्तान टाइम्स के लिए यूरोप की संस्कृतिक और राजनीतिक समस्याओं पर अनेक लेख और रिपोतार्ज लिखे हैं, जो उनके निबंध संग्रह में संकलित है। सन् 1970 में वे भारत लौट आए और स्वतंत्र लेखन करने लगे।

निर्मल वर्मा का मुख्य योगदान हिंदी कथा साहित्य के क्षेत्र में है। वे नई कहानी आंदोलन के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर माने जाते हैं। परिंदे, जलती झाड़ी, पिछली गर्मियों में, कौवे और काला पानी, बीच बहस में, सुखा तथा अन्य कहानियां आदि कहानी संग्रह तथा 'वे दिन,' 'लाल टीन की छत', 'एक चिथड़ा सुख' तथा 'अंतिम अरण्य' उपन्यास इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। रात का रिपोर्टर जिस पर सीरियल तैयार किया गया है, उनका उपन्यास है। 'हर बारिश में', 'चिड़ों पर चांदनी', 'धुंध से उठती धुन' में उनका यात्रा संस्मरण संकलित है। शब्द और स्मृति तथा कला का जोखिम और ढलान से उतरते हुए उनके निबंध संग्रह हैं, जिनमें विभिन्न विषयों की विवेचन मिलती है। सन 1985 में 'कव्वे और कालापानी' पर उनको साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। इसके अतिरिक्त तो उन्हें कई अन्य पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया।

निर्मल वर्मा की भाषा शैली में एक ऐसी अनोखी कसावट है जो विचार सूत्र की गहनता को विविध उदाहरणों से रोचक बनाती हुई विषय का विस्तार करती है।

पाठ परिचय

जहां कोई वापसी नहीं निर्मल वर्मा का यात्रा वृतांत है, जो उनके संग्रह 'धुंध से उठती धुन' से लिया गया है। इस पाठ में उन्होंने औद्योगिकरण तथा विकास के नाम पर पर्यावरण विनाश से उत्पन्न हुई विस्थापन से संबंधित मनुष्य की समस्याओं के प्रति चिंता प्रकट की है। औद्योगिक विकास के दौर में आज प्राकृतिक सौंदर्य किस प्रकार नष्ट होता जा रहा है, इसका मार्मिक चित्रण इस अध्ययन में किया गया है। लेखक ने स्पष्ट किया है कि औद्योगिक विकास की अंधी दौड़ में केवल मनुष्य ही नहीं उखड़ता, बल्कि उसका परिवेश, संस्कृति और आवास स्थल भी हमेशा के लिए नष्ट हो जाते हैं। इससे हमारा वर्तमान ही नहीं भविष्य भी दांव पर लग जाता है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. अमझर से आप क्या समझते हैं? अमझर गांव में सूनापन क्यों है?

उत्तर- अमझर से अभिप्राय है आम के पेड़ों से घिरा हुआ गांव जहां आम झाड़ते हैं। जहां पिछले दो-तीन वर्षों से सूनापन है, इसका कारण सरकारी घोषणा है। सरकार ने घोषणा की थी कि यहां अमरौली प्रोजेक्ट को बनाया जा रहा है। इस प्रोजेक्ट के अंतर्गत नवागांव के अनेक गांव आएंगे जिन्हें उजाड़ दिया जाएगा। इसके बाद यहां के पेड़ सूखने लगे। वे भी लोगों की तरह मूक सत्याग्रह कर रहे थे।

प्रश्न 2. आधुनिक भारत के 'नए शरणार्थी' किन्हें कहा गया है?

उत्तर आधुनिक भारत के 'नए शरणार्थी' वे लोग हैं जो विशेष प्रोजेक्ट के तहत अपने आश्रय से उजाड़ दिए गए है। सिंगरौली गांव में लोगों को निष्कासित कर दिया गया है, औद्योगीकरण की तेज आंधी ने उन्हें अपने घर जमीन से सदा के लिए उखाड़ दिया।

प्रश्न 3. प्रकृति के कारण विस्थापन और औद्योगिकीकरण के कारण विस्थापन में क्या अंतर है?

उत्तर - प्रकृति के विरोध के कारण बाढ़, भूकंप आदि आते हैं। इस कारण से लोगों को अपना घर- बार छोड़ना पड़ता है। संकट के समाप्त होने पर वे सभी अपने पुराने स्थानों पर वापस आ जाते हैं परंतु औद्योगिकीकरण के कारण लोगों का विस्थापन स्थाई होता है। विकास और प्रगति के नाम पर इन लोगों का परिवेश तथा आश्रय स्थल सदा के लिए नष्ट हो जाता है।

प्रश्न 4. यूरोप और भारत की पर्यावरण संबंधी चिंताएँ किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर– भारत और यूरोप मे पर्यावरण का प्रश्न अलग-अलग नजरिए से देखा जाता है। यूरोप में पर्यावरण का प्रश्न मानव तथा प्रकृति के बीच संतुलन बनाए रखने का है। वहां भौतिकवाद प्रमुख है। भारत में यही प्रश्न मनुष्य और उसके संस्कृति के बीच पुराना संबंध बनाए रखने का होता है। यहां प्रकृति को मानव के संस्कारों से जोड़ा जाता है।

प्रश्न 5. लेखक के अनुसार स्वातंत्र्योत्तर की सबसे बडी ट्रेजेडी (दुःख) क्या है?

उत्तर – लेखक कहता है कि आजादी के बाद हमने यूरोप के विकास के तरीकों को चुना। हमनें पश्चिम के मॉडलों को ज्यों का त्यों अपनाया। उन्होंने कभी प्रकृति, मनुष्य तथा संस्कृति के बीच संतुलन को नहीं देखा। वे सिर्फ पश्चिम की योजनाओं की नकल करते थे, उन्होंने भारतीय स्वरूप तथा जरूरतों के मुताबिक विकास का स्वरूप निर्धारित नहीं किया। यही स्वातंत्र्योत्तर भारत की सबसे बड़े ट्रेजेडी है।

प्रश्न 6. औद्योगिकीकरण ने पर्यावरण का संकट पैदा कर दिया है, क्यों और कैसे ?

उत्तर- औद्योगीकरण के कारण प्राकृतिक वनस्पति को नष्ट किया जाता है। गांव को उजाड़ दिया जाता है, उपजाऊ क्षेत्र पर सड़कों तथा भवनों का जाल बिछ जाता है । आबादी बढ़ जाती है। उद्योगों के चलने से वातावरण को प्रदूषित करने वाली गैसें उत्पन्न होती है तथा जहरीला कचरा भी निष्कासित होता है, प्रकृति का अपना संतुलन डगमगा जाता है।

प्रश्न 7. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए ?

क. आदमी उजड़ेंगे तो पेड़ जीवित रह कर क्या करेंगे?

ख. प्रकृति और इतिहास के बीच यह गहरा अंतर है ?

उत्तर- क: इस पंक्ति में लेखक ने अमझर गांव की दशा का वर्णन किया है। प्रोजेक्ट शुरू होने की सरकारी घोषणा के बाद वहां आम के पेड़ सूखने लगे। इससे यह पता चलता है कि प्रकृति और मानव के बीच गहरा रिश्ता है। एक के उजड़ने पर दूसरा भी उजड़ने लगता है।

ख: लेखक कहता है कि प्रकृति आपदाओं से व्यक्ति अस्थाई तौर पर विस्थापित होता है परंतु औद्योगीकरण से, इलाके का प्राकृतिक परिवेश केवल कहानी रह जाता है इस प्रगति की अंधी दौड़ से आश्रय स्थल सदा के लिए नष्ट हो जाते हैं।

प्रश्न 8. निम्नलिखित पर टिप्पणी कीजिए -

क. आधुनिक शरणार्थी

ख. औद्योगिकीकरण की अनिवार्यता

ग. प्रकृति, मनुष्य और संस्कृति के बीच आपसी संबंध

उत्तर-

क. लेखक बताता है कि औद्योगिकीकरण के कारण जिस क्षेत्र के लोगों का विस्थापन होता है। वे आधुनिक शरणार्थी कहलाते हैं, इनके घर तथा जमीन सदा के लिए उनसे सरकार छीन लेती है।

ख. आज का युग विकास का युग है। विकास उद्योगों से ही हो सकता है। यह आज के समय की जरूरत है। यदि कोई देश इसके उपेक्षा करता है, तो वह असभ्य माना जाता है। वहां के लोगों का जीवन स्तर ऊंचा नहीं उठ पाता ।

ग. लेखक बताता है कि प्रकृति, मनुष्य और संस्कृति के बीच गहरा संबंध होता है। प्रकृति और मनुष्य एक नई संस्कृति को जन्म देते हैं। हर संस्कृति के विकास में वहां की जलवायु का बहुत बड़ा योगदान है। संस्कृति के विकास से ही किसी क्षेत्र का पर्यावरण ठीक रह सकता है।

प्रश्न 9. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव सौंदर्य लिखिए-

क. कभी-कभी किसी इलाके की संपदा ही उसका अभिशाप बन जाती है ।

ख. अतीत का समूचा मिथक संसार पोथियों में नहीं इन रिश्तो की अदृश्य लिपि में मौजूद रहता है ।

उत्तर-

क. लेखक बताता है कि जिस क्षेत्र में खनिज संसाधन या वनसंपदा होती है तो वहां विकास की योजनाएं बनाई जाती है। ताकि उन संसाधनों से नई चीजें बनाई जा सके। यही संपन्नता ही उस क्षेत्र के लिए अभिशाप बन जाती है। सिंगरौली में यही हुआ यहां कोयले की उपलब्धता को देखते हुए पावर प्लांट लगाए गए। जिससे इस क्षेत्र की वन संपदा को भारी नुकसान हुआ।

ख. इस पंक्ति में लेखक ने संस्कृति के महत्व को प्रतिपादित किया है। वह कहता है कि अतीत के सभी तथ्य किताबों में नहीं लिखे जा सकते हैं। मानव की हर अनुभूति संस्कार आदि को पुस्तकों में संचालित नहीं किया जा सकता। यह केवल रिश्तो की अदृश्य लिपि मे विद्यमान रहता है। लोगों का आपसी संबंध उनका व्यवहार हमें संस्कृति के प्राचीन स्वरूप को दिखाता है।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. गांव में खेती करती हुई स्त्रियों के विषय में लेखक ने क्या कहा है?

उत्तर- हिम्मत करके लेखक जब गांव के अंदर गए तो उन्होंने देखा कि वहां सिर्फ स्त्रियां हैं और सभी एक कतार में झुकी हुई है। धान के पौधे खेत में लगा रही थी, वह सभी स्त्रियां सुडौल, सुंदर, धूप में चमचमाती काली टांगे और उनके सिर पर चटाई के किश्तीनुमा टोपी जो फोटो और फिल्मों में देखे हुए वियतनामी और चीनी स्त्रियों की याद दिलाती हैं।

प्रश्न 2. आम के पेड़ों के संबंध में लेखक ने क्या कहा है?

उत्तरा- सिंगरौली क्षेत्र के एक गांव का जिक्र करते हुए लेखक बताते हैं कि वहां एक अमझर नामक गांव है । अमझर दरअसल दो शब्दों के मेल से बना है जिसका अर्थ होता है । आम का फल पक कर गिरना, जहां आम झड़ते हैं उसे लेखक ने अमझर कहा है। जब गांव में यह घोषणा पहुंची है कि अमरौली प्रोजेक्ट के तहत नवागांव को खत्म कर दिया जाएगा। तब से इन आम के पेड़ों ने अपनी हरियाली को त्याग दिया। मानव प्रकृति को खुद ही पता चल गया कि अब यहां उनका कोई काम नहीं है। अब यहां कोई इंसान नहीं रहेगा इसके परिणाम स्वरूप इस गांव में सूनापन रहने लगा।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. विरोध के कौन से स्वरूप का इस्तेमाल अमझर गांव में किया गया ?

उत्तर - लेखक के अनुसार किसी बात का विरोध चुप रहकर करना और सत्य का आग्रह करना मुख्य सत्याग्रह कहलाता है। औद्योगिकीकरण के विरोध में अमझर गांव के लोगों ने यही सत्याग्रह अपनाया था।

प्रश्न 2. गांव वालों की जीवन शैली के विषय में गांव वालों ने क्या कहा ?

उत्तर- गांव के अंतर्गत पवित्र खुलापन था और इस पवित्र खुलेपन के अंतर्गत सभी संबंधों को पवित्र रखा जाता था। इसके तहत ही खुलकर बोला जाता था, लेखक ने अमझर गांव के

Jharkhandlab.com

लोगों की जीवन शैली को भी इसी खुलेपन के अंदर रखकर बताया है।

अति लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. औद्योगिकरण से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर- तकनीकी उपकरण तथा तकनीकी का प्रयोग करके प्रगति और विकास के लिए किये गए प्रयास को औद्योगिकीकरण कहते हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. जहां कोई वापसी नहीं पाठ किस विधा में है ?

1 यात्रावृतांत 2 कहानी
3 निबंध 4 नाटक

प्रश्न 2. जहां कोई वापसी नहीं पाठ की मूल संवेदना क्या है ?

1 वृक्षारोपण की समस्या
2 प्रदूषण की समस्या
3 भ्रष्टाचार की समस्या
4 विस्थापन की समस्या

प्रश्न 3. लेखक निर्मल वर्मा किस संस्था की तरफ से सिंगरौली गए थे ?

1 दिल्ली के लोकायन संस्था की तरफ से
2 दिल्ली की हमवतन संस्था की तरफ से
3 वित्त मंत्रालय की ओर से
4 दिल्ली विश्वविद्यालय की ओर से

प्रश्न 4. भारत की सांस्कृतिक विरासत किस कारण जीवित है ?

1 अमझर गांव के कारण
2 राजनीति के कारण
3 सिंगरौली के कारण
4 मनुष्य और प्रकृति के रिश्तो के कारण

प्रश्न -5. लेखक निर्मल वर्मा के अनुसार स्वतंत्र भारत की दुख क्या है ?

1 भ्रष्टाचार मे प्रशासन की लापरवाही
2 औद्योगिकीकरण में प्रकृति, मनुष्य और संस्कृति के संतुलन को ध्यान में ना रखना
3 गंदी राजनीति के कारण भ्रष्ट हुए नेता
4 ग्रामीण भारत में रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाना

प्रश्न 6. लेखक ने जहां कोई वापसी नहीं इस पाठ में किस स्थान की समस्या को उजागर किया ?

1 मालवा
2 सिंगरौली क्षेत्र के अमझर गांव की
3 गुजरात
4 झारखंड के धनबाद

प्रश्न 7. जहां कोई वापसी नहीं पाठ के लेखक का नाम बताइए ?

1 रामचंद्र शुक्ल 2 जैनेंद्र
3 निर्मल वर्मा 4 निराला

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से अमझर क्या है ?

1 आम का पेड़
2 गांव का नाम
3 लेखक के प्रोजेक्ट का नाम
4 आम आदमी की झाड़ियां

प्रश्न 9. अमझर का क्या अर्थ है ?

1 गांव का नाम 2 आमों का झरना
3 सत्याग्रह का नाम 4 उपर्युक्त में से कोई नहीं

प्रश्न10. लेखक को पेड़ों के मूक सत्याग्रह का अनुभव कहां से हुआ ?

1 झारखंड से 2 धनबाद से
3 भाखड़ा से 4 सिंगरौली से

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1–1, 2 –4, 3–1, 4–4, 5–2, 6–2,
7–3, 8–2, 9–2, 10–4,

jharkhandlab.com

पाठ–8

यथास्मै रोचते विश्वम्

रामविलास शर्मा (सन् 1912 - 2000)

लेखक परिचय

रामविलास शर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के ऊंचगांव-सानी गांव में हुआ था। रामविलास शर्मा आलोचक, भाषा शास्त्री, समाज चिंतक और इतिहासवेत्ता रहे हैं। इनकी कविताएं अज्ञेय द्वारा संपादित तार सप्तक में संकलित है। रामविलास शर्मा ने आधुनिक हिंदी साहित्य का विवेचन और मूल्यांकन करते हुए हिंदी की प्रगतिशील आलोचना का मार्गदर्शन किया। इनके अधिकांश निबंध 'विराम चिन्ह' नाम की पुस्तक में संग्रहित है। निराला की साहित्य साधना पुस्तक पर इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। इनकी कृतियां है - भारतेंदु और उनका युग, महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण, प्रेमचंद और उनका युग, निराला की साहित्य साधना, भाषा और समाज, इतिहास दर्शन।

पाठ परिचय

'यथास्मै रोचते विश्वम्' नामक निबंध उनके निबंध संग्रह 'विराम चिन्ह' से लिया गया है। इसमें उन्होंने कवि की तुलना प्रजापति से करते हुए उसे उसके कर्म के प्रति सचेत किया है। लेखक के अनुसार साहित्य जहां एक ओर मनुष्य को मानसिक विश्रांति प्रदान करता है। वहीं उसे उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा भी देता है। सामाजिक प्रतिबद्धता साहित्य की कसौटी है। 15वीं शताब्दी से आज तक के साहित्य के अच्छे मूल्यांकन के लिए रामविलास जी ने इसी जनवादी साहित्य चेतना को मान्यता दी है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. लेखक ने कवि की तुलना प्रजापति से क्यों की है ?

उत्तर - प्रजापति या ब्रह्मा सृष्टिकर्ता के रूप में जाने जाते हैं। इस विश्व की रचना उनके अलौकिक प्रकाश से संभव हुई है। उसी प्रकार कवि भी रचना के माध्यम से एक नये समाज के सृष्टि करता है। प्रजापति जहां जगत का निर्माता है। वहीं कवि अपने साहित्य का निर्माता है। वह इस संसार से असंतुष्ट होकर नवीन समाज की सृष्टि की संकल्पना देता है। उसकी सृष्टि समाज को नई दिशा प्रदान करती है। भविष्य को परिवर्तित करने के लिए अपनी रचना प्रक्रिया को विविध आयामों से आवृत करता है। मानव को निर्माण का उत्साह देता है। इस रूप में वह प्रजापति की भूमिका में होता है। इसी कारण लेखक ने कवि की तुलना प्रजापति से की है।

प्रश्न 2. साहित्य समाज का दर्पण है। इस प्रचलित धारणा के विरोध में लेखक ने क्या तर्क दिए हैं ?

उत्तर - साहित्य समाज का दर्पण है। इस प्रचलित धारणा का लेखक ने खंडन किया है। लेखक मानता है कि यदि साहित्य समाज का दर्पण है तो संसार में परिवर्तन की आवश्यकता कैसे महसूस कर सकता है ? दर्पण वही दिखाता है जैसा वास्तविकता में होता है। इस प्रकार साहित्य केवल समाज का प्रतिबिंब मात्र रह जाता है अथवा उसकी अनुकृति बन जाता है। जबकि रचनाकार का काम केवल समाज की व्यथा को सामने लाना नहीं है बल्कि वह असंतुष्ट होकर नवीन समाज के निर्माण की संकल्पना को सामने रखता है और वर्तमान से आगे भविष्य के स्वरूप का परिचय देता है। साहित्य समाज का दर्पण नहीं बल्कि मार्गदर्शक है।

प्रश्न 3. दुर्लभ गुणों को एक ही पात्र में दिखाने के पीछे कवि का क्या उद्देश्य है ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - दुर्बल गुणों को एक ही पात्र में दिखाने के पीछे कवि का उद्देश्य यह है कि वह समाज में घटित हो रही घटनाओं से प्रेरित होकर तत्कालीन समाज के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत करना चाहता है। जो सभी के लिए अनुकरणीय हो। जिन रेखाओं और रंगों से कवि चित्र बनाता है। उसके चारों ओर यथार्थ जीवन में बिखरे होते हैं। उसमें चमकीले रंग और सुघर रूप ही नहीं बल्कि उस चित्र के पीछे भाग में चित्रित काली छायाएं भी वह अपने वास्तविक जीवन से लेता है। तुलसीदास जी ने एक आदर्श की स्थापना के लिए भगवान राम के चरित्र को चुना। जो गुणवान, शौर्यवान, कृतज्ञ, सत्यवाक्य, चरित्रवान, दयावान, विद्वान, सामर्थ्य और प्रियदर्शन थे। राम के साथ यदि वे रावण का चित्र न खींचते अर्थात् रावण की बुराइयों का वर्णन न करें तो गुणवान, वीर्यवान, कृतज्ञ, सत्यवाक्य आदि गुणों से युक्त राम का चरित्र फीका हो जाए एवं उनके गुणों के प्रकाशित होने का अवसर ही न आए। भगवान राम के रूप में उन्होंने तत्कालीन समाज के सामने जीवन मूल्यों की स्थापना की और जनता को उन्हीं के गुणों पर चलने के लिए प्रेरित किया है। जिससे समाज का हित हो सके। इस प्रकार सभी गुणों को एक ही पात्र में दिखाने के पीछे जनकल्याण की भावना निहित होती है।

प्रश्न 4. साहित्य थके हुए मनुष्य के लिए विश्रांति ही नहीं है वह उसे आगे बढ़ने के लिए उत्साहित भी करता है स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर - साहित्य का उद्देश्य मनुष्य को सांत्वना या सहानुभूति देना एवं उसका मनोरंजन करना मात्र नहीं है बल्कि यह दुखी मानव को उसके दुखों से निकालकर नवनिर्माण की प्रेरणा देता है। रचना में भविष्य की संकल्पना को स्थान देता है। यहां केवल मनुष्य से सुख दुख की बात नहीं होती बल्कि आशा का एक स्वर भी है। साहित्य दुखों से हार न मानकर आगे बढ़ने की प्रेरणा तथा उत्साह प्रदान करता है। वस्तुतः साहित्य जीवन की असंगत लहरों तथा परिस्थितियों से टूटे मनुष्य को शांति ही नहीं देता बल्कि उसे मुट्ठी तान कर हवा में लहराते विरोध एवं विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए आगे चलते जाने को प्रेरित भी करता है।

प्रश्न 5. मानव संबंधों से परे साहित्य नहीं है। इस कथन की समीक्षा कीजिए ?

उत्तर - मनुष्य तथा समाज ही रचनाकार के लिए साहित्य का विषय बनते हैं। समाज का सत्य असत्य मनुष्य के जीवन से प्रभावी रूप से जुड़ा होता है। ईश्वर को आधार बनाकर लिखा गया साहित्य भी किसी ना किसी रूप में समाज से जुड़ा होता है। परी कथाएं तथा पशुओं को पात्र बनाकर रचित कथाएं भी अंततः मनुष्य की जीवन प्रवृत्तियों को ही चित्रित करती हैं। साहित्य में मानव का असंतोष है। नव निर्माण की आकांक्षा

jharkhandlab.com

है। यदि त्रासदी है तो इससे निकलने की तड़प भी है। मानव जीवन की यह सब क्रियाएं ही साहित्य को जीवंत बनाती हैं। तभी लेखक ने कहा कि साहित्य मानव संबंधों से परे नहीं है।

प्रश्न 6. पंद्रहवीं - सोलहवीं सदी में हिंदी साहित्य ने मानव जीवन के विकास में क्या भूमिका निभाई ?

उत्तर - पंद्रहवीं - सोलहवीं शताब्दी में मानव जीवन को हिंदी साहित्य ने अत्यधिक प्रभावित किया। मनुष्य को परिभाषित करते हुए इस समय के रचनाकारों ने मनुष्यत्व को भी परिभाषित किया। सामंती पिंजरे में बंधे मानव जीवन की मुक्ति के लिए उसने वर्ण और धर्म के शिकंजे पर प्रहार किया। उनका ईश्वर मानवीय चेतना में निबद्ध था। मानव जीवन की शोषण और पीड़ा से मुक्ति की कामना करते हुए तत्कालीन रचनाकारों ने वर्ण तथा धर्म की परिधि को नकारा। नानक, मीरा, कबीर, सूर, तुलसी, चंडीदास, तिरुवल्लुवर इत्यादि कवियों ने मानव संबंधों में ऊंच-नीच के भाव को धिक्कार कर नए जीवन की आशा का संचार किया। इन कवियों की वाणी ने पीड़ित जनता के मर्म को स्पर्श कर उसे नए जीवन के लिए बटोरा, आशा दी, संगठित किया और जीवन को बदलने के लिए संघर्ष को आमंत्रित भी किया। जनता के संघर्ष को उत्प्रेरित करने में पंद्रहवीं सोलहवीं सदी के हिंदी साहित्य का योगदान महत्वपूर्ण है।

प्रश्न 7. साहित्य के 'पांचजन्य' से लेखक का क्या तात्पर्य है ? साहित्य का पांचजन्य मनुष्य को क्या प्रेरणा देता है?

उत्तर - पांचजन्य कृष्ण के शंख को कहा जाता है। महाभारत के युद्ध से पूर्व अर्जुन मोह माया से ग्रस्त होकर अपने संबंधियों के साथ युद्ध करना नहीं चाहते थे लेकिन श्रीकृष्ण ने अपनी शंख ध्वनि से उनकी उदासीनता को समाप्त किया। साहित्य ऐसा ही पांचजन्य है। जो मनुष्य की उदासीनता को समाप्त कर उसे जीवन के प्रति संवेदनशील बनाता है। यह मनुष्य को भाग्य के सहारे बैठने के बदले कर्म करने के लिए प्रेरित करता है। वह कायरों और पराभव प्रेमियों को ललकारता है और जीवन संघर्ष के लिए तत्पर होने का संदेश देता है।

प्रश्न 8. साहित्यकार के लिए सृष्टा तथा दृष्टा होना अत्यंत अनिवार्य है क्यों और कैसे ?

उत्तर - साहित्य का अर्थ है - सबके हित के लिए या सब के साथ चलने वाला। साहित्यकार प्रजापति के समान सृष्टि की रचना करता है। यह वर्तमान से असंतुष्ट होकर वांछित विश्व के निर्माण की प्रक्रिया को संचालित करता है। इस प्रकार सृष्टा की भूमिका में होता है। साहित्यकार के पांव वर्तमान की धरती पर टिके होते हैं। यथार्थ को वह जीता है यानी अपने परिवेश का अनुभव करता है किंतु उसकी दृष्टि भविष्य पर लगी रहती है। वह आने वाले युगों की रूपरेखा भी प्रस्तुत करता है। इस प्रकार साहित्यकार 'दृष्टा' होता है। इस कारण साहित्यकार के लिए सृष्टा तथा दृष्टा होना अनिवार्य है।

प्रश्न 9. कवि पुरोहित के रूप में साहित्यकार की भूमिका स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर - कवि पुरोहित के रूप में साहित्यकार की भूमिका अत्यंत विशिष्ट होती है। वह कवि पुरोहित के रूप में समाज कल्याण और लोकमंगल के लिए प्रयत्नशील होता है। वह स्वांत सुखाय के लिए सृजन नहीं करता। बल्कि लोक कल्याण के लिए करता है। जो साहित्यकार इन गुणों को अपना लेता है। वही साहित्य को उन्नत और समृद्ध बना कर हमारे जातीय सम्मान की रक्षा कर सकते हैं। ऐसे साहित्यकार समाज को नई दिशा प्रदान करते हैं। देशभक्ति की भावना प्रबल करते हैं। जनता को निरंतर संघर्ष करते हुए जीवन पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।

प्रश्न 10. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए ?

(क) कवि की यह सृष्टि निराधार नहीं होती हम उनमें अपनी ज्यों की त्यों आकृति भले ही ना देखें पर ऐसी आकृति जरूर देखते हैं जैसी हमें प्रिय है जैसी आकृति हम बनना चाहते हैं।

उत्तर- **प्रसंग-** प्रस्तुत पंक्तियां डॉ रामविलास शर्मा द्वारा रचित 'विराम चिन्ह' निबंध संग्रह में संकलित 'यथास्मै रोचते विश्वम्' शीर्षक निबंध से ली गई हैं। लेखक कवि की दृष्टि को निराधार न मानकर उसे सृष्टि के आदर्श रूप में देखता है जिसका यहां वर्णन किया गया है।

व्याख्या - लेखक कहता है कि कवि अपनी रचना सोद्देश्य करता है। वह अपनी रचना के माध्यम से जो कुछ कहना चाहता है। वह हमारी अंतरात्मा की ध्वनि प्रतीत होती है। लेखक कहता है कवि द्वारा सृष्टि के संबंध में की गई संकल्पना पाठक को या समाज को पूर्णता वैसी ना दिखे जिसकी वे कल्पना करते हैं किंतु समाज की ऐसी संकल्पना या कृति अवश्य दिखेगी जो उन्हें भी प्रिय होगी और जैसा वे समाज को बनाना चाहते भी हैं।

(ख) प्रजापति कभी गंभीर यथार्थवादी होता है ऐसा यथार्थवादी जिसके पांव वर्तमान की धरती पर है और आंखें भविष्य के क्षितिज पर लगी हुई है।

उत्तर- **प्रसंग -** प्रस्तुत पंक्तियां निबंध 'यथास्मै रोचते विश्वम' का अंश है। इस निबंध के रचनाकार डॉ रामविलास शर्मा है। लेखक का ऐसा मानना है कि कवि वर्तमान व भविष्य में सामंजस्य स्थापित करने के लिए तत्पर रहता है।

व्याख्या - लेखक कहता है कि कवि अपने अतीत में घटी घटनाओं पर नजर रखता है। वह उनसे सबक लेकर उसके प्रति सचेत होकर ही वह गंभीर यथार्थवादी होता है। ऐसा यथार्थवादी जो वास्तविकता में तो वर्तमान के धरातल पर खड़ा होता है लेकिन साथ ही उसकी आंखें अर्थात् उसका लक्ष्य भविष्य को सुख व समृद्धि से परिपूर्ण बनाने के लिए कल्पनाशील होकर भविष्य के क्षितिज पर टिकी होती है।

(ग) इसके सामने निरुदेश्य कला, विकृत कामवासनाएं, अहंकार और व्यक्तिवाद, निराशा और पराजय के सिद्धांत वैसे नहीं ठहरते जैसे सूर्य के सामने अंधकार।

उत्तर- **प्रसंग -** प्रस्तुत पंक्तियां निबंध 'यथास्मै रोचते विश्वम' का अंश है। इस निबंध के रचनाकार डॉ रामविलास शर्मा हैं। यहां पर लेखक ने पांचजन्य साहित्य का महत्व प्रतिपादित किया है।

व्याख्या- लेखक कहता है कि साहित्य की परंपरा अत्यधिक प्राचीन है। उसमें जीवन की वास्तविकता समाई हुई है। साहित्य के उद्धत गुणों से महत्वहीन कलाएं, मनुष्य की विकृत इच्छाएं, उसका दंभ, अहम् का भाव, निराशा, पराजय के डर की मानसिकता सभी उसी प्रकार समाप्त या नष्ट हो जाती है जैसे सूर्य के प्रकाश के समक्ष अंधकार।

jharkhandlab.com

परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. कवि को विश्व से असंतोष क्यों है ? वह अपनी संतुष्टि के लिए क्या करता है ?

उत्तर - कवि को विश्व से असंतोष इसलिए है क्योंकि समाज और मानव संबंध अब वैसे नहीं रह गए हैं जैसे सृष्टिकर्ता ने बनाए थे। वह अपनी संतुष्टि के लिए नए समाज की रचना अपने साहित्य और इच्छा के माध्यम से करता है। समाज में फैली विसंगतियों, अवगुणों और दुष्टचरित्रों का भी चित्रण करता है। वह अपनी कल्पना और इच्छा के अनुसार यथार्थ जीवन में से ऐसे पात्र चुनता है जो उसके आदर्शों को साकार रूप दे सके।

प्रश्न 2. 'यथास्मै रोचते विश्वम' निबंध में लेखक ने किस तरह के लोगों को धिक्कारा है ?

उत्तर - 'यथास्मै रोचते विश्वम' निबंध में लेखक ने उन लोगों को धिक्कारा है जो भारत भूमि में जन्म लेकर साहित्यकार होने का झूठा अभिमान करते हैं। वैसे तो ये लोग साहित्य में मानव की मुक्ति के गीत गाते हैं। परंतु व्यवहार में राज भक्ति दिखाकर भारतीय जनता को गुलामी और पतन का पाठ पढ़ाते हैं। उनका साहित्य केवल दर्पण है जिसमें वे समाज की नहीं बल्कि अपने मन की अहंकार पूर्ण विकृतियों को वाणी देते हैं।

प्रश्न 3. 'यथास्मै रोचते विश्वम' निबंध के आधार पर डॉ रामविलास शर्मा की भाषा शैली की विशेषताएं बताएं ?

उत्तर- रामविलास शर्मा जी की भाषा स्पष्ट, विचार में गंभीरता तथा भाषा में सहजता है। संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है। भाषा में प्रतीकात्मकता दिखाई देती है। कहीं-कहीं व्यंग्यात्मक तथा विवेचनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। मुहावरे के प्रयोग द्वारा अर्थ गांभीर्य में वृद्धि हुई है।

अति लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. रामविलास शर्मा जी ने अपने निबंध में कवि की तुलना प्रजापति से करते हुए क्या लिखा है ?

उत्तर - रामविलास शर्मा जी ने अपने निबंध में कवि की तुलना प्रजापति से करते हुए लिखा है- 'यथास्मै रोचते विश्वम् '।

प्रश्न 2. 'निराला की साहित्य साधना' पुस्तक के लिए रामविलास शर्मा को कौन सा पुरस्कार प्राप्त हुआ ?

उत्तर - 'निराला की साहित्य साधना' पुस्तक के लिए रामविलास शर्मा को साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ।

प्रश्न 3. 'भाषा और समाज' किसकी रचना है ?

उत्तर - 'भाषा और समाज' रामविलास शर्मा की रचना है।

प्रश्न 4. यूनानी विद्वान कला को जीवन की क्या मानते थे ?

उत्तर - यूनानी विद्वान कला को जीवन की नकल मानते थे।

प्रश्न 5. कौन थके हुए व्यक्ति के लिए विश्रांति ही नहीं है उसे आगे बढ़ने के लिए जागृत भी करता है ?

उत्तर - साहित्य थके हुए व्यक्ति के लिए विश्रांति ही नहीं है उसे आगे बढ़ने के लिए जागृत भी करता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'यथास्मै रोचते विश्वम्' के लेखक कौन है ?

1. रामविलास शर्मा 2. निर्मल वर्मा
3. भीष्म साहनी 4. रामचंद्र शुक्ल

2. 'यथास्मै रोचते विश्वम्' का अर्थ है ?

1. विश्व सुंदर है।
2. जैसा संसार है।
3. उपर्युक्त दोनों।
4. कवि को जैसे रुचता है वैसे ही संसार बदल देता है।

3. रामविलास शर्मा की प्रयोगवादी कविताओं को उनके द्वारा संपादित किस सप्तक में स्थान मिला ?

1. दूसरा सप्तक 2. तीसरा सप्तक
3. तार सप्तक 4. इनमें से कोई नहीं

4. 'यथास्मै रोचते विश्वम्' कहां से संकलित है ?

1. विराम चिन्ह 2. भाषा और समाज
3 इतिहास दर्शन 4. भारतीय संस्कृति

5. 'यथास्मै रोचते विश्वम्' कौन सी विधा है ?

1. कहानी 2. निबंध
3. कविता 4. नाटक

6. 'निराला की साहित्य साधना' कितने खंडों में है ?

1. 1 2. 2
3. 3 4. 4

7. किनके बारे में कहा जाता है कि वे कला को जीवन की नकल समझते थे ?

1. यूनानी विद्वान 2. चीनी विद्वान
3. राजस्थानी विद्वान 4. कोई नहीं

8. अपने चरित्र नायक के गुण गिना कर किसने नारद से पूछा ऐसा मनुष्य कौन है ?

1. श्रीकृष्ण 2. राम
3. विश्वामित्र 4. वाल्मीकि

9. श्रीकृष्ण के शंख का क्या नाम है ?

1. पांचजन्य 2. दोजन्य
3. तीनजन्य 4. इनमें कोई नहीं

10. हैमलेट किसकी रचना है ?

1. विलियम सैम 2. जेम्स
3. शेक्सपियर 4.' इनमें से कोई नहीं

Jharkhandlab.com

11. कवि की तुलना किससे की गई है ?

1. राजा
2. प्रजापति
3. रंक
4. कोई नहीं

12. समाज के दृष्टा और नियामक के मानव विहग क्षुब्ध और रूद्ध स्वर को वाणी कौन देता है ?

1. समाज
2. विदुषी
3. कवि
4. ऋषि

13. 'यदि साहित्य समाज का दर्पण होता तो संसार को बदलने की बात न होती'। ये पंक्तियां किस पाठ की है ?

1 'यथास्मै रोचते विश्वम्'
2. कुटज
3. जहां कोई वापसी नहीं
4. इनमें कोई नहीं

14. किसका पांचजन्य समर भूमि में उदासीनता का राग नहीं सुनाता ?

1. कवि
2. साहित्य
3. राजा
4. इनमें कोई नहीं

15. 'मानव संबंधों की दीवाल से ही हेलमेट की कवि सुलभ सहानुभूति टकराती है और शेक्सपियर एक महान ट्रेजडी की सृष्टि करता है'। ये पंक्तियां किस पाठ की है ?

1. कुटज
2. भाषा और समाज
3. 'यथास्मै रोचते विश्वम्'
4. इनमें कोई नहीं

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1 - 1, 2 - 4, 3 - 3, 4 - 1, 5 - 2, 6 - 3,
7 - 1, 8 - 4, 9 - 1, 10 - 3, 11 - 2, 12 - 3,
13 - 1, 14 - 2, 15 - 3

Jharkhandlab.com

पाठ–9

दूसरा देवदास

ममता कालिया (जन्म सन् 1940)

लेखक परिचय

ममता कालिया का जन्म उत्तर प्रदेश के मथुरा में हुआ। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी विषय में एम.ए. किया। वे दिल्ली विश्वविद्यालय के दौलत राम कॉलेज में अंग्रेजी की प्राध्यापक रहीं तथा उन्होंने अपने जीवन में कई कॉलेजों में अध्यापन कार्य किया।1973 से 2001 ईस्वी तक वे महिला सेवा सदन डिग्री कॉलेज इलाहाबाद में प्रिंसिपल रहीं। 2003 से 2006 तक व भारतीय भाषा परिषद कोलकाता की निर्देशिका भी रहीं। इस समय दिल्ली में रहकर स्वतंत्र लेखन कार्य कर रही हैं।

रचना-परिचय-प्रेम कहानियां, लड़कियां दौड़ रही हैं, नरक दर नरक, एक पत्नी के नोट्स, इत्यादि उनके सुप्रसिद्ध उपन्यास हैं। उनके 12 कहानी संग्रह हैं।

पुरस्कार- उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा उन्हें साहित्य भूषण 2004 तथा कहानी सम्मान 1989 में प्रदान किया गया। अभिनव भारती कोलकाता की संस्था के द्वारा उनके समग्र साहित्य पर रचना पुरस्कार सरस्वती प्रेस और साप्ताहिक हिंदुस्तान के द्वारा उन्हें श्रेष्ठ कहानी नाम से पुरस्कार प्रदान किए गए।

पाठ-परिचय

दूसरा देवदास कहानी की लेखिका का नाम ममता कालिया है। इसका नायक संभव और नायिका पारो है। दोनों के हृदय में बिल्कुल संभावित परिस्थिति में प्रेम का अंकुरण होता है। यह प्रेम सुखद होता है या दुखद इसका कोई संकेत तो कहानी के अंत में नहीं मिलता परंतु दीपक के प्रकाश के समान दोनों के हृदय में प्रेम की दीप्ति आलोकित हो उठती है।

संभव एम. ए. करने के बाद ननिहाल हरिद्वार आया हुआ था नानी के दबाव पर वह सांध्य बेला की गंगा आरती देखने हर की पौड़ी पहुँचता है। टीका लगवाने के बाद कलावा बंधवाने के लिए जिस पंडे के पास पहुंचता है वहां पहले से ही गुलाबी साड़ी में एक आकर्षक युवती खड़ी थी। वह युवती आरती के बाद आई थी। इसलिए उसने पंडित से कहा कि हम कल आरती की बेला में आएंगे। पंडे ने 'हम' शब्द को युगल अर्थ में लिया और आशीर्वाद दिया- 'सुखी रहो फूलों फलो जब भी आओ साथ ही आना गंगा मैया मनोरथ पूरी करें' पंडित के आशीर्वाद से दोनों अकचका गए। दोनों अलग हट गए। दोनों की आंखें फिर टकराई उनकी आंखों का पहला चकाचौंध अभी मिटा नहीं था। पुजारी की गलतफहमी से दोनों ही झेंप गए। दोनों ही एक दूसरे को सफाई देना चाहते थे। उन्हें स्पष्टीकरण का मौका नहीं मिला। लड़की जा चुकी थी। संभव को रात भर नींद नहीं आई। प्रेम का अंकुरण दोनों के हृदय में हो चुका था। दिन की स्मृति दोनों के मानस में हलचल मचा रही थी। दूसरे दिन वैशाखी की शाम थी लेकिन संभव आकर्षण की डोर में बंधा हुआ गंगा तट पर आ पहुंचा। उसकी निगाहें लड़की को ढूंढ रही थी कि अचानक एक बालक के साथ केबिल कार में वह बैठी नजर आ गई। वह उससे मिलने के लिए बेचैन हो जाता है तथा दोनों का एक दूसरे से परिचय होता है।

इस कहानी में युवा मन की हलचलों, संवेदना एवं भावना का चित्रण आकर्षक भाषा शैली में किया गया है। इस कहानी में घटनाओं का संगठन एवं संयोजन इस प्रकार किया गया है कि अनजाने में प्रेम का प्रथम अंकुरण संभव एवं पारो के हृदय में बड़ी विचित्र परिस्थितियों में उत्पन्न होता है। इस कहानी से यह बात प्रमाणित होती है कि प्रेम के लिए व्यक्ति, समय और स्थिति का होना आवश्यक नहीं है। प्रेम कहीं भी किसी भी समय और स्थिति में उत्पन्न हो सकता है। कथ्य, विषय वस्तु, भाषा और शिल्प की दृष्टि से कहानी बेजोड़ है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

1 दूसरा देवदास पाठ के आधार पर हर की पौड़ी पर होने वाली गंगा जी की आरती का भावपूर्ण वर्णन अपने शब्दों में करें।

उत्तर- हर की पौड़ी पर संध्या के समय जो गंगा जी की आरती होती है, उसका एक अलग ही रंग होता है। संध्या के समय गंगा घाट पर भारी भीड़ एकत्र हो जाती है। भक्त फूलों के एक रुपये वाले दोने भी दो रुपये में खरीद कर खुश होते हैं। गंगा सभा के स्वयंसेवक खाकी वर्दी में मुस्तैदी से व्यवस्था देखते घूमते रहते हैं। भक्तगण सीढियों पर शांत भाव से बैठते हैं। आरती शुरू होने का समय होते ही चारों ओर हलचल मच जाती है। लोग अपने मनोरथ सिद्धि के लिए स्पेशल आरती करवाते हैं। पांच मंजिली पीतल की नीलांजलि (आरती का पात्र) में हजारों बत्तियां जल उठती हैं। औरतें गंगा में डुबकी लगाकर गीले वस्त्रों में ही आरती में शामिल होती हैं। स्त्री पुरुष के माथे पर पंडे, पुजारी तिलक लगाते हैं। पंडित हाथ में अंगोछा लपेटकर नीलांजलि को पकड़कर आरती उतारते हैं।सभी भक्ति भाव में डूब जाते हैं और गंगा घाट का यह दृश्य अत्यंत मनोहर दिखाई पड़ता है।

2 गंगा पुत्र के लिए गंगा मैया ही जीविका और जीवन है इस कथन के आधार पर गंगा पुत्रों के जीवन परिवेश की चर्चा कीजिए

उत्तर- गंगा पुत्र वे कहलाते हैं जो गंगा मैया को अर्पण किए गए पैसों को गंगा जी की धाराओं के बीच से लेकर आते हैं। लोग आस्था में भरकर गंगा नदी पर पैसे चढ़ाते हैं। गंगापुत्र उन पैसों को गंगा जी के बहते जल से बाहर निकालते हैं। यह कार्य बहुत जोखिम भरा होता है। गंगा का जल प्रवाह कब इंसान को निगल जाए, कहा नहीं जा सकता है। इस काम में जितना जोखिम होता है, उतनी कमाई नहीं होती है। लेकिन उनके पास कोई चारा नहीं है। उन्हें विवश होकर यह कार्य करना पड़ता है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि उनका जीवन परिवेश बहुत अधिक अच्छा नहीं होगा। दो वक्त की रोटी मिल जाए, यही उनके लिए काफी होगा।

3 पुजारी ने लड़की के 'हम' को युगल अर्थ में लेकर क्या आशीर्वाद दिया और पुजारी द्वारा आशीर्वाद देने के बाद लड़के और लड़की के व्यवहार में अटपटा पन क्यों आया?

उत्तर- पुजारी ने अज्ञानता वश लड़की के 'हम' शब्द से यह अर्थ लिया कि दोनों रिश्ते में पति-पत्नी हैं। अतः पुजारी ने उन्हें सुखी रहने, फलने-फूलने तथा हमेशा साथ आने का

आशीर्वाद दे दिया। इसका अर्थ था कि उनकी जोड़ी सदा सुखी रहे और आगे चलकर वे अपने परिवार तथा बच्चों के साथ आए, लेकिन यह सुनकर दोनों असहज हो गए। लड़की को अपनी गलती का एहसास हुआ क्योंकि इसमें उसके 'हम' शब्द ने कार्य किया था। वह थोड़ा घबरा गई। दूसरी तरफ लड़का भी परेशान हो गया। उसे लगा कि लड़की कहीं उसे ही इस बात के लिए जिम्मेदार ना मान ले। अब दोनों एक-दूसरे से नजरें मिलाने से डर रहे थे और दोनों जल्द से जल्द वहां से चले जाना चाहते थे।

4. उस छोटी-सी मुलाकात ने संभव के मन में क्या हलचल उत्पन्न कर दी ? इसका सूक्ष्म विवेचन कीजिए।

उत्तर- संभव एक नौजवान था। इससे पहले किसी लड़की ने उसके दिल में दस्तक नहीं दी थी। अचानक पारो से मुलाकात होने पर उसे किसी लड़की के प्रति प्रेम की भावना महसूस हुई। पारो को जब उसने भीगी हुई गुलाबी साड़ी में देखा तो, उसके सौंदर्य को एकटक निहारते रह गया। उसका सौंदर्य अनुपम था। उसने उसके कोमल मन में हलचल मचा दी। वह उसे खोजने के लिए हरिद्वार की गली-गली में भटका। घर पहुंच कर उसका किसी चीज में मन नहीं लगा। विचारों और ख्वाबों में बस उसे पारो की ही आकृति नजर आने लगी और उससे मिलने के मंसूबे बनाने लगा। उसका दिल उसे पाना चाहता था। पारो उस क्षण में ही उसके जीवन का आधार बन गई थी, जिसे पाने के लिए कुछ भी करने को तैयार था।

5. मनसा देवी जाने के लिए केबल कार में बैठे हुए संभव के मन में जो कल्पनाएं उठ रही थी, उसका वर्णन कीजिए।

उत्तर- मनसा देवी जाने के लिए केबल कार में बैठे हुए संभव के मन में अनेक कल्पनाएं जन्म ले रही थी। वह घाट में मिली लड़की से मिलना चाहता था। उस लड़की की छवि उसके मस्तिष्क में बस गई थी। वह उस लड़की को पाने के लिए बेचैन हो गया था। वह उसी केबिल कार में जाकर बैठा, जिसका रंग गुलाबी था क्योंकि उस लड़की ने गुलाबी साड़ी पहनी थी। वह मनसा देवी भी इसी उम्मीद से जा रहा था कि शायद वह उस लड़की की एक झलक पा जाए।

6. "पारो बुआ, पारो बुआ इनका नाम है.... उसे भी मनोकामना का पीला-लाल धागा और उसमें पड़ी गिठान का मधुर स्मरण हो आया।" कथन के आधार पर कहानी के संकेतपूर्ण आशय पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर- संभव ने बालक के पुकारने पर जाना कि उस अज्ञात युवती का नाम 'पारो है। उन दोनों के हाथों में पुजारी ने कलावा का लाल-पीला धागा बाँधा था और उसमें गाँठें (गिठान) लगायी थी। इन गाँठों की मधुर स्मृति भी संभव के मन में पुलक जगा रही थी। संभव सोच रहा था कि पुजारी ने अनजाने में उन दोनों के बीच जन्म-जन्मांतर का बंधन जोड़ दिया है। शायद उससे मिलन की आकांक्षा पुरी हो- इस कथन का भावपूर्ण संकेतार्थ यही है।

7. 'मनोकामना की गांठ भी अद्‌भुत अनूठी है इधर बांधों उधर लग जाती है' कथन के आधार पर पारो की मनोदशा का वर्णन कीजिए।

उत्तर- संभव की दशा तो पारो को पहली बार देख कर पता चल जाती है। लेकिन पारो के मन की दशा का वर्णन उसके द्वारा मन में दोहराई गई इस पंक्ति से होता है। इससे पता चलता है कि संभव पारो के दिल में पहली ही मुलाकात में जगह पा गया था। वह भी संभव को उतना ही मिलने को बेचैनी थी, जितना संभव यहां तक कि संभव से मिलने के लिए उसने संभव की भांति ही मनसा देवी में मन्नत की चुनरी बांधी। संभव को देखकर उसकी मन्नत पूरी हो गई, इससे पता चलता है कि उसकी मनोदशा भी संभव की भांति पागल प्रेमी जैसी थी, जो अपने प्रियतम को ढूंढने के लिए यहां वहां मारा मारा फिर रहा था।

8. निम्नलिखित वाक्यों का आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) 'तुझे तो तैरना भी ना आवे, कहीं पैर फिसल जाता तो मैं तेरी मां को कौन मुंह दिखाती।'

उत्तर संभव के देर से आने पर चिंता ग्रस्त नानी उसे कहती है - तू तैरना नहीं जानता है। यदि स्नान करते हुए फिसल गया तो सीधे गंगा नदी में गिर जाएगा। फिर तेरा बचना भी संभव नहीं होगा। यदि ऐसी वैसी कोई अनहोनी हो जाती तो मैं तेरी मां को क्या जवाब देती। मां तो यही कहती कि मैंने नानी के पास मिलने के लिए बेटे को भेजा था और मुझे मेरा बेटा वापस नहीं मिला।

(ख) उसके चेहरे पर इतना विभोर विनीत भाव था मानो उसने अपना सारा अहम त्याग दिया है उसके अंदर स्व से जनित कोई कुंठा शेष नहीं है वह शुद्‌ध रूप से चेतन स्वरूप आत्माराम और निर्मलानंद है

उत्तर संभव नदी की धारा के मध्य एक व्यक्ति को देखता है, जो मां गंगा में सूर्य को जल अर्पण कर रहा है। उसके चेहरे के भावों को देखकर संभव उसकी ओर आकर्षित हो जाता है। वह गंगा मैया के मध्य खड़े होकर प्रार्थना कर रहा है। उसके चेहरे पर प्रसन्नता और विनती का बहुत सुंदर भाव है। उसके चेहरे पर यह भाव है मानो उसने अपने अंदर व्याप्त अहंकार को समाप्त कर दिया है। प्रायः मनुष्य अहंकार के कारण परेशान और दुखी होता है, जब मनुष्य अहंकार के भाव को त्याग देता है। उसे फिर किसी बात का दुख, परेशानी तथा कुंठा नहीं रहती है। ऐसा व्यक्ति शुद्‌ध हो जाता है। उसे आत्मज्ञान हो जाता है वह निर्मल आनंद तथा परम शांति को प्राप्त कर जाता है।

(ग) एकदम अंदर के प्रकोष्ठ में चामुंडा रूप धारिणी मंसादेवी स्थापित थी। व्यापार यहाँ भी था।

उत्तर लेखिका ने मंदिर के दृश्य का चित्रण किया है। वहाँ भीतर के कक्ष में माँ चामुंडा के रूप में मंसा देवी का मूर्ति विराजमान थी तथा साथ ही पूजा सामग्री की सजी हुई दुकानें भी थीं। कहीं रूद्राक्ष, कहीं खाने का सामान मिल रहा था अर्थात् व्यापारिक गतिविधियाँ चहूँ ओर दिखाई पड़ रही थी।

9. दूसरा देवदास कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए

उत्तर इस कहानी का नाम 'दूसरा देवदास' बिल्कुल उचित है। यह शीर्षक कहानी की सार्थकता को स्पष्ट करता है। जिस प्रकार शरतचंद्र का देवदास अपनी पारो के लिए सारा जीवन मारा मारा फिरता रहा। वैसे ही संभव रूपी देवदास अपनी पारो के लिए मारा मारा फिरता है। पारो की एक झलक उसे दीवाना बना देती है। वह उसे ढूंढने के लिए

jharkhandbse.com

बाजार, घाट, यहां तक की मनसा देवी के मंदिर तक हो आता है। उससे एक मुलाकात हो जाए, इसके लिए वह मन्नत तक मांगता है। जब वह मिलती है तो, लड़की का नाम पारो सुनकर जैसे उसकी खोज सार्थक हो जाती है। इसलिए वह अपने नाम के बाद देवदास लगाकर इसका संकेत भी दे देता है। दोनों के मध्य छोटी-सी मुलाकात प्रेम के बीज अंकुरित कर देती है यह मुलाकात उनके अंदर प्रेम के प्रति ललक तथा रूमानियत को दर्शा देती है। देवदास वह नाम है जो प्यार में पागल प्रेमी के लिए प्रयुक्त किया जाता है। दूसरा देवदास शीर्षक संभव की स्थिति को भली प्रकार से स्पष्ट कर देता है। यही कारण है कि यह शीर्षक कहानी को सार्थकता देता है।

10. हे ईश्वर ! उसने कब सोचा था की मनोकामना का मौन उद्‌गार इतना शीघ्र शुभ परिणाम दिखाएगा आशय स्पष्ट कीजिए-

उत्तर- पारो को अपने सामने देखकर उसके मन में यह वाक्य उत्पन्न हुआ। जिस लड़की को पाने के लिए उसने कुछ देर पहले ही मनसा देवी में धागा बांधा था, वह देवी के मंदिर के बाहर ही मिल गयी। वह पारो को देखकर प्रसन्न हो उठा आज उसकी मनोकामना इतनी जल्दी पूरी हो गई, यह सोचकर वह बहुत खुश था।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. दूसरा देवदास कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- दूसरा देवदास कहानी में लेखिका ममता कालिया ने हर की पौड़ी, हरिद्वार की पृष्ठभूमि में युवा मन की भावुकता, संवेदना तथा वैचारिक चेतना को अभिव्यक्त किया है। इस कहानी का नायक संभव दिल्ली का रहने वाला एम.ए. पास युवक है। माता- पिता ने उसे नानी के घर हरिद्वार इस उद्देश्य से भेजा है कि वहां जाकर गंगा मैया के दर्शन कर ले, जिससे वह अपने प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर ले। इसी उद्देश्य से वह हर की पौड़ी पर स्नान करता है तथा तिलक लगाते समय उसकी भेंट पारो नामक युवती से होती है। पुजारी भ्रमवश दोनों को पति- पत्नी समझकर, उसे फलने-फूलने तथा मनोकामनाएं पूर्ण होने के ढेरों आशीर्वाद दे देता है। लड़की यह सुनकर छिटक कर उससे दूर खड़ी हो जाती है। वह भी झेंप जाता है। दूसरे दिन उस लड़की से मिलने के लिए वह पुनः घाट पर जाता है, क्योंकि दोनों के हृदय में प्रेम का प्रस्फुटन हो चुका है। घाट पर उसकी भेंट युवती के भतीजे मनु से होती है। लौटते समय उसकी भेंट पारो से भी होती है तथा दोनों एक दूसरे का मधुर परिचय प्राप्त करते हैं। जब उसे युवती का नाम पता चलता है, तब वह स्वयं को देवदास कहता है। संभव देवदास। प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने सच्चे सरल और सहज प्रेम का चित्रण किया है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. लेखिका ने गंगा पुत्र किसे कहा है और क्यों ?

उत्तर- भक्तों द्वारा दोनों में डालकर गंगा को अर्पित किए गए पैसों को तैराक डूबकर बटोर लेते हैं। गंगा ही इनकी जीविका का साधन है। इसी क्षेत्र में पलने बढ़ने के कारण वे कुशल गोताखोर हो गए हैं। गंगा के आश्रय में रहने के कारण इन्हें गंगा पुत्र कहा गया है।

2. रुद्राक्ष की मालाओं वाली गुमटी पर क्या लिखा हुआ था?

उत्तर- रुद्राक्ष की मालाओं की अनेक गुमटियां थी जहां दस रुपये से लेकर तीन हज़ार तक की मालाओं पर लिखा था 'असली रुद्राक्ष नकली साबित करने वाले को पांच सौ रुपये इनाम।'

3. स्पेशल आरती से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर - लेखिका यह बताना चाहती है कि हमारे धर्म स्थलों पर भी अब व्यापार होने लगा है। पंडित पुरोहित भक्तों की जरूरतों और विवशताओं का पूरा फायदा उठाते हैं। साधारण और सामान्य आरती प्रत्येक शाम को गंगा घाट पर होती है, जिसमें सामान्य जन भाग लेते हैं। वहीं दूसरी ओर जो धनवान भक्त होते हैं, वह अपनी मनोकामना पूर्ण होने पर एक सौ एक या एक सौ इक्यावन रुपये वाली आरती करवाते हैं।

4. नीलांजलि क्या है ?

उत्तर - नीलांजलि पांच मंजिला पीतल का यंत्र है जो आरती के काम आता है। इसमें हजारों बत्तियां घी में भिगोकर रखी रहती हैं। सायंकाल जब इन्हें जलाया जाता है, तो अनेक बत्तियों के जल उठने से भव्य दृश्य उपस्थित हो जाता है। पंडित जी जब आरती करते हैं, तब अपने हाथों में गीला अंगोछा लपेटे रहते हैं ताकि अपने हाथ को अग्नि के ताप से बचाया जा सके। नीलांजलि कई स्तरों वाली बड़ी आरती को कहते हैं।

5. 'नानी उवाच के बीच सपने नौ दो ग्यारह हो गए' वाक्य पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर - संभव को हर की पौड़ी पर स्नान के बाद एक लड़की मिली थी जो पुजारी के सामने संभव के काफी नजदीक खड़ी थी। दोनों को अत्यंत निकट खड़े देखकर पुजारी ने उन्हें पति पत्नी समझा और उसके दांपत्य जीवन के फलने फूलने से संबंधित ढेरों आशीर्वाद दिए। उनकी बातों से दोनों अचकचा गए। दोनों की नजरें मिली और प्रथम प्रेम का प्रस्फुटन उनके हृदय में हुआ। घर आकर संभव लेट गया उसे नींद नहीं आ रही थी। वह उसी लड़की के विषय में सोचने लगा। उसकी मधुर कल्पनाओं में खो गया। वह सोचता है कि कल वह उस लड़की से उसका नाम पूछेगा। उसका परिचय प्राप्त करेगा और उसे अपने विषय में बताएगा। वह शायद बी.ए. में पढ़ रही होगी या एम.ए. में। तभी नानी गंगा स्नान करके लौट आई। नानी ने कहा तू अभी सपने ही देख रहा है, वहां लाखों लोग गंगा में स्नान भी कर चुके हैं। नानी के इस कथन से संभव की विचारधारा टूट गई तथा उसकी कल्पनाएं समाप्त हो गयी।

अति लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. हर की पौड़ी के पूरे वातावरण में किस की दिव्य सुगंध फैल रही थी ?

उत्तर. हर की पौड़ी के पूरे वातावरण में अगरबत्ती और चंदन की सुगंध फैल रही थी।

2. आरती के बाद किसकी बारी आती थी ?

उत्तर. आरती के बाद संकल्प और मंत्रोच्चार की बारी आती थी।

Jharkhandlab.com

3. स्पेशल आरती कौन सी थी ?

उत्तर एक सौ एक या एक सौ इक्यावन वाली स्पेशल आरती होती थी।

4. ब्यालू का क्या अर्थ होता हैं ?

उत्तर ब्यालू का अर्थ रात्रि का भोजन होता है।

5. संक्षिप्त में लड़की का चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर दुबली पतली तथा भीगी-भीगी, श्याम सलोनी आंखों वाली लड़की का नाम पारो था। जो गुलाबी साड़ी में बहुत आकर्षक लग रही थी।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. दूसरा देवदास किसकी रचना है?

(1) हजारी प्रसाद द्विवेदी (2) ममता कालिया
(3) प्रेमचंद (4) जयशंकर प्रसाद

2. दूसरा देवदास किस विधा में लिखा गया है?

(1) नाटक (2) कहानी
(3) उपन्यास (4) संस्मरण

3. पाठ के नायक का क्या नाम है?

(1) पारो (2) रमेश
(3) देवदास (4) संभव

4. ममता कालिया का जन्म कब हुआ था?

(1) 1940 (2) 19 30
(3) 1936 (4) 1941

5. ममता कालिया का जन्म स्थान कहां है?

(1) काशी (2) मथुरा
(3) दिल्ली (4) आगरा

6. कहानी की मुख्य घटना किस घाट पर घटित हुई है?

(1) हर की पौड़ी (2) दशाश्वमेध घाट
(3) सूर्य पूर्व घाट (4) ऋषिकेश घाट

7. मनोकामना की गांठ कहां बांधी गई थी?

(1) मनसा देवी के मंदिर में (2) काली मंदिर में
(3) चामुंडा देवी के मंदिर में (4) भैरव मंदिर में

8. गंगा पुत्र किसे कहा गया है?

(1) गोताखोर को (2) गंगा के सफाई कर्मी को
(3) नगर निगम को (4) मंदिर के पुजारी को

9. गोधूलि बेला का क्या अर्थ है?

(1) सुबह का समय (2) शाम का समय
(3) दोपहर का समय (4) स्नान का समय

10. नीलांजलि का क्या अर्थ है?

(1) हवन (2) पूजा
(3) आरती (4) सूर्य

11. युगल का अर्थ है?

(1) आशीर्वाद (2) लड़का
(3) युवक (4) जोड़ा

12. मन्नू कौन है?

(1) संभव का बेटा (2) पारो का बेटा
(3) संभव का भाई (4) पारो का भतीजा

13. मनोकामना हेतु लाल पीले धागे कितने रुपए में बिक रहे थे?

(1) सवा रुपए में (2) ₹1 में
(3) ₹2 में (4) एक अठन्नी में

14. लाउडस्पीकर में किसका स्वर गूंजा करता था?

(1) लता मंगेशकर का (2) आशा भोंसले का
(3) नेहा कक्कड़ का (4) सोनू निगम का

15. पारो के साथ कौन था?

(1) भाई (2) पिता
(3) बेटा (4) भतीजा

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1.	(2)	2.	(2)
3.	(3)	4.	(1)
5.	(2)	6.	(1)
7.	(1)	8.	(1)
9.	(2)	10.	(3)
11.	(4)	12	(4)
13	(1)	14	(1)
15.	(4)		

jharkhandlab.com

पाठ – 10 कुटज

हजारी प्रसाद द्विवेदी (सन्1907-1979)

लेखक परिचय

आधुनिक हिंदी साहित्य के उत्कृष्ट आलोचक तथा निबंधकार डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के गांव आरत दुबे का छपरा में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गांव में हुई तथा उन्होंने उच्च शिक्षा काशी हिंदू विश्वविद्यालय से प्राप्त की।

शांतिनिकेतन में अध्यापन कार्य के दौरान द्विवेदी जी ने साहित्य का गहन अध्ययन किया, साथ ही अनेक रचनाएं भी कीं। वे हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत तथा बांग्ला भाषाओं के विद्वान थे। सन् 1950 में वे काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के अध्यक्ष बने। 1952- 53 में वे काशी नागरी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष थे। 1955 में वे प्रथम राजभाषा आयोग के सदस्य राष्ट्रपति के नामिनी नियुक्त किए गए। 1967 में काशी हिंदू विश्वविद्यालय में रेक्टर नियुक्त हुए। यहां से अवकाश ग्रहण करने पर वे भारत सरकार की हिंदी विषयक अनेक योजनाओं से संबद्ध रहे।

आलोक पर्व पुस्तक पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया। भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण अलंकरण से विभूषित किया।

द्विवेदी जी का अध्ययन क्षेत्र बहुत व्यापक था। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, बांग्ला आदि भाषाओं एवं इतिहास, दर्शन, संस्कृति, धर्म आदि विषयों में उनकी विशेष गति थी। इसी कारण उनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति की गहरी पैठ और विषय वैविध्य के दर्शन होते हैं। वे परंपरा के साथ आधुनिक प्रगतिशील मूल्यों के समन्वय में विश्वास करते थे। द्विवेदी जी की भाषा सरल और प्रांजल है। भाषा- शैली की दृष्टि से उन्होंने हिंदी की गद्य शैली को एक नया रूप दिया।

उनकी महत्वपूर्ण रचनाएं हैं- 'अशोक के फूल', 'विचार और वितर्क', 'कल्पलता', 'कुटज', 'आलोक पर्व' (निबंध संकलन), 'चारुचंद्रलेख', 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'पुनर्नवा', 'अनामदास का पोथा', (उपन्यास) 'सूर- साहित्य', 'कबीर', 'हिंदी साहित्य की भूमिका', 'कालिदास की लालित्य-योजना' (आलोचनात्मक ग्रंथ) उनकी सभी रचनाएं हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली के ग्यारह खंडों में संकलित है।

पाठ परिचय

कुटज हिमालय पर्वत की ऊंचाई पर सूखी शिलाओं के बीच उगने वाला एक जंगली पौधा है, जिसमें फूल लगते हैं। इसी फूल की प्रकृति पर निबंध 'कुटज' लिखा गया है। कुटज में न विशेष सौंदर्य है, न सुगंध, फिर भी लेखक ने उसमें मानव के लिए एक संदेश पाया है। 'कुटज' में अपराजेय जीवनशक्ति है, स्वावलंबन है, आत्मविश्वास है और विषम परिस्थितियों में भी शान के साथ जीने की क्षमता है। वह समान भाव से सभी परिस्थितियों को स्वीकारता है। सामान्य से सामान्य वस्तु में भी विशेष गुण हो सकते हैं यह जताना इस निबंध का अभीष्ट है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. कुटज को 'गाढ़े के साथी' क्यों कहा गया है?

उत्तर- हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने अपने लेख 'कुटज' में कुटज को 'गाढ़े के साथ' कहा है। इसका कारण यह है कि हिमालय पर जहां कुटज वृक्ष पैदा होता है, वहां अन्य कोई वृक्ष पैदा नहीं होता है। जब कभी इस क्षेत्र में पूजा अर्चना की आवश्यकता पड़ती है, तो भक्त मात्र कुटज के फूल पर ही आश्रित होते हैं। लेखक ने अनेक रचनाओं के पात्रों को अपने-अपने ईष्ट के प्रति कुटज के फूलों को अर्घ्य-स्वरूप चढ़ाने की बात कही है। यदि उस क्षेत्र में कुटज का फूल सुलभता से ना मिलता तो भक्तों को अपने प्रिय के प्रति अर्घ्य देने से वंचित होना पड़ता। इसलिए लेखक ने कुटज को 'गाढ़े का साथी' कहकर उसे सम्मान दिया है।

प्रश्न 2. 'नाम' क्यों बड़ा है? लेखक के विचार अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- लेखक ने 'नाम' को बड़ा माना है। उसके अनुसार नाम से ही किसी व्यक्ति, वस्तु, पदार्थ आदि का ज्ञान होता है। जब तक नाम पता न हो तो रूप की पहचान करना असंभव है। कहने को तो किसी भी व्यक्ति, वस्तु, पदार्थ को सौ नाम दिए जा सकते हैं। परंतु, नाम इसलिए बड़ा है कि उसे सामाजिक स्वीकृति मिली हुई होती है। रूप तो व्यक्ति सत्य है, जबकि नाम समाज सत्य है। लेखक के अनुसार नाम वह पद है, जिस पर समाज की मुहर लगी होती है इसीलिए लेखक नाम को बड़ा मानता है।

प्रश्न 3. कुट, कुटज और कुटनी शब्दों का विश्लेषण कर उसमें आपसी संबंध स्थापित कीजिए।

उत्तर- लेखक ने कुटज के विषय में बताते हुए कुट,कुटज और कुटनी शब्दों का प्रयोग करते हुए उनका अर्थ भी प्रस्तुत किया है। 'कुट' का अर्थ है- घड़ा और जो कुट अर्थात घड़ा से पैदा हुआ हो उसे कुटज कहते हैं। मुनि अगस्त्य को कुटज कहते थे। कुटनी शब्द का अर्थ दासी होता है। लेखक ने इन शब्दों के बीच संबंध दर्शाते हुए कहा है कि कुटीर का अर्थ घर होता है और कुटीर में रहने के कारण दासी को कुटनी कहा गया है। अतः कुट,कुटनी और कुटज एक ही मूल शब्द से उत्पन्न हुए हैं।

प्रश्न 4. कुटज किस प्रकार अपनी अपराजेय जीवन शक्ति की घोषणा करता है?

उत्तरः **कुटज** अपने 'रूप' और 'नाम' दोनों के कारण अपराजेय जीवन-शक्ति की घोषणा करता है। वह आकर्षक है।

jharkhandlab.com

हिमालय पर यमराज के दारुण निश्वास के समान धधकते पहाड़ों में हरा- भरा तथा पुष्पित कुटज अपनी मस्ती तथा मादक शोभा में जीता है। भाग्य से भी अधिक कठोर चट्टानों पर अज्ञात जल स्रोत से जीवन ग्रहण कर कुटज अपनी जीवनी-शक्ति को दिशा देता है। उसकी अपराजेय जीवन-शक्ति ही वातावरण को अपूर्व उल्लास से भर देती है। 'कुटज' जीवन को कठिन परिस्थितियों में भी जीने की प्रेरणा से संचालित करने का उपदेश देता है। विरोधी और विपरीत परिस्थितियों का डटकर सामना करना सिखाता है। इस प्रकार कुटज अपनी अपराजेय जीवनी-शक्ति की घोषणा करता है।

प्रश्न 5. 'कुटज' हम सभी को क्या उपदेश देता है? टिप्पणी कीजिए।

उत्तर: कुटज हम सभी को उपदेश देते हुए कहता है कि 'यदि जीना चाहते हो, तो कठोर पाषाण को भेदकर, पाताल की छाती चीरकर अपना भोग्य संग्रह करो, वायुमंडल को चूसकर झंझा-तूफान को रगड़कर, अपना प्राप्त वसूल लो, आकाश चुमकर अवकाश की लहरी में झूम कर उल्लास खींच लो। अर्थात हम सभी को कुटज संघर्ष करने की प्रेरणा देता है। अपने इच्छित उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए, अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार परिणाम प्राप्त करने के लिए हमें स्वयं ही संघर्ष करना पड़ेगा, तभी हम सफल हो सकते हैं और दुनिया ऐसे ही कर्मठ लोगों को पूजती है।

प्रश्न 6. कुटज के जीवन से हमें क्या सीख मिलती है?

उत्तर: कठोर जीवन पद्धति के बीच फूलों से लदा कुटज हमें विषम परिस्थितियों में जीना सिखाता है। कुटज के जीवन से हमें यह सीख मिलती है कि विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष करते हुए सदा मस्त रहना चाहिए। दूसरों के सामने हाथ नहीं फैलाना चाहिए। किसी से भयभीत नहीं होना चाहिए, न किसी की झूठी प्रशंसा करनी चाहिए। अंधविश्वासी नहीं बनना चाहिए अपने मन को अपने वश में करके जीना चाहिए तथा सदैव सफलता पाने का प्रयास करना चाहिए। अतः कुटज मनुष्य को स्वाभिमान के साथ जीवन जीने व आत्मविश्वास से पूर्ण तथा निस्वार्थ होने की शिक्षा देता है।

प्रश्न 7. कुटज क्या केवल जी रहा है- लेखक ने यह प्रश्न उठाकर किन मानवीय कमजोरियों पर टिप्पणी की है?

उत्तर: लेखक प्रश्न करता है- कुटज क्या केवल जी रहा है? इस पंक्ति से यह प्रतिध्वनित होता है कि कुटज केवल जी नहीं रहा। वह अपनी अपराजेय जीवन-शक्ति के बल पर आत्मविश्वास के साथ आनंदित होकर जी रहा है। कुटज के माध्यम से लेखक मानवीय कमजोरियों पर टिप्पणी करता है। स्वार्थ के बस में वह अपनी उन्नति के लिए अधिकारियों की खुशामद करता है, उनकी चाटुकारिता में संलग्न रहता है। दूसरों के दुख में सुख पाता है। आत्मोन्नति के लिए रूढ़ियों तथा अंधविश्वासों जैसे उन्नति के लिए नीलम इत्यादि का सहारा लेता है। 'कुटज' मनुष्य को स्वार्थ की सीमा से बाहर आने का मार्ग दिखलाता है। सूखी चट्टानों के बीच पुष्पित कुटज निस्वार्थ नीरस वातावरण को आनंदित करता है। मनुष्यों की भांति दुर्बलताओं की जकड़ में नहीं रहता।

प्रश्न 8. लेखक क्यों मानता है कि स्वार्थ से भी बढ़कर जिजीविषा से भी प्रचंड कोई न कोई शक्ति अवश्य है? उदाहरण सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर: संसार में 'स्वार्थ' एवं 'जिजीविषा' से भी बढ़कर एक प्रचंड शक्ति है। लेखक मानता है कि वह 'आत्मा' है। 'आत्मा' ईश्वर का एक अंश है। आत्मा शरीर तक ही सीमित नहीं होती। आत्मा का स्वरूप सबके लिए न्यौछावर करने में पहचाना जाता है।

स्वयं में सब और सब में स्वयं के समाहित करने से जहां समष्टि- बुद्धि को स्वरूप मिलता है, वही पूर्ण सुख के आनंद का अनुभव होता है।मनुष्य को मनुष्य बनाने वाली शक्ति परमार्थ है। वह हमें स्वार्थ से दूर करती है।

प्रश्न 9. कुटज पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए कि 'दुख और सुख तो मन के विकल्प हैं।'

उत्तर: कुटज वृक्ष के माध्यम से लेखक यह सिद्ध करता है कि दुख और सुख मानव मन के विकल्प हैं। मनुष्य का मन जब उसके वश में होता है तो वह सुखी होता है। मन की परवशता उसके दुख का कारण है। 'कुटज' विषम परिस्थितियों में भी पुष्पित है अर्थात उसका मन उसके वश में है। वह अपने शर्तो पर जीवित है उसका मन दूसरे के बस में नहीं है।

उसके पास आत्मविश्वास और अपराजेय जीवन- शक्ति है, जिसके कारण वह सुखी है। मनुष्य भी इन्हीं गुणों को आत्मसात कर सुखी हो सकता है। यह विकल्प मनुष्य को चुनना है कि वह सुख देने वाले गुणों का आत्मसात करता है या फिर उन दुर्बलताओं के साथ जीता है, जो दुख के कारण हैं।

प्रश्न 10. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

(क) कभी-कभी जो लोग ऊपर से बेहया दिखते हैं उनकी जड़ें काफी गहरी पैठी रहती हैं। ये भी पाषाण की छाती फाड़कर न जाने किस अलग गह्वर से अपना भोग्य खींच लाते हैं।

(ख) 'रूप व्यक्ति- सत्य है, नाम समाज-सत्य। नाम उस पद को कहते हैं जिस पर समाज की मुहर लगी होती है। आधुनिक शिक्षित लोग जिसे 'सोशल सेक्शन' कहा करते हैं। मेरा मन नाम के लिए व्याकुल है, समाज द्वारा स्वीकृत, इतिहास द्वारा प्रमाणित, समष्टि- मानव की चित्त- गंगा में **स्नात**।'

(ग) 'रूप की तो बात ही क्या है ! बलिहारी है इस मादक शोभा की। चारों ओर कुपित यमराज के दारूण निःश्वास के समान धधकती लू में यह हरा भी है और भरा भी है, दुर्जन के चित्त से भी अधिक कठोर पाषाण की कारा में रुद्ध अज्ञात जलस्रोत से बरबस रस खींचकर सरस बना हुआ है।'

(घ) 'हृदयेनापराजितः! कितना विशाल वह हृदय होगा जो सुख से, दुख से, प्रिय से, अप्रिय से विचलित न होता होगा! कुटज को देखकर रोमांच हो आता है। कहां से मिली है यह अकुतोभया वृत्ति, अपराजित स्वभाव, अविचल जीवन दृष्टि।'

उत्तर- (क) **प्रसंग:** प्रस्तुत पंक्तियां 'कुटज' शीर्षक निबंध से अवतरित हैं। इसके लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी हैं। इन

पंक्तियों के माध्यम से लेखक ऐसे व्यक्तियों पर टिप्पणी करता है जो ऊपरी तौर पर बेशर्म दिखाई देते हैं, किंतु उनकी जिजीविषा अत्यंत गहरी होती हैं।

व्याख्या: लेखक के अनुसार कभी-कभी ऐसे लोग दिखाई देते हैं जो ऊपर से बेशर्म अर्थात् किसी भी परिस्थिति से अप्रभावित दिखाई देते हैं। मान-अपमान, बेइज्जती होने पर भी उन्हें शर्म नहीं आती परंतु, उनमें जीवन जीने की बहुत बड़ी शक्ति निहित होती है, वे आंतरिक रूप से दृढ़ होते हैं। वे लोग भी कुटज की तरह पत्थरों की छाती को चीरकर न जाने किस असीम गड्ढे से अपने भोगने योग्य आवश्यक वस्तुएं उपलब्ध कर लेते हैं अर्थात् वे विषम परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेते हैं और अपनी आंतरिक शक्ति के बल पर असंभव को भी संभव कर दिखाते हैं। इस प्रकार उनमें उत्कृष्ट जीजिविषा होती है तथा वे मस्ती से जीवन जीते हैं।

विशेष: 1. लेखक ने मानव को कुटज के माध्यम से समभाव स्थिति में जीने का संदेश दिया है।

2. कुटज अपराजेय जीवन-शक्ति, स्वावलंबन, आत्मविश्वास और विषम परिस्थितियों में भी शान से जीने का प्रतीक है।
3. भाषा तत्सम शब्दावली युक्त है।

(ख) **प्रसंग:** प्रस्तुत पंक्तियां 'कुटज' शीर्षक निबंध से अवतरित हैं। यहां लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी ने नाम और रूप की महत्व पर प्रकाश डाला है।

व्याख्या: प्रस्तुत पंक्तियों से लेखक का आशय है कि मनुष्य का रूप- सौंदर्य उसकी आकृति और आकार-प्रकार उसके अस्तित्व की पुष्टि करते हैं और व्यक्ति का नाम उसकी सामाजिक पहचान का प्रतीक होता है। इसके साथ ही, नाम उस पद की भी अभिव्यक्ति कराता है जिसकी प्रतिष्ठा को समाज स्वीकार करता है, जिसे समाज सत्यापित करता है। आधुनिक युग में शिक्षित लोग इसे 'सोशल सेक्शन' कहते हैं। लेखक भी उस वृक्ष के नाम को याद करने के लिए व्याकुल है, जिसका नाम उसे विस्मृत हो गया है। लेखक उस नाम को याद रखना चाहता है, जो समाज की स्वीकृति, इतिहास का प्रभाव तथा समष्टि की मानसिकता का हिस्सा है।

विशेष: 1. रूप तथा नाम की महत्ता का प्रतिपादन किया गया है।

(ग) **प्रसंग:** प्रस्तुत पंक्तियां 'कुटज' निबंध से अवतरित हैं। लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इसमें 'कुटज' की अपराजेय जीवन शक्ति पर प्रकाश डाला है।

व्याख्या: लेखक के अनुसार, कुटज के सुंदर रूप का ही वर्णन क्यों किया जाए। उसका स्वरूप ही आकर्षक है। ज्येष्ठ मास की भीषण गर्मी में जहां यमराज की सांस के समान तप्त हवाएं चल रही हैं। यह वृक्ष अप्रभावित रूप में से स्थिर खड़ा है और हरा-भरा दिखाई दे रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि शिवालिक की इन सूखी चोटियों पर स्थित यह कुटज वातावरण की गर्मी से तनिक भी प्रभावित नहीं होता। किसी दुष्ट व्यक्ति के हृदय से भी ज्यादा कठोर चट्टानों के गर्भ रूपी पत्थरों के बंधन से रुके हुए अज्ञात जल स्रोतों से रस प्राप्त कर यह रस और आनंद से परिपूर्ण है।

विशेष: 1. लेखक ने कुटज वृक्ष की जिजीविषा की सराहना की है।

2. कुटज समभाव में स्थित रहने का संदेश देता है।
3. कुटज से हमें सीख मिलती है कि हम बाधाओं को हंसते हुए स्वीकारें और उनको पद-दलित करें।
4. शैली वर्णनात्मक है।

प्रसंग: प्रस्तुत पंक्तियां 'कुटज' शीर्षक निबंध से अवतरित हैं। लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इन पंक्तियों में कुटज की दृढ़ता और अपराजेय वृत्ति का चित्रण किया है।

व्याख्या: कुटज वृक्ष कभी दैन्यता को प्राप्त नहीं होता है। उसे देखकर सदैव यही लगता है कि उसने अपने हृदय मन पर विजय पा ली है। कुटज सुख-दुख प्रिय-अप्रिय सभी को समान भाव से स्वीकारता है। इतना ही नहीं वह विषम परिस्थितियों में भी सदा हरा भरा रहता है। वह कभी पराजित सा दिखाई नहीं देता है। उसका ह्रदय सदा जीने के लिए उल्लास से भरा दिखाई देता है। लेखक आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहता है कि न जाने कहां से कुटज को इतनी निडरता, किसी भी परिस्थिति में हार न मानने वाला स्वभाव और अविचल जीवन दृष्टि प्राप्त हुई है अर्थात कुटज में निडरता, अपराजित स्वभाव और अविचल जीवन दृष्टि विद्यमान है।

विशेष: 1. लेखक ने कुटज की विशेषताओं के माध्यम से आम आदमी को संदेश दिया है।

2. भाषा में काव्यात्मकता है।
3. तत्सम शब्दावली का प्रयोग प्रभावी ढंग से किया गया है।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियंभवति' का भावार्थ बताइए।

उत्तर- ऋषि याज्ञवल्क्य अपनी पत्नी को समझाने की कोशिश करते हैं कि सब कुछ इस दुनिया में स्वार्थ के लिए है। पुत्र के लिए पुत्र प्रिय नहीं होता, पत्नी के लिए पत्नी प्रिया नहीं होती। सब अपने मतलब के लिए प्रिय होते हैं। भाव यह है कि यहां सब निजी स्वार्थ के लिए एक दूसरे से जुड़े होते हैं।

प्रश्न 2. 'संस्कृत सर्वग्रासी भाषा है'- लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर- लेखक संस्कृत को सर्वव्यापी भाषा मानते हैं क्योंकि इस भाषा ने शब्दों के संग्रह में कोई निषेध नहीं माना। इस भाषा में बहुत सारी नस्लों के शब्द आकर इसी के होकर रह गए हैं।

प्रश्न 3. कुटज को उसकी विशेषताओं के आधार पर कौन-कौन से नाम दिए जा सकते हैं?

उत्तर- लेखक के अनुसार कुटज को उसकी विशेषताओं के आधार पर निम्नलिखित नाम दिए जा सकते हैं- वनप्रभा, गिरिकांता, गिरिगौरव, धरती धकेल, अकुतोभय इत्यादि।

Jharkhandlab.com

प्रश्न 4. लेखक के अनुसार कब तक मनुष्य को पूर्ण सुख का आनंद नहीं प्राप्त होता?

उत्तर- लेखक के अनुसार अपने में सब तथा सब में आप इस तरह की एक समष्टि बुद्धि जब तक नहीं आती उस समय तक पूर्ण सुख का आनंद नहीं प्राप्त होता।

प्रश्न 5. कुटज हमें क्या सिखाता है?

उत्तर- अपराजेय जीवनी-शक्ति का स्वामी कुटज नाम और रूप दोनों में अद्वितीय है। सूखी, नीरस और कठोर चट्टानों के मध्य प्रतिकूल परिस्थितियों में जीते हुए भी वह पुष्पों से लदा रहता है तथा अपने मूल नाम की हजारों वर्षों से रक्षा करता हुआ हमें भी जीवन का उद्देश्य सिखाता रहता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. कुटज पाठ के लेखक कौन है ?

1. हजारी प्रसाद द्विवेदी 2. प्रेमचंद
3. रामविलास शर्मा 4. विश्वनाथ त्रिपाठी

2. कुटज किस कोटि का निबंध है ?

1. वैचारिक 2. विवरणात्मक
3. सांस्कृतिक 4. ललित

3. पृथ्वी का मानदंड किसे कहा गया है ?

1. सतपुड़ा 2. विंध्याचल
3. हिमालय 4. अरावली

4. मेघदूत के रचनाकार कौन है ?

1. सूरदास 2. कालिदास
3. तुलसीदास 4. प्रेमचंद

5. यक्ष को किसने श्राप दिया था ?

1. कुबेर 2. नारद
3. इंद्र 4. विश्वमित्र

6. यक्ष निर्वासित जीवन कहां व्यतीत करता था ?

1. नीलगिरी 2. रामगिरी
3. हिमालय 4. धौलागिरी

7. कालिदास किस भाषा के कवि हैं ?

1. संस्कृत 2. अरबी
3. हिंदी 4. उर्दू

8. यक्ष ने किसके माध्यम से अपने प्रिय को संदेश भेजा था ?

1. नारद 2. आकाशवाणी
3. कालिदास 4. मेघों द्वारा

9. किस मुनि को कुटज भी कहा जाता है ?

1. अगस्त्य 2. वशिष्ठ
3. नारद 4. पुलस्त

10. कुटज किस भाषा का शब्द है ?

1. फारसी 2. संस्कृत
3. असमिया 4. हिंदी

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1.-1	2.-4
3.-3	4.-2
5.-1	6.-2
7.-1	8.-4
9.-1	10.-2

Jharkhandlab.com

Jharkhandlab.com

अंतराल

भाग - 2

Jharkhandlab.com

पाठ - 1 सूरदास की झोंपड़ी

प्रेमचंद (सन् 1880-1936)

jharkhandlab.com

लेखक परिचय

प्रेमचंद का जन्म वाराणसी जिले के लमही ग्राम में हुआ था। उनका मूल नाम धनपतराय था। प्रेमचंद ने अपने लेखन की शुरुआत पहले उर्दू में नवावराय के नाम से की, बाद में हिन्दी में लिखने लगे। उन्होंने अपने साहित्य में किसानों, दलितों, नारियों की वेदना और वर्ण-व्यवस्था की कुरीतियों का मार्मिक चित्रण किया है। उन्होंने समाज सुधार और राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत अनेक उपन्यासों एवं कहानियों की रचना की। हिन्दी भाषा को लोकप्रिय बनाने में उनका विशेष योगदान है। संस्कृत के प्रचलित शब्दों के साथ- साथ उर्दू की रवानी इनकी विशेषता है। इनकी प्रमुख रचनाएँ- मानसरोवर (आठ भाग) गुप्त धन (दो भाग) (कहानी संग्रह) निर्मला, सेवासदन, रंगभूमि, कर्मभूमि, गबन, गोदान (उपन्यास) कर्बला, संग्राम, प्रेम की वेदी (नाटक) कुछ विचार (साहित्यिक निबंध) है।

पाठ परिचय

सूरदास की झोंपड़ी प्रेमचंद के उपन्यास 'रंगभूमि' का एक अंश है। एक दृष्टिहीन व्यक्ति जितना बेबस और लाचार जीवन जीने को अभिशप्त होता है। सूरदास का चरित्र ठीक इसके विपरीत है। भैरों की पत्नी सुभागी भैरों की मार के डर से सूरदास की झोंपड़ी में छिप जाती है और सुभागी को मारने भैरों सूरदास की झोंपड़ी में घुस जाता है किंतु सूरदास के हस्तक्षेप से वह उसे मार नहीं पाता। भैरों को उकसाने और भड़काने का काम जगधर करता है। सूरदास और सुभागी के संबंधों की चर्चा पूरे मुहल्ले में इतनी हुई कि भैरों अपने अपमान और बदनामी का बदला लेने की सोचता है और सूरदास की झोंपड़ी में आग लगा देता है। सूरदास के रुपयों की थैली भी उठा ले जाता है। लेकिन सूरदास के चरित्र की विशेषता यह है कि वह प्रतिशोध लेने में विश्वास नहीं करता बल्कि पुनर्निर्माण में विश्वास करता है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. चूल्हा ठंडा किया होता, तो दुश्मनों का कलेजा कैसे ठंडा होता ? नायकराम के इस कथन में निहित भाव को स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर :- यह कथन नायकराम ने कहा था। इस कथन में निहित भाव इस प्रकार है कि सूरदास के जल रहे घर से उसके शत्रुओं को प्रसन्नता हो रही होगी। जगधर के पूछने पर कि आज चूल्हा ठंडा नहीं किया था ? इसके उत्तर में नायकराम ने यह उत्तर दिया था कि चूल्हा ठंडा किया होता तो दुश्मनों का कलेजा कैसे ठंडा होता। नायकराम कहना चाहता है कि इस घटना से उसके शत्रुओं को प्रसन्न होने का अवसर मिल रहा है। लोगों ने सोचा कि सूरदास के चूल्हे में जो अंगारे थे, उनकी हवा से शायद यह आग लगी थी परन्तु सच यह नहीं था। भैरों ने सूरदास की झोंपड़ी में जान बूझकर आग लगाई थी। नायकराम जानता था कि आग चूल्हे की वजह से नहीं लगी है। किसी ने लगाई है।

प्रश्न 2. भैरों ने सूरदास की झोंपड़ी क्यों जलाई ?

उत्तर :- भैरों सूरदास से बहुत नाराज था जब भैरों तथा उसकी पत्नी के बीच लड़ाई हुई तो नाराज सुभागी सूरदास के घर चली गई। भैरों को यह बात अच्छी नहीं लगी कि सूरदास ने सुभागी को अपने घर में रहने दिया। भैरों को सूरदास का यह करना अपना अपमान लगा। उसी दिन से उसने सूरदास से बदला लेने की ठान ली। वह सूरदास को सबक सिखाना चाहता था। जिस घर के दम पर उसने सुभागी को साथ रखा था, उसने उसी को जला दिया और अपना बदला ले लिया।

प्रश्न 3. "यह फूस की राख न थी, उसकी अभिलाषाओं की राख थी" संदर्भ सहित विवेचन कीजिए।

उत्तर :- सूरदास एक अंधा भिखारी था। उसकी संपत्ति में एक झोंपड़ी, जमीन का छोटा सा टुकड़ा और जीवन भर जमा की गई पूंजी थी। झोंपड़ी जल गई पर वह दोबारा भी बनाई जा सकती थी लेकिन उस आग में उसकी जीवनभर की जमापूंजी जलकर राख हो गई थी। उसे दोबारा इतनी जल्दी जमा कर पाना संभव नहीं था। उसमे 500 सौ रुपये थे। उस पूंजी से उसे बहुत सी अभिलाषा थीं। वह कुआं बनवाना चाहता था, मिठुआ का विवाह कराना चाहता था तथा अपने पितरों का पिंडदान करवाना चाहता था। झोंपड़ी के साथ ही पूंजी के जल जाने से अब उसकी कोई भी अभिलाषा पूरी नहीं हो सकती थी। उसे लगा कि यह फूस की राख नहीं है बल्कि उसकी अभिलाषाओं की राख है। अब उसके पास दुख और पछतावा था। वह गर्म राख में अपनी अभिलाषाओं की राख को ढूंढ रहा था।

प्रश्न 4. जगधर के मन में किस तरह का ईर्ष्या भाव जगा और क्यों ?

उत्तर :- जगधर जब भैरों के घर यह पता करने पहुँचा कि सूरदास के घर आग किसने लगाई है तो उसे पता लगा कि भैरों ने ही सूरदास के घर आग लगाई थी। इसके साथ ही उसने सूरदास के पूरे जीवन भर की जमापूंजी भी चुरा ली थी। यह जमापूंजी 500 से अधिक थी। जगधर जानता था कि यह इतना रुपया है जिससे भैरों की जिन्दगी की सारी कठिनाई पलभर में दूर हो सकती है। भैरों की चांदी होते देख, जगधर के मन में ईर्ष्या का भाव जगा।

प्रश्न 5. सूरदास जगधर से अपनी आर्थिक हानि को गुप्त क्यों रखना चाहता था ?

उत्तर :- सूरदास एक अंधा भिखारी था। वह लोगों के दान पर ही जीता था। एक अंधे भिखारी के पास इतना धन होना लोगों के लिए हैरानी की बात हो सकती थी। इस धन का पता चलने पर लोग उसपर संदेह कर सकते थे कि इसके पास इतना धन कहाँ से आया? लोग उसके प्रति तरह-तरह की बात कर सकते थे। अतः जब जगधर ने उससे उन रुपयों के बारे में पूछा जो अब भैरों के पास थे तो सूरदास सकपका गया और उन रुपयों को अपना मानने से इंकार कर दिया। वह स्वयं को समाज के आगे लज्जित नहीं करना चाहता था। अतः वह जगधर से अपनी आर्थिक हानि को गुप्त रखना चाहता था।

प्रश्न 6. 'सूरदास उठ खड़ा हुआ और विजय गर्व की तरंग में राख के ढेर को दोनों हाथों में उड़ाने लगा'। इस कथन के संदर्भ में सूरदास की मनोदशा का वर्णन लीजिए।

उत्तर :- सूरदास अपने रुपये की चोरी की बात से दुखी हो चुका था। उसके मन में परेशानी, दुख, तथा ग्लानि के भाव थे। अचानक उसने धीसू तथा मिठुआ को यह कहते हुए सुना कि खेल में रोते हो ! इन कथन ने सूरदास की मनोदशा पर चमत्कारी परिवर्तन कर दिया। दुखी और निराश सूरदास जैसे जी उठा। उसे अहसास हुआ कि जीवन संघर्षों का नाम है। इसमें हार जीत लगा रहता है। इंसान को जीवन संघर्षों का डटकर सामना करना चाहिए। जो मनुष्य जीवन रूपी खेल में हार मान लेता है। उसे दुख और निराशा के अलावा कुछ भी नहीं मिलता। धीसू के वचनों को सुन वह जाग उठा और राख के ढेर को प्रसन्नता से दोनों हाथों से उड़ाने लगा। यह ऐसे मनुष्य की मनोदशा है जिसने हार का मुँह तो देखा परंतु जो हारा नहीं बल्कि अपनी हार को भी जीत में बदल दिया।

प्रश्न 7. "तो हम सौ लाख बार बनाएँगे" इस कथन के संदर्भ में सूरदास के चरित्र का विवेचन कीजिए।

उत्तर :- दृढ़ निश्चयी और संकल्पवान- रुपये के जल जाने की बात ने सूरदास को कुछ समय के लिए दुखी तो किया परंतु बच्चों की बातों ने जैसे उसे दोबारा खड़ा कर दिया। उसने दृढ़ निश्चय से मुसीबतों का सामना करने की कसम खा ली।

कर्मठ व परिश्रमी - सूरदास भाग्य के भरोसे रहने वाला नहीं था। उसे स्वयं पर विश्वास था। अतः वह उठ खड़ा हुआ और परिश्रम के लिए तत्पर हो गया।

सहनशील - सबकुछ जल जाने के बाद भी वह जीवन को एक खेल मानते हुए सहनशील बना रहता है।

पुनर्निर्माण में विश्वास - सूरदास पुनर्निर्माण में आस्था रखता है। मिठुआ के इस प्रश्न पर कि कोई सौ लाख बार आग लगा दें तो सूरदास कहता है कि 'हम-सौ लाख बार बनाएँगे'।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'सूरदास की झोंपड़ी' पाठ की वर्तमान समय में प्रासंगिकता क्या है ? अपने विचार लिखिए।

उत्तर ;- प्रस्तुत पाठ 'सूरदास की झोंपड़ी' प्रेमचंद के प्रसिद्ध उपन्यास 'रंगभूमि' का एक अंश है। सूरदास उसका मुख्य पात्र और नायक है। उपन्यासकार ने उसके चरित्र के माध्यम से अपने पाठकों को जीवन का सर्वोतम संदेश देने का प्रयास किया है। मानव जीवन संघर्षपूर्ण होता है। मनुष्य के सामने अनेक समस्याएँ आती-जाती हैं। उसे अनेक विघ्न बाधाओं से होकर जीवन की नौका खेनी होती है। समाज में अनेक लोगों को अकारण, ईर्ष्या, द्वेष और दुश्मनी सहनी होती है। सूरदास अंधा है, भिखारी है। वह अपना गुजारा भीख मांगकर करता है। वह फूस की झोंपड़ी में शांति से रहता है। वह अपने दयालु स्वभाव के कारण भैरों की पत्नी सुभागी को उसके पति की पिटाई से बचाता है। इस कारण वह भैरों का दुश्मन बन जाता है। भैरों उसकी झोंपड़ी जला देता है और उसके रुपये चुरा लेता है। भैरों सूरदास को रोता हुआ देखना चाहता है। फिर भी सूरदास उसके प्रति दुर्भावना नहीं रखता है। सूरदास के माध्यम से प्रेमचंद्र संदेश देना चाहते हैं कि मनुष्य को निराशा, अवसाद और ग्लानि से बचना चाहिए। उसे दूसरों पर दोषारोपण न कर स्वयं अपनी शक्ति और सामर्थ्य पर भरोसा रखना चाहिए। जीवन संघर्षों का दृढ निश्चयी बनकर आत्मविश्वास से सामना करना चाहिए।

प्रश्न 2. सूरदास की झोंपड़ी के आधार पर भैरों का चरित्र-चित्रण कीजिए ?

उत्तर :- 'सूरदास की झोंपड़ी' में भैरों को खलनायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उसमें प्रेम, करुणा, उदारता, धैर्य, संतोष, ईमानदारी, सच्चाई जैसे सदगुणों का अभाव है। वह अपनी पत्नी सुभागी पर अत्याचार करता है और सूरदास से ईर्ष्या भाव रखकर उसकी झोंपड़ी जला देता है। भैरों की चारित्रिक कमियों को निम्न रूपों में देखा जा सकता है।

1 क्रूरता एवं संवेदनशून्यता - भैरों क्रूर, संवेदनशून्य एवं निर्लज व्यक्ति था। वह अपनी पत्नी को दासी समझकर पीटता है। पड़ोसी के घर जाकर पत्नी पर हाथ उठाने में भी उसे तनिक शर्म नहीं आती।

2. अविश्वास एवं संदेह करना - भैरों शक्की किस्म का इंसान है। सुभागी के सूरदास के घर चले जाने और सूरदास के द्वारा उसे बचाने की बात का गलत अर्थ लगाकर वह उन दोनों के चरित्र पर संदेह करने लगता है।

3. बदले की भावना - भैरों बदले की भावना से ग्रसित व्यक्ति है। जब मुहल्ले वाले उसकी पत्नी सुभागी और सूरदास के बारे में उल्टी-सीधी बातें करते हैं, जिससे उसकी भी बदनामी होती है तो वह सूरदास को सबक सिखाने के लिए उसकी झोंपड़ी में आग लगा देता है। इससे उसके बदले की आग ठंडी हो जाती है। जिसका उल्लेख वह जगधर से भी करता है।

4. चोरी करना - भैरों उम्दा दर्जे का चोर भी है। पाठ में इसका प्रमाण तब मिलता है जब वह सूरदास की झोंपड़ी में आग लगाने के बाद धरन के ऊपर रखी रुपयों की पोटली चुरा कर चुपचाप अपने घर ले आता है।

5. ईर्ष्यालु - भैरों में ईर्ष्या की भावना कूट-कूट कर भरी थी। सूरदास के रुपये चुरा लाने के बाद जगधर के सामने अपने मन के भाव उजागर करता हुआ उसके बारे में कहता है कि उसे इन्हीं पैसों की गर्मी थी जो अब निकल जाएगी। अब मैं देखता हूँ किसके बल पर उछलता है। उसका यह कथन उसके चरित्र की ईष्यालु प्रवृत्ति को उजागर करता है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. झोंपड़ी में लगी आग में सब कुछ जलकर राख हो गया था लेकिन फिर भी सूरदास राख में रुपये क्यों खोजता है ?

उत्तर :- झोंपड़ी में लगी आग में सब कुछ जलकर राख हो गया था लेकिन फिर भी सूरदास राख में रुपये खोजता है क्योंकि उसे आशा थी कि रुपये भले ही जल गए हो, चाँदी तो बची होगी। ये रुपये उसके समस्त जीवन की पूँजी थी।

प्रश्न 2. जो कुछ होना था, हो चुका यह कथन सूरदास के चरित्र की किन विशेषताओं को उजागर करता है ?

उत्तर :- जो कुछ होना था, हो चुका। यह कथन सूरदास को भाग्यवादी होने तथा व्यर्थ में बात न बढ़ाने वाले व्यक्ति के रूप में प्रकट करता है।

प्रश्न 3. सूरदास झोंपड़ी जल जाने के बाद रुपये एकत्रित करने के विषय में क्या विचार करता है ?

उत्तर :- सूरदास झोंपड़ी जल जाने के बाद रुपये एकत्रित करने के विषय विचार करता है कि पैसे किसी और के पास रख देता। इससे अच्छा तो धन-संचय ही न करता या अपने ऊपर खर्च करता, एक-एक काम पूरा करता जाता। मेरी ही गलती थी कि सारे काम एक साथ निपटाने की सोचता रहा।

अति लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न1. रात में कितने बजे अकस्मात् सूरदास की झोंपड़ी में आग की ज्वाला भड़क उठी ?

उत्तर:- रात में दो बच्चे अकस्मात् सूरदास की झोंपड़ी में आग की ज्वाला भड़क उठी।

प्रश्न 2. जब जगधर भैरों से मिलने पहुंचा तब भैरों क्या कर रहा था ?

उत्तर :- जब जगधर भैरों से मिलने पहुंचा तब भैरों चुपचाप बैठकर नारियल का हुक्का पी रहा था।

प्रश्न 3. जगधर तेल की मिठाई को क्या कहकर बेचता है ?

उत्तर :- जगधर तेल की मिठाई को घी की मिठाई कहकर बेचा था।

प्रश्न 4. 'छाती पर साँप लोटना' मुहावरे का क्या अर्थ है?

उत्तर :- 'छाती पर साँप लोटना' मुहावरे का अर्थ है - ईर्ष्या करना।

प्रश्न 5. सूरदास ने अपने पैसों की पोटली कहाँ रखी थी?

उत्तर :- सूरदास ने अपने पैसों की पोटली झोंपड़ी में धरन के ऊपर रखी थी।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'सूरदास की झोंपड़ी' के लेखक है ?

1 प्रेमचंद   2 फणीश्वरनाथ रेणु
3 संजीव   4 विश्वनाथ त्रिपाठी

प्रश्न 2. 'सूरदास की झोंपड़ी' किस उपन्यास का अंश है ?

1 कर्मभूमि   2 गबन
3 रंगभूमि   4 सेवा सदन

प्रश्न 3. सुभागी किसकी पत्नी थी ?

1 सूरदास   2 भैरों
3 जगधर   4 उपरोक्त में कोई नहीं

प्रश्न 4. सूरदास की झोंपड़ी किसके द्वारा जलाई गई ?

1 भैरों   2 जगधर
3 सुभागी   4 उपरोक्त सभी

Jharkhandlab.com

प्रश्न 5. सूरदास की पोटली किसने चुराई थी ?

1 जगधर 2 भैरों
3 मिठुआ 4 नायकराम

प्रश्न 6. 'चूल्हा ठंडा किया होता तो दुश्मनों का कलेजा कैसे ठंडा होता' यह कथन किसका है ?

1 भैरो 2 जगधर
3 सुभागी 4 नायकराम

प्रश्न 7. सूरदास की पोटली में कितने पैसे थे ?

1 हजार रुपये 2 पाँच सौ रूपये से ऊपर
3 सौ रुपये 4 पचास रुपये

प्रश्न 8. भैरों को सूरदास के प्रति उकसाने का कार्य किसने किया ?

1 मोहल्ला वालों ने 2 जगधर ने
3 मिठुआ ने 4 सुभागी ने

प्रश्न 9. सूरदास को किसके जल जाने का ज्यादा दुःख था ?

1 झोंपड़ी के जल जाने का 2 बर्तनों के जल जाने का
3 पोटली के जल जाने का 4 उपरोक्त सभी

प्रश्न 10 .....से ज्यादा दीर्घजीवी और कोई वस्तु नहीं होती।

1 क्रोध 2 दुःख
3 आशा 4 सुख

प्रश्न 11. सूरदास ने पैसे कैसे जमा किये थे ?

1 मेहनत करके 2 भीख मांगकर
3 खेती करके 4 उपरोक्त सभी

प्रश्न 12. अंधे भिखारी के लिए दरिद्रता इतनी शर्म की बात नहीं जितना?

1 बर्तन 2 घर
3 इज्जत 4 धन

प्रश्न 13. सूरदास अपने पुत्र और उसके मित्रों की बात सुनकर इस जीवन को क्या मान लेता है ?

1 खेल 2 संगीत
3 युद्ध 4 परिश्रम

प्रश्न 14. 'तो हम सौ लाख कर बनाएंगे' इस कथन से सूरदास के किस चरित्र का पता चलता है ?

1 आलस्य 2 हार न मानने की
3 अहंकारी 4 निराशावादी

प्रश्न 15. 'तुम खेल में रोते हो' यह बात किसने किससे कहीं?

1 घीसू ने मिठुआ से 2 मिठुआ ने सूरदास से
3 सूरदास ते जगधर से 4 सुभागी ने भैरो से

प्रश्न 16. सूरदास की अभिलाषाएँ क्या थी ?

1 पितरों का पिंडदान करना 2 मिठुआ का व्याह करना
3 एक कुआं बनवाना 4 उपरोक्त सभी

प्रश्न 17. जगधर की छाती पर साँप क्यों लोट रहे थे ?

1 क्योंकि उससे सूरदास की स्थिति नहीं देखी जा रही थी।
2 क्योंकि भैरों ने पोटली के सभी पैसे अपने पास रख लिये थे।
3 क्योंकि भैरों ने सूरदास की पोटली चुराई थी।
4 इनमें से कोई नहीं ।

प्रश्न 18. जगधर कैसा व्यक्ति था ?

1 धनी व्यक्ति 2 निर्धन व्यक्ति
3 लालची व्यक्ति 4 सामान्य व्यक्ति

प्रश्न 19. सूरदास अपनी आर्थिक हानि को जगधर से गुप्त क्यों रखना चाहता था ?

1 क्योंकि एक गरीब के पास इतने पैसे होना लज्जा की बात है ।
2 क्योंकि वह सभी से पोटली की बात गुप्त रखना चाहता था।
3 क्योंकि वह जगधर को पोटली के बारे नहीं बताना चाहता था।
4 उपरोक्त में कोई नहीं ।

प्रश्न 20. झोंपड़ी की आग को किस आग के समान बताया गया है ?

1 प्रेम की आग के समान
2 विरह की आग के समान
3 विजय की आग के समान
4 ईर्ष्या की आग के समान

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1 -1, 2 - 3, 3 - 2, 4 - 1, 5 - 2, 6 - 4,
7 - 2, 8 -2, 9 - 3, 10 -3, 11- 2, 12 - 4,
13 - 1, 14 -2, 15 - 1, 16 - 4, 17 - 2, 18 - 3,
19 - 1, 20 - 4

jharkhandlab.com

पाठ - 2 आरोहण

संजीव (जन्म सन् 1947)

लेखक परिचय

संजीव का जन्म 6 जुलाई 1947 ईस्वी को उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जिले के गांव बांगर कलाँ में हुआ था। इनकी उच्च शिक्षा विज्ञान विषयों को लेकर हुई । बी. एस-सी. ए.आई .सी .की डिग्री लेकर इन्होंने सन 1965 से 2003 तक इंडियन आयरन एंड स्टील कंपनी, कुल्टी में केमिस्ट इंचार्ज के रूप में काम किया। इनकी प्रमुख रचनाएँ- किशनगढ़ का अहेरी, सर्कस, सूत्रधार, सावधान! नीचे आग है, जंगल जहाँ शुरू होता है।

पाठ परिचय

प्रस्तुत पाठ **आरोहण** कहानी लेखक संजीव जी के द्वारा लिखित है। आरोहण कहानी में लेखक ने पर्वतारोहण की जरूरत और वर्तमान समय में उसकी उपयोगिता को रेखांकित किया है। पर्वतीय प्रदेश के रहने वालों के जीवन संघर्ष तथा प्राकृतिक परिवेश से उनके संबंधों को चित्रित किया है। किस तरह पर्वतीय प्रदेशों में प्राकृतिक आपदा, भूस्खलन ,पत्थरों के खिसकने से पूरा जीवन तथा समाज नष्ट हो जाता है। आरोहण कहानी उसका जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करता है। आरोहण पहाड़ी लोगों के दिनचर्या का भाग है। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने पर्वतीय प्रदेशों की बारीकियों, नदियों, झरनों उनके जीवन के कुछ सूक्ष्म अनुभव, परंपराओं और रीति-रिवाजों उनके संघर्षों, यातनाओं को संजीदगी के साथ रचा है। मैदानी इलाकों की तुलना में पर्वतीय प्रदेशों की जिंदगी कितनी कठिन, जटिल, दुखद और संघर्षमय में होती है। उसका विशद विवरण यह कहानी प्रस्तुत करती है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. यूं तो प्रायः लोग घर छोड़कर कहीं न कहीं जाते हैं, परदेश जाते हैं, किंतु घर लौटते समय रूप सिंह को एक अजीब किस्म की लाज अपनत्व और झिझक क्यों घेरने लगी ?

उत्तर- यह बात सच है कि अक्सर लोग रोजगार के तलाश या नौकरी, पढ़ाई के लिए घर से निकल जाते हैं लेकिन हां वह यह काम सभी की सहमति से करते हैं और रूप सिंह ने भी घर छोड़ा था। लेकिन बिना किसी को बताए चुपचाप ही घर से निकल गया था। जब वह छोटा था। अपने पिता और भाई को बिना कुछ बताए एक साहब के साथ चला गया था, आज कई सालों के बाद वह अपने घर लौट रहा था। उसके मन में अपनापन और आत्मीयता का भाव नजर आ रहा था, परंतु बिना किसी के सहमति से घर छोड़ जाने की बात पर शर्म भी आ रही थी। उसके मन में तरह-तरह के विचार आ रहे थे, कि वह अपने घर के लोगों का सामना कैसे करेगा। वह उनसे क्या बोलेगा यही सब सोचकर उसे बहुत लज्जा आ रही थी। उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था और उसके मन में एक झिझक की भावना जन्म ले रही थी।

प्रश्न 2. पत्थर की जाति से लेखक का क्या आशय है ? उसके विभिन्न प्रकारों के बारे में लिखिए ।

उत्तर- पत्थर की जाति से लेखक का आशय पत्थर के प्रकार से है। बहुत किस्म के पत्थर पाए जाते हैं, वह इस प्रकार हैं।

1. ग्रेनाइट- यह पत्थर बहुत सख्त पत्थर होता है, इसकी चट्टान भूरी होती है लेकिन उसमें गुलाबी आभा होती है।
2. बलुआ पत्थर- यह पत्थर बालू से बना होता है, लाल किला आदि इमारतें इसी से बनी है।
3. संगमरमर- यह चुना पत्थर के बदलने से बनता है, यह मुलायम होता है।
4. बसाल्ट पत्थर - इस पत्थर का निर्माण ज्वालामुखी के लावा से होता है।
5. पत्तादार पत्थर- बारीकी कणों के रूपांतरित शैलों से बनता है।

प्रश्न 3. महीप अपने विषय में बात पूछे जाने पर उसे टाल क्यों देता था ?

उत्तर- महीप जान गया था कि रूप सिंह रिश्ते में उसका चाचा है। रूप सिंह ने रास्ते में कई बार भूप सिंह और शैला के बारे में बात की थी। वह कुछ - कुछ समझ गया था कि रूप सिंह कौन है ? वह उसे अपने विषय में बताना नहीं चाहता था और ना ही अपने विषय में कोई बात करना चाहता था। अतः जब भी रूप सिंह महीप से उसके विषय में कुछ पूछता था, तो वह बात को टाल देता था। वह अपने मां के साथ हुए अन्याय को बताना नहीं चाहता था, उसकी मां ने अपने पति द्वारा दूसरी स्त्री घर में लाने के कारण आत्महत्या कर ली थी। इससे वह दुखी था, उसने इसी कारण अपना घर छोड़ दिया था।

प्रश्न 4. बूढ़े तिरलोक सिंह को पहाड़ पर चढ़ना जैसी नौकरी की बात सुनकर अजीब क्यों लगा ?

उत्तर- पर्वतीय क्षेत्रों में पहाड़ पर चढ़ना आम बात है। यह उनके दैनिक जीवन का भाग है, उसके लिए उन्हें किसी तरह की नौकरी आज तक मिलते नहीं देखा था। जब बूढ़े तिरलोक को रूप सिंह ने बताया कि वह शहर में पहाड़ पर चढ़ना सिखाता है, तो वह हैरान रह गया ।उसे इस बात की हैरानी थी कि रूपसिंह जिस नौकरी की इतनी तारीफ कर रहा है, वह बस पहाड़ पर चढ़ना सिखाना है। इतनी सी बात के लिए उसे 4000 महीना मिलते हैं। उसे लगा कि सरकार मूर्खता भरी काम कर रही है, इतने छोटे से काम के लिए 4000 महीना वेतन के रूप में मिलने वाली बात ही उसे हैरान करने लगी ।

प्रश्न 5. रूप सिंह पहाड़ पर चढ़ना सीखाने के बावजूद भूप सिंह के सामने बौना क्यों पड़ गया था ?

उत्तर - भूप सिंह अपने छोटे भाई रूप सिंह और शेखर को लेकर अपने घर की ओर चल पड़ा था। भूप सिंह हिमांग की ऊंचाई पर रहता था, वहां जाने की चढ़ाई शुरू हो गई, यह खड़ी चढ़ाई थी। पहले तो वे पेड़ और पत्थरों के सहारे चढ़ते रहे, फिर वे रुक गए। वह आगे चढ़ नहीं पा रहे थे, भूप सिंह ने व्यंग किया 'बस इत्ता भर पहाड़ीपन बचा है ? यद्यपि रूपसिंह पहाड़ पर चढ़ना सिखाता था, पर यहां आकर वह हार गया था। अब भूप सिंह ने ही हिम्मत करके उन्हें ऊपर चढ़ाने का उपाय बताया। उसने ही गले का मफलर अपनी कमर में बांधा और उसके दोनों छोरों को रूप सिंह को दिखाते हुए पकड़ लेने को कहा।

रूप सिंह उसके पीछे-पीछे चला, बिना किसी आधुनिक उपकरण के उन्होंने शरीर का संतुलन बना रखा था। भूप सिंह बीच-बीच में हिदायत भी देता जा रहा था, वह अपने शरीर की ताकत का सही उपयोग कर रहा था। वह रूप सिंह को भी खींचे लिए जा रहा था, इसमें एक घंटा लगा फिर दूसरे चक्कर में वह इसी प्रकार से शेखर को ऊपर चढ़ा कर ले गया। इस प्रकार भूप सिंह के सामने रूप सिंह बौना पड़ गया था। वह एक प्रशिक्षक होकर भी जिस काम को नहीं कर पाया था, उसे भूप सिंह ने सहज रूप से कर दिखाया था।

प्रश्न 6. शैला और भूप सिंह ने मिलकर किस तरह पहाड़ पर अपनी मेहनत से नई जिंदगी की कहानी लिखी ?

उत्तर- जब रूप सिंह ने शैला भाभी के बारे में पूछा तब भूप सिंह ने उसे बताया यहाँ खेती का काम बढ़ गया था। भूप सिंह ने सबसे पहले वह मालवा हटाया जो भू संखलन के कारण आया था। शैला और भूप दोनों ने मिलकर खेतों को ढलवाँ बनाया ताकि बर्फ उसमें अधिक समय तक जम ना पाए। जब खेत तैयार हो गए तो उनके सामने पानी की समस्या आई, अतः उन्होंने झरने का रुख मोड़ने की सोची। इस तरह से उनके खेतों में पानी की समस्या हल हो सकता था, फिर समस्या आई की गिरते पानी से पहाड़ को कैसे हटाया जाए। यह बहते पानी में संभव नहीं था, क्वार के मौसम में उन्होंने अपनी समस्या का हल पाया। उन्होंने पहाड़ को काटना आरंभ कर दिया। इस मौसम में झरना जम जाता था, और सुबह धूप के कारण

jharkhandlab.com

धीरे-धीरे पिघलता था। इस स्थिति में सरलता पूर्वक काम किया जा सकता था अंत में सफलता पा ही लिया और झरने का रुख खेतों की ओर मोड़ दिया। सर्दियों के समय में झरना जम जाता था, तो वे उसे आग की गर्मी में पिघला देते हैं और खेतों में पानी का इंतजाम करते थे । इस तरह उन्होंने अपनी मेहनत से नयी जिंदगी की कहानी लिखी।

प्रश्न 7. सैलानी(शेखर और रूप सिंह)घोड़े पर चलते हुए उस लड़के के रोजगार के बारे में सोच रहे थे, जिसने उनको घोड़े पर सवार कर रखा था और स्वयं पैदल चल रहा था। क्या आप भी बाल मजदूरों के बारे में सोचते हैं ?

उत्तर - हाँ, मैं भी बाल मजदूरों के बारे में सोचता हूँ।हमारे गांव के समीप ही एक ईंट भट्ठा है, उसमें बहुत से बच्चे काम करते हैं। बहुत से बच्चे होटल, ढाबों,दुकानों रोजगार के लिए जाते हैं। उन सब को देख कर मुझे दया आती है। मुझे लगता है कि मेरी उम्र के बच्चे पढ़ने के स्थान पर बाल मजदूरी एवं रोजगार के लिए दर-दर भटकते रहते हैं। यह नौकरी उनको जीवन भर कुछ नहीं दे पाएगी। इस उम्र में तो नौकरी करके अपना जीवन ही बर्बाद कर रहे हैं। उन्हें अभी पढ़ना चाहिए, तभी वह उज्जवल भविष्य बना पाएंगे एवं सशक्त राष्ट्र का निर्माण करेंगे ।

प्रश्न 8. पहाड़ों की चढ़ाई में भूप दादा का कोई जवाब नहीं। उनके चरित्र की विशेषता बताइए ?

उत्तर- भूप सिंह एक मेहनती और दृढ़ निश्चय वाले इंसान हैं। जो मुसीबत के समय में भी अपना धैर्य नहीं खोते हैं। वह मेहनत से पहाड़ों में अपना घर बनाते हैं, एक पहाड़ी मनुष्य होने के कारण पहाड़ों पर चढ़ने और उतरने उन्हें बड़ी आसानी से आता है। वह एक परिश्रमी और मेहनती इंसान है, जो अपनी मिट्टी से हमेशा जुड़कर रहना चाहते है। सब कुछ खत्म होने के बावजूद भी वह वहां से जाने की जगह वहां पर कठोर मेहनत से दोबारा जीवन शुरु करता है। यह सभी गुण उनके चरित्र की विशेषताओं को दर्शाते हैं।

प्रश्न 9. इस कहानी को पढ़कर आपके मन में पहाड़ों पर स्त्री की स्थति की क्या छवि आपके मन में बनाती है ? उस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर- इस कहानी को पढ़कर मेरे मन में पहाड़ों की स्त्रियों के लिए दयनीय छवि बनती है। यहां की स्त्री मेहनती तथा ईमानदार होतीं हैं। वे अपनी मेहनत से पहाड़ों का रुख मोड़ने की भी हिम्मत रखती है, लेकिन पुरुष के हाथों हार जाती है। शैला, भूप सिंह के साथ मिलकर असंभव कार्य को संभव बना देती है अंत में अपने पति के धोखे से हार जाती है। वह सब कुछ करने में सक्षम है लेकिन पुरुष से उसे इसके बदले धोखा ही मिलता है। ऐसा जीवन किस काम का जिसमें उसके व्यक्तित्व का उदय होने के स्थान पर नरकीय जीवन मिले।मानसिक और शारीरिक कष्ट मिले। वह अपने पति से ईमानदारी की आशा नहीं रख सकती है, जब मजबूर हो जाती है तो आत्महत्या कर लेती है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. आरोहण कहानी किसके द्वारा रचित है ?

1. निर्मल वर्मा 2. संजीव
3. जयशंकर प्रसाद 4. कृष्ण चंद्र

2. बस ने रुप सिंह और शेखर कपूर को किस स्टॉप पर उतारा था ?

1. नागलोई के बस स्टॉप पर 2. देवकुंड के बस स्टॉप पर
3. मुकुंदपुर के बस स्टॉप पर 4. आजाद गंज के स्टॉप पर

3. रुप सिंह कितने सालों बाद अपने गांव वापस लौटा था ?

1. आठ साल 2. नौ साल
3. ग्यारह साल 4. बारह साल

4. रूप सिंह के गांव का क्या नाम था ?

1. बरवाल 2. जलोली
3. विजयपुर 4. माही

5. झिझक, अपनत्व और लाज की भावना रूप सिंह को क्यों घेर रही थी ?

1. क्योंकि उसे लग रहा था यदि किसी ने उससे पूछा कि वह इन 11 साल उसने क्या किया तो वह क्या जवाब देगा।
2. क्योंकि वह अपने गांव 11 साल बाद लौट रहा था
3. क्योंकि जब उसने गांव छोड़ा था तब वह छोटा था
4. इनमें से कोई नहीं

6. "फिर साथ वाला भी कोई ऐसा- वैसा नहीं, शेखर कपूर था" रूप सिंह ने इस कथन का प्रयोग क्यों किया ?

1. क्योंकि वह एक साधारण आदमी था
2. क्योंकि वह उसके गॉडफादर कपूर साहब का लड़का था तथा वह i.a.s. ट्रेनी भी था
3. क्योंकि वह रूप सिंह का दोस्त था
4. उपरोक्त में से कोई नहीं

7. माही किस गांव से पहले पड़ने वाला गांव है ?

1. बघवाली 2. सरगी
3. मौली 4. हरिपुर

8. लेखक ने महीप का कहानी में किस प्रकार वर्णन किया ?

1. एक शहरी क्षेत्र में रहने वाला व्यक्ति
2. उड़े हुए नीले रंग की पहाड़ी पतलून और सलेटी स्वेटर पहने तथा अपने चेहरे पर मासूमियत बटोरे एक छोटी उम्र का बालक
3. एक गरीब बालक
4. इनमें से कोई

9. "धूप की सुनहरी पट्टियों के बीच छाया की स्याह पट्टियां"- इस पंक्ति की तुलना किस जानवर से की गई है ?

1. बाघ 2. लकड़बग्घा
3. तेंदुआ 4. धारीदार खालोंवाल

10. शाप की मारी अभागिन----लेखक ने किस नदी को अभागिन कहा है ?

1. सूपिन नदी 2. ब्रह्मपुत्र नदी
3. गंगा नदी 4. अलका नदी

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1–2	2–2
3–3	4–4
5–1	6–2
7–2	8–2
9–4	10–1

jharkhandlab.com

पाठ - 3

बिस्कोहर की माटी

विश्वनाथ तिरपाठी (जन्म सन् 1931)

लेखक परिचय

विश्वनाथ त्रिपाठी का जन्म उत्तर प्रदेश के बस्ती जिला स्थित बिस्कोहर गांव में 16 फरवरी 1931 को एक किसान परिवार में हुआ। बिस्कोहर में प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात आगे की शिक्षा के लिए ये बालमपुर चले आए। इन्होंने हिंदी विषय से कानपुर में स्नातक तथा वाराणसी से स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। इन्हें आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे गुरु का सानिध्य प्राप्त हुआ। वरिष्ठ आलोचक डॉ नामवर सिंह के कहने पर इन्होंने आलोचना कार्य प्रारंभ किया। इनकी रचनाएं हैं- प्रारंभिक अवधी, हिंदी आलोचना, हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, लोकवादी तुलसीदास, मीरा का काव्य । 'नंगातलाई का गांव' इनकी आत्मकथा है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की जीवनी पर आधारित 'व्योमकेश दरवेश' रचना के लिए इन्हें वर्ष 2014 का मूर्ति देवी पुरस्कार प्रदान किया गया।

पाठ परिचय

बिस्कोहर की माटी रचनाकार विश्वनाथ त्रिपाठी की आत्मकथा 'नंगातलाई का गांव' का हिस्सा है। इसमें लेखक ने अपने बचपन तथा किशोरावस्था की यादों के साथ अपने गांव बिस्कोहर के खेत-खलिहान, तालाब, घर-गृहस्थी आदि का रोचक और चित्रात्मक वर्णन किया है। इसमें एक ओर बाढ़, अकाल जैसी प्राकृतिक आपदाओं का वर्णन कर गांव के संघर्षपूर्ण जीवन को पाठकों के समक्ष रखने की कोशिश की गई है, तो दूसरी ओर कमल, कुमुद, हरसिंगार के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की सब्जियों तथा दलहन-तिलहन के फूलों का उल्लेख संबंधित ऋतुओं के साथ जोड़कर गांव की प्राकृतिक रमणीक छटा को साकार किया गया है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न (1) कोईयाँ किसे कहते हैं? उसकी विशेषताएं बताइए?

उत्तर :- कोईयाँ एक जल पुष्प है। यह पानी में उगता है। इसको कुमुद भी कहते हैं । इसे कोकावेली भी कहा जाता है। यह शरद ऋतु में खिलता है। जहां भी गड्ढा होता है और उसमें पानी भरा होता है वहां पर कोईयाँ फूल उठती हैं। रेलवे लाइन के दोनों ओर गड्ढों में भरे पानी में भी यह फूल दिखाई देता है। यह समस्त उत्तर भारत में मिलता है।

विशेषताएं

(1) यह मुख्यतः शरद ऋतु में सरोवर में खिलता है।

(2) इसकी गंध अत्यधिक मादक होती है।

(3) जहां पानी जमा होता है वहाँ यह स्वयं उग जाता है।

(4) इसका रंग चाँदनी की भाँति दूधिया होता है। इस कारण अत्यंत आकर्षक होता है।

प्रश्न (2) 'बच्चे का माँ का दूध पीना सिर्फ दूध पीना नहीं, माँ से बच्चे के सारे संबंधों का जीवन चरित्र होता है' टिप्पणी कीजिए।

उत्तर :- माँ अपने बच्चे को दूध पिलाती है। बच्चे का माँ का दूध पीना सिर्फ दूध पीना नहीं, माँ से बच्चे के सारे संबंधों का जीवन चरित्र होता है। बच्चा सुबकता है और रोता है। बच्चा माँ को मारता है। माँ भी कभी-कभी बच्चे को मारती है। इन सब क्रियाओं के दौरान माँ बच्चे को प्यार करती है ।माँ उसे अपने स्नेह छाया से अलग नहीं करती है। बच्चा माँ का स्पर्श करता है और माँ को पहचान लेता है। चांदनी रात में खटिया पर लेट कर बच्चे को दूध पिलाते समय माँ दूध ही नहीं, उसे चाँदनी भी पिलाती है । चाँदनी भी माँ के समान ही बच्चे को ममता , पुलक और स्नेह देती है। माँ की गोद में लेटकर माँ का दूध पीना मानव जीवन की सार्थकता है ।माँ का दूध पीने के साथ ही बच्चे का माँ के साथ जीवन भर का अटूट संबंध जुड़ जाता है। बच्चा माँ की ममता पाना चाहता है, उसके लिए तरसता है । माँ में बच्चे के प्रति ममता और स्नेह का गुण प्रकृति प्रदत होता है। बच्चे के प्रति ममता और स्नेह उसके मन में सदा बने रहते हैं । मां का दूध पीने से बालक तथा माँ में जो संबंध जुड़ता है वह जीवन भर कभी नहीं टूटता है।

प्रश्न (3) बिसनाथ पर क्या अत्याचार हो गया?

उत्तर :- बिसनाथ अपनी माँ का दूध पीता था। माँ के दूध पर बिसनाथ का एकाधिकार था। वह तीन वर्ष का था तभी उसके छोटे भाई ने जन्म लिया। विसनाथ की माँ का दूध छिन गया। माँ के दूध पर उसका एकाधिकार अब नहीं रहा, उस पर छोटे भाई का अधिकार हो गया। छोटा भाई मजे में माँ का पौष्टिक दूध पीता और विसनाथ को गाय का बेस्वाद दूध पीना पड़ता था। बिसनाथ के भाई के जन्म के बाद बिसनाथ को कसेरिन दाई को सौंप दिया गया, जो पड़ोस में रहती थी । उन्होंने ही बिसनाथ को पाला पोसा । तीन साल का विसनाथ दाई के साथ जमीन पर लेटे-लेटे चाँद को देखा करता था। दाई द्वारा पालन-पोषण बिसनाथ को अत्याचार लगता था।

प्रश्न (4) गर्मी और लू से बचने के उपायों का विवरण दीजिए ? क्या आप भी उन उपायों से परिचित हैं?

उत्तर गर्मी की ऋतु में तेज धूप पड़ती है तथा तेज गर्म हवा चलती है इसको लू चलना कहते हैं। लू लगने से मनुष्य के शरीर में पसीना आना बंद हो जाता है तथा उसके शरीर का ताप बढ़ जाता है। कभी-कभी मनुष्य की मृत्यु भी हो जाती है।

लू से बचने के उपाय

(1) बाहर जाते समय प्याज की गाँठ किसी कपड़े में बाँधकर या जेब में डाल कर बाहर निकले।

(2) कच्चे आम को भूनकर या उबालकर उसमें गुड़ अथवा चीनी मिलाकर बने शरबत का सेवन करें। आम को भून कर उसके गूदे से सिर धोने से भी लू से बचा जा सकता है।

हाँ हम इन उपायों से परिचित हैं प्रायः इस तरह के उपाय हर क्षेत्र में अपनाए जाते हैं।

प्रश्न (5) लेखक बिसनाथ ने किन आधारों पर अपनी मां की तुलना बत्तख से की है?

उत्तर - बिसनाथ ने दिल्ली के दिलशाद गार्डन के डियर पार्क में एक बत्तख को अपने अंडे देते हुए देखा है। उसने अपने सभी अंडे को अपने पंखों को फैलाकर उसके नीचे छिपा रखा था ताकि कव्वे, चील,बाज आदि से उनकी रक्षा की जा सके।अंडों के इधर-उधर छिटक जाने पर बत्तख अपनी चोंच से बड़ी सावधानी पूर्वक उन्हें फिर से पंखों के अंदर कर लेती है। पास में बैठे कौवे की ताक से बचाकर कभी-कभी वह पूरी सावधानी से उलट-पुलट भी कर लेती थी। अंडों को सेकते समय वह कौऐ पर दृष्टि जमाए रहती थी। बालक बिसनाथ को भी उसकी मां अपने आंचल में छिपाए रखती है। उसके रोने,मारने,पीटने के बावजूद उसे दूध पिलाना नहीं छोड़ती । उसे अपने पेट से चिपकाए रखती है। इस प्रकार बत्तख और लेखक की मां में बच्चों के प्रति एक ही ममता है। दोनों ही माताएं सभी प्रकार के कष्टों से बच्चों की रक्षा करती है। लेखक ने महसूस किया कि मां में बच्चों के प्रति ममता प्राकृतिजन्य होती है। जिसके सहारे वे जड़ को चेतन रूप में परिवर्तित करती है। इन्हीं आधारों पर विश्वनाथ ने अपनी मां की तुलना बत्तख से की है।

प्रश्न (6) बिस्कोहर में हुई बरसात का जो वर्णन विसनाथ ने किया है उसे अपने शब्दों में लिखिए?

उत्तर :- गर्मी के बाद बरसात अच्छी लगती है। बिस्कोहर में बरसात अचानक नहीं आती पहले बादल घिरते थे और गड़गड़ाहट होती थी फिर पूरा आकाश काले बादलों से घिर जाता था और दिन में रात जैसा अंधेरा छा जाता था । इसके बाद घनघोर वर्षा होती थी। बरसात की बूंदों के गिरने से जो आवाजें होती थी ऐसा लगता था मानो प्रकृति संगीत उत्पन्न कर रही है । उससे संगीत का आनंद आता था, उसमें तबला, मृदंग और सितार का संगीत होता था ।

पानी बरसता था तो दिखाई भी देता था। घर की छत से देखने पर दूर से घोड़े की कतार दौड़ती हुई चली आ रही प्रतीत होती थी। आंधी चलती थी तो टीन और छप्पर उड़ जाते थे। इसके बाद कई दिनों तक लगातार वर्षा होने पर दीवार गिर जाती थी, घर धंस जाते थे, बाढ़ आ जाती थी। भीषण गर्मी के बाद हुई बरसात के कारण कुत्ते ,बकरी, मुर्गी पुलकित (प्रसन्न) होकर इधर-उधर भागते थे, थिरकते थे। कीड़े-मकोड़ों की बढ़ोतरी हो जाती थी। गंदगी और कीचड़ भी हो जाता था। पेड़-पौधे तथा घास पर हरियाली छा जाती थी। खेत खलिहान पानी से भर जाते थे और चारों ओर शीतलता छा जाती थी।

प्रश्न (7) फूल केवल गंध ही नहीं देते, दवा भी करते हैं, कैसे ?

उत्तर :- प्रत्येक पुष्प में किसी ना किसी तरह का गंध होता है। इनकी गंध मनुष्य को आनंदित करती है। गंध के साथ-साथ फूल विभिन्न रोगों में दवा का काम भी करता है। लेखक के गाँव में अनेक रोगों का उपचार फूलों के द्वारा होता था। बिसनाथ के गांव में एक फूल था जिसका नाम भरभंडा था। इसको सत्यानाशी भी कहा जाता है। इसका प्रयोग गर्मियों में आँख दुखने पर दवा के रूप में किया जाता था। नीम का फूल तथा पत्ता चेचक के रोगियों के लिए लाभकारी माना जाता है। बेर के फूल सूँघने से ततैया का डंक ठीक होता था। आम के फूलों को भी अनेक प्रकार के रोगों में दवा के रूप में प्रयोग किया जाता था। इस प्रकार अनेक वनस्पतियाँ हैं जिनके पत्ते, फूल, फल, लकड़ी, जड़ तथा छाल दवा के रूप में प्रयोग किया जाता है। गुड़हल के फूल के सेवन से मधुमेह रोग दूर होता है। बेल फल तथा बेल फूल रोगों के लिए लाभकारी है। इसी प्रकार अन्य वनस्पतियाँ भी लाभदायक हैं।

प्रश्न (8) 'प्रकृति सजीव नारी बन गई है' इस कथन के संदर्भ में लेखक की प्रकृति, नारी और सौंदर्य संबंधी मान्यताएं स्पष्ट कीजिए?

उत्तर :- बिसनाथ जब दस वर्ष का था तब उसने उस औरत को पहली बार एक रिश्तेदार के यहां देखा था। वह औरत अत्यंत रूपवती थी। लेखक को उसे देखकर ऐसा लगा जैसे बरसात की चांदनी रात में जूही की खुशबू आ रही है। मानो प्रकृति का समस्त सौंदर्य उन्हें उस नारी में समाहित प्रतीत होने लगा। उन दिनों बिसनाथ बिस्कोहर में संतोषी के घर बहुत आया करते थे। उनके आंगन में जूही लगी थी। उसकी खुशबू बिसनाथ के प्राणों में बसी थी। चाँदनी रात में जूही के सफेद फूल ऐसे लगते थे जैसे की चाँदनी ही फूल बनकर डालो में लगी है।

चाँदनी, फूल और खुशबू सभी प्रकृति के ही रूप हैं। वह औरत भी बिसनाथ को औरत के रूप में नहीं बल्कि जूही की लता बनी हुई चाँदनी के रूप में दिखाई दी,जिसके फूलों से खुशबू आ रही थी। उसमें बिसनाथ ने प्रकृति के ही सजीव रूप को देखा था। ऐसा लगता था जैसे प्रकृति ने ही सजीव नारी का रूप धारण किया है अर्थात प्रकृति का समस्त सौंदर्य उन्हें उस नारी में समाहित प्रतीत होने लगा। बिसनाथ को प्रकृति की समस्त वस्तुओं से प्रेम था। वह प्रकृति को सजीव रूप में देखते थे। वह औरत भी उन्हें प्रकृति की तरह सुंदर लगती थी इसलिए उन्हें लगा कि प्रकृति सजीव नारी बन गई है।

प्रश्न (9) ऐसी कौन सी स्मृति है जिसके साथ लेखक को मृत्यु का बोध अजीब तौर से जुड़ा मिलता है ?

उत्तर :- लेखक के पास अनेक स्मृतियाँ हैं जो उसे कभी-कभी पीड़ा पहुंचाती हैं, लेकिन जिस औरत को देखकर वह समस्त प्रकृति के सौंदर्य को ही भूल गया था। उससे अपनी भावनाओं का इजहार ना कर पाया। मन में उसके प्रति गहरा आकर्षण था। उसकी यह आसक्ति कभी नहीं मिटी जीवन भर बनी रही, शर्म और संकोच के कारण वह उससे कुछ ना कह सका।

लेखक उस औरत को प्रकृति के साथ तुलना करके देखता था। ऐसा लगता था जैसे प्रकृति उसके रूप में सजीव हो उठी है। चाँदनी रात में जूही के सफेद फूलों के समान सुंदरता तथा गंध लेखक को आकर्षित करती थी। वह उसको सफेद फूलों और चांदनी के समान सफेद साड़ी पहने काले बादलों जैसे घने काले केश सवारे दिखाई देती थी। वह संगीत, नृत्य, मूर्ति, कविता, कला के हर रूप में उपस्थित रहती थी। उस औरत के प्रति गहरी आसक्ति लेखक में सदैव बनी रही। यह स्मृति उसे बराबर रही और इसी के साथ मृत्यु का एक अजीब प्रकार का बोध भी जुड़ा रहा।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न (1) लेखक के अनुसार मां और बच्चे का संबंध बहुत गहरा क्यों होता है?

उत्तर :- बच्चे और मां का संबंध बहुत गहरा एवं पवित्र होता है। लेखक कहते हैं कि जब भी बच्चा रोता है या बच्चा अपनी मां को मारता है तो मां भी अपने बच्चे को कभी कभी वापस मारती है लेकिन फिर भी बच्चा अपनी मां से ही चिपका रहता है और मां भी उतना ही प्रेम वापस देती है। इन्हीं सब बातों से मां और बच्चे का संबंध गहरा होता है।

प्रश्न (2) 'विश्वनाथ त्रिपाठी' का संक्षिप्त जीवन परिचय दें

उत्तर :- लेखक परिचय-विश्वनाथ त्रिपाठी का जन्म 16 फरवरी 1931 ई में उत्तर प्रदेश के बस्ती जिला के बिस्कोहर गांव में हुआ था।

शिक्षा-प्रारंभिक शिक्षा अपने गांव में हुई। उच्च शिक्षा के लिए पहले कानपुर तथा वाराणसी गए।उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

प्रमुख रचनाएं- प्रारंभिक अवधी हिंदी आलोचना, हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, लोकवादी तुलसीदास, मीरा का काव्य, देश के इस दौर में, पेड़ का हाथ, जैसे कह सका।

आचार्य हजारी प्रसाद के साथ अद्दमाण (अब्दुल रहमान) के अपभ्रंश काव्य संदेश रासक का संपादन किया।कविताएं 1963, कविताएं 1964 , कविताएं 1965 , (अजीत कुमार के साथ) हिंदी के प्रहरी रामविलास शर्मा (अरुण कुमार के साथ) संपादित किया।

प्रमुख सम्मान- गोकुल चंद शुक्ला आलोचना पुरस्कार, डॉ रामविलास शर्मा सम्मान, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार।

प्रश्न (3) 'बिस्कोहर की माटी 'की कथा के केंद्र में क्या है?

अथवा

'बिस्कोहर की माटी'- पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए कि यह पाठ ग्रामीण जीवन के रूप, रस, गंध को उकेरने वाला मार्मिक लेख है।

उत्तर :- 'बिस्कोहर की माटी' की पूरी कथा का केंद्र बिस्कोहर है जो लेखक का गांव है। बिसनाथ भी उसके केंद्र में है। लेखक ही बिसनाथ है। गर्मी, वर्षा और शरद ऋतु में गाँव में जो दिक्कतें आती हैं उसका लेखक पर गहरा प्रभाव पड़ा है।दस वर्ष की उम्र में अपनी आयु से दस वर्ष बड़ी स्त्री को देख कर मन में उठे भावों ,संवेगों के अमिट प्रभाव व उसके मार्मिक प्रस्तुति के बीच संवादों की यथावत आंचलिक प्रस्तुति से अनुभव की नैसर्गिक तथा सत्यता प्रकट हुई है।पूरी रचना में लेखक ने अपने देखे तथा भोगे यथार्थ को प्राकृतिक सौंदर्य के साथ अनूठी और एकदम नवीन शैली में प्रस्तुत किया है। अतः यह पाठ ग्रामीण जीवन की विशेषताओं को उकेरने वाला लेख है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न (1) लेखक लू से कैसे बचते थे?

उत्तर :- बचपन में लेखक दोपहर में सबको सोता हुआ छोड़कर भरी गर्मी में घर से चुपके से बाहर निकल जाते थे और दुपहरिया का नाच देखते थे। उनकी मां उनको लू से बचने के लिए उनकी धोती या कमीज में गांठ लगाकर प्याज बांध देती थी और लू से बचने की सबसे उत्तम दवा थी- आम का पन्ना। इस प्रकार लेखक लू से बच जाते थे।

प्रश्न (2) लेखक चांदनी रात और बच्चे पर क्या टिप्पणी करते है?

उत्तर :- लेखक कहते हैं कि चाँदनी रात में खटिया पर बैठकर जब माँ

jharkhandlab.com

अपने बच्चे को दूध पिलाती है तब बच्चा दूध पीने के साथ-साथ चाँदनी रात के आनंद को भी पूरी तरह महसूस करता है। जैसे चांदनी भी बच्चे को उसकी माँ की तरह स्नेह, ममता दे रही है।

प्रश्न (3) गुड़हल के फूल की क्या विशेषता है।

उत्तर : - लेखक के गाँव वाले गुड़हल के फूल को देवी का फूल मानते हैं और इस फूल को चुड़ैल आदि नामों से भी संबोधित किया जाता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न (1) बिस्कोहर की माटी पाठ के लेखक कौन हैं?

1 विष्णु शर्मा
2 विश्वनाथ त्रिपाठी
3 केशवदास
4 प्रभाष जोशी

प्रश्न (2) बिस्कोहर की माटी पाठ गद्य की कौन सी विधा है?

1 निबंध
2 उपन्यास
3 रेखाचित्र
4 आत्मकथा

प्रश्न (3) इस अध्याय में लेखक किसका वर्णन करते हैं ?

1 अपने गाँव का
2 गाँव के प्रकृति परिवेश का
3 गाँव के जीवन का
4 इनमें से सभी

प्रश्न (4) कोइयाँ क्या है?

1 फूल
2 पशु
3 फल
4 इनमें से कोई नहीं

प्रश्न (5) इस पाठ में किसकी ममता (स्नेह) की बात कही गई है?

1 पिता का
2 भाई का
3 मां का
4 बहन का

प्रश्न (6) विश्वनाथ को मां का दूध क्यों नहीं मिल रहा था?

1 भाई के जन्म के कारण
2 बहन के जन्म के कारण
3 इनमें से दोनों
4 इनमें से कोई नहीं

प्रश्न (7) विश्वनाथ की कौन सी रचना हजारी प्रसाद द्विवेदी पर केंद्रित है?

1 व्योमकेश दरवेश
2 आरोहण
3 नमक का दारोगा
4 सूरदास की झोपड़ी

प्रश्न (8) लेखक के अनुसार पहली वर्षा का क्या लाभ है?

1 खुजली ,दाद नहीं होते
2 पहला और दूसरा दोनों
3 फोड़े -फुंसी नहीं होते
4 इनमें से कोई नहीं

प्रश्न (9) बिस्कोहर की माटी पाठ के अनुसार हिंदुओं के भोज में किस पत्ते का इस्तेमाल किया जाता है?

1 जूही के पत्ते
2 सखुआ के पत्ते
3 कमल के पत्ते
4 बबूल के पत्ते

प्रश्न (10) कोइयाँ का दूसरा नाम क्या है?

1 जूही
2 सरसों
3 बबूल
4 कुमुद

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1- 2, 2- 4, 3- 4, 4- 1, 5- 2, 6- 1,
7- 1, 8- 3, 9- 2, 10- 4

Jharkhandlab.com

पाठ - 4 अपना मालवा खाऊ-उजाड़ू सभ्यता

प्रभाष जोशी (सन् 1937-2009)

लेखक परिचय

प्रभाष जोशी का जन्म इंदौर मध्यप्रदेश में हुआ। उन्होंने पत्रकारिता की शुरुआत नई दुनिया के संपादक राजेंद्र माथुर के सानिध्य में की और उनसे पत्रकारिता के संस्कार लिए। इंडियन एक्सप्रेस के अहमदाबाद, चंडीगढ़ संस्करणों का संपादन, प्रजापति का संपादन और सर्वोदय संदेश में संपादन सहयोग किया। 1983 में उनके संपादन में जनसत्ता अखबार निकला जिसने हिंदी पत्रकारिता को नई ऊंचाई दी। गांधी, विनोबा और जयप्रकाश के आदर्शों में यकीन रखने वाले प्रभाष जी ने जनसत्ता को सामाजिक सरोकार से जोड़ा।

प्रभाष जोशी में मालवा की मिट्टी के संस्कार गहरे तक बसे थे, और वह इसी से ताकत पाते थे। देशज भाषा के शब्दों को मुख्यधारा में लाकर उन्होंने हिंदी पत्रकारिता को एक नया तेवर दिया, और उसे अनुवाद की कृत्रम भाषा की जगह बोलचाल की भाषा के करीब लाने का प्रयास किया। प्रभाष जी ने पत्रकारिता में खेल सिनेमा संगीत साहित्य जैसे गैर पारंपरिक विषयों पर गंभीर लेखन की नीवं डाली। क्रिकेट ,टेनिस हो या कुमार गंधर्व के गायन इन विषयों पर उनका लेखन मर्मस्पर्शी है।

पाठ परिचय

इस पाठ के माध्यम से लेखक ने अपने प्रदेश मालवा के प्राकृतिक सौंदर्य के साथ-साथ वहां के रीति-रिवाजों, त्योहारों एवं संस्कृति को पाठक वर्ग के समक्ष रखा है। पाठ में मालवा की समृद्धशाली अतीत से उसकी वर्तमान दशा की तुलना की गई है। कल तक जो मालवा प्रदेश सुख संपदा और धन्य-धान्य से परिपूर्ण था और जिसकी पहचान 'मालव धरती गहन गंभीर, डग डग रोटी, पग पग नीर' से की जाती थी, आज खाऊ-उजाड़ू अपसभ्यता में फंसकर वही प्रदेश हर क्षेत्र में पिछड़ता जा रहा है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 मालवा में जब सब जगह बरसात की झड़ी लगी रहती है, तब मालवा के जन-जीवन पर इसका क्या असर पड़ता है ?

उत्तर :-

1 फसलों को फायदा- मालवा में जब बरसात की झड़ी लगी रहती है तब वहां के जनजीवन पर इसका गहरा प्रभाव पड़ता है।वहां के किसानों की फसलें अधिक पानी के कारण खराब हो जाती है ,लेकिन आगे की फसलों के लिए पर्याप्त मात्रा में सिंचाई के लिए पानी जमा हो जाता है। जिससे गेहूं और चने बाजरे की फसलें अच्छी होती हैं।

2 आवागमन को परेशानी- मालवा में होने वाली भारी बरसात के कारण यहां के आम लोगों को आने जाने में काफी परेशानी होती है।नदियों में पानी का जलस्तर बढ़ जाने से कई बार पुल आदि बह जाते हैं। रास्ते में जगह-जगह पानी भर जाता है जिससे आने जाने वालों को मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।

प्रश्न 2 अब मालवा में वैसा पानी नहीं गिरता जैसे गिराता था,उसके क्या कारण है ?

उत्तर :- अब मालवा में वैसा पानी नहीं गिरता जैसा गिरा करता था, इसका मुख्य कारण औद्योगिक विकास है- आज मालवा की ही नहीं अन्य प्रदेशों क्षेत्रों की भी समस्या है।ऋतु चक्र का असमय बदलाव होना। वर्षा, शरद तथा ग्रीष्म सभी ऋतुओं के समय चक्र में परिवर्तन हो गया है। बेमौसम बरसात होने से मानसून कम होता है तथा देर से आता है।

औद्योगिकीकरण के कारण वायुमंडल में प्रदूषण बढ़ रहा है, इससे प्रकृति के नियम टूट रहे हैं।तापमान भी दिनों दिन बढ़ता जा रहा है, जिसके कारण वायुमंडल में नमी की कमी आई है। वनों को काटा जा रहा है तथा कारखानों की वृद्धि ने वर्षा को ही नहीं गर्मी और सर्दी की ऋतु को भी परिवर्तित किया है।

प्रश्न 3. हमारे आज के इंजीनियर ऐसा क्यों समझते हैं कि वे पानी का प्रबंधन जानते हैं, और पहले जमाने के लोग कुछ नहीं जानते थे?

उत्तर :- आज के इंजीनियर पश्चात्य शिक्षा प्रणाली की उपज है यूरोप और अमेरिका, चीन के लोग समझते हैं कि भारत एक पिछड़ा और जंगली देश था।उसे उन्होंने ही सभ्य बनाया। यूरोप में आधुनिक परिवर्तन का आधार पुनर्जागिरण काल से माना जाता है।इसके बाद यूरोप में नई विचारधारा फैली और ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति हुई थी।आज के इंजीनियर को जो ज्ञान मिला है उसमें यह बात भी शामिल है उनको यही पता है कि वर्तमान सभ्यता और विकास यूरोप की ही देन है।

भारत के प्राचीन सभ्यता के बारे में उसको पता नहीं है। उनको यह पता नहीं है कि महाराजा विक्रमादित्य, राजा भोज तथा राजा मुंज जब भारत में शासन करते थे, तब यूरोप के पुनर्जागरण का कुछ अता पता नहीं था। इन शासकों ने मालवा में तलाब खुदवाए थे कुएं बावड़ी बनवाए थे। बरसात के पानी को सुरक्षित रखने की व्यवस्था की थी। वे जानते थे कि इस प्रकार गर्मी में पानी की कमी की समस्या का समाधान किया जा सकेगा तथा इससे भूगर्भ जल भंडार की भी सुरक्षा होगी। आज के इंजीनियर इस बारे में कुछ नहीं जानते।

प्रश्न 4. 'मालवा में विक्रमादित्य और भोज और मुंज रिनेसां के बहुत पहले हो गए।' पानी के रखरखाव के लिए उन्होंने क्या प्रबंध किया था ?

उत्तर :- मालवा में इन राजाओं के द्वारा जल संरक्षण के निम्नलिखित उपाय किए गए थे

1 तालाबों तथा बावड़ियों का निर्माण- मालवा महाराजा विक्रमादित्य, भोज और मुंज कुशल प्रजा पालक शासक थे। इसलिए उन्होंने मालवा में तलाब खुदवाए तथा बावड़ियों का निर्माण कराया था।

2 भूमिगत जल का संरक्षण- इन राजाओं ने तालाबों, कुँओं बावड़ियों का निर्माण कराकर बरसात के पानी को एकत्रित किया। वे जानते थे कि पठार के पानी को रोककर रखने से विकास के कार्यों में उपयोग किया जा सकेगा। इससे बरसात का पानी रुका रहता था और गर्मियों में लोगों के काम आता था, इससे भूगर्भ के जल स्तर भी सुरक्षित रहता था। उसका अनावश्यक दोहन ही नहीं होता था।

प्रश्न 5 'हमारी आज की सभ्यता इन नदियों को अपने गंदे पानी के नाले बना रही हैं।' क्यों और कैसे ?

उत्तर :- हमारी आज की सभ्यता इन नदियों को अपने गंदे पानी के नाले बना रही हैं। इसका कारण है औद्योगिक विकास। हमारी भारतीय सभ्यता यूरोप और अमेरिका से आए हुए सभ्यता को अपना रही है। उसका आधार विशाल उद्योग है, इनमें बड़ी-बड़ी मशीनों से भारी मात्रा में उत्पादन होता है। इनका धुआं वातावरण को प्रदूषित करता है रसायनों से युक्त पानी नदियों में बह कर उनको प्रदूषित कर देता है।

हमारे देश में विभिन्न धर्म के लोग रहते हैं सभी धर्मों की अनेक मान्यताएं एवं परंपराएं होती है। त्योहारों तथा उत्सव के अवसर पर हम नदियों में पूजा के बाद मूर्ति आदि सामान विसर्जित करते हैं। इसके अलावा अन्य सामग्री भी नदी में डाल देते हैं। जिसे हमारी पवित्र नदी दूषित एवं नाली के रूप में परिवर्तन हो जाती है।

Jharkhandlab.com

प्रश्न 6. लेखक को क्यों लगता है कि 'हम जिसे विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते हैं।वह उजाड़ की अपसभ्यता है ।'आप क्या मानते हैं ?

उत्तर : - लेखक को औद्योगिक सभ्यता के विकास से होने वाले विनाश के कारण यह सभ्यता उजाड़ की अपसभ्यता लगती है। इस विकास के कारण कई खतरे जन्म ले चुके हैं।

1 वातावरण मे परिवर्तन होना- औद्योगिक सभ्यता के विकास के परिणाम स्वरूप वातावरण में काफी परिवर्तन हुआ है । उद्योगों से निर्माण कार्य के दौरान निकलने वाले दूषित गैसों के कारण धरती का तापमान बढ़ता जा रहा है। ठंडे प्रदेशों भी गर्म होने लगे है तथा मानसून अनियमित हो गया है, जिससे बाढ़ तथा सूखे जैसी समस्याएं उत्पन्न हुई हैं और कई बार मानव सभ्यता उजड़ी है।

2 नदी तालाबों की दुर्दशा -उद्योगों के तीव्र विकास से नदियों तथा तालाबों का पानी दूषित हो गया है।उद्योग धंधों से निकलने वाले अपशिष्ट पदार्थ इन जल स्रोतों में बहा दिए जाते हैं। जिससे पानी सुचारू रूप से नहीं रह पाता है और वह अपनी सीमाएं तोड़कर बाढ़ आदि की स्थिति पैदा करता है ।इन उद्योगों का कूड़ा करकट नदियों में जाने से यह गंदे नालों के रूप में परिवर्तित हो गई है ।हमारे मत में यह बात बिल्कुल सही है कि जिसे हम विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते हैं वह उजाड़ की अपसभ्यता है।

प्रश्न 7. धरती का वातावरण गर्म क्यों हो रहा है ? इसमें यूरोप और अमेरिका की क्या भूमिका है? टिप्पणी कीजिए।

उत्तर : -

1 वातावरण गर्म होने का कारण- हमने अपनी सभ्यता के विकास के लिए विभिन्न प्रयास किए हैं। इन प्रयासों में हमने प्रकृति के साथ खिलवाड़ किया। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई की जिससे वातावरण में परिवर्तन आया ,अपने विकास के लिए हमने नए-नए उद्योग धंधे स्थापित किए। इन उद्योगों से अनेकों हानिकारक गैसें वातावरण में फैली जिससे वातावरण बेहद गर्म हो गया।कार्बन डाइऑक्साइड तथा अन्य गैसों के वातावरण में फैलने से पृथ्वी का तापमान बढ़ गया।

2 यूरोप और अमेरिका की भूमिका -उद्योगों का सबसे अधिक विकास यूरोप और अमेरिका में हुआ है ।इन देशों ने रोज नए-नए प्रयोग से अनेकों हानिकारक गैस वातावरण में फैलाई जिससे पर्यावरण बिगड़ा है । इससे पूरी दुनिया प्रभावित हुई है, ये देश इन्हें रोकने को भी तैयार नहीं है वे नहीं मानते कि धरती के वातावरण के गर्म होने से काफी गड़बड़ी हो रही है। इस प्रकार धरती के वातावरण के गर्म होने में यूरोप और अमेरिका की प्रमुख भूमिका है ।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. मालवा जैसे जल और अन्न से समृद्ध प्रदेश में सूखा पड़ने का उत्तरदायित्व किसका है ?

उत्तर : - लेखक मानता है कि मालवा में पानी की कमी नहीं है। पुराने लोग तालाबों बावड़ियों में पानी एकत्र करते थे, इससे गर्मी में पानी की जरूरत पूरी होती थी। आज पश्चिमी शिक्षा पद्धति से पढ़े हुए योजनाकार तथा इंजीनियरों ने इस बात का ध्यान नहीं रखा है । वे तालाब के पानी की सफाई करने के स्थान पर कीचड़ गाद भरने देते हैं। दूसरी ओर बिजली से चलने वाले पंपों की सहायता से जमीन के अंदर पानी का अनावश्यक दोहन करके उसको हानि पहुंचाते हैं। लेखक की दृष्टि में यह दोषपूर्ण चिंतन ही मालवा में सुखा होने का कारण है।

प्रश्न 2. लेखक ने आज हमें मालवा में बहने वाली नदियों के बारे में क्या बताया है ? कि ऐसा सिर्फ मालवा की नदियों के साथ ही हो रहा है ?

उत्तर : - लेखक ने बताया है कि आज मालवा की नदियों में पानी का अभाव है इंदौर और सरस्वती नदियों में पानी का अभाव है। शिप्रा, चंबल, गंभीर, पार्वती कालीसिंध, चोरल सबका यही हाल है । इन नदियों में कभी 12 महीनें पानी रहा करता था। अब मालवा आंसू भी नहीं बहा सकती चौमासे में बहती है बाकी महीनों में बस्तियों का गंदा पानी इनमें बहता रहता है। वर्तमान में औद्योगिक सभ्यता ने इन सदा निर्मल नदियों को गंदे पानी का नाला बना दिया है। ऐसा मालवा मे नहीं है बल्कि सारे संसार में हो रहा है।

प्रश्न 3. लेखक ने वर्तमान सभ्यता को उजाड़ सभ्यता क्यों कहा है ?

उत्तर : - वर्तमान सभ्यता मनुष्य को प्रकृति से दूर ले जा रही हैं ।अमेरिका रूस, जापान, फ्रांस, चीन आदि देशों के विशाल उद्योगों में होने वाला उत्पादन विश्व के अन्य देशों में बिकता है जो वहां के आर्थिक सांस्कृतिक सभ्यता को नष्ट कर रहा है ।इससे पूंजीवादी शोषण बढ़ रहा है तथा उन लोगों में गरीबी बढ़ गई है। यह सभ्यता लोगों की सुख शांति को दिनोंदिन समाप्त करती जा रही हैं । उनकी धरती के सौंदर्य और उर्वरक को उजाड़ रही हैं, यह मानव जाति को भीषण विनाश की ओर धकेल रही है।

प्रश्न 4. नदियों से सभ्यता का क्या संबंध है ? आज विकास के नाम पर सभ्यता को क्या हानि पहुंचाई जा रही है ?

उत्तर : -नदियों से सभ्यता का गहरा संबंध रहा है जब मनुष्य ने कृषि का पेशा अपनाया तो उसे एक स्थान पर रहने बसने की जरुरत महसूस हुई। इसके लिए वह नदियों के किनारे रहने लगे। यहां से ही सभ्यता का जन्म हुआ । संसार की प्राचीन सभ्यताएं मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, मिस्र आदि सभ्यताएं तथा भारत की वैदिक सभ्यता सिंधु, गंगा, नील, आदि नदियों के तट पर ही विकसित हुई है । आज का युग विकास का युग कहलाता है। विश्व में होने वाले औद्योगिक क्रांति ने संसार को बदल दिया है । उद्योगों के विशाल उत्पादन के लिए पूरा विश्व बाजार बन चुका है । इससे गहरी आर्थिक असमानता पैदा हो रही हैं । गरीबी और शोषण बढ़ रहा है विकास के नाम पर जो हो रहा है, उससे मानव जाति के ऊपर विनाश का खतरा मंडरा रहा है।

प्रश्न 5. लेखक आज के इंजीनियरों का भ्रम कैसे दूर करते हैं ?

उत्तर : - जब आज के इंजीनियर यह कहते हैं कि जल प्रबंधन के बारे में जानकारी उन्हें पश्चिमी सभ्यता से हुई है। इसके बारे में इससे पहले कोई जानकारी नहीं थी। यह आज के इंजीनियरों का भ्रम है। इसे दूर करते हुए लेखक पहले के जमाने के राजा विक्रमादित्य, मुंज आदि का उदाहरण देते हुए बतलाते हैं कि उन्होंने जल संरक्षण की विधि को अपनाया था। उसके संरक्षण के लिए उन्होंने नदियां, तालाबों आदि का निर्माण करवाया था। इस प्रकार लेखक आज के इंजीनियरों का भ्रम दूर करते हैं।

प्रश्न 6. लेखक ने नवरात्रि की पहली सुबह का कैसा वर्णन किया है ?

उत्तर : - लेखक ने पहली नवरात्रि का वर्णन करते हुए कहा है कि- नवरात्रि की सुबह थी मालवा में घट स्थापना की तैयारी चल रही थी। गोबर से घर आंगन लिपने और रंगोली बनाने की तैयारियां हो रही थी। लड़कियों और औरतों के सजने की तैयारियां चल रही थी लेकिन ऐसा लग रहा था कि आसमान से पानी गिर कर ही रहेगा। लेखक कहता है कि ऐसा नहीं था कि नवरात्रि में पहले पानी गिरते नहीं देखा लेकिन यह मानसून के जाने का समय था और अब लग रहा था कि अबकी बार तो यह जमे रहने का धौंस दे रहा है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. लेखक ने अपना मालवा अध्याय में क्या वर्णन किया है ?

उत्तर : -लेखक ने अपना मालवा अध्याय में मलवा के लोगों का सामान्य जीवन, वहां की प्रकृति और घटनाओं उनका जनजीवन पर प्रभाव मौसम, नदियां आदि का वर्णन किया है। लेखक ने मालवा की संस्कृति का वर्णन भी अपना मालवा अध्याय में किया है ।

प्रश्न 2. लेखक ने किन राजाओं का वर्णन किया है जिन्होंने जल संरक्षण में अपना योगदान दिया है ?

उत्तर :- लेखक ने राजा विक्रमादित्य, राजा भोज, राजा मुंज का वर्णन किया है, जिन्होंने जल संरक्षण के लिए अनेक प्रयास किए। जिससे मुश्किल समय में पानी की आपूर्ति हो सके,उन्होंने जल संरक्षण में अपना अहम योगदान दिया।

प्रश्न 3. भारत की नदियां गंदी क्यों है ?

उत्तर :- भारत की नदियां खासतौर पर भारतीय लोगों के अंधविश्वास के कारण गंदी है। लोग पूजा की सामग्री को नदी में बहा देते हैं। कुछ ऐसे लोग जो अपने देश को साफ करना अपना कर्तव्य नहीं समझते हैं वही कूड़ा, प्लास्टिक की वस्तु भी नदियों में बहा देते हैं। इन सभी कारणों से भारत की नदियां गंदी है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. अपना मालवा पाठ के लेखक इनमें से कौन है ?

1 प्रभात कुमार 2 प्रभाष जोशी
3 पंडित मोहन जोशी 4 विष्णु खरे

प्रश्न 2. प्रभाष जोशी का जन्म दिए गए विकल्पों में से चयन करें ?

1 1938 2 1837
3 1893 4 1937

प्रश्न 3. लेखक का जन्म कहां हुआ था दिए गए उचित विकल्पों का चयन करें ?

1 वाराणसी 2 मुंगेर बिहार
3 इंदौर (मध्य प्रदेश) 4 आंध्र प्रदेश

प्रश्न 4. प्रभाष जोशी ने पत्रकारिता का आरंभ किस संपादक के अंतर्गत किया था ?

1 मुंशी प्रेमचंद 2 विष्णु खरे
3 दिनेश माथुर 4 राजेंद्र माथुर

प्रश्न 5. प्रभाष जोशी ने अपना पहला अखबार निकाला उसका नाम क्या था ?

1 दैनिक भास्कर 2 जनसंवाद
3 जनसत्ता 4 दैनिक समाचार

प्रश्न 6. अपना मलवा किस विधा में लिखा गया है ?

1 संस्मरण 2 यात्रा वृतांत
3 जीवन परिचय 4 कहानी

प्रश्न 7. त्योहारों के समय मालवा के घर आंगन को किससे लिपा जाता था ?

1 चुना से 2 गोबर से
3 मिट्टी से 4 पानी रंग

प्रश्न 8. मालवा में कौन जमा रहता है ?

1 मानसून 2 धूप
3 मेहमान 4 लेखक

प्रश्न 9. चौमासा किसे कहते हैं ?

1 गर्मी के 4 महीने
2 सर्दी के 4 महीने
3 बरसात के चार महीने
4 उपरोक्त में से कोई नहीं

प्रश्न 10. लेखक ने वैशाली राक्षसी बांध किस नदी में देखा था ?

1 शिप्रा 2 नर्मदा
3 कावेरी 4 गोदावरी

प्रश्न 11. पुराने समय में राजा विक्रमादित्य, भोज, मुंज आदि ने पानी का संरक्षण के लिए क्या किया था ?

1 तालाब का निर्माण
2 कुआं का निर्माण
3 बावड़ियों का निर्माण
4 उपरोक्त सभी

प्रश्न12. उज्जैन जाते समय लेखक को कौन सी नदी मिली ?

1 नर्मदा 2 शिप्रा
3 गंगा 4 यमुना

प्रश्न13. पाठ के अनुसार पूर्व समय में लोग किस कार्य में कुशल थे ?

1 शहर योजना 2 पानी प्रबंधन
3 कृषि 4 उपरोक्त सभी

प्रश्न14. गांधी सागर बांध किस नदी पर स्थित है ?

1 चंबल 2 गंगा
3 यमुना 4 कावेरी

प्रश्न15. लेखक ने 'डग -डग रोटी पग- पग नीर' किस संदर्भ मे कहा है ?

1 मुहावरे 2 नदियों के बारे में
3 मालवा की धरती के बारे में 4 तालाबों के बारे में

प्रश्न16. आधुनिक सभ्यता के विकास को लेखक ने क्या कहा है ?

1 उजाड़ की अपसभ्यता 2 औद्योगिक सभ्यता
3 विकसित सभ्यता 4 खुशहाल सभ्यता

प्रश्न17. मालवा की सदानीरा नदियाँ बिना बरसात के मौसम में किसका काम करती है ?

1 शुद्ध जल प्रवाहित करने का
2 सुखा रहने का
3 शहर के गंदे पानी को ले जाने का
4 कृषि के लिए पानी देने का

प्रश्न18. रिनेसां से पहले भारतीय इंजीनियर किस कला में दक्ष थे ?

1 प्रकृति संरक्षण 2 जल संरक्षण
3 नदी संरक्षण 4 खाद संरक्षण

प्रश्न19. जनसत्ता अखबार का संपादकीय किस क्षेत्र की ओर झुकाव रखता था ?

1 राजनीति 2 सामाजिक
3 विज्ञान 4 खेल

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1 - 2, 2 - 4, 3 - 3, 4 - 4, 5 - 3, 6 - 1,
7 - 2, 8 - 1, 9 - 3, 10 - 2, 11 - 4, 12 - 2,
13 - 2, 14 - 1, 15 - 3, 16 - 1, 17 - 3, 18 - 2,
19 - 2

Jharkhandlab.com

Jharkhandlab.com

Jharkhandlab.com

अभिव्यक्ति और माध्यम

Jharkhandlab.com

1. अनुच्छेद-लेखन

1. अनुच्छेद किसे कहते हैं ? अनुच्छेद लेखन में किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर किसी एक भाव या विचार को व्यक्त करने के लिए लिखे गए सम्बद्ध एवं लघु वाक्य समूह को अनुच्छेद लेखन कहते हैं।

दूसरे शब्दों में किसी घटना दृश्य अथवा विषय को संक्षिप्त किंतु सारगर्भित ढंग से जिस लेखन शैली में प्रस्तुत किया जाता है उसे अनुच्छेद लेखन कहते हैं। यह अंग्रेजी भाषा के 'पैराग्राफ' शब्द का हिंदी पर्याय है। अनुच्छेद निबंध का संक्षिप्त रूप होता है। इसमें किसी विषय के किसी एक पक्ष पर 80 या 100 शब्दों में अपने विचार व्यक्त किए जाते हैं। अनुच्छेद में हर वाक्य अपने मूल विषय से जुड़ा रहता है। अनुच्छेद अपने आप में स्वतंत्र और पूर्ण होते हैं। अनुच्छेद के सभी वाक्य एक दूसरे से जुड़े रहते हैं। उसमें एक भी वाक्य बेकार और अनावश्यक नहीं होता।

अनुच्छेद लिखते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए-

1. अनुच्छेद लिखने से पहले रूपरेखा, संकेत-बिंदु आदि तैयार करना चाहिए।
2. अनुच्छेद में विषय के किसी एक ही पक्ष का वर्णन होना चाहिए।
3. भाषा सरल स्पष्ट और प्रभावशाली होनी चाहिए।
4. बातों का दोहराव नहीं होना चाहिए।
5. अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए।
6. शब्द सीमा का ध्यान रखना चाहिए।
7. पूरे अनुच्छेद में एकरूपता होनी चाहिए।
8. विषय से संबंधित सूक्ति अथवा कविता की पंक्तियों का प्रयोग करना चाहिए ।

2. निबंध और अनुच्छेद में क्या अंतर है?

उत्तर जहां निबंध में प्रत्येक बिंदु को अलग-अलग अनुच्छेद में लिखा जाता है, वहीं अनुच्छेद लेखन में एक ही परिच्छेद या पैराग्राफ में प्रस्तुत विषय को सीमित शब्दों में प्रस्तुत किया जाता है। इसके अतिरिक्त निबंध की तरह भूमिका, मध्य भाग एवं उपसंहार जैसा विभाजन अनुच्छेद में करने की आवश्यकता नहीं होती। अनुच्छेद अपने आप में स्वतंत्र और पूर्ण होते हैं। अनुच्छेद का मुख्य विचार या भाव की कुंजी या तो आरंभ में रहती है या अंत में। जिस अनुच्छेद में मुख्य विचार या भाव अंत में होता है, वह उच्च कोटि का माना जाता है।

3. निम्नलिखित विषयों पर अनुच्छेद लिखिए-

क. 'कंप्यूटर आज की जरूरत'

कंप्यूटर की उपयोगिता सर्वविदित है। जीवन के हर क्षेत्र में यह अत्यंत महत्वपूर्ण उपकरण प्रमाणित हो चुका है। कृषि, चिकित्सा, व्यवसाय, शिक्षा, बैंक, रेलवे, हवाई सेवा, डाक सेवा हर जगह इसने अपना अभूतपूर्व स्थान बना लिया है। आश्चर्य की बात तो यह है कि बस बटन दबाओ और काम बन गया।

सेकेंडों में कीजिए, घंटे भर का काम।
कहीं भी, कभी भी, सुबह हो या शाम।।

एक समय विज्ञान ने कंप्यूटर को बनाया था किंतु आज विज्ञान के कार्यभार को कंप्यूटर ने संभाल रखा है। पृथ्वी के एक छोर पर बैठकर हम दूसरे छोर की जानकारी मिनट में हासिल कर लेते हैं। ब्रह्मांड की जानकारी भी प्राप्त कर रहे हैं। चांद पर पहुंच गए हैं। ज्योतिष शास्त्र की गणना, चिकित्सा के क्षेत्र में नए अनुसंधान एवं शोध, पुलिस विभाग को रहस्यमय गुत्थियाँ सुलझाने में मदद आदि न जाने कितने कार्य हैं। जो कंप्यूटर के आने से अत्यंत शीघ्र और सुलभ हो गए हैं। फाइलों का झंझट अब लगभग खत्म हो गया है। बैंक, विद्यालय इत्यादि संस्था अपनी जानकारी कंप्यूटर पर अपलोड करके पासवर्ड डालकर रख लेते हैं। जरुरत पड़ने पर पल भर में देख लेते हैं। छात्रों के लिए ज्ञानवर्धक किताबें भी हैं। फिल्म भी है, गेम और मनोरंजन के विभिन्न साधन भी हैं तथा साथ ही साथ समाज को बर्बादी के रास्ते पर ले जाने वाला अश्लील साइट भी है। यह हमारे लिए अभिशाप और वरदान दोनों है। यह हमारे विवेक और बुद्धि की बात है कि हम इसका सदुपयोग करते हैं या दुरुपयोग।

ख. काल करे सो आज कर

समय सर्वश्रेष्ठ धन है। जिसने समय के महत्व को नहीं जाना, पहचाना, समझा उसका जीवन अभिशाप से भर गया। वह जीवन में कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता। एक अंग्रेजी कहावत हैं "टाइम एंड टाइड वेट फॉर नन।" अवसर और समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करते। बीता समय वापस नहीं लौटता। संत तुलसीदास जी ने कहा है–

समय चूकी क्या पछितानी।
का वर्षा जब कृषि सुखानी।।

खेती का समय बीत जाने पर होने वाली वर्षा का क्या उपयोग? अवसर को पीछे से कभी भी नहीं पकड़ा जा सकता। नदी उलट कर बह सकती है, हवा विपरीत दिशा में चल सकती है, लेकिन समय का प्रवाह कभी भी उलटी दिशा में नहीं जाता। समय की ओर से विमुख करने वाला हमारा सबसे बड़ा शत्रु आलस्य है अतः समय को जीतने के लिए आलस्य को जीतना आवश्यक है। जिन्होंने समय के मूल्य को पहचाना उन्होंने इतिहास के पन्नों पर अपने नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित करवाएं। सिकंदर महान, नेपोलियन, वीर शिवाजी, रानी लक्ष्मीबाई, डॉ राजेंद्र प्रसाद अनगिनत उदाहरण हमारे लिए प्रेरणा स्रोत हैं। अंत में हम कह सकते हैं कि समय ईश्वर का सबसे बड़ा उपहार है। यदि आप समय बर्बाद करते हैं तो समय आपको बर्बाद कर देगा। अतः हमें समय के महत्व को समझ कर इसका सदैव सदुपयोग करना चाहिए।

jharkhandlab.com

ग. कर्म ही पूजा है

गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है- "कर्मण्य वाधिकारस्ते मां फलेषु कदाचन।"

मनुष्य का अधिकार कर्म मात्र पर है। परिश्रम ही मनुष्य का आभूषण है। परिश्रम से ही मनुष्य का प्रत्येक सपना साकार होता है। दृढ़ संकल्प लेकर बढ़ता हुआ मनुष्य पत्थर को भी पानी बना देता है। पर्वतों को भी चकनाचूर कर देता है। महर्षि भगीरथ ने अगर घोर परिश्रम ना किया होता, तो भागीरथी गंगा स्वर्ग से धरती पर नहीं उतरती। धरती हरियाली से नहीं लहराती। परिश्रम से ही सब कुछ मिलता है। श्रम से ही कार्य की सिद्धि होती है। केवल दिवास्वप्न देखना और बड़े-बड़े संकल्पों को लेने से कुछ नहीं होता, अपितु परिश्रम करने से ही जीवन में सब कुछ प्राप्त होता है। जो मेहनती होते हैं, उन पर लक्ष्मी और सरस्वती दोनों की कृपा बरसती है। जीवन को सुख सुविधा पूर्ण बनाने के लिए कठिन परिश्रम की आवश्यकता होती है। सागर में डुबकी लगाने पर मोती हाथ लगता है। लहरों से भयभीत हो जाने वाला कभी भी मोती नहीं पा सकता। परिश्रम में ही आनंद है, परिश्रम तन और मन दोनों को स्वस्थ रखता है। सुंदर स्वस्थ एवं सफल जीवन की प्राप्ति के लिए हमें सदा परिश्रम करते रहना चाहिए।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. निबंध ..... साहित्य की एक विद्या है।

1. गद्य
2. पद्य
3. महाकाव्य
4. काव्य

2. निबन्ध का अंतिम भाग कहलाता है-

1. परिचय
2. निष्कर्ष
3. विषय-विस्तार
4. प्रस्तावना

3. अनुच्छेद किस विद्या का संक्षिप्त रुप है?

1. यात्रावृत्तांत
2. निबंध
3. डायरी
4. कहानी

4. अनुच्छेद लिखते समय क्या आवश्यक है?

1. अनावश्यक विषय-विस्तार
2. शब्द सीमा का ध्यान
3. बातों का दोहराव
4. अनेक पक्षों का वर्णन

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1 - 1, 2 - 2, 3 - 2, 4 - 2

Jharkhandlab.com

2. कार्यालयी पत्र

प्रश्न 1. कार्यालयी पत्र क्या होता है ?

उत्तर - कार्यालयी पत्र वे औपचारिक पत्र होते हैं। जो विभिन्न कार्यालयों से अपने कर्मचारियों, अधिकारियों या दूसरे कार्यालयों को भेजे जाते हैं। कार्यालयी पत्रों में भावात्मक, अलंकृत तथा मुहावरेदार भाषा के लिए कोई स्थान नहीं होता। कार्यालयी पत्रों में केवल विषय से संबंधित एवं तर्कसंगत बातें ही कही जाती हैं। इनका प्रयोग क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। केंद्र और राज्य सरकारों, राज्य एवं राज्य सरकारों, सचिवालय तथा विभिन्न सरकारी और निजी संस्थाओं आदि के बीच होने वाला संपूर्ण पत्राचार कार्यालयी पत्रों की परिधि में आता है।

प्रश्न 2. कार्यालयी पत्र कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर - सामान्यताः निम्नलिखित प्रकार के पत्रों को कार्यालयी पत्र के अंतर्गत रखा जाता है। शासकीय पत्र, अनुस्मारक, कार्यालय आदेश, कार्यालय ज्ञापन, अधिसूचना, अर्ध सरकारी पत्र, परिपत्र, टिप्पणी, सूचना, संपादक के नाम पत्र, प्रार्थना पत्र, आवेदन पत्र।

प्रश्न 3. कार्यालयी पत्र लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना पड़ता है ?

उत्तर- सबसे ऊपर बाएं ओर पत्र संख्या लिखी जाती है। उसके नीचे प्रेषक का नाम पद व पता लिखा जाता है। तत्पश्चात दिनांक लिखा जाता है। दिनांक के पश्चात प्रेषिती का नाम लिखा जाता है तथा दिनांक उसके नीचे होता है। दिनांक में महीने का नाम अंकों की बजाय शब्दों में लिखना प्रभावी होता है। इसके अंतर्गत कार्यालय या विभाग का नाम, पता इत्यादि लिखने के बाद 'सेवा में' लिखा जाता है। इसके पश्चात पत्र पाने वाले का नाम, पद और पता लिखा जाता है। फिर विषय के अंतर्गत उस बात की संक्षिप्त चर्चा की जाती है। जिसके लिए पत्र लिखा जा रहा है। पत्र पाने वाले को संबोधन करने के लिए महाशय, मान्यवर आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। संक्षिप्तता कार्यालयी पत्र की विशेषता है। पत्र की समाप्ति के बाद बाईं ओर भवदीय इत्यादि लिखकर पत्र लिखने वाले को अपना हस्ताक्षर करना होता है।

प्रश्न 4. अधिसूचना से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर - सामान्य जनता तथा सरकारी कार्यालयों की जानकारी के लिए जो सूचनाएं राजपत्र (गजट) में प्रकाशित की जाती है, उन्हें अधिसूचना कहते हैं। अधिसूचना द्वारा संवैधानिक नियमों और आदेशों की घोषणा की जाती है। इसमें राजपत्रित अधिकारियों की नियुक्ति, पदोन्नति, स्थानांतरण एवं प्रतिनियुक्ति का प्रकाशन किया जाता है। सरकारी अध्यादेशों, संकटकालीन घोषणाओं और अधिनियमों का प्रकाशन भी अधिसूचना द्वारा किया जाता है।

प्रश्न 5. परिपत्र क्या होता है ?

उत्तर - एक ही विषय का पत्र जब अनेक विभागाध्यक्षों को भेजा जाए तो वह परिपत्र कहलाता है। इसका प्रयोग उस स्थिति में किया जाता है, जब केंद्र सरकार को अन्य सरकारों से या एक मंत्रालय से अन्य मंत्रालयों को अथवा एक विभाग को एक समान सूचना या आदेश भेजने या मंगाने हों। इसका प्रेषक एक ही व्यक्ति होता है तथा पाने वाले कई होते हैं।

प्रश्न 6. अनुस्मारक किसे कहते हैं ?

उत्तर - किसी कार्यालय को भेजे गए पहले पत्र का उत्तर न आने की दशा में कार्यालय को पुनः मूल पत्र के संदर्भ में उसे स्मरण कराने के लिए जो दूसरा पत्र लिखा जाता है, उसे अनुस्मारक कहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं।

1. सरकारी पत्र के रूप में।
2. अर्ध सरकारी पत्र के रूप में।

प्रश्न 7. कार्यालय आदेश क्या होता है ?

उत्तर - वे पत्र जिनके द्वारा किसी भी मंत्रालय या विभाग के कर्मचारियों को आदेश दिए जाते हैं। कार्यालय के आंतरिक क्रियाकलापों हेतु कार्य का विभाजन तथा कर्मचारियों की नियुक्ति, प्रोन्नति, स्थानांतरण, अवकाश आदि की स्वीकृति संबंधी सूचनाओं के लिए कार्यालय आदेश जारी किए जाते हैं। कर्मचारियों द्वारा इनका अनुपालन करना आवश्यक होता है।

प्रश्न 8. 'टिप्पणी' किसे कहते हैं ?

उत्तर - कार्यालय में विचाराधीन पत्रों को शीघ्रता और सुगमता से निपटाने के लिए अधीनस्थ अधिकारी, कार्यालय सहायक या संबंधित लिपिक द्वारा उस पर लिखी गई अभ्युक्ति अथवा संक्षिप्त विवरण को 'टिप्पणी' कहते हैं।

प्रश्न 9. 'अर्ध सरकारी पत्र' क्या होता है ?

उत्तर - सरकारी कार्यालयों में जब किसी विषय पर कई बार लिखने के बावजूद अपेक्षित कार्रवाई नहीं होती तो उसके अंतरिम निस्तारण हेतु एक अधिकारी दूसरे अधिकारी को सरकारी भाषा में मैत्री भाव से जो पत्र लिखता है। वह पत्र अर्ध सरकारी पत्र कहलाता है।

प्रश्न 10. कार्यालय ज्ञापन से क्या समझते हैं ?

उत्तर - कार्यालयों से ज्ञापित सूचना या आदेश को 'कार्यालय ज्ञापन' कहते हैं। इसका प्रयोग प्रायः सरकार के विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों में पारस्परिक पत्र व्यवहार के लिए किया जाता है।

jharkhandlab.com

प्रश्न 11. प्रार्थना पत्र क्या है ?

उत्तर - प्रार्थना पत्र वस्तुतः आवेदन पत्र ही है जो विद्यालय, महाविद्यालयों के प्राचार्य अथवा संस्था या संगठन के प्रधान को किसी कार्यवश लिखा जाता है।

प्रश्न 12. आवेदन पत्र किसे कहते हैं ?

उत्तर - किसी पद हेतु आवेदक संस्थाओं के प्रमुख इत्यादि को जिस प्रारूप में आवेदन करता है उसे आवेदन पत्र कहते हैं।

प्रश्न 13. शासकीय(सरकारी) पत्र किसे कहते हैं ?

उत्तर - केंद्र सरकार द्वारा किसी राज्य सरकार को, राज्य सरकारों द्वारा केंद्र सरकार को, एक राज्य सरकार द्वारा किसी दूसरे राज्य सरकार को, केंद्र अथवा विभिन्न सरकारों के सचिवालय के अधिकारियों द्वारा विभिन्न अधीनस्थ कर्मचारियों को, न्यायालय, लोक सेवा आयोग, विभिन्न निदेशालय, महालेखाकार तथा अन्य स्वास्थ्य एवं अर्ध-स्वाधीन अधिकारियों को भेजे जाने वाले पत्र सरकारी या शासकीय पत्र कहलाते हैं।

प्रश्न14. किसी दैनिक समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखकर अपने क्षेत्र में बिजली वितरण की व्यवस्था की ओर बिजली अधिकारियों का ध्यान आकर्षित कीजिए।

परीक्षा भवन,
रांची (झारखंड)।
दिनांक 15 मार्च 2023

सेवा में,
संपादक महोदय,
हिंदुस्तान,
रांची।

विषय -विद्युत वितरण की अव्यवस्था और उससे उत्पन्न परेशानी हेतु।

महोदय,

आपके समाचार पत्र के माध्यम से मैं अपने क्षेत्र में विद्युत वितरण की अव्यवस्था और इससे होने वाली परेशानियों के विषय में सरकार और संबंधित विभाग को ध्यान दिलाना चाहती हूं। आशा है कि विषय की गंभीरता को देखते हुए आप इस पत्र को अपने समाचार पत्र में अवश्य प्रकाशित करेंगे। आजकल विद्युत वितरण विभाग की ओर से बिजली की अत्यधिक कटौती की जा रही है। बिजली की दिन की कटौती के साथ-साथ रात्रि में भी कटौती की जा रही है। इस गर्मी के मौसम में बिजली कि इस प्रकार की जाने वाली कटौती जनजीवन के लिए संकट उपस्थित कर रही है। विभिन्न क्षेत्रों में उद्योग, व्यापारिक संस्थान तथा विद्यालय आदि इससे बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं। मेरा सरकार और विद्युत विभाग के अधिकारियों से विनम्र अनुरोध है कि इस समस्या की गंभीरता को देखते हुए विद्युत आपूर्ति नियमित करने का प्रबंध किया जाए ताकि क्षेत्रवासियों को इस भयंकर गर्मी से राहत मिल सके।

धन्यवाद सहित
भवदीय
क ख ग

प्रश्न15. विद्यालय के प्रधानाचार्य को एक पत्र लिखिए, जिसमें शुल्क माफी हेतु निवेदन हो।

परीक्षा भवन,
रांची (झारखंड)।
दिनांक - 09 दिसंबर 2022

सेवा में,
प्रधानाचार्य,
संत जेवियर स्कूल,
डोरंडा, रांची(झारखंड)

विषय - शुल्क माफी हेतु निवेदन।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा 12 का छात्र हूं। हाई स्कूल दसवीं परीक्षा में मैंने राज्य की मेधा सूची में सातवां स्थान प्राप्त कर विद्यालय का नाम ऊंचा किया है। मेरे पिताजी पिछले 1 वर्षों से कैंसर जैसी बीमारी से जूझ रहे हैं जिस कारण हमारे परिवार की आर्थिक स्थिति दयनीय हो गई है। मैं विद्यालय का शुल्क देने में असमर्थ हूं। आपसे यह प्रार्थना है कि मेरा शुल्क माफ करके आगे अध्ययन जारी रखने में मेरी सहायता कर मुझे कृतार्थ करें।

धन्यवाद।
आपका आज्ञाकारी छात्र
क ख ग
क्रमांक - 15
कक्षा - 12. (ब)

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. कार्यालयी पत्रों की भाषा होनी चाहिए ?

1. अलंकृत 2. मुहावरेदार
3. औपचारिक 4. भावात्मक

2. अधिसूचना का अंग्रेजी अनुवाद है ?

1. स्टेटमेंट 2. नोटिस
3. एंड क्लोज 4. नोटिफिकेशन

3. परिपत्र किस श्रेणी का पत्र है ?

1. सामाजिक 2. कार्यालयी
3. व्यक्तिगत 4. पारिवारिक

4. अधिसूचना का प्रकाशन कहां होता है ?

1. सोशल मीडिया पर 2. तार पत्र
3. समाचार पत्र 4. राजपत्र(गजट)

5. टिप्पण कितने प्रकार के होते हैं ?

1. 2 2. 3
3. 4 4. 5

6. पूर्व में प्रेषित पत्र का उत्तर न आने की दशा में कार्यालय को पुनः स्मरण दिलाने के लिए भेजा गया पत्र क्या कहलाता है ?

jharkhandlab.com

1. निमंत्रण पत्र 2. परिपत्र
3. अनुस्मारक 4. ज्ञापन

7. कार्यालय पत्र में सबसे ऊपर लिखा जाता है ?

1. दिनांक 2. पत्र क्रमांक
3. कार्यालय का स्थान 4. प्रेषिति को संबोधन

8. परिपत्र किस शैली में लिखा जाता है ?

1. उत्तम पुरुष शैली में 2. मध्यम पुरुष शैली
3. अन्य पुरुष शैली 4. इनमें से कोई नहीं

9. एक ही विषय का पत्र जब एक स्थान से कई प्रेषितियों को भेजा जाता है तो इसे कहते हैं ?

1. ज्ञापन 2. विज्ञप्ति
3. परिपत्र 4. अधिसूचना

10. एक अधिकारी दूसरे अधिकारी को व्यक्तिगत शैली में पत्र लिखता है उसे कहते हैं ?

1. शासकीय पत्र 2. अर्ध शासकीय पत्र
3. टिप्पणी 4. कार्यालय ज्ञापन

11. सरकारी या शासकीय पत्र के अधोलेख में लिखा जाता है ?

1. शुभेच्छु 2. आपका
3. भवनिष्ठ 4. भवदीय

12. किस पत्र में प्रेषक एक ही व्यक्ति होता है तथा पाने वाले कई ?

1. परिपत्र 2. टिप्पणी
3. अनुस्मारक 4. कार्यालय ज्ञापन

13. कौन सा पत्र औपचारिक पत्र के अंतर्गत नहीं आता ?

1. अनुस्मारक 2. अधिसूचना
3. परिपत्र 4. व्यक्तिगत पत्र

14. प्रारूपण को कहा जाता है ?

1. नोटिस 2. रिपोर्ट
3. ड्राफ्टिंग 4. नोटिफिकेश

15. रिपोर्ट किसे कहते हैं ?

1. टिप्पण 2. प्रत्यावेदन
3. प्रतिवेदन 4. प्रारूपण

16. पत्र प्रारंभ करते समय संबंधित अधिकारी को संबोधित किया जाता है ?

1. प्रिय महोदय 2. महोदय
3. आदरणीय 4. श्रध्देय

17. सरकारी गजट में जनसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाशित होने वाले आलेख को कहते हैं ?

1. अधिसूचना 2. परिपत्र
3. कार्यालय-ज्ञापन 4. सरकारी पत्र

18. टिप्पण कार्य का अंतिम सोपान कहा जाता है?

1. प्रत्यावेदन 2. प्रतिवेदन
3. टिप्पन 4. प्रारूपण

19. गश्ती चिट्ठी या परिक्रमिक पत्र किस पत्र का अन्य नाम है?

1. टिप्पण 2. अधिसूचना
3. प्रारूपन 4. परिपत्र

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1 - 3,	2 - 4,	3 - 2,	4 - 4,	5 - 1,
6 - 3,	7 - 2,	8 - 3,	9 -3,	10- 2,
11 - 4,	12 - 1,	13 - 4,	14 - 3,	15 - 3,
16 - 2,	17 - 1,	18 - 4,	19 - 4	

Jharkhandlab.com

3. जनसंचार माध्यम

प्रश्न 1. इस पाठ में विभिन्न लोक- माध्यमों की चर्चा करते हुए आप पता लगाइए कि वे कौन-कौन से क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं? अपने क्षेत्र में प्रचलित किसी लोकनाट्य या लोक माध्यम के किसी प्रसंग के बारे में जानकारी हासिल करके उसकी प्रस्तुति के खास अंदाज के बारे में लिखें।

उत्तर - लोक नृत्य, लोक संगीत और लोकनाट्य प्रमुख लोक माध्यम हैं। यह देश के विभिन्न भागों में विविध नाट्यरूप कथावाचन, बाउल, सांग, रागिनी, तमाशा, लावनी, नौटंकी, जात्रा, गंगा गौरी, यक्षगान, कठपुतली, लोक नाटक आदि में प्रचलित है। इनमें स्वांग- उत्तर भारत, नौटंकी- उत्तर प्रदेश, बिहार, रागिनी- हरियाणा तथा यक्ष-गान कर्नाटक क्षेत्रों से संबंधित है। हमारे क्षेत्र में नौटंकी का प्रयोग खूब होता है। यह ग्रामीण नाट्य शैली का एक रूप है। इसमें प्रायः रात्रि के समय मंच पर किसी लोककथा या कहानी को नाट्य शैली में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें स्त्री पात्रों की भूमिका भी प्रायः पुरुष पात्र करते हैं। हारमोनियम, नगाड़ा, ढोलक आदि वाद्य यंत्रों के साथ यह संगीतमय प्रस्तुति लोक लुभावन होती है।

प्रश्न 2. आजादी के बाद भी हमारे देश के सामने बहुत सारी चुनौतियां हैं। आप समाचार पत्रों को उनके प्रति किस हद तक संवेदनशील पाते हैं ?

उत्तर - आजादी के बाद भी हमारे देश में बहुत सी चुनौतियां हैं। यह चुनौतियां हैं- निर्धनता से निपटने की चुनौती, बेरोजगारी से निपटने की चुनौती, भ्रष्टाचार की चुनौती, देश की एकता बनाए रखने की चुनौती, आतंकवाद का मुकाबला करने की चुनौती, संप्रदायिकता से निपटने की चुनौती।

प्रश्न 3. टी.बी. के निजी चैनल अपनी व्यवसायिक सफलता के लिए कौन-कौन से तरीके अपनाते हैं ? टी.वी. के कार्यक्रमों से उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर - टी. वी. के निजी चैनल अपनी व्यवसायिक सफलता के लिए लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने वाले कार्यक्रम दिखाते हैं। लोग ऐसे कार्यक्रमों की ओर आकर्षित होते हैं। यह चैनल कई बार लोगों की आस्था को भी निशाना बनाने से नहीं चूकते। इन कार्यक्रमों को टुकड़ों में दिखाते हुए ऐसे मोड़ पर समाप्त करते हैं, जिससे लोगों में उत्सुकता अगले कार्यक्रम के लिए बनी रहे। गत दिनों जम्मू कश्मीर में आई बाढ़ की खबरों तथा उन में फंसे नागरिकों को बचाने संबंधी खबरों को 6 दिनों तक टीवी पर दिखाया जाता रहा। इसी प्रकार अमेठी(उत्तर प्रदेश) के भूपति भवन पर अधिकार को लेकर संजय सिंह(राज्य सभा सांसद) और उनकी पहली पत्नी गरिमा सिंह, पुत्र अनंत विक्रम सिंह के मध्य हुए झगड़े और विवाद को कई बार दिखाया गया।

प्रश्न 4. इंटरनेट पत्रकारिता ने दुनिया को किस प्रकार समेट लिया है ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - इंटरनेट पत्रकारिता के कारण अब दूरिया सिमट कर रह गई है। इंटरनेट की पहुँच दुनिया के कोने-कोने तक हो गई है। इसकी रफ्तार बहुत तेज है। इसका असर पत्रकारिता पर भी हुआ है। इसकी मदद से स्टूडियो में बैठा संचालक किसी भी मुद्दे पर देश-विदेश में बैठे व्यक्ति से बातें कर लेता है और करा देता है। इसकी मदद से गोष्ठियां, वार्ताएं आयोजित की जाती है। इससे विश्व की किसी भी घटना की जानकारी अब आसान हो गई है।

प्रश्न 5. किन्हीं दो हिंदी पत्रिकाओं के समान अंकों को (समान अवधि के) पढ़िए और उनमें निम्न बिंदुओं में से किसी एक के आधार पर तुलना कीजिए।

आवरण पृष्ठ

अंदर के पृष्ठों की साज-सज्जा

सूचनाओं का क्रम

भाषा-शैली

उत्तर - हम 'सरिता' और 'इंडिया टुडे' पत्रिकाओं के समान अंकों को लेते हैं और तुलना करते हैं। आवरण पृष्ठ- सरिता पत्रिका का आवरण पृष्ठ अधिक रंग-बिरंगा, चित्रमय, आकर्षक और सुंदर है जबकि इंडिया टुडे का आवरण पृष्ठ अच्छा है पर उतना आकर्षक नहीं।

प्रश्न 6. निजी चैनलों पर सरकारी नियंत्रण होना चाहिए अथवा नहीं? पक्ष विपक्ष में तर्क प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर - निजी चैनलों पर नियंत्रण होने से उनका काम करने का दायरा एवं ढ़ग प्रभावित होगा। इससे उनकी निष्पक्षता पर भी असर पड़ेगा। उन्हें सरकारी दबाव में काम करना होगा, अतः हमारे विचार से निजी चैनलों पर सरकारी नियंत्रण नहीं होना चाहिए।

प्रश्न 7. नीचे कुछ कथन दिए गए हैं उनके सामने सही या गलत का निशान लगाते हुए उसकी पुष्टि के लिए उदाहरण भी दीजिए।

क - संचार माध्यम केवल मनोरंजन के साधन है। (गलत)

उदाहरण - संचार माध्यमों से हमें तरह-तरह का ज्ञान प्राप्त होता है, अतः ये केवल मनोरंजन के साधन नहीं है।

ख - केवल तकनीकी विकास के कारण संचार संभव हुआ, इससे पहले संचार संभव नहीं था। (गलत)

उदाहरण - संचार दो व्यक्तियों के बीच यहां तक अकेले भी होता है। इसके लिए तकनीकी विकास की आवश्यकता अनिवार्य नहीं थी। तकनीकी विकास बाद में सहायक बने हैं।

ग - समाचार- पत्र और पत्रिकाएं इतने सशक्त संचार माध्यम है कि वे राष्ट्र का स्वरूप बदल सकते हैं। (सही)

Jharkhandlab.com

उदाहरण- समाचार पत्र पत्रिकाएं घोटाले, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, सांप्रदायिकता आदि के विरुद्ध आवाज उठाकर राष्ट्र का स्वरूप बदल सकते हैं।

घ - टेलीविजन सबसे प्रभावशाली एवं सशक्त संचार माध्यम है। (सही)

उदाहरण - टेलीविजन आवाज और चित्र का संगम होने के कारण अमीर- गरीब, शहरी- ग्रामीण, युवा- वृद्ध सभी की पसंद बन गया है।

ङ - इंटरनेट सभी संचार माध्यमों का मिला जुला रूप या समागम है। (सही)

उदाहरण - इंटरनेट पर समाचार- संगीत,फिल्म, बैठक, गोष्ठी आदि देखा-सुना जा सकता है।

च - कई बार संचार माध्यमों पर नकारात्मक प्रभाव भी पड़ता है। (सही)

उदाहरण - इंटरनेट और टेलीविजन अपने कार्यक्रमों से समाज में अश्लीलता परोसने का काम कर रहे हैं।

प्रश्न 8. उल्टा पिरामिड शैली किसे कहते हैं ?

उत्तर - उल्टा पिरामिड शैली में समाचार पत्र के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सर्वप्रथम लिखा जाता है। इसके बाद घटते हुए महत्व क्रम में दूसरे तथ्यों या सूचनाओं को बताया जाता है। अर्थात् कहानी की तरह क्लाइमैक्स अंत में नहीं वरन खबर के प्रारंभ में आ जाता है। इस शैली के अंतर्गत समाचारों को तीन भागों में विभाजित किया जाता है। इंट्रो, बॉडी, समापन। इंट्रो- समाचार का मुख्य भाग होता है। बॉडी - घटते हुए क्रम में खबर को विस्तार से लिखा जाता है। समापन- अधिक महत्वपूर्ण न होने पर अथवा स्पेस न होने पर इसे काट कर छोटा भी किया जा सकता है।

प्रश्न 9. पत्रकार कितने तरह के होते हैं ?

उत्तर - पत्रकार तीन तरह के होते हैं।

1. पूर्णकालिक पत्रकार - इस श्रेणी के पत्रकार किसी समाचार संगठन में नियमित वेतन भोगी कर्मचारी होते हैं।
2. अंशकालिक पत्रकार - इस श्रेणी के पत्रकार किसी समाचार संगठन के लिए एक निश्चित मानदेय पर एक निश्चित समय अवधि के लिए कार्य करते हैं।
3. फ्रीलांसर पत्रकार- इस श्रेणी के पत्रकारों का संबंध किसी विशेष समाचार पत्र से नहीं होता बल्कि वे भुगतान के आधार पर अलग-अलग समाचार पत्रों के लिए लिखते हैं।

प्रश्न 10. जनसंचार के प्रमुख कार्य कौन-कौन से हैं ?

उत्तर - जनसंचार के प्रमुख कार्य इस प्रकार है।

सूचना देना - जनसंचार माध्यमों का एक प्रमुख कार्य सूचना देना है। हमें उनके जरिए भी दुनियाभर से सूचनाएं प्राप्त होती हैं। हमारी जरूरतों का बड़ा हिस्सा जनसंचार माध्यमों के जरिए ही पूरा होता है।

शिक्षित करना - जनसंचार माध्यम सूचनाओं के जरिए हमें जागरूक बनाते हैं। यहां शिक्षित करने से आशय उन्हें देश दुनिया के हाल से परिचित कराने और उनके प्रति सजग बनाने से है।

मनोरंजन करना - जनसंचार माध्यम मनोरंजन के प्रमुख साधन है। सिनेमा, टीवी, रेडियो, संगीत के टेप और किताबें आदि मनोरंजन के प्रमुख माध्यम है।

एजेंडा तैयार करना -किसी भी घटना या मुद्दे को चर्चा का विषय बना कर जनसंचार माध्यम सरकार और समाज को उस पर अनुकूल प्रतिक्रिया करने के लिए बाध्य कर देते हैं।

निगरानी रखना - अगर सरकार कोई गलत कदम उठाती है या संगठन/ संस्थान में कोई अनियमितता बरती जा रही है, तो उसे लोगों के सामने लाने की जिम्मेवारी जनसंचार माध्यम पर है।

विचार-विमर्श के मंच - जनसंचार विभिन्न विचार लोगों के सामने पहुंचाते हैं। जैसे किसी समाचार पत्र के संपादक के पृष्ठ पर किसी घटना या मुद्दे पर किसी विचार रखने वाले लेखक अपनी राय व्यक्त करते हैं। इसी तरह संपादक के नाम चिट्ठी स्तंभ में आम लोगों को अपनी राय व्यक्त करने का मौका मिलता है।

प्रश्न 11. जनसंचार मुद्रित माध्यमों की खूबियां और कमियां बताएं?

उत्तर - जनसंचार मुद्रित माध्यमों की खूबियां-

- शब्दों को हम एक बार ही नहीं अनेकों बार पढ़ सकते हैं।
- अपनी रुचि और समझ के अनुसार उस स्तर के शब्दों से परिचित हो सकते हैं।
- उसका अध्ययन चिंतन मनन किया जा सकता है।
- जटिल शब्द आने पर शब्दकोश का प्रयोग भी किया जा सकता है।
- चाहे तो किसी भी सामग्री को लंबे समय तक सुरक्षित भी रखा जा सकता है।

जनसंचार मुद्रित माध्यमों की कमियां-

- मुद्रित माध्यम की कमियां भी है जैसे अशिक्षित लोगों के लिए अनुपयोगी।
- टेलीविजन तथा रेडियो की भांति मुद्रित माध्यम तुरंत घटी घटनाओं की जानकारी नहीं दे पाता।
- समाचार पत्र निश्चित अवधि तक मात्र 24 घंटे में एक बार, साप्ताहिक सप्ताह में एक बार और मासिक माह में एक बार प्रकाशित किया जाता है।
- किसी भी खबर या रिपोर्ट के प्रकाशन के लिए एक डेट लाइन (समय सीमा) तय होती है।
- जबकि रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट माध्यम पर ऐसा प्रतिबंध

jharkhandlab.com

नहीं होता।

- महत्व एवं जगह की उपलब्धता के अनुसार किसी भी खबर को स्थान दिया जाता है।
- मुद्रित माध्यम में अशुद्धि होने पर सुधार हेतु अगले अंक की प्रतीक्षा करनी पड़ती है अन्य माध्यमों में तत्काल सुधार किया जा सकता है।

प्रश्न 12. टी.वी. खबरों के विभिन्न चरणों को बताएं?

उत्तर - टीवी में भी सूचनाएं चरणों से होकर दर्शकों के पास पहुंचती हैं। ये चरण हैं-

फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज- सबसे पहले कोई बड़ी खबर फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज़ के रूप में तत्काल दर्शकों तक पहुंचाई जाती है। इसमें कम से कम शब्दों में महत्त्वपूर्ण सूचना दी जाती है।

ड्राई एंकर -इसमें एंकर खबर के बारे में दर्शकों को सीधे-सीधे बताता है कि कहां, क्या, कब और कैसे हुआ ? जब तक खबर के दृश्य नहीं आते एंकर दर्शकों को रिपोर्टर से मिली जानकारियों के आधार पर सूचनाएं पहुंचाता है।

फोन इन - इसके बाद खबर का विस्तार होता है और एंकर रिपोर्टर से फोन पर बात करके सूचनाएं दर्शकों तक पहुंचाता है। इसमें रिपोर्टर घटना वाली जगह पर मौजूद होता है और वहां से उसे जितनी ज्यादा से ज्यादा जानकारियां मिलती है। वह दर्शकों को बताता है।

एंकर-विजुअल - जब घटना के दृश्य विजुअल मिल जाते हैं तब उन दृश्यों के आधार पर खबर लिखी जाती है। जिसे एंकर पढ़ता है। इस खबर की शुरुआत भी प्रारंभिक सूचना से होती है और बाद में कुछ वाक्यों पर प्राप्त दृश्य दिखाए जाते हैं।

एंकर-बाइट - बाइट यानी कथन टेलीविजन पत्रकारिता में बाइट का काफी महत्व है। टेलीविजन में किसी भी खबर को पुष्ट करने के लिए इससे संबंधित बाइट दिखाई जाती है। किसी घटना की सूचना देने और उसके दृश्य दिखाने के साथ ही इस घटना के बारे में प्रत्यक्षदर्शियों या संबंधित व्यक्तियों का कथन दिखा और सुना कर खबर को प्रमाणिकता प्रदान की जाती है।

लाइव - लाइव यानी किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण। सभी टीवी चैनल कोशिश करते हैं कि किसी बड़ी घटना का दृश्य तत्काल दर्शकों तक सीधे पहुंचाया जा सके। इसके लिए मौके पर मौजूद रिपोर्टर और कैमरामैन ओ. बी. वैन के जरिए घटना के बारे में दर्शकों को दिखाते और बताते हैं।

एंकर-पैकेज- पैकेज किसी भी खबर को संपूर्णता के साथ पेश करने का एक जरिया है। इसमें संबंधित घटना के दृश्य, इससे जुड़े लोगों की बाइट, ग्राफिक के जरिए जरूरी सूचनाएं आदि होती है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. संचार शब्द की उत्पत्ति 'चर' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है?

1 रुकना 2 चलना
3 बैठना 4 हटना

2. भारत में हिंदी का प्रथम समाचार पत्र कौन सा है?

1 दिग्दर्शन 2 उदंत मार्तंड
3 बनारस अखबार 4 मालवा समाचार

3. पी. टी. आई. क्या है ?

1 समाचार एजेंसी 2 गुप्तचर विभाग
3 पुलिस 4 साहित्यिक मंच

4. श्रव्य जनसंचार माध्यम कौन सा है ?

1 समाचार पत्र 2 रेडियो
3 इंटरनेट 4 टेलीविजन

5. मुद्रण का आरंभ किस देश में हुआ?

1 भारत 2 जापान
3 चीन 4 इंग्लैंड

6. भारत का पहला छापाखाना कब खुला?

1 सन 1556 2 सन 1542
3 सन 1542 4 सन1776

7. भारत का पहला छापाखाना कहां पर लगाया गया?

1 दिल्ली में 2 कोलकाता में
3 गोवा में 4 कानपुर में

8. भारत में पहली मूक फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' 1913 में बनाने का श्रेय किसको जाता है?

1 दादा साहब फाल्के 2 संजय दत्त
3 निशांत सेतु 4 सत्यजीत राय

9. भारत में बनी पहली बोलती फिल्म का नाम है?

1 आलम आरा 2 सत्य रायबल
3 द अराइवल ऑफ ट्रेन 4 हिंदुस्तानी

10. दूरदर्शन की रजत जयंती कब मनाई गई?

1 1984 2 1975
3 1970 4 1955

11. रेडियो कब अस्तित्व में आया?

1 1975 2 1982
3 1960 4 1895

12. हिंदी का पहला साप्ताहिक पत्र उदंत मार्तंड का संपादन 1826 ई. में किसने किया ?

1 राजाराम 2 जुगल किशोर शुक्ल
3 रामचंद्र शुक्ल 4 हजारी प्रसाद

Jharkhandlab.com

13. **संचार प्रक्रिया में आई बाधाओं को कहते हैं?**

1 शोर 2 संदेश
3 माध्यम 4 प्राप्तकर्ता

14. **संचार प्रक्रिया की शुरुआत किससे होती है ?**

1 संदेश 2 माध्यम
3 प्राप्तकर्ता 4 स्रोत या संचालक

15. **रेडियो जनसंचार का कौन सा माध्यम है?**

1 दृश्य 2 श्रव्य
3 दृश्य -श्रव्य 4 कोई नहीं

16. **पत्रकारिता दिवस कब मनाया जाता है ?**

1 30 मई 2 15 मई
3 7 जून 4 5 मई

17. **संचार के मुद्रण माध्यम में शामिल किया जाता है ?**

1 समाचार पत्र 2 पत्रिकाएं
3 पम्पलेट 4 ये सभी

18. **इंटरनेट पत्रकारिता का पहला दौर कब था ?**

1 1982 से 1992 2 1983 से 1985
3 1984 से 2018 4 1985 से 1986

19. **एक प्रसिद्ध संचार शास्त्री हैं?**

1 विल्वर श्रैम 2 जेम्स वेवर
3 जोसेफश्रैम 4 इनमे से कोई नहीं

20. **उल्टा पिरामिड शैली का प्रयोग किस लेखन में होता है ?**

1 पत्र 2 निबंध
3 समाचार वाचन 4 समाचार लेखन

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1 - 2,	2 - 2,	3 - 1,	4 - 2,	5 - 3,
6 - 1,	7 - 3,	8 - 1,	9 - 1,	10 - 1,
11 - 4,	12 - 2,	13 - 1,	14 - 4,	15 - 2,
16 - 1,	17 - 4,	18 - 1,	19 - 1,	20 - 4, ,

Jharkhandlab.com

4. संपादकीय लेखन

प्रश्न 1. संपादकीय लेखन से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर- यह समाचार पत्रों या पत्रिकाओं में एक खंड है, जिसमें लेखक या संपादक वर्तमान चर्चित विषयों पर अपनी राय साझा करते हैं । संपादकीय किसी भी समाचार पत्र का अत्यंत महत्वपूर्ण भाग होता है । यह किसी ज्वलंत मुद्दे या घटना पर समाचार पत्र के दृष्टिकोण व विचार को व्यक्त करता है । संपादकीय संक्षेप में तथ्यों और विचारों की ऐसी तर्कसंगत और सुरुचिपूर्ण प्रस्तुति है जिसका उद्देश्य मनोरंजन,विचारों को प्रभावित करना या किसी समाचार का ऐसा भाष्य प्रस्तुत करना है जिससे सामान्य पाठक उसका महत्व समझ सकें। संपादकीय को समाचार पत्रों का दिल और आत्मा माना जाता है।

प्रश्न 2. संपादकीय लेखन का क्या अर्थ है ?

उत्तर- संपादकीय लेखन का शाब्दिक अर्थ समाचार पत्र के संपादक के अपने विचार से है। प्रत्येक समाचार पत्र में संपादक प्रतिदिन ज्वलंत विषयों पर अपने विचार व्यक्त करते हैं । संपादक प्रतिदिन किसी ज्वलंत समस्या या प्रमुख समसामयिक घटनाक्रम पर संपादकीय लेखन करता है । इस लेख में समाचार पत्रों की नीति, सोच और विचारधारा को प्रस्तुत किया जाता है।

प्रश्न 3. संपादकीय लेखन की क्या विशेषताएं हैं ?

उत्तर- संपादकीय लेखन की निम्न विशेषताएं हैं–

1. संपादक द्वारा लिखा गया लेख ना अधिक बड़ा ना अधिक छोटा होता है।
2. एक आदर्श संपादकीय लेखन 800से 1000 शब्दों के बीच में होता है।
3. संपादकीय लेखन संक्षिप्त होते हुए भी अपने आप में पूर्ण होता है।
4. गंभीर विषय का संपादन भी सरल,सहज भाषा शैली में इस प्रकार करना चाहिए कि विषय पाठकों की समझ में आ जाए और वह उस विषय पर अपनी स्पष्ट राय बता सके।
5. लेखन का विषय प्रायः ज्वलंत समस्या या तात्कालिक घटनाक्रम से लिया जाता है।
6. प्रत्येक संपादक की अपनी शैली होती है । अपनी शैली में ही संपादक लेख लिखता है।
8. इसके बाद संपूर्ण समाचार का विस्तार किया जाता है और अंत में अपना विचार निष्कर्ष के रूप में दिया जाता है।

प्रश्न 4. संपादकीय का महत्व बताइए ।

उत्तर- 1. संपादकीय किसी भी गंभीर और अरुचिकर विषय को बहस योग्य बनाता है।
2. संपादकीय का स्वभाव आकर्षक होता है।
3. संपादकीय विचारोत्तेजक होते हैं और पाठक के मन में सवाल खड़े करते हैं।

प्रश्न 5. संपादकीय लेखन का कार्य किन रूपों में किया जाता है?

उत्तर संपादकीय लेखन का कार्य दो रूपों में किया जाता है ,एक जो संपादक कहना चाहता है और दूसरा वह उसे कैसे और किस रूप में कहना चाहता है। अतः सर्वप्रथम संपादक को विषय वस्तु का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। उसकी विषय पर गहरी पकड़ होनी चाहिए तथा उसमें विषय के पक्ष- विपक्ष में तर्क करने की क्षमता होनी चाहिए। संपादकीय में प्रस्तुतीकरण का अत्यधिक महत्व होता है। प्रस्तुतीकरण की पहली शर्त है संप्रेषणीयता। संप्रेषणीयता के साथ-साथ दूसरा महत्वपूर्ण तत्व है जन भावनाओं का ध्यान रखना। अतः प्रस्तुतीकरण ऐसा हो कि विषय वस्तु को सामान्य पाठक भी समझ जाएं और किसी की भावनाएं भी आहत ना हों।

प्रश्न 6. संपादकीय लेखन की प्रक्रिया को स्पष्ट कीजिए?

उत्तर- संपादकीय लेखन की प्रक्रिया को निम्नलिखित चरणों में बांटा जा सकता है-

(1) **विषय का चयन** : ज्वलंत व सामाजिक विषय को संपादकीय लेखन के लिए चुना जाता है ।विषय प्रादेशिक, राष्ट्रीय या अंतराष्ट्रीय महत्व का हो सकता है।

(2) **विषयानुरूप सामग्री का संकलन** : विषय निर्धारण के उपरांत सामग्री का संकलन किया जाता है। संपादक दिन-प्रतिदिन के घटनाओं पर पैनी नजर रखते हुए विभिन्न संदर्भ सामग्री के माध्यम से विषय वस्तु का संकलन करता है।

(3) **विषय प्रवेश एवं विस्तार** : संपादकीय के विषय प्रवेश में समस्या की ओर ध्यानाकर्षण किया जाता है। तदुपरांत तार्किक ढंग से विचारों एवं तर्क को प्रस्तुत करते हुए विषय वस्तु का विस्तार किया जाता है।

(4) **विषय का निष्कर्ष** : संपादकीय के अंतिम भाग में संपादक विषय, घटना या मुद्दे पर अपनी राय अथवा विचार रखता है। यह राय अथवा विचार पाठक के मस्तिष्क को उद्वेलित करने वाला होता है।

(5) **शीर्षक** : संपूर्ण लेखन के बाद संपादक अपने लेख के शीर्षक का निर्धारण करता है। शीर्षक निश्चय ही किसी लेख के लिए अति महत्वपूर्ण होता है। अतः संपादकीय का शीर्षक पाठक को प्रभावित करने वाला व विषय समग्रता को अपने आप में समाहित करने वाला होना चाहिए।

प्रश्न 7. संपादकीय के बिना समाचार पत्र का प्रकाशन अधूरा है कैसे ?

उत्तर- संपादकीय संपादक को पाठक के साथ जोड़ने की महत्वपूर्ण कड़ी है। गंभीर व चिंतन योग्य घटनाओं तथा मुद्दों को पाठक के समक्ष तार्किक ढंग से प्रस्तुत कर उसे सोचने के लिए प्रेरित करना संपादकीय का प्रमुख उद्देश्य होता है। संपादकीय के अभाव में समाचार पत्र मात्र सूचनाओं का

jharkhandlab.com

संवाहक मात्र बनकर रह जाता है। इसलिए कहा जा सकता है कि संपादकीय के बिना समाचार पत्र का प्रकाशन अधूरा है।

प्रश्न 8. किसी समाचार पत्र के लिए संपादकीय का क्या महत्व है?

उत्तर- संपादकीय को किसी समाचार पत्र की आवाज माना जाता है। यह एक निश्चित पृष्ठ पर छपता है , जो समाचार पत्र को पठनीय तथा अविस्मरणीय बनाता है। संपादकीय से ही समाचार पत्र के गुण-दोष व उसकी गुणवत्ता का निर्धारण किया जाता है। किसी समाचार पत्र के लिए इसकी महत्ता सर्वोपरि है।

प्रश्न 9. एक अच्छे संपादकीय में क्या गुण होने चाहिए?

उत्तर- एक अच्छे संपादकीय में निम्नलिखित गुण अवश्य होने चाहिए-

(1) संपादकीय लेख की शैली प्रभावशाली एवं सजीव होनी चाहिए ।
(2) भाषा बिल्कुल स्पष्ट,सशक्त और प्रखर होनी चाहिए।
(3) संपादकीय में समुचित विचार और विश्लेषण होना चाहिए।

प्रश्न 10. संपादकीय पृष्ठ पर क्या-क्या प्रकाशित होता है?

उत्तर- संपादकीय पृष्ठ पर निम्न सामग्री प्रकाशित होती है-

(1) संपादकीय लेख।
(2) विचारात्मक व विश्लेषणात्मक लेख -टिप्पणियाँ।
(3) स्तंभ लेख।
(4) संपादक के नाम पत्र।

बहुविकल्पीय प्रश्न

(1) अखबार की आवाज किसे माना जाता है?

1 आलेख 2 फीचर
3 संपादकीय 4 पत्र लेखन

(2) निम्न में से किसे समाचार पत्र की आत्मा कहा जाता है?

1 संपादकीय पृष्ठ 2 प्रथम पृष्ठ
3 बिजनेस पृष्ठ 4 स्थानीय पृष्ठ

(3) " संपादकीय किसी भी समाचार- पत्र या पत्रिका की रीति -नीति का दर्पण होता है।" यह कथन किसका है?

1 डॉ अर्जुन तिवारी 2 डॉ पृथ्वी नाथ पांडेय
3 डॉ विजय कुलश्रेष्ठ 4 डॉ हरिमोहन

(4) संपादक को उसके विविध कार्यों में सहायता प्रदान करना किसका कार्य है?

1 सहायक संपादक का 2 संयुक्त संपादक का
3 उप - संपादक का 4 इनमें से कोई नहीं

(5) संपादकीय लेखन का दायित्व किसका होता है?

1 सहायक संपादक का 2 संपादक का
3 1 और 2 दोनों 4 इनमें से कोई नहीं

(6) समाचार-पत्र में किस पृष्ठ पर संपादक के नाम पत्र प्रकाशित किए जाते हैं?

1 आर्थिक पृष्ठ पर 2 मुख्य पृष्ठ पर
3 खेल पृष्ठ पर 4 संपादकीय पृष्ठ पर

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1 - 3, 2 - 1, 3 - 4, 4 - 2, 5 - 3, 6 - 4

Jharkhandlab.com

5. रिपोर्ट (प्रतिवेदन) लेखन

प्रश्न 1. रिपोर्ट (प्रतिवेदन) क्या है?

उत्तर- 'रिपोर्ट' शब्द का हिंदी पर्याय 'प्रतिवेदन' है। प्रतिवेदन का सामान्य अर्थ या इसका मतलब किसी घटना या स्थिति की क्रमिक जानकारी अथवा रिपोर्ट प्रस्तुत करना है। हर समय देश विदेश में ऐसी घटनाएं होती रहती है, जिन को जानने के लिए हम उत्सुक रहते हैं लेकिन उसके लिए तथ्यों की जांच पड़ताल होना जरूरी होता है ,जो किसी सरकारी या गैर सरकारी एजेंसी द्वारा की जाती है ।ऐसे व्यक्तियों द्वारा प्रस्तुत विवरण को ही प्रतिवेदन या रिपोर्ट कहते हैं। जिस व्यक्ति या समूह द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जाता है उसे प्रतिवेदक कहते हैं।

समाचार संकलित कर उसे लिखकर प्रेस में भेजना रिपोर्टिंग कहलाता है। ज्यादातर यह कार्य फील्ड में जाकर किया जाता है। एक संवाददाता सेमिनार, रैली अथवा संवाददाता सम्मेलन से विविध प्रकार की खबरें एकत्रित करके उन्हें अपने कार्यालय में प्रेषित कर देता है। वास्तव में रिपोर्ट एक प्रकार की लिखित विवेचना होती है जिसमें किसी संस्था, सभा, दल, विभाग अथवा विशेष आयोजन की तथ्यों सहित जानकारी दी जाती है। रिपोर्टिंग का उद्देश्य संबंधित व्यक्ति, संस्था, परिणाम, जाँच अथवा प्रगति की सही एवं पूर्ण जानकारी देना है।

प्रश्न 2. रिपोर्ट (प्रतिवेदन) की आवश्यकता कब पड़ती है ?

उत्तर- आजकल प्रतिवेदन-लेखन एक महत्वपूर्ण कार्य है। प्रतिवेदक विभिन्न तथ्यों की जांच पड़ताल कर जो निष्कर्ष निकालता है उसे जनता के हितों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत करता है।

जब भी कोई विषय या मुद्दा सामान्य जनता के विरुद्ध होती है तो उस विषय की छानबीन करना आवश्यक हो जाता है ऐसी स्थिति में प्रतिवेदन की जरूरत पड़ती है।

प्रश्न 3. रिपोर्ट (प्रतिवेदन) के तत्व पर विचार कीजिए ।

उत्तर- क. घटना या स्थिति-यह किसी भी प्रतिवेदन का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है ।जब भी किसी घटना, समस्या या मुद्दे की जानकारी पर कार्यवाही की जाती है ,तभी प्रतिवेदन लिखा जाता है।

ख. समिति की नियुक्ति- किसी भी घटना की संपूर्ण जानकारी के लिए किसी व्यक्ति को जिम्मेदारी सौंपी जाती है ,या एक समिति की नियुक्ति कर के मामले की सच्चाई तक पहुंचने का प्रयास किया जाता है।

ग. पूर्ण जांच पड़ताल - जांच पड़ताल के माध्यम से ही समस्याओं की जड़ तक पहुंचना संभव हो पाता है। क्योंकि किसी भी समस्या के अनेक पहलू होते हैं, इसलिए उन सब को उजागर करना कठिन होता है।

घ. प्रमाण -प्रतिवेदन की प्रमाणिकता दिए गए सबूतों और तथ्यों पर निर्भर करता है।

च. सुझाव -सुझाव या सिफारिशों के माध्यम से ही समिति अपने विचारों को व्यक्त करती हैं।

छ. निश्चित अवधि- किसी भी प्रतिवेदन को निर्धारित समय में ही प्रस्तुत करना होता है।

प्रश्न 4. रिपोर्ट (प्रतिवेदन) के किन-किन विषयों पर तैयार की जा सकती है ?

उत्तर रिपोर्ट निम्नलिखित विषयों पर हो सकती है-

1. राजनीतिक, साहित्यिक, सामाजिक, आर्थिक भाषणों एवं सम्मेलनों की रिपोर्ट
2. खोजी समाचारों की रिपोर्ट
3. व्यावसायिक प्रगति अथवा स्थिति की रिपोर्ट
4. अदालतों की रिपोर्ट
5. अपराधिक मामलों की रिपोर्ट
6. युद्ध एवं विदेश यात्रा की रिपोर्ट
7. प्राकृतिक आपदा, दुर्घटना एवं दंगे की रिपोर्ट
8. पुस्तक प्रदर्शनी एवं चित्र प्रदर्शनी आदि की रिपोर्ट
9. संगीत सम्मेलन व कला संबंधी रिपोर्ट
10. प्रेस कॉन्फ्रेंस या संवाददाता सम्मेलन की रिपोर्ट।

प्रश्न 5. प्रतिवेदन लिखते समय किन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए।

उत्तर-

1. सर्वप्रथम संस्था और आयोजन स्थल का नाम लिखा जाना चाहिए।
2. बैठक या सम्मेलन का उद्देश्य स्पष्ट किया जाना चाहिए।
3. आयोजन अथवा घटना की तिथि और समय की सूचना दी जानी चाहिए।
4. कार्यक्रम एवं गतिविधियों की जानकारी दी जानी चाहिए।
5 तथ्यों का प्रामाणिक होना जरूरी है।
6. शीर्षक हमेशा छोटा और स्पष्ट होना चाहिए।
7.. यदि भाषण हो तो उनके मुख्य बिंदुओं के बारे में बताया जाए।
8.. घटना की व्याख्या सही क्रम में होनी चाहिए।
9.. प्रतिवेदन लिखते समय भाषा में प्रथम पुरुष का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
10. रिपोर्ट में उन्हीं तथ्यों को समावेश करना चाहिए जो महत्वपूर्ण है।
11. रिपोर्ट के अंत में सभा या दल संस्था के अध्यक्ष को हस्ताक्षर कर देना चाहिए।
12. रिपोर्ट की भाषा अलंकारिक तथा मुहावरेदार नहीं होनी चाहिए।

प्रश्न 6. एक अच्छे रिपोर्ट की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर- रिपोर्ट अपने आप में एक ऐसा दस्तावेज़ है जिसका महत्त्व

Jharkhandtab.com

मात्र समसामयिक नहीं होता। अपितु संबंधित क्षेत्र में सुदूर भविष्य तक भी इसकी उपयोगिता रहती है। रिपोर्ट की विशेषताओं का विवेचन नीचे किया जा रहा है –

1. **कार्य योजना**-रिपोर्टर को पहले पूरी योजना बनानी चाहिए। विषय का अध्ययन करके उसके उद्देश्य को समझना चाहिए। इसकी प्रारंभिक रूपरेखा बनाने से रिपोर्ट लिखने में सहायता मिलती है।

2. **तथ्यात्मकता**-रिपोर्ट तथ्यों का संकलन होता है। इसलिए सबसे पहले विषय से संबंधित महत्त्वपूर्ण तथ्यों की जानकारी लेनी पड़ती है। इसके लिए पुराने रिपोर्टों, फाइलों, नियम-पुस्तकों, प्रपत्रों के द्वारा आवश्यक सूचनाएँ इकट्ठी की जाती हैं। सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार द्वारा आँकड़ों और तथ्यों को प्राप्त किया जाता है। इन तथ्यों को रिकार्ड किया जाए और आवश्यकता पड़े तो इनके फोटो भी लिए जा सकते हैं।

3. **प्रामाणिकता**-तथ्यों का प्रामाणिक होना अत्यंत आवश्यक है। किसी विषय, घटना अथवा शिकायत आदि के बारे में जो तथ्य जुटाए जाएँ, उनकी प्रामाणिकता से रिपोर्ट की सार्थकता बढ़ जाती है।

4. **निष्पक्षता**-रिपोर्ट एक प्रकार से वैधानिक अथवा कानूनी दस्तावेज़ बन जाती है। इसलिए रिपोर्टर का निर्णय विवेकपूर्ण होना अत्यंत आवश्यक है। रिपोर्ट लिखते समय या प्रस्तुत करते समय रिपोर्टर प्रत्येक तथ्य, वस्तुस्थिति, पक्ष-विपक्ष, मत-विमत का निष्पक्ष भाव से अध्ययन करे और फिर उसके निष्कर्ष निकाले। इस प्रकार प्रत्येक स्थिति में उसका यह नैतिक दायित्व हो जाता है कि वह नीर-क्षीर विवेक का परिचय दे। इससे रिपोर्ट उपयोगी होगा और मार्गदर्शक भी सिद्ध होगा।

5. **विषयनिष्ठता**-रिपोर्ट का संबंधित प्रकरण पर ही केंद्रित होना अपेक्षित है। यदि किसी विषय-विशेष पर रिपोर्ट लिखा जाना है तो उससे संबंधित तथ्यों, कारणों और सामग्री आदि तक ही सीमित रखना चाहिए। इसमें प्रकरण को एक सूत्र की तरह प्राप्त तथ्यों में पिरोया जाए, जिससे प्रकरण अपने-आप में स्पष्ट होगा।

6. **निर्णयात्मकता**-रिपोर्ट मात्र विवरण नहीं होती। इसलिए रिपोर्टर को संबंधित विषय का विशेष जानकार होना आवश्यक है। यदि वह विशेषज्ञ होगा तो साक्ष्यों और तथ्यों का सही या गलत अनुमान लगा पाएगा तथा उनका विश्लेषण करने में समर्थ होगा। साथ ही वह प्राप्त तथ्यों, साक्ष्यों और तर्कों का सम्यक परीक्षण कर पाएगा और अपने सुझाव तथा निर्णय भी दे पाएगा।

7. **संक्षिप्तता और स्पष्टता**-रिपोर्ट लिखते समय यह ध्यान रखा जाए कि उसमें अनावश्यक विस्तार न हो। प्रत्येक तथ्य या साक्ष्य का संक्षिप्त और सुस्पष्ट विवरण दिया जाए। यदि रिपोर्ट काफी लंबा हो गया हो तो उसका सार दिया जाए जिससे प्राप्त तथ्यों और सुझावों पर ध्यान तुरंत आकृष्ट हो सके। लेकिन अस्पष्ट सूचना या विवरण से उद्देश्य पूरा नहीं हो पाता। अत: रिपोर्ट संक्षिप्त होते हुए भी अपने आप में स्पष्ट और पूर्ण होनी चाहिए।

प्रश्न 7. अपने मोहल्ले में हुई चोरी की वारदात पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।

उत्तर- गत 20 जून, 2023 को हमारे मोहल्ले में लाला खजूरी दास के यहाँ चोरी हो गई। चोरी रात के लगभग 12 बजे हुई। घर के सभी लोग शादी समारोह में गए थे। हमारे मोहल्ले में हर रोज रात 11 बजे से 2 बजे तक बिजली गुल हो जाती है। चोरों ने इसका भरपूर फायदा उठाया। वे पीछे के दरवाज़े से कोठी में दाखिल हुए। उन्होंने घर की प्रत्येक चीज़ का मुआयना किया। वे अपने साथ 50,000 रुपये नकद, 21 तोले सोना और अन्य कीमती सामान ले गए। लाला जी को चोरी की बात सुबह 2:30 बजे पता चली जब वे वापिस लौटे। वे कुछ गणमान्य व्यक्तियों को साथ लेकर थाने में पहुँचे। पुलिस ने चोरी की रिपोर्ट दर्ज कर ली है। वह चोरों की तलाश में जुट गई है। इंस्पेक्टर महोदय ने आश्वासन दिया है कि जल्द ही चोरों को पकड़ लिया जायेगा।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. **रिर्पोट प्रस्तुतीकरण की प्रक्रिया क्या कहलाती है?**

1. संवाद	2. संपादकीय
3. समाचार	4. रिपोर्टिंग

2. **रिपोर्ट क्या है?**
   1. किसी घटना की तथ्यात्मक जानकारी
   2. किसी घटना का मनोरंजनपूर्ण प्रस्तुतीकरण
   3. किसी घटना के कारणों का काल्पनिक प्रस्तुतीकरण
   4. इनमें से सभी

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1 - 4, 2 - 1

jharkhandlab.com

6. आलेख लेखन

प्रश्न- 1. आलेख से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- आलेख गद्य लेखन की विधा है। आलेख दो शब्दों से मिलकर बना है-आ +लेख।'आ' उपसर्ग यह प्रकट करता है कि लेख सर्वांगपूर्ण और सम्यक् हो और लेख अर्थात किसी एक विषय पर उससे संबंधित विचार।अतः 'आलेख' गद्य लेखन की वह विधा है, जिसमें किसी एक विषय पर सर्वांगपूर्ण तथा सम्यक् विचार होते हैं। आलेख किसी भी क्षेत्र से संबंधित हो सकते हैं जैसे- खेल, राजनीति, फिल्म आदि। आलेख में विषय की तथ्यात्मक, विश्लेषणात्मक अथवा विचारात्मक जानकारी होती है।

आलेख समाचारेत्तर साहित्य और उससे भिन्न पत्रकारीय लेखन का ही एक विशिष्ट रूप है, जिसमें विविध तत्वों जैसे- प्रामाणिकता,गंभीरता, बौद्धिकता, बहुआयामी व्यापकता एवं सामाजिकता की उपस्थिति अनिवार्य होती है। इन तत्वों की उपस्थिति में ही आलेख अपना पूर्ण स्वरूप ग्रहण करता है।

आलेख में मुख्य रूप से दो अंग प्रयुक्त होते हैं । प्रथम अंग है भूमिका तथा द्वितीय व महत्वपूर्ण अंग है विषय का प्रतिपादन।भूमिका के अंतर्गत शीर्षक का अनुरूपण किया जाता है तथा विषय के प्रतिपादन में विषय का क्रमिक विकास तारतम्यता और क्रमबद्धधता का ध्यान रखा जाता है तथा अंत में तुलनात्मक विश्लेषण करके निष्कर्ष निकाला जाता है।

प्रश्न-2. एक अच्छे आलेख में कौन-कौन से गुण होते हैं?

उत्तर- एक अच्छे एवं सार्थक आलेख में निम्नलिखित गुण अथवा विशेषताएं होती हैं-

1. एक अच्छा आलेख नवीनता और ताजगी से भरा होता है।
2. उसमें जिज्ञासा उत्पन्न करने की शक्ति होती है।
3. विचार स्पष्ट होते हैं।
4. भाषा अत्यंत सरल, सुगम तथा प्रभावी होती है।
5. विचारों की पुनरावृत्ति नहीं होती।

प्रश्न-3. आलेख और फीचर में क्या अंतर है?

उत्तर- आलेख का विषय विवेचन विस्तृत और गहन रूप से होता है।इसका लेखन करते समय विभिन्न पुस्तकों, आकड़ों, तथ्यों का अध्ययन करना पड़ता है। फीचर लेखन में लेखक को अपने आंख, कान, भावनाओं, अनुभूतियों, मनोवेगों और अंवेषणों का सहारा लेना पड़ता है।

आलेख की भाषा शैली गंभीर और नीरस होती है जबकि फीचर मनोरंजक, अनौपचारिक बातचीत की शैली में लिखा जाता है।

आलेख में सामान्यतः किसी समस्या विशेष या उसके अन्य किसी पहलू का सूक्ष्म एवं गहन अध्ययन होता है किंतु फीचर में विषय के अधिक गहराई में जाना अनुपयुक्त समझा जाता है।

आलेख में बौद्धिकता की प्रधानता होती है, तो फीचर में बौद्धिकता के स्थान पर हृदय पक्ष को विशेष महत्व दिया जाता है।

आलेख लेखक अपनी राय प्रत्यक्ष रूप से रख सकता है, लेकिन फीचर लेखक पाठकों को ही विचार करने के लिए बाध्य करता है, स्वयं उसमें समाविष्ट नहीं होता।

प्रश्न 4. निम्नलिखित विषयों पर आलेख लिखिए-

क. जीवन संघर्ष है, स्वप्न नहीं

मनुष्य का जीवन वास्तव में सुख-दुख, आशा-निराशा, उत्थान-पतन आदि का मिश्रण है।जीवन एक निरंतर चलने वाले संघर्ष का नाम है। जीवन की गति अविरल है। समय के साथ-साथ आगे बढ़ते रहने की प्रबल मानवीय लालसा ही जीवन है। जीवन में अनेक ऊंचे-नीचे रास्ते एवं अनेक बाधाएं आती रहती हैं। इन्हीं बाधाओं से संघर्ष करते हुए जीवन आगे बढ़ता रहता है। यही कर्म है व यही सत्य है। जीवन में आने वाली बाधाओं से घबराकर रुक जाने वाला या पीछे हट जाने वाला व्यक्ति कभी भी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। निरंतर उत्साह, उमंग, विश्वास, प्रेम एवं साहस के साथ जीवन को जीना ही जीवन का सार है।

जीवन सत्य है जबकि स्वप्न काल्पनिक व अवास्तविक है। स्वप्न का महत्व केवल वहीं तक है, जहां तक वह मनुष्य के जीवन को आगे बढ़ाने में प्रेरक होता है। मनुष्य स्वप्न के माध्यम से ही ऐसी कल्पनाएं करता है, जो अवास्तविक होती हैं, लेकिन उस काल्पनिक लोक को वह अपने परिश्रम उमंग एवं दृढ़ इच्छाशक्ति से यथार्थ एवं वास्तविकता में परिवर्तित कर देता है। वास्तविक जीवन एक कर्तव्य पथ है, जिसके मार्ग में अनेक फूल बिखरे पड़े हैं, लेकिन मनुष्य की इच्छा शक्ति एवं दृढ़ संकल्प बाधाओं व कांटों की परवाह नहीं करता और उन्हें रौंद कर आगे निकल जाता है।

जीवन संघर्ष की लंबी साधना है। यह संघर्ष तब तक बना रहता है, जब तक मनुष्य के शरीर में सांस चलती रहती है। आदिम अवस्था में अंधकारमय गुफा में निवास करने वाला मनुष्य जीवन के संघर्ष के मार्ग से गुजरकर ही सभ्यता के ऊंचे दुर्गों का निर्माण कर सकता है। संघर्ष के मार्ग में ही हमें जीत की ऊंची चोटियां मिलती हैं। प्रकृति एवं प्रतिकूल परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए ही मनुष्य ने समाज एवं परिवार के विकास की लंबी गाथाएं लिखी हैं। मनुष्य जीवन का सबसे महान आदर्श है- अंधकार से प्रकाश की ओर चलना व ज्ञान की अमरता की ओर बढ़ना, इस प्रक्रिया में उसे निरंतर संघर्ष से गुजरना पड़ता है। संघर्ष है, इसलिए गति है, और गति है, तो जीवन है।

जीवन वृत्ति स्वप्न की भांति असत्य नहीं है। सपने अल्पकालीन एवं परिवर्तनशील होते हैं। जीवन व्यवहार है, जिसमें सत्य समाहित होता है। यहां बिना परिश्रम किए और बिना मूल्य चुकाए कुछ भी प्राप्त नहीं होता। अतः कहा जा सकता है कि जीवन स्वप्न तथा अयथार्थ या काल्पनिक नहीं, बल्कि वास्तविकता का कटु यथार्थ है, जहां कदम- कदम पर कुछ भी प्राप्त करने के लिए संघर्ष से गुजरना ही पड़ता है।

jharkhandlab.com

2 बचत का महत्व

आज समाज में उपभोक्ता संस्कृति का प्रचार-प्रसार होने से सामाजिक ढांचे में आमूल -चूल परिवर्तन हुआ है। पुरानी पीढ़ी की सोच 'सादा जीवन, उच्च विचार' नई पीढ़ी में बदलने लगी है। आज लोग अपने सुख-सुविधाओं के लिए आमदनी से अधिक खर्च करने लगे हैं, जिसके कारण जीवन में अर्थाभाव बना रहता है। मनुष्य के ऊपर कर्ज हो जाता है और व्यक्ति अनेक मानसिक परेशानियों का शिकार हो जाता है।

नई पीढ़ी भौतिकवादी दृष्टिकोण की पक्षधर होती जा रही है। उनकी सोच 'खाओ, पीओ और मौज मनाओ' के सिद्धांत पर आधारित हो चली है। विज्ञापित और ब्रांडेड वस्तु की चाहत में आज का युवा वर्ग कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाता है। अपनी इच्छा पूर्ति के लिए उसे न अपने चरित्र का ध्यान रहता है और न ही कर्त्तव्यों का। स्वार्थ में डूबा आज का युवा बचत जैसी कोई योजना नहीं अपनाता। मेहनत से अर्जित धन बर्बाद करता हुआ, विनाश की ओर बढ़ता जाता है।

बचत का तात्पर्य यह बिल्कुल नहीं है कि व्यक्ति अपनी सुख-सुविधाओं को एक और रखकर केवल धन संचय करने में लगा रहे। यहां बचत से तात्पर्य है कि व्यक्ति अपनी आय में से सभी खर्चों को पूरा करने के बाद भी कुछ बचाने की चेष्टा करे। आज की अल्प बचत भी भविष्य में एक बड़ी राशि बन जाती है। कहा भी जाता है कि 'बूंद- बूंद से घड़ा भर जाता है'।

आज खर्च के जितने कारण हैं, बचत केउतने उपाय भी हैं। बुद्धिमान मनुष्य उनमें से किसी भी साधन को अपनाकर बचत कर सकता है। बैंकों, बीमा योजनाओं, म्यूच्यूअल फंड आदि उपायों से बचत करने पर धन केवल बचाया ही नहीं जाता वरन ब्याज मिलने से बढ़ाया भी जाता है। अपनी जमाराशि को व्यक्ति जब चाहे उपयोग में ला सकता है। बचत के अनेकानेक लाभों को देखते हुए प्रत्येक व्यक्ति को बचत करनी चाहिए और जीवन को सही मार्ग पर ले जाना चाहिए।

(ग) जनसंख्या वृद्धि समस्या और समाधान

भारत एक विशाल देश है, जिसमें भिन्न भिन्न प्रकार की समस्याएं व्याप्त हैं, जिनमें से एक है-जनसंख्या वृद्धि। जनसंख्या वृद्धि देश के विकास में बाधा का कार्य करती हैं, इसलिए हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता जनसंख्या वृद्धि को रोकना है। इस क्षेत्र में हमारे सभी प्रयत्न निष्फल रहे हैं। ऐसा क्यों है? यह इसलिए भी हो सकता है, क्योंकि समस्या को देखने का हर एक का अलग दृष्टिकोण है। जनसंख्याशास्त्रियों के लिए यह आंकड़ों का अंबार है। अफसरशाही के लिए यह टारगेट तय करने की कार्यविधि है। राजनीतिज्ञ इसे वोट बैंक की दृष्टि से देखता है। यह सब अपने-अपने ढंग से समस्या को सुलझाने में लगे हैं। अतः पृथक-पृथक किसी के हाथ सफलता नहीं लगी।

परंतु यह स्पष्ट है कि परिवार के आकार पर आर्थिक विकास और शिक्षा का बहुत प्रभाव पड़ता है। यहां आर्थिक विकास का तात्पर्य पश्चात मतानुसार भौतिकवाद नहीं जहां बच्चों को बोझ माना जाता है। हमारे लिए तो यह सम्मानपूर्वक जीने के स्तर से संबंधित है। यह मौजूदा संपत्ति के समतामूलक विवरण पर ही निर्भर नहीं है वरन ऐसी शैली अपनाने से संबंधित है जिसमें 80 करोड़ लोगों की ऊर्जा का बेहतर उपयोग हो सके। इसी प्रकार स्त्री -शिक्षा भी है।यह समाज में एक नए प्रकार का चिंतन पैदा करेगी, जिससे सामाजिक और आर्थिक विकास के नए आयाम खुलेंगे और साथ ही बच्चों के विकास का नया रास्ता भी खुलेगा। अतः जनसंख्या की समस्या सामाजिक है। इसे सरकार अकेले नहीं सुलझा सकती। केंद्रीकरण से हटकर इसे ग्राम- ग्राम, व्यक्ति -व्यक्ति तक पहुंचाना होगा। जब तक यह जन -आंदोलन नहीं बन जाता, तब तक सफलता मिलना संदिग्ध है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. एक आलेख लेखन की भाषा कैसी होनी चाहिए?

1. सरल 2. सुगम
3. प्रभावी 4. यह सभी

2. निम्नलिखित में से कौन -सा तत्व आलेख लेखन का तत्व नहीं है?

1. गंभीरता 2. बौद्धिकता
3. बहुआयामी 4. मनोरंजकता

3. आलेख एक विधा है -

1. गद्य लेखन की 2. पद्य लेखन की
3. लघुकथा लेखन की 4. रिपोर्ट और लेखन की

4. आलेख के लिए अंग्रेजी में कौन सा शब्द प्रयुक्त होता है?

1. फीचर 2. आर्टिकल
3. रिपोर्ट 4. नोटिस

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1 - 4, 2 - 4, 3 - 1, 4 - 2

Jharkhandlab.com

7. पुस्तक समीक्षा

प्रश्न 1. पुस्तक समीक्षा की परिभाषा (डेफिनेशन ऑफ बुक रिव्यू) बताएँ।

उत्तर- किसी भी पुस्तक जैसे कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक, एकांकी, यात्रावृत्तांत इत्यादि किसी भी पुस्तक के बारे में पढ़कर उसके सभी अच्छे एवं बुरे पहलुओं के बारे में अवलोकन कर विचार प्रस्तुत करना पुस्तक समीक्षा कहलाता है।

प्रश्न 10. पुस्तक समीक्षा क्या है ?

उत्तर- पुस्तक समीक्षा पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाली समस्याओं में प्रमुख स्थान रखती है। पुस्तक समीक्षा में किसी पुस्तक का सम्यक् विश्लेषण किया जाता है। इस विश्लेषण से पाठक को पुस्तक विशेष के विभिन्न पहलुओं की जानकारी मिलती है। पुस्तक समीक्षा में एक पुस्तक की पूरी छानबीन की जाती है। समीक्षक पाठक को पुस्तक से परिचित कराता है। इस क्रम में वह पुस्तक के लेखक, विषय वस्तु, शिल्प, प्रकाशन स्तर, आदि पर प्रकाश डालता जाता है। इसके साथ ही वह समग्र रूप में पुस्तक का आलोचनात्मक मूल्यांकन भी करता है। इस प्रकार पुस्तक विशेष के संबंध में समीक्षक अपनी राय भी व्यक्त करता है। पुस्तक समीक्षा का पहला और प्राथमिक दायित्व पाठकों को पुस्तक से परिचित कराना है, लेकिन परिचय का अर्थ पुस्तक की विषय वस्तु का सारांश भर देना नहीं है निश्चय ही पुस्तक की विषय वस्तु के बारे में जानने की उत्सुकता है। पाठकों को पुस्तक समीक्षा पढ़ने के लिए प्रेरित करती है, परंतु यह भी सही है कि वह समीक्षा के द्वारा पुस्तक की विषय वस्तु संरचना और भाविक सर्जनात्मक के संबंध में समीक्षक की विशेषज्ञता पूर्ण राय जानना चाहता है।

वह समीक्षक से विश्लेषण और आलोचनात्मक विवेचन की भी अपेक्षा रखता है। इसलिए समीक्षा लिखते समय समीक्षक को सतर्क रहना चाहिए कि उसकी समीक्षा पुस्तक का सारांश मात्र बनकर न रह जाए।

प्रश्न 3. पुस्तक समीक्षा का महत्व बताएँ।

उत्तर- साहित्य में पुस्तक समीक्षा की अहम भूमिका होती है। समीक्षा पाठक और पुस्तक को एक दूसरे से जोड़ती है। पाठक के सामने बराबर यह समस्या रहती है कि वह कौन सी किताब पढ़े। इसके इसलिए सवाल का समाधान पुस्तक समीक्षा कर देती है।

इसके अलावा पाठक वर्ग का एक हिस्सा भी होता है, जो पूरी किताब नहीं पढ़ना चाहता है या उसके पास इतना समय नहीं है कि वह सभी पुस्तकों को पढ़ें। यहां समीक्षा उसकी मदद करती है। इस प्रकार एक बार में पुस्तक को ढेर सारे पाठकों तक पहुंचा देती है। इसके दो फायदे होते हैं एक तो पाठक को प्रकाशित होने वाली पुस्तकों की जानकारी मिल जाती है, दूसरे वह नए लेखकों के और रुझानों से भी परिचित होता चला जाता है। साहित्य, संस्कृति, विज्ञान, समाज विज्ञान, खेलकूद आदि क्षेत्रों से संबंधित पुस्तकों की जानकारी समीक्षा के माध्यम से पाठकों तक पहुंचती है। पुस्तकों के इस व्यापक संसार में पाठक के लिए सही पुस्तक का चुनाव मुश्किल काम है। समीक्षा इस मुश्किल को कम करती है, इसके अतिरिक्त वह लेखक को पाठक से जुड़ने का सामाजिक दायित्व भी निभाती है। साथ ही इसकी मदद से पाठक किसी लेखक या कृति के बारे में अपनी समझ विकसित कर सकता है और अपनी राय बना सकता है।

प्रश्न 4. पुस्तक समीक्षा की विशेषताएं बताएँ।

उत्तर- एक अच्छी समीक्षा में निम्न गुणों अथवा विशेषताओं का होना जरूरी है-

1. विषय वस्तु का संगणन, तार्किक तथा मनोवैज्ञानिक हो, विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण पाठकों के मानसिक स्तर के अनुरूप हो।
2. व्याख्या स्पष्टीकरण, उदाहरणों की मदद से विषय का सरलीकरण हो , तथा भाषा शैली में सरलता, स्पष्टता मौलिकता एवं प्रभावशीलता हो।
3. विषय वस्तु से संबंधित आधुनिकतम घटनाओं तथा समस्याओं पर बल दिया गया हो।
4. चिंतन तथा नवीन विचारों का प्रस्तुतीकरण हो
5. विषय वस्तु से किसी की भी भावनाओं को आघात न पहुंचाना अर्थात् निरपेक्षता की भावना पर ध्यान देना।

प्रश्न 5. पुस्तक समीक्षा के उद्देश्य बताएँ।

उत्तर-

1. पाठकों को पुस्तक अथवा पुस्तक की विषय वस्तु से परिचित कराना।
2. लेखक के रचनात्मकता एवं लेखन शैली को उजागर करना।
3. यदि संपूर्ण रूप से देखा जाए तो लेखक की योग्यता, विषय वस्तु का संगठन, प्रस्तुतीकरण, पठनीयता, शुद्धता, दृष्टांतता, अनुकूलनीयता इत्यादि का अवलोकन कर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाना।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. साहित्यिक समालोचना क्या कहलाती है?

1. संपादकीय
2. कहानी लेखन
3. पुस्तक समीक्षा
4. पत्रकारिता

प्रश्न 2. पुस्तक समीक्षा को अंग्रेजी में क्या कहा जाता है?

1. बुक रिव्यू
2. फीचर
3. पोस्टर
4. बुक राइटिंग

प्रश्न 3. पुस्तक समीक्षा करनेवाला क्या कहलाता है?

1. लेखक
2. पत्रकार
3. समीक्षक
4. संवाददाता

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1 - 3, 2 - 1 3 - 3

Jharkhandtab.com

8. फीचर लेखन

प्रश्न 1. फीचर लेखन से क्या समझते हैं ?

उत्तर- फीचर लेखन हिंदी पत्रकारिता का एक महत्वपूर्ण विधा है। समाचार पत्र की भांति फीचर भी मानव जीवन को प्रभावित करने वाली गतिविधि है। फीचर मनोरंजक ढंग से लिखा नवीन लेख है, जो स्वतंत्रता के बाद विकसित हुआ है। फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करने के साथ-साथ मुख्य रूप से उनका मनोरंजन करना होता है।

फीचर पाठक की चेतना को ही नहीं जगाता बल्कि उनकी भावनाओं और संवेदनाओं को जागृत करता है। इसमें लेखक पाठक को अपने अनुभव से समाज का परिचय कराता है। यह सूचनाओं को संप्रेषित करने का साहित्यिक रूप है।

प्रश्न 2. फीचर लेखन की शैली कैसी होती है ?

उत्तर- फीचर लेखन का कोई एक ढाँचा या फार्मूला नहीं होता है। फीचर लेखन की शैली काफी हद तक कथ्यात्मक शैली की तरह है। फीचर लेखन की भाषा समाचारों के विपरीत सरल, रूपात्मक, आकर्षक और मन को छूने वाली होती है। फीचर की भाषा में समाचारों की सपाटबयानी नहीं चलती है। फीचर आमतौर पर समाचार रिपोर्ट से बड़े होते हैं । अखबारों और पत्रिकाओं में 250 शब्दों से लेकर 2000 शब्दों तक के फीचर छपते हैं।

फीचर एक ट्रीटमेंट है ।विषय या मुद्दे की जरूरत के अनुसार लिखा जाता है ।कुछ हल्के-फुल्के समाचार भी फीचर शैली में लिखा जा सकता है।

प्रश्न 3. फीचर के प्रकारों की चर्चा कीजिए।

फीचर के प्रकार

(1) व्यक्तिगत फीचर
(2) समाचार परक फीचर
(3) ऐतिहासिक फीचर
(4) विज्ञान परक फीचर
(5) खेलकूद परक फीचर
(6) सांस्कृतिक फीचर
(7) हास्य व्यंग्यपरक फीचर
(8) व्याख्यान फीचर

प्रश्न 4. एक अच्छे फीचर की विशेषताएँ बताईए ।

एक अच्छे फीचर लेखन की विशेषताएं

(1) मनोरंजक होना चाहिए
(2) ज्ञानवर्धक होना चाहिए
(3) भावात्मक हो
(4) मानवीय रूचि पर आधारित होना चाहिए
(5) तर्कसंगत होना चाहिए

बहुविकल्पीय प्रश्न

(1) सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्म निष्ठ लेखन को क्या कहा जाता है?

1 फीचर 2 आलेख
3 विशेष रिपोर्ट 4 इंट्रो(मुखड़ा)

(2) निम्नलिखित में से फीचर का क्या उद्देश्य होता है?

1 पाठकों को सूचना देना
2 पाठकों को शिक्षित करना
3 पाठकों का मनोरंजन करना
4 उपर्युक्त सभी

(3) फीचर लेखन के संबंध में निम्नलिखित में से असत्य कथन का चयन कीजिए?

1 फीचर आमतौर पर तथ्यों, सूचनाओं और विचारों पर आधारित तथ्यात्मक विवरण का विश्लेषण होता है।
2 फीचर में लेखक के पास अपना दृष्टिकोण, राय व भावनाएं जाहिर करने का अवसर होता है।
3 फीचर आत्मनिष्ठ लेखन है।
4 फीचर को अखबार की आवाज माना जाता है।

(4) फीचर लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना जरूरी है?

1 विषय से जुड़े पात्रों की मौजूदगी होना जरूरी है ।
2 फीचर मनोरंजन के साथ सूचनात्मक हो।
3 फीचर का प्रारंभ विरोधाभास हो।
4 1 और 2 दोनों

(5) फीचर लेखन का प्रथम चरण है-

1 शीर्षक 2 भूमिका
3 विषय का विस्तार 4 निष्कर्ष

(6) फीचर शब्द का अर्थ है-

1 चित्र 2 रेखा चित्र
3 रूपरेखा 4 संस्मरण

(7) फीचर में तथ्यों की प्रस्तुति का ढंग कैसा होता है?

1 निरस 2 मनोरंजक
3 व्यापक 4 संकुचित

Jharkhandlab.com

(8) फीचर किस प्रकार की विधा मानी जाती है?

1 विषय प्रधान 2 समस्या प्रधान
3 व्यक्ति प्रधान 4 पत्र प्रधान

(9) फीचर लेखन के लिए किसकी आवश्यकता होती है?

1 कल्पना शक्ति की 2 अनुभूति की
3 अवलोकन की 4 इनमें से सभी

(10) निम्नलिखित में से कौन फीचर लेखन का तत्व है?

1 अलंकार 2 छंद
3 कल्पना 4 बिंब

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1 - 1, 2 - 4 3 - 3, 4 - 4, 5 - 1,
6 -3, 7 - 2, 8 - 1, 9 - 4, 10 - 3

Jharkhandlab.com

झारखंड अधिविद्य परिषद्
ANNUAL INTERMEDIATE EXAMINATION 2023

ARTS / SCI. / COM.
हिंदी (ऐच्छिक)
हल प्रश्न-पत्र

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

Group - A

समूह A

(अपठित बोध)

MCQ. BASED QUESTIONS / (बहुविकल्पीयआधारित प्रश्न)

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्न संख्या 1 से 4 के लिए सही विकल्प का चयन कीजिए:

अपने जीवन का लक्ष्य निश्चित करते समय हमें सुभाष, विवेकानंद, दयानंद, सरदार पटेल, भगत सिंह आदि महान युवा क्रांतिकारियों से प्रेरणा लेनी चाहिए। एक बार भली भाँति ठोक-बजाकर अपना लक्ष्य निर्धारित कर लें। लक्ष्य जितना ऊँचा होगा, उपलब्धि भी उतनी ही ऊँची होगी। एक बार लक्ष्य के निर्धारण होने पर दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ उस पथ पर बढ़ते रहें। असफलताएँ आएँगी परन्तु बार-बार प्रयास करते रहें, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाय। यदि हमारा आत्मविश्वास और ईश्वर पर विश्वास दृढ़ है तो कोई भी अवरोध अधिक समय तक टिक नहीं सकता।

1. अपने जीवन का लक्ष्य निश्चित करते समय हमें किससे प्रेरणा लेनी चाहिए?

(1) नेता से (2) अभिनेता से
(3) साधु से (4) युवा क्रांतिकारी से

2. लक्ष्य ऊँचा होने पर उपलब्धि होगी

(1) छोटी (2) ऊँची
(3) कमजोर (4) व्यर्थ

3. असफलता को सफलता में बदलने का मूल मंत्र क्या है?

(1) बार-बार प्रयास करना (2) एक बार प्रयास करना
(4) उदासीनता में डूब जाना (3) थक कर छोड़ देना

4. जीवन में आगे बढ़ने के लिए हमें क्या करना होगा?

(1) मौज-मस्ती करना होगा (2) गप्पे मारना होगा
(3) सिनेमा देखना होगा (4) लक्ष्य निर्धारित करना होगा

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्न संख्या 5 से 8 के लिए सही विकल्प का चयन कीजिए:

जाग रहे हम वीर जवान,
जियो जियो ऐ हिन्दुस्तान!
हम प्रभात की नई किरण हैं, हम दिन के आलोक नवल,
हम नवीन भारत के सैनिक, धीर, वीर, गंभीर अचल।
हम प्रहरी कैसे हिमाद्रि के, सुरभि स्वर्ग की लेते हैं,
हम हैं शांति दूत धरणी के छोह सभी को देते हैं।
वीर प्रसू माँ की आँखों के, हम नवीन उजियाले हैं।
रतन, मन, धन, तुम पर कुर्बान,
जियो जियो ऐ हिन्दुस्तान!

5. नवीन भारत से क्या तात्पर्य है?

(1) आजादी के पूर्व का भारत
(2) आजादी के समय का भारत
(3) आजादी के पश्चात का भारत
(4) इनमें से कोई नहीं

6. कवि अपना सब कुछ किस पर कुर्बान करना चाहता है?

(1) हिन्दुस्तान पर (2) हिमालय पर
(3) प्रभात पर (4) प्रकाश पर

7. वीरप्रसू माँ से क्या तात्पर्य है?

(1) मातृभूमि (2) माता
(3) पत्नी (4) भगिनी

8. 'सुरभि' का पर्यायवाची है

(1) हवा (2) आग
(3) सुगंध (4) आकाश

Group-B

समूह B

(रचनात्मक लेखन तथा अभिव्यक्ति और माध्यम)

9. रचनात्मकता यद्यपि प्रकृति प्रदत्त है तथा इसे किससे पोषित किया जा सकता है?

(1) प्रशिक्षण द्वारा (2) शिक्षा द्वारा
(3) (1) और (2) दोनों द्वारा (4) इनमें से कोई नहीं

10. फीचर किस प्रकार की विधा मानी जाती है?

(1) पात्र प्रधान (2) व्यक्ति प्रधान
(3) समस्या प्रधान (4) विषय प्रधान

jharkhandlab.com

11. विज्ञापन में किस प्रकार की भाषा प्रयुक्त होती है ?

(1) शब्दकोश आधारित (2) अंग्रेजी मिश्रित शुद्ध हिन्दी
(3) व्यावहारिक (4) शुद्ध हिन्दी

12. शासकीय पत्रों में निम्न में से क्या अनावश्यक है ?

(1) व्यक्तिगत शैली (2) स्पष्टता
(3) क्रमबद्धता (4) संक्षिप्तता

13. अपने से छोटों को पत्र में क्या संबोधन किया जाता है ?

(1) महाशय (2) चिरंजीवी
(3) महोदय (4) पूजनीय

14. विचारों के आदान-प्रदान की निम्न में से सबसे प्राचीन परम्परा कौन-सी है ?

(1) पत्राचार (2) टेलीफोन
(3) फैक्स (4) इन्टरनेट

15. जनसंचार प्रक्रिया के प्रमुख तत्व क्या हैं ?

(1) संग्राहक और प्रतिपुष्टि
(2) संकेतीकरण और संकेत वाचन
(3) स्रोत संदेश और संचार माध्यम
(4) इनमें से सभी

16. पत्रकारिता के विकास में कौन-सा मूलभाव सक्रिय रहता है ?

(1) आर्थिक तंगी (2) प्रतिस्पर्द्धा
(3) जिज्ञासा (4) संवेदना

17. नयी संचार भाषा को किसने जन्म दिया है ?

(1) सिनेमा ने (2) इन्टरनेट ने
(3) कम्प्यूटर ने (4) विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने

18. सर्वप्रथम मुद्रण का प्रारम्भ कहाँ हुआ ?

(1) जापान (2) अमेरिका
(3) भारत (4) चीन

Group-C

समूह C

(पाठ्यपुस्तक)

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्न संख्या 19 से 22 के लिए सही विकल्प का चयन कीजिए:

तुमने कभी देखा है
खाली कटोरों में वसंत का उतरना।
यह शहर इसी तरह खुलता है
इसी तरह भरता
और खाली होता है यह शहर
इसी तरह रोज-रोज एक अनंत शव
ले जाते हैं कंधे।

19. प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता कौन हैं ?

(1) भवानी प्रसाद मिश्र (2) जयशंकर प्रसाद
(3) केदारनाथ सिंह (4) महादेवी वर्मा

20. किन लोगों के खाली कटोरों में वसंत उतरता है ?

(1) बच्चों के (2) चिड़ियों के
(3) भिखारियों के (4) कुत्तों के

21. प्रस्तुत पंक्तियों में किस शहर की चर्चा की गई है?

(1) बनारस (2) लखनऊ
(3) मथुरा (4) आगरा

22. 'रोज-रोज' में कौन-सा अलंकार है ?

(1) यमक (2) रूपक
(3) उत्प्रेक्षा (4) पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार

23. देवसेना का गीत जयशंकर प्रसाद की किस कृति से लिया गया है ?

(1) चन्द्रगुप्त (2) स्कंदगुप्त
(3) झरना (4) लहर

24. सिकंदर के सेनापति का क्या नाम था ?

(1) सेल्यूकस (2) चाणक्य
(3) विष्णुगुप्त (4) टोडरमल

25. 'गीत गाने दो मुझे' में कवि क्या रोकने की बात कर रहा है?

(1) खुशी (2) उमंग
(3) उत्साह (4) वेदना

26. देश में आजादी के बाद किसकी कमी दिखाई देती है?

(1) भ्रष्टाचार (2) स्वाभिमान
(3) विश्वासघात (4) ईमानदारी

27. राजकुमारी पद्मावती किस द्वीप की राजकुमारी थी ?

(1) चित्तौड़ की (2) सिंहल द्वीप की
(3) रणथम्भौर की (4) भारत देश की

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्न संख्या 28 से 31 के लिए सही विकल्प का चयन कीजिए:

"हमें तो धोखा होता है कि परदादा की घड़ी जेब में डाले फिरते हो, यह बंद हो गई है, तुम्हेंन चाबी देना आता है, न पुर्जे सुधारना, **तो** भी दूसरों को हाथ नहीं लगाने देते।"

28. प्रस्तुत पंक्तियाँ किस पाठ से ली गई हैं ?

(1) बालक बच गया (2) घड़ी के पुर्जे
(3) ढेलें चुन लो (4) कच्चा चिट्ठा

29. बंद घड़ी के माध्यम से कवि ने किस पर प्रहार किया है ?

(1) पुरानी परम्पराओं (2) रूढ़िवादियों
(3) अंधविश्वासों (4) इनमें से सभी

Jharkhandlab.com

30. हमारे दुखों का कारण क्या है ?

(1) अंधविश्वास (2) सड़ी-गली मान्यता

(3) नवीन सोच की अवहेलना (4) इनमें से सभी

31. इन पंक्तियों का अभिप्राय है

(1) समय परिवर्तनशील है (2) समय का कोई मूल्य नहीं है

(3) समय का अभाव है। (4) इनमें से कोई नहीं

निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए:

32. शुक्ल जी जब काशी बारात में गये थे, तो किस लेखक के घर को देखा था ?

(1) प्रेमघन (2) केदारनाथ

(3) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (4) भगवानदास

33. वार्षिकोत्सव का मुख्य आकर्षण कौन था ?

(1) अध्यापक (2) प्रधानाध्यापक

(3) लेखक (4) बालक

(34) 'संवदिया' का क्या नाम था ?

(1) रामगोबिन (2) हरगोबिन

(3) विष्णुगोविन (4) गणेशगोविन

35. लोमड़ी का शेर के मुँह में स्वेच्छा से चले जाने का क्या कारण था?

(1) रोजगार का दफ्तर (2) बाजार

(3) उद्यान (4) मेला

36. एक अच्छे साहित्य का प्रमुख कर्तव्य है

(1) मनुष्य को आशावादी बनाना

(2) संघर्ष के लिए प्रेरित करना

(3) मानसिक विश्रांति प्रदान करना

(4) इनमें से सभी

37. सूरदास को किसमें विश्वास था ?

(1) हँसी-ठिठोली में (2) आलस्य में

(3) पुनर्निर्माण में (4) लड़ाई-झगड़े में

38. रूप सिंह के गाँव का क्या नाम था ?

(1) विजयपुर (2) जलालगढ़

(3) आजमगढ़ (4) माही

39. 'बिस्कोहर की माटी' पाठ के लेखक का क्या नाम है?

(1) प्रभाश जोशी (2) मनोहर श्याम जोशी

(3) संजीव (4) विश्वनाथ त्रिपाठी

40. 'अपना मालवा : खाउ-उजाड़ सभ्यता में' शीर्षक रचना के माध्यम से लेखक ने क्या संदेश दिया है ?

(1) पर्यावरण के प्रति लोगों को सचेत किया है।

(2) पर्यावरण का दोहन सिखाया है।

(3) पर्यावरण प्रदूषण फैलाया है।

(4) पर्यावरण की कोई चर्चा नहीं की है।

ANSWER

1. - 4	2. - 2	3. - 1	4. - 4
5. - 3	6. - 1	7. - 1	8. - 3
9. - 3	10. - 4	11. - 3	12. - 1
13. - 2	14. - 1	15. - 4	16. - 3
17. - 4	18. - 4	19. - 3	20. - 3
21. - 1	22. - 4	23. - 2	24. - 1
25. - 4	26. - 4	27. - 2	28. - 2
29. - 4	30. - 4	31. - 4	32. - 2
33. - 4	34. - 2	35. - 1	36. - 4
37. - 3	38. - 4	39. - 4	40. - 1

Jharkhandlab.com

झारखंड अधिविद्य परिषद्
ANNUAL INTERMEDIATE EXAMINATION 2023

हिंदी (ऐच्छिक)
हल प्रश्न-पत्र

विषयनिष्ठ प्रश्नोत्तर

Section - A
खण्ड A
(अपठित बोध)

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: 2+2+2=6

एक चिर प्रचलित उक्ति है-'मनुष्य अपने मन में स्वयं को जैसा मान बैठा है, वस्तुतः वह वैसा ही है। प्रायः हम देखते हैं कि अनेक अभिभावक दूसरों के बच्चों की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हैं और अपने बच्चों की बुराई। वे बच्चों को डाँटते-फटकारते हैं। अभिभावक अपने बच्चों का कम मूल्य लगाते हैं, फलस्वरूप समाज भी उन्हें घटिया दर्जे का ही मानता है। हमें उतना ही सम्मान, यश, प्रतिष्ठा प्राप्त होती है, जितना हम स्वयं अपने व्यक्तित्व का लगाते हैं। शांत चित्त से कभी-कभी अपने चरित्र की अच्छाइयों पर मन एकाग्र करेंगे, उतना वे आपके चरित्र में विकसित होंगी। बुराइयों को त्यागने का अमोध उपाय यह है कि हम एकान्त में अपने श्रेष्ठ गुणों का चिंतन करें और इससे दिव्यताओं की अभिवृद्धि करते रहें । मनुष्य के मन में ऐसी अद्भुत गुप्त चमत्कारी शक्तियाँ दबी पड़ी रहती हैं, कि वह उनका सतत् चिन्तन करता रहे तो उसके व्यक्तित्व में वही शक्तियों परिलक्षित होने लगती हैं।

(क) अभिभावक प्रायः अपने बच्चों के साथ क्या करते हैं?

अभिभावक प्रायः अपने बच्चों को डाँटते- फटकारते हैं तथा उनकी बुराई करते हैं। वे जहाँ दूसरों के बच्चों की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हैं, वहीं अपने बच्चों का कम मूल्य लगाते हैं।।

(ख) बुराइयों को त्यागने का अमोध उपाय क्या है?

बुराइयों को त्यागने का अमोध उपाय यह है कि हम एकांत में अपने श्रेष्ठ गुणों का चिंतन करें और इससे दिव्यताओं की अभिवृद्धि करते रहें।

(ग) अपने चरित्र को निखारने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

अपने चरित्र को निखारने के लिए हमें शांत चित्र से अपने चरित्र की अच्छाइयों पर मन एकाग्र करना चाहिए तथा अपने मन की शक्तियों का सतत् चिंतन करते रहना चाहिए।

Section - B
खण्ड - B
(रचनात्मक लेखन तथा अभिव्यक्ति और माध्यम)

2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 5+5-10

(क) 'लोकतंत्र में चुनाव' विषय पर निबंध लिखिए।

लोकतंत्र में चुनाव

"लोकतंत्र में चुनाव जनता को राजनीतिक शिक्षा देने का विश्वविद्यालय है।" मानव समुदाय एवं शासन व्यवस्था की अवधारणाओं पर गौर करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि पण्डित जवाहरलाल नेहरू का यह कथन बिल्कुल सही है।

चुनाव व्यवस्था को लोकतंत्र का मूल कहा जा सकता है। लोकतांत्रिक शासन में राज्य की अपेक्षा, व्यक्ति को अधिक महत्व दिया जाता है। राज्य व्यक्ति के विकास के लिए पूर्ण अवसर प्रदान कराता है। जिस तरह व्यक्ति और समाज को अलग करके दोनों के अस्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती, ठीक उसी प्रकार लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में जनता और सरकार को अलग-अलग नहीं देखा जा सकता। अतः लोकतंत्र में चुनाव अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। भारत में स्वतंत्रता के बाद लोकतांत्रिक व्यवस्था को स्वीकृति मिली और इसी के साथ जनता को एक निश्चित अंतराल के बाद अपने प्रतिनिधियों को चुनने का अधिकार मिला । 26 जनवरी, 1950 को भारत गणतंत्र बना। इसके बाद वयस्क मताधिकार के आधार पर भारत में पहला आम चुनाव वर्ष 1951-52 में हुआ। पहले मतदान करने की न्यूनतम आयु 21 वर्ष थी। वर्ष 1989 में 61 वें संविधान संशोधन के द्वारा न्यूनतम आयु सीमा को 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष कर दिया गया । अब तक लोकसभा के लिए सत्रह चुनाव हो चुके हैं। सत्रहवीं लोकसभा का चुनाव वर्ष 2019 में सम्पन्न हुआ ।

लोकतंत्र जैसी गौरवशाली शासन पद्धति की प्रतिष्ठा को बनाए रखने हेतु चुनाव का साफ और भ्रष्टाचार मुक्त रहना आवश्यक हो जाता है, जिससे कि योग्य और उचित उम्मीदवार को चुना जाए। लोकतंत्र की सफलता निष्पक्ष चुनावों के, साथ-साथ इस बात पर भी निर्भर करती है, कि जनता शिक्षित हो एवं अपना हित समझती हो । अतः हम सभी देशवासियों को लोकतंत्र की सफलता हेतु समर्पित एवं सचेत रहकर अपने अधिकरों का सदुपयोग करते हुए अपने कर्तव्यों का भी पूर्ण निष्ठा से पालन करना होगा।

(ख) महंगाई से प्रभावित आम जन-जीवन के विषय में किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

सेवा में,

संपादक महोदय,

दैनिक जागरण

राँची ।

Jharkhandlab.com

विषय : महँगाई से प्रभावित आम जन-जीवन के संबंध में।

महोदय

मैं आपके लोकप्रिय पत्र के माध्यम से सरकार व प्रशासन का ध्यान दिन-प्रतिदिन बढ़ती हुई महँगाई और उससे उत्पन्न आम जन -जीवन की विभिन्न, परेशानियों को ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ।

महोदय, कुछ दिनों से देश में महँगाई का स्तर पूर्व से अधिक गुणा बढ़ता नजर आ रहा है। सामान्य जीवनयापन की वस्तुओं, खाद्यान्नों व अन्य उपयोगी वस्तुओं के मूल्यों में भारी वृद्धि समस्त स्तर के परिवारों के लिए चिंता का विषय बन गया है।

इसके अतिरिक्त, समाज में रोजगार तथा आय के स्रोत में भी किसी प्रकार की वृद्धि नहीं की जा रही हैं। ऐसी स्थिति में आम जनता को रोटी-दाल के लिए भी सोचना पड़ रहा है। आसमान छुती हुई महँगाई और सरकार की ओर से बढ़ती महंगाई की ओर कोई ठोस निर्णय नहीं लिया जाना दोनों ही बेहद चिंता का विषय है।

अतः आपसे विनम्र अनुरोध है कि आप इस विषय को अपने प्रतिष्ठित समाचार-पत्र में स्थान देकर सरकार का ध्यान महँगाई की ओर आकर्षित करें। अन्यथा यह बढ़ती महंगाई जनता के अनहित का कारण बन जाएगी ।

सधन्यवाद। भवदीय

क, ख, ग.

(ग) शहर में बढ़ती आपराधिक घटनाओं पर एक रिपोर्ट लिखें।

दैनिक जागरण

25 जून, 2023

मनीष कुमार

पिछले कुछ वर्षों से शहरों में अपराध की समस्या तीव्र गति से बढ़ती जा रही है। हर रोज दिन दहाड़े डकैती, अपहरण, हत्या, दहेज के लिए बहू को जलाने, जालसाजी आदि की घटनाएँ होती रहती है। शहरों में असुरक्षा की भावना दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। यहाँ आम व्यक्ति की जान और सम्पत्ति सुरक्षित नहीं है।

शहर में बढ़ती आपराधिक घटनाओं का मुख्य कारण औद्योगीकरण का विकास और गरीब गाँववालों का जीविका की तलाश में शहर की ओर पलायन है। गाँव के गरीब युवक जब शहर पहुँचते हैं, तो यहाँ की चकाचौंध उन्हें चकित कर देती है। एक ओर उनकी खाली जेब और दूसरी ओर शहरी बाजार का जादू दोनों मिलकर उनमें कुंठा, नैराश्य की भावना उत्पन्न कर देती है। यही कुंठा अपराध और असामाजिक कार्यों को जन्म देती है।

मेहनती और प्रतिभावान युवक-युवतियों को उचित जीविका न मिल पाना भी आपराधिक भावनाओं की वृद्धि का एक बड़ा कारण सिद्ध हो रहा है। आज के विकसित तकनीकों जैसे- मोबाइल, कम्प्यूटर आदि ने भी युवाओं को दिग्भ्रमित करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ा है।

लोगों की इच्छा या अनिच्छा से असामाजिक और आपराधिक तत्वों में शामिल होने की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। आपराधिक प्रवृत्ति में वृद्धि एक सामाजिक और आर्थिक समस्या के साथ- साथ राजनैतिक समस्या भी है जिसका समाधान ढूँढना बहुत आवश्यक है।

Section C

खण्ड - ग

(पाठ्यपुस्तक)

3. निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

(क) तुमने कभी देखा है
खाली कटोरों में वसंत का उतरना !
यह शहर इसी तरह खुलता है। इसी तरह भरता है
और खाली होता है यह शहर
इसी तरह रोज-रोज एक अनंत शव
ले जाते हैं कंधे
अँधेरी गली से
चमकती हुई गंगा की तरफ।

उत्तर- (i) **प्रसंग** - प्रस्तुत काव्यावतरण केदारनाथ सिंह की कविता 'बनारस' से अवतरित है। यहाँ कवि ने वसंतकालीन बनारस के परिवेश से परिचित कराया है।

(ii) **व्याख्या** - कवि पाठकों से प्रश्न करता है कि क्या तुमने कभी (भिखारियों) के खाली कटोरों में वसंत का उतरना देखा है। अर्थात् वसंत के आते ही तीर्थयात्रियों का आवागमन बढ़ जाता है, जिससे भिखारियों के कटोरे सिक्कों से भरने लगते हैं। यह शहर स्वयं को इस प्रकार अनावृत करता है और इसी प्रकार भरता है। इसके साथ ही अनंत शवों को अपने कंधों पर ढोकर उनके परिजन यहाँ लाते हैं और मोक्ष की नगरी में उनका दाह संस्कार करते हैं, जिससे यह शहर खाली भी होता जाता है। गंगा किनारे उनकी अंतिम क्रिया करके दिवंगत आत्मा को मोक्ष प्रदान करने में सहायक होते हैं।

(ii) **विशेष**- शहर के खुलने से कवि का विशेष अभिप्राय यह है कि बनारस स्वयं को अचानक खोलकर नहीं रख देता। यह शहर धीरे-धीरे खुलता है। यहाँ जो जितना नया जीवन रूपाकार ग्रहण करता है, उसी अनुपात में मृत्यु उसे खाली भी करती जाती है। कंधों पर अनंत शव के ढोए जाने से आशय है कि शवदाह का अनंत सिलसिला यहाँ अपना रंग-रूप नहीं बदलता। वह अपनी 'रौ' में चलता चला जाता है।

(ख) पति बनैं चारमुख, पूत बनैं पंचमुख,
नाती बनैं षट्मुख तदपि नई-नई।

(i) **प्रसंग**- प्रस्तुत काव्यावतरण केशवदास के प्रबंध

jharkhandlab.com

काव्य 'रामचंद्रिका' के मंगलाचरण से अवतरित है। इस मंगलाचरण में कवि ने सरस्वती माता के माहात्म्य को अवर्णनीय बताया है।

(ii) **व्याख्या-** कवि के अनुसार सरस्वती की उदारता का बखान उनके चार मुख वाले पति ब्रह्मा, पाँचमुख वाले पुत्र शिव और छः मुखवाले नाती कार्तिकेय नहीं कर पाये। उनकी इस असमर्थता का एक ही कारण है कि देवी सरस्वती के गुणों और उदारता का नित नये-नये पक्ष उजागर होते रहते हैं। ऐसी स्थिति में एक मुख वाले मनुष्य में उनके माहात्म्य का वर्णन करने की सामर्थ्य कहाँ से आयेगी?

(ii) **विशेष-** कवि ने सरस्वती देवी की कृपा और उदारता को अकथनीय और अवर्णनीय कहा है। पूरी पंक्ति में अतिशयोक्ति अलंकार का प्रयोग हुआ है। 'नई नई' में पुनरुक्ति-प्रकाश अलंकार है। पंक्ति की भाषा परिनिष्ठित साहित्यिक ब्रजभाषा है।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 3+3=6

(क) 'आधे-आधे गाने' के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर - **आधे-आधे गाने** के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि जब तक मानव-मन में ऊब व खीज व्याप्त होगी तब तक हमारा मन आधे-अधूरे गानों में ही अटका रहता है। तात्पर्य यह है कि खीज और ऊब की वजह से हमारा मन किसी भी कार्य में पूरी तरह रम नहीं पाता है। उल्लासित मन से ही हम पूरा गाना गा पाते हैं। अतः मन का साफ अर्थात् प्रफुल्लित होना आवश्यक है।

(ख) कवि मौन होकर प्रेमिका के कौन-से प्रण पालन को देखना चाहता है ?

उत्तर- कवि मौन होकर अपनी प्रेमिका सुजान के इस प्रण पालन को देखना चाहता है कि वह कब तक उसकी पुकार सुनकर अनसुना करती है। कवि को लगता है कि सुजान ने चुपी साध लेने का प्रण किया हुआ है। इसलिए वह उसकी ओर ताकती तक नहीं है। कवि को विश्वास है कि उसका मौन ही उसकी प्रेमिका की चुप्पी का जवाब है।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 3+3=6

(क) घड़ीसाजी का इम्तहान पास करने से लेखक का क्या तात्पर्य है?

उत्तर- घड़ीसाजी का इम्तहान पास करने से लेखक का तात्पर्य उन लोगों से है जो बुद्धिजीवी हैं, जिन्होंने शास्त्रों का अध्ययन किया है, जो धर्म के संस्कारों को उनकी उपयोगिता व अनुपयोगिता के संबंध में विचार-विमर्श करने के योग्य हैं, जो मनुष्य के लिए उनकी आवश्यकता व अनावश्यकता का विश्लेषण करने में सक्षम हैं। कम से कम ऐसे व्यक्तियों को धर्म के रहस्यों को जानने का अधिकार दिया जाना चाहिए, इसे केवल धर्माचार्यों तक ही सीमित नहीं समझना चाहिए।

(ख) लेखक बुढ़िया से बोधिसत्व की आठ फुट लम्बी सुंदर मूर्ति प्राप्त करने में कैसे सफल हुआ ?

उत्तर- लेखक ने बोधिसत्व की 8 फुट लंबी सुंदरमूर्ति खेत की मेड़ पर पड़ी देखी । वह मथुरा के लाल पत्थर की थी जैसे ही लेखक उठाने लगा तो एक बुढिया तमक कर बोली- बड़े चले हैं मूरत उठावे । इ हमार है। इसे हम न देवें । लेखक समझ गया कि रुपये की झनझनाहट गरीब आदमी के **हृदय** में उत्तेजना पैदा करती है। लेखक ने बुढ़िया को दो रुपये दिए और बुढ़िया ने लेखक को खुशी से मूर्ति दे दी।

(ग) संदेश भेजने के बाद बड़ी बहुरिया की मनःस्थिति कैसी हो गयी ?

उत्तर- बड़ी बहुरिया संतप्त हृदय से अपनी माँ के पास संदेश भेजती है कि वे आकर उसे मायके ले जाए लेकिन संदेश भेजने के बाद वह पछता रही थी कि उसे यह संदेश नहीं भेजना चाहिए था क्योंकि संदेश सुनकर परिवार वालों को दुख पहुँचेगा। अब उसका असली घर तो ससुराल ही है। वहीं उसे रहना होगा। क्योंकि एक बार शादी हो जाने के बाद वह मायके में उस अधिकार के साथ नहीं रह सकती ।

6. निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए : 2

(क) डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी की दो रचनाओं के नाम लिखे ।

उत्तर- डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी की दो रचनाएँ निम्नांकित है-

(i) अशोक के फूल

(ii) आलोक पर्व

(ख) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' की किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखें।

उत्तर- (i) भग्नदूत'

(ii) हरी घास पर क्षण भर

Section - D

खण्ड - D

(पाठ्य पुस्तक)

7. निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए:

(क) जगधर के मन में किस तरह ईर्ष्या का भाव जगा और क्यों?

उत्तर- जगधर जब भैरों के घर यह पता करने पहुँचा कि सूरदास के घर आग किसने लगाई है तो उसे पता लगा कि भैरों ने ही सूरदास के घर आग लगवाई थी। इसके साथ ही उसने सूरदास की पूरे जीवन भर की जमापूँजी भी चुरा ली थी। यह जमापूँजी 500 से अधिक थी। जगधर जानता था कि ये इतना रुपया है जिससे भैरों की जिन्दगी की सारी कठिनाई पलभर में दूर हो सकती है। भैरों की चांदी होते देख जगधर के मन में ईर्ष्या का भाव जगा ।

Jharkhandlab.com

(ख) कोइयाँ किसे कहते हैं ? उसकी विशेषताएँ बताएँ ।

उत्तर- कोइयाँ जल में उत्पन्न होने वाला पुष्प है। इसे कुमुद तथा कोका-वेली के नाम से भी जाना जाता है। इसकी विशेषताएँ इस प्रकार है-

क- कोइयाँ पानी से भरे गड्ढे में भी सरलता से पनप जाती है।

ख- यह भारत के अधिकतर स्थानों में पाई जाती है।

ग- इसकी खुशबू मन को प्रिय लगने वाली होती है ।

घ- शरद ऋतु की चांदनी में तलाबों में चाँदनी की जो छाया बनती है वह कोईयों की पत्तियों के समान लगती है।

8. निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए:

(क) धरती का वातावरण गरम क्यों हो रहा ? इसमें यूरोप और अमेरिका की भूमिका क्या है ?

उत्तर- धरती का वातावरण गरम इसलिए हो रहा है क्योंकि मनुष्य प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर रहा है। अंधाधुन पेड़ो की कटाई, नए-नए उद्योग धंधे स्थापित होने से हानिकारक गैसें वातावरण को गरम कर रही हैं। यूरोप और अमेरिका में उद्योगों का सबसे अधिक विकास हुआ है। इन देशों में रोज नए-नए प्रयोग से हानिकारक गैसे वातावरण को दूषित कर रही हैं।

(ख) पहाड़ों की चढ़ाई और प्रेम की चढ़ाई में क्या अन्तर है ? पठित पाठ के आधार पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर- पहाड़ों की चढ़ाई और प्रेम की चढ़ाई में समानताएँ और असमानताएँ दोनों है। जैसे पहाड़ों की चढ़ाई पर से गिरकर आदमी जख्मी हो जाता है, उसी प्रकार प्रेम की चढ़ाई में असफल होने पर जीवन दुखमय हो जाता है। यदि पहाड़ की चढ़ाई की तरह प्रेम भी एकपक्षीय हुआ तो अंत सुखद नहीं होता है. लेकिन अगर प्रेम उभयपक्षीय अर्थात् युगल जोड़ी के आपसी सामंजस्य से जीवन आसान और सुखद हो जाता है। दोनों प्रेमी युगल परस्पर सहयोग करते हुए आगे बढ़ते जाते हैं। सुख-दुख में बराबर के भागीदार होते हैं, दोनों एक दूसरे का सहारा बनते है। एक अगर गिरता है, तो दूसरा उसे सहर्ष सँभाल लेता है। इस तरह प्रेम की चढ़ाई, पर्वतों की चढ़ाई से अलग भी हुआ करती है। वास्तव में प्रेम जीवन का जीवंत आरोहण हुआ करता है।

Jharkhandlab.com

Jharkhandlab.com

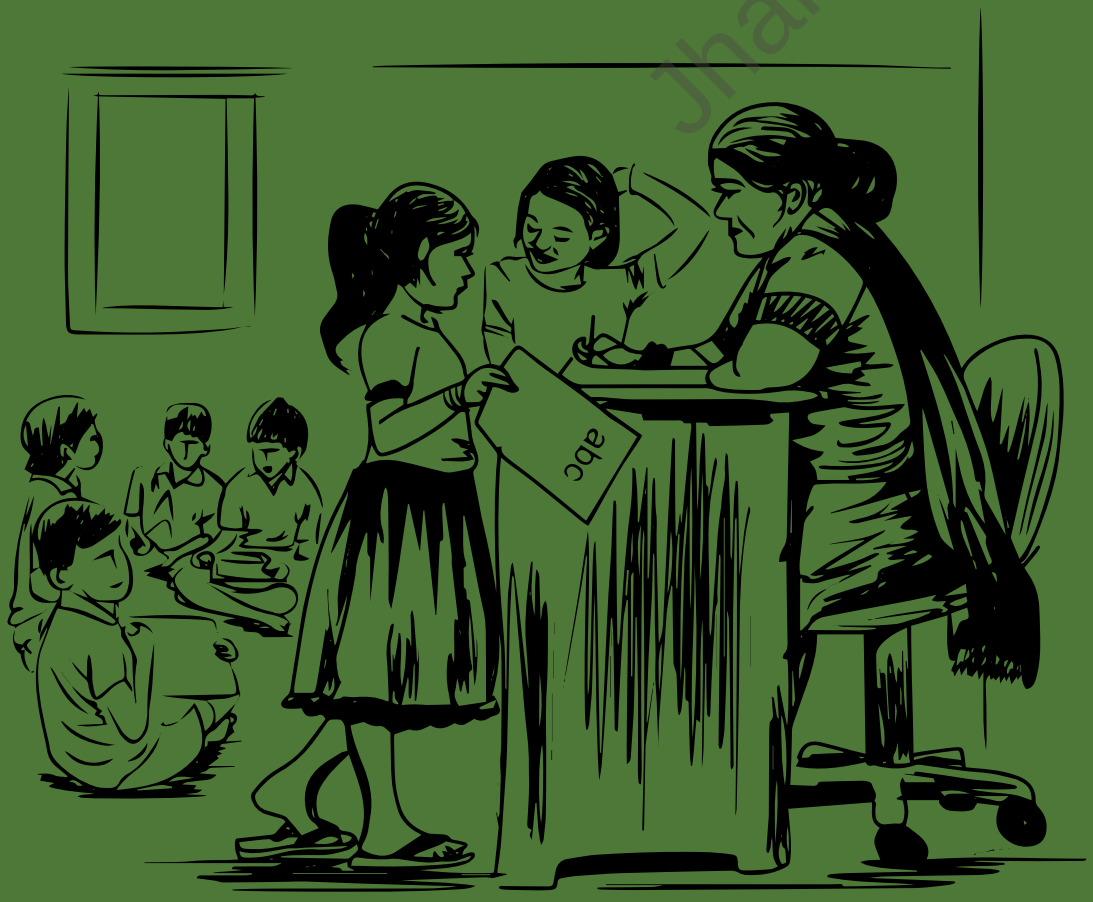

झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची
Jharkhand Council of Educational Research and Training, Ranchi